संक्षिप्त-विषयसूची (सं. २०४१ वि.)

नोटः—इस पंचांग में घटीपलात्मक तिथ्यादि के बाद ८५ से ९१ पृष्ठ तक तिथि नक्षत्र आदि पंचांग घण्टा मिन्टों (भा. स्टै. टा.) में भी दिया है।

विषय	पृष्ठ
संक्षिप्त विषयसूची	१
प्रमख-प्रमुख व्रतपर्वों की सूची	२
वर्गीकृत व्रतपर्व सूची	३
मेले, गंडमूल, पंचक, सिक्खों के गरपर्व	४-५
मिलान-पद्धति	६-२३
ग्रहण विचार	२४
क्षयाधिमास विचार	२५
यन्त्र मन्त्रों का चमत्कार	२६
व्यापार विमर्श (तेजीमन्दी), आकाशी कौसल	२७-३९
प्रसलिलग्न विचार, जन्मकुण्डली से विशेष विचार, गण्डमूल नक्षत्रविचार, गोचरग्रहों का भावगत फल, बालकष्टावली, नक्षत्रकष्टावली, रोगोत्पत्तौ कुयोगाः, नवग्रह व्रतविधि	४०-५१
नक्षत्र-राशिज्ञान-चक्र	
शनि की साढ़ेसती का विचार	५२
राशिफल	५३-५६

विषय	पृष्ठ
वर्षफल श्रवण, संदिग्ध व्रतपर्व.	५७-६०
तिथ्यादि २४ पक्ष	६१-८४
घण्टा-मिन्टों में तिथि-नक्षत्र आदि पंचांग	८५-९१
दैनिक स्पष्टग्रह सूर्य-चन्द्र क्रान्ति-शर, ग्रहों के क्रान्तिशर	९२-१०२
मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर	१०३-१०४
चन्द्रोदयास्त, चन्द्रदर्शन	१०५-१०६
ग्रहों के नक्षत्र-राशि-चरणचार	१०७-१०८
दैनिक लग्नसारिणियां	१०९-११५
अक्षांशादि सारिणी, दशमलग्न सारिणियां, लग्न-तिथ्यादि समाप्तिकाल आदि	११६-१२८
विंशोत्तरी दशाचक्र, वर्षप्रवेश सारिणी, ग्रहशील चक्र, आवश्यक मुहूर्त, योनि-नाड़ी आदि चक्र, मेलापक सारिणी, ग्रहमेलापक विचार, लग्नभंग-योग, घातचन्द्र चक्र, अंग-स्फुरण फल, स्वप्नफल, सिद्धहोरा मुहूर्त, सगमप्रश्न विचार	१२९-१५१
विवाह आदि मुहूर्त	१५२-१५६
त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक, अशुद्ध विवाह मुहूर्त, सर्वार्थसिद्धि—अमृतसिद्धि आदि योग, भारत सरकार के अवकाश आदि	१५७-१६५

अनन्त श्री विभूषित श्री काञ्चीमठ कोटिपीठाधिपतिजगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकर भगवत्पाद-प्रतिष्ठित श्रीकाञ्चीकामकोटिपीठाधिपजगद्गुरु श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादादेशानुसारेण श्रीमज्जयेन्द्रसरस्वतीश्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिवआप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभ-शर्मभिःप्रवर्तितम् "श्रीमार्तण्ड पञ्चांगम्" अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर शास्त्रिभिः-तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणित-रीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्-पञ्चांगम् धर्मशास्त्र-सम्मतैकमात्र-दृग्गणित-पद्धत्यनुसारिव्रतपर्वादि-धार्मिककृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डा. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं 'दृक्सिद्धान्तभास्करः' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः अधुना श्रीमार्तण्डपञ्चांगमेतत् स्वर्णजयन्तीमहोत्सवमनुभवत् अशेषास्तिकलोकोपकारकं सत् श्री चन्द्रमौलीशकृपया प्रचुर प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् — नारायणस्मृतिः

अनल चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

इस वर्ष के नए विषय

इस वर्ष का विशेषलेख—(१) गुणमिलान (पृष्ठ ६ से २३ तक)

वर्ण, वश्य तारा, योनि, राशीश, गण, भकूट और नाड़ीकूटों एवं इनके शास्त्रोक्त परिहारों का सर्वांङ्गीण विवेचन करने वाला २० पृष्ठों का यह विस्तृत लेख पढ़कर सबको यह स्पष्ट हो जाएगा, कि-मिलान में गण, षडष्टक और नाड़ीदोष को देखकर लड़के-लड़की का सम्बन्ध करने की अनुमति न देना अनेकबार शास्त्र-विरुद्ध होता है। [illegible] पृष्ठों में युक्त यह विस्तृत विवेचन मिलान के बारे में आपको बहुत सी अपूर्व जानकारी देगा। यहां दी गई विस्तृत अद्वितीय सारणियों की सहायता से मिलान करना कितना सरल है-आप स्वयं देखिए।

(२) सन् १९८५ से १९९९ ई. तक के चन्द्रग्रहण — पृ. २४

(३) क्षयाधिमास विचार — पृ. २५

(४) केरलमत से प्रश्नविचार — पृ. २७

(५) व्यापार और आपकी ग्रहस्थिति — पृ. २८

प्रमुख-प्रमुख व्रतपर्वों की सूची (१ जनवरी १९८४ ई. से २१ मार्च १९८५ ई. तक)

व्रतपर्व	तारीख
	सन् १९८४ ई.
लोहड़ी (पंजाब)	१३ जन
मकर संक्रान्ति	१४ ,,
माघस्नान प्रारम्भ	१८ ,,
संकट चतुर्थी	२१ ,,
भारत गणतन्त्र दिवस	२६ ,,
मौनी अमावस	१ फर.
महोदय पर्व	१ ,,
तिल चतुर्थी	५ ,,
वसन्त पंचमी	७ ,,
श्री पंचमी	७ ,,
रथ सप्तमी	८ ,,
श्री भीष्माष्टमी	१० ,,
श्री भीष्म द्वादशी	१४ ,,
माघ स्नान समाप्त	१६ ,,
श्री महाशिवरात्रि	२९ ,,
होलाष्टक प्रारम्भ	११ मार्च
गोविन्द द्वादशी	१४ ,,
होलिका दहन	१६ ,,
होलाष्टक समाप्त	१७ ,,
होली	१७ ,,
वारुणीपर्व	२९ ,,
नवरात्र प्रारम्भ	२ अप्रै.
गणगौर	४ ,,
श्री मत्स्य जयन्ती	४ ,,
गौरी तृतीया	४ ,,
स्कन्दषष्ठी	७ ,,
श्री दुर्गाष्टमी	९ ,,
श्री रामनवमी	१० ,,
नवरात्र समाप्त	१० ,,
अनङ्ग त्रयोदशी	१३ ,,
वैशाखी	१३ ,,
वैशाख स्नान प्रारम्भ	१५ ,,
श्री परशुराम जयन्ती (देखें पृ. ५९/६०)	३ मई
अक्षय तृतीया	४

व्रतपर्व	तारीख
	सन् १९८४ ई.
श्री गंगाजन्म	७ मई
श्री जानकी जयन्ती	९ ,,
श्री नृसिंह जयन्ती	१३ ,,
श्री कूर्म जयन्ती	१४
श्री बुद्ध जयन्ती	१५ ,,
वैशाखस्नान समाप्त	१५ ,,
भद्रकाली एकादशी	२६ ,,
भावुकाअमावस	३० ,,
वट सावित्रीव्रत	३० ,,
रम्भाव्रत	२ जून
श्री गंगा दशहरा	८ ,,
निर्जला एकादशी	९ ,,
श्री जगदीश रथोत्सव	३० ,,
चातुर्मास्य व्रत प्रा.	९ जुला.
गुरुपूर्णिमा (देखें पृ. ५९/६०)	१२ ,,
शिवशयनोत्सव	१२ ,,
कोकिला व्रत	१२ ,,
अशून्य शयनव्रत	१४
हरियाली अमा	२८ ,,
शनैश्चरी अमा	२८ ,,
नक्तव्रत प्रारम्भ	२८ ,,
हरियाली तीज	३१ ,,
मधुश्रवा तीज	३१ ,,
सन्धारा तीज	३१ ,,
नाग पंचमी	१ अग.
श्री कल्कि जयन्ती	२ ,,
श्री दुर्गाष्टमी	४ ,,
रक्षाबन्धन	११ ,,
ऋक्-यजु उपाकर्म	११ ,,
हयग्रीव जन्म	११ ,,
बहुला चतुर्थी	१५ ,,

व्रतपर्व	तारीख
	सन् १९८४ ई.
भारत स्वातन्त्र्य दिन	१५ अग.
श्री कृष्णजन्माष्टमी (स्मा.)	१९ ,,
श्री कृष्णजन्माष्टमी (वै.)	२० ,,
गोकुलाष्टमी	२० ,,
गुग्गा नवमी	२१ ,,
पिठोरी अमावस	२६ ,,
कुशोत्पाटिनी अमा	२६ ,,
नक्तव्रत समाप्त	२७ ,,
साम उपाकर्म	२९ ,,
श्री वराह जयन्ती	२९ ,,
हरितालिका व्रत	२९ ,,
कलंक चतुर्थी	२९ ,,
ऋषि पंचमी	३० ,,
सूर्यषष्ठी व्रत	३१ ,,
श्री राधाष्टमी	२ सित.
दूर्वाष्टमीव्रत	२ ,,
श्री महालक्ष्मी व्र. प्रारम्भ	२ ,,
श्री वामन जयन्ती	६ ,,
श्रवण द्वादशी	६ ,,
अनन्त चतुर्दशी	९ ,,
प्रोष्ठपदी पूर्णिमा	९ ,,
श्राद्ध प्रारम्भ	११ ,,
श्री महालक्ष्मी व्र. समाप्त	१८ ,,
श्राद्ध समाप्त	२४ ,,
शारद नवरात्र प्रारम्भ	२५ ,,
उपांगललिता व्रत	२९ ,,
सरस्वती आवाहन	१ अक्तू.
सरस्वती पूजन	२ ,,
श्री दुर्गाष्टमी	२ ,,
श्री महाष्टमी	२ ,,
श्री महानवमी	२ ,,
नवरात्र समाप्त	३ ,,
विजयादशमी	४ ,,

व्रतपर्व	तारीख
	सन् १९८४ ई.
अपराजिता पूजन	४ अक्तू.
सरस्वती विसर्जन	४ ,,
भरत मिलाप	५ ,,
शरत्पूर्णिमा	९ ,,
श्री वाल्मीकि जयन्ती	९ ,,
कोजागरी व्रत	९ ,,
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	९ ,,
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	१३ ,,
अहोई अष्टमी (पं.)	१७ ,,
गोवत्स द्वादशी	२१ ,,
धन त्रयोदशी	२२ ,,
नरक चतुर्दशी	२२ ,,
श्री हनुमान जयंती	२३ ,,
दीपावली (देखें पृ. ५९/६०)	२४ ,,
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा बलिपूजा (देखें पृ. ५९/६०)	२५ ,,
यम द्वितीया भाई दूज (देखें पृ. ५९/६०)	२६ ,,
विश्वकर्मा पूजा	२६ ,,
गोपाष्टमी	३१ ,,
अक्षय नवमी	२ नव.
कूष्माण्ड नवमी	२ ,,
भीष्म पंचक प्रा.	४ ,,
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	४ ,,
श्री तुलसी विवाह	५ ,,
वैकुण्ठ चतुर्दशी (देखें पृ. ५९/६०)	६ ,,
भीष्म पंचक समाप्त	८ ,,
कार्तिक स्नान समाप्त	८ ,,
श्री महाकाल भैरवाष्टमी	१६ ,,
चम्पाषष्ठी	२८ ,,

व्रतपर्व	तारीख
	सन् १९८४ ई.
स्कन्द षष्ठी	२८ नव.
मित्र सप्तमी	२९ ,,
श्री गीताजयन्ती	४ दिस.
श्री दत्तजयन्ती	७ ,,
शनैश्चरी अमा	२२ ,,
(सन् १९८५ ई.)	
माघस्नान प्रारम्भ-	७ जन.
संकट चतुर्थी	१० जन
लोहड़ी	१२ ,,
मकर संक्रान्ति	१३ ,,
मौनी अमावस	२१ ,,
सोमवती अमावस	२१ ,,
तिल चतुर्थी	२४ ,,
वरदा चतुर्थी	२४ ,,
वसन्त पंचमी	२६ ,,
श्री पंचमी	२६ ,,
भारत गणतन्त्र दिन	२६ ,,
रथ सप्तमी	२७ ,,
भीष्माष्टमी	२९ ,,
भीष्म द्वादशी	२ फर.
माघस्नान समाप्त	५ ,,
श्री महाशिव रात्रि	१७ ,,
होलाष्टक प्रारम्भ	२८ ,,
गोविन्द द्वादशी	४ मार्च
होलिका दहन (देखें पृ. ५९/६०)	६ ,,
होली	७ ,,
होलाष्टक समाप्त	७ ,,
वारुणी पर्व	१९ ,,

वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची (१ जन. १९८४ ई. से २१ मार्च १९८५ ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् १९८४ ई.)

पौष शु. (स.)	१४ जन.
माघ कृ. (स.)	२८ ,,
माघ शु. (स.)	१३ फर.
फाल्गु. कृ. (स.)	२७ ,,
फाल्गु. शु. (स्मा.)	१३ मार्च
चैत्र कृ. (स.)	२८ ,,
चैत्र शु. (स.)	१२ अप्रै.
वैशा. कृ. (स.)	२६ ,,
वैशा. शु. (स.)	११ मई
ज्येष्ठ कृ. (स.)	२६ ,,
ज्येष्ठ शु. (स्मा.)	९ जून
आषा. कृ. (स.)	२५ ,,
आषा. शु. (स.)	९ जुला.
श्राव. कृ. (स.)	२४ ,,
श्राव. शु. (स.)	७ अग.
भाद्र कृ. (स.)	२३ ,,
भाद्र शु. (स्मा.)	५ सित.
आश्वि. कृ. (स.)	२१ ,,
आश्वि. शु. (स.)	५ अक्तू.
कार्ति. कृ. (स्मा.)	२० ,,
कार्ति. शु. (स.)	४ नव.
मार्ग. कृ. (स.)	१९ ,,
मार्ग. शु. (स.)	४ दिस.
पौष कृ. (स.)	१८ ,,
सन् १९८५ ई.	
पौष शु. (स.)	२ जन.
माघ कृ. (स.)	१७ ,,
माघ शु. (स.)	१ फर.
फाल्गु. कृ. (स.)	१५ ,,
फाल्गु. शु. (स.)	३ मार्च
चैत्र कृ. (स.)	१७ ,,

[illegible] (स्मार्त व वैष्णवों) का एकादशी व्रत। स्मा = स्मार्तों का एकादशी व्रत। स्मार्तों के एकादशीव्रत के दूसरे [illegible] का एकादशी व्रत [illegible] चाहिए।

प्रदोष व्रत

(सन् १९८४ ई.)

पौष शु. (सो.)	१६ जन.
माघ कृ. (सो.)	३० ,,
माघ शु. (भौ.)	१४ फर.
फाल्गु. कृ. (भौ.)	२८ ,,
फाल्गु. शु.	१५ मार्च
चैत्र कृ.	२९ ,,
चैत्र शु.	१३ अप्रै.
वैशा. कृ. (श.)	२८ ,,
वैशा. शु. (श.)	१२ मई
ज्येष्ठ कृ. (सो.)	२८ ,,
ज्येष्ठ शु. (सो.)	११ जून
आषा. कृ. (भौ.)	२६ ,,
आषा. शु. (भौ.)	१० जुला.
श्राव. कृ.	२६ ,,
श्राव. शु.	८ अग.
भाद्र कृ.	२४ ,,
भाद्र शु.	७ सित.
आश्वि कृ. (श.)	२२ ,,
आश्वि शु.	७ अक्तू.
कार्ति. कृ. (सो.)	२२ ,,
कार्ति. शु. (भौ.)	६ नव.
मार्ग. कृ. (भौ.)	२० ,,
मार्ग. शु.	५ दिस.
पौष कृ.	२० ,,
सन् १९८५ ई.	
पौष शु.	४ जन.
माघ कृ.	१८ ,,
माघ शु.	३ फर.
फाल्गु. कृ.	१७ ,,
फाल्गु. शु. (सो.)	४ मार्च
चैत्र कृ. (सो.)	१८ ,,

श = शनि प्रदोष व्रत
भौ = भौम प्रदोष व्रत
सो = सोम प्रदोष व्रत

सत्यनारायण व्रत

(सन् १९८४ ई.)

पौष	१८ जन.
माघ	१६ फर.
फाल्गु.	१६ मार्च
चैत्र	१५ अप्रै.
वैशा.	१४ मई
ज्येष्ठ	१३ जून
आषाढ़	१२ जुला.
श्रावण	११ अग.
भाद्रपद	९ सित.
आश्वि	९ अक्तू.
कार्ति	८ नव.
मार्ग	७ दिस.
सन् १९८५ ई.	
पौष	६ जन.
माघ	५ फर.
फाल्गुन	६ मार्च

श्री गणेशचतुर्थी व्रत

(सन् १९८४ ई.)

माघ	२१ जन.
फाल्गु.	१९ फर.
चैत्र	२० मार्च
वैशा.	१८ अप्रै.
ज्येष्ठ	१८ मई
आषाढ़	१६ जून
श्रावण	१६ जुला.
भाद्रपद	१५ अग.
आश्विन	१४ सित.
कार्तिक	१३ अक्तू.
मार्ग.	१२ नव.
पौष	११ दिस.
सन् १९८५ ई.	
माघ	१० जन.
फाल्गुन	८ फर.
चैत्र	१० मार्च

संक्रान्तियां

सन् १९८४ ई.	
माघ	१४ जन.
फाल्गुन	१३ फर.
चैत्र	१३ मार्च
वैशाख	१३ अप्रैल
ज्येष्ठ	१४ मई
आषाढ़	१४ जून
श्रावण	१५ जुला.
भाद्रपद	१६ अग.
आश्वि.	१६ सित.
कार्तिक	१६ अक्तू.
मार्ग.	१५ नव.
पौष	१५ दिस.
सन् १९८५ ई.	
माघ	१३ जन.
फाल्गुन	१२ फर.
चैत्र	१४ मार्च

अमावस्याएं

सन् १९८४ ई.	
पौष	३ जन.
माघ	१ फर.
फाल्गुन	२ मार्च
चैत्र	१ अप्रै.
वैशा.	१ मई
ज्येष्ठ	३० ,,
आषाढ़	२९ जून
श्राव. (श.)	२८ जुला.
भाद्र.	२६ अग.
आश्वि.	२५ सित.
कार्ति.	२४ अक्तू.
मार्ग.	२२ नव.
पौष (श.)	२२ दिस.
सन् १९८५ ई.	
माघ (सो.)	२१ जन.
फाल्गुन	१९ फर.
चैत्र	२१ मार्च

सो = सोमवती | श. = शनैश्चरी

दशावतार जयन्तियां

(सन् १९८४ ई.)

श्री मत्स्य जयन्ती	४ अप्रै.
श्री रामनवमी	१० ,,
श्री परशुराम जयन्ती	३ मई
श्री नृसिंह जयन्ती	१३ मई
श्री कूर्म जयन्ती	१४ ,,
श्री बुद्ध जयन्ती	१५ ,,
श्री कल्कि जयन्ती	२ अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	१९ ,,
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	२० ,,
श्री वराह जयन्ती	२९ ,,
श्री वामन जयन्ती	६ सित.

मुस्लिम त्यौहार

सन् १९८४ ई.	
जन्म श्री हजरत अली	१६ अप्रै.
शब-ए-मिराज	३० ,,
शब-ए-बरात	१७ मई
शहादत-ए-हजरत अली	२२ जून
शब-ए-कद्र	२८ ,,
जमत-उल-विदा	२९ ,,
इदुल फित्र	१ जुला.
इदुज्जुहा	७ सित.
मुहर्रम	६ अक्तू.
चेल्हम	१४ नव.
आखरी चहारशम्बा	२१ ,,
ईद ए मिलाद	६ दिस.

क्रिश्चियन त्योहार

सन् १९८४ ई.	
पाम सण्डे	१५ अप्रै.
गुड फ्राइडे	२० ,,
ईस्टर सण्डे	२२ ,,
क्रिस्मस डे	२५ दिस.

जैन पर्व

(सन् १९८४ ई.)

मर्यादा महोत्सव	९ फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	१० अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	१४ ,,
श्री महावीर केवल ज्ञान दिवस	१० मई
श्री महावीर च्यवन	४ जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	१३ जुला.
चातुर्मास्य प्रारम्भ	१३ ,,
श्री जयाचार्य निर्वाण	२४ अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	२४ ,,
संवत्सरी	३१ ,,
श्री कालू निर्वाण	३१ ,,
आचार्य श्री तुलसी पट्टारोहण	३ सित.
आचार्य भिक्षु निर्वाण	८ ,,
श्री महावीर निर्वाण	२४ अक्तू.
जन्म आचार्य श्री तुलसी जी महाराज	२६ ,,
चातुर्मास्य समाप्त	८ नव.
श्री महावीर दीक्षा दिवस	१८ नव.
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा	१२ दिस.
सन् १९८५ ई.	
मर्यादा महोत्सव	२८ जन.

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९[illegible]
बुलन्दशहर (उ. प्र.)

महापुरुषों के जन्मदिन (१ जन.' ८४ से २१ मार्च' ८५, तक)

नेताजी श्री सुभाष	२३ जन. ८४	गोस्वा श्री तुलसीदास	३ अग. ८४
स्वामी विवेकानन्द जी	२४ ,, ,,	श्री महात्मा गाधी	२ अक्तू. ,,
श्री रामानन्दाचार्य	२८ ,, ,,	श्री माधवाचार्य	४ ,, ,,
श्री ला. लाजपतराय	२८ ,, ,,	श्री वीर वैरागी	६ नव. ,,
श्री गुरु रविदास जी	१६ फर ,,	श्री जवाहर लाल नेहरू	१४ ,, ,,
श्री रामकृष्ण परमहंस	४ मार्च ,,	श्री सत्य साई बाबा जी	२३ ,, ,,
श्री चैतन्य महाप्रभु	१७ ,, ,,	श्री स्वा विवेकानन्द	१३ जन ८५
श्री वल्लभाचार्य	२६ अप्रै. ,,	श्री रामानन्दाचार्य	१३ ,, ,,
छत्रपति शिवाजी	३ मई ,,	श्री नेताजी सुभाष	२३ ,, ,,
श्री जगद्गुरु शंकराचार्य	६ ,, ,,	श्री ला लाजपतराय	२८ ,, ,,
श्री रामानुजाचार्य	७ ,, ,,	श्री गुरु रविदास जी	५ फर. ,,
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर	७ ,, ,,	श्री रामकृष्ण परमहंस	२१ ,, ,,
श्री राणाप्रताप	२ जून ,,	श्री चैतन्य महाप्रभु	७ मार्च ,,

सिक्खों के गुरु पर्व (१ जन.' ८४ से २१ मार्च' ८५ ई. तक)

गुरुओं के अवतार दिन		गुरुओं के निर्वाण दिन	
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	१० जन. ८४	श्री गुरु अगद देव जी	५ अप्रै. ८४
श्री गुरु हरराय जी	१५ फर. ,,	श्री गुरु हरगोविन्द जी	६ ,, ,,
श्री गुरु तेग बहादुर जी	२० अप्रै. ,,	श्री गुरु हर किशन जी	१४ ,, ,,
श्री गुरु अर्जनदेवजी	२२ ,, ,,	श्री गुरु अर्जुन देव जी	३ जून ,,
श्री गुरु अगद देव जी	२ मई ,,	श्री गुरु रामदास जी	२९ अग. ,,
श्री गुरु अमरदास जी	१४ ,, ,,	श्री गुरु अमरदास जी	१० सितं. ,,
श्री गुरु हरगोविन्द जी	१४ जून ,,	श्री गुरु नानक देव जी	२० ,, ,,
श्री गुरु हरकिशन जी	२२ जुला. ,,	श्री गुरु हरराय जी	१९ अक्तू. ,,
श्री गुरु रामदास जी	१२ अक्तू. ,,	श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	२८ ,, ,,
श्री गुरु नानकदेव जी	८ नवं. ,,	श्री गुरु तेग बहादुर जी	२७ नवं. ,,
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	२९ दिस.		
श्री गुरु हरराय जी	३ फर. ८५		

गण्डमूल नक्षत्रों का आरम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.)

(१ जन' ८४ से २१ मार्च' ८५, तक)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.
३१ दिस. ८३	२२।२२	३ जन.	१।१२	१ अप्रै.	१४।२२	३ अप्रै.	१९।१४	१० जुला.	५।१०	१२ जुला.	५।४९	१९ अक्तू.	६।१३	२१ अक्तू.	२।५५
१० जन. ८४	१९।२४	१२ ,,	२३।२८	१० ,,	२२।१३	१२ ,,	१८।१२	१९ ,,	२०।४९	२२ ,,	२।१३	२७ ,,	९।८	२९ ,,	८।१
१९ ,,	१५।४६	२१ ,,	१०।१३	१९ ,,	३।१८	२१ ,,	३।३८	२९ ,,	१।१६	३० ,,	२०।१३	५ नवं.	२२।४५	८ नवं	४।१९
२८ ,,	४।१	३० ,,	७।१७	२८ ,,	२१।१०	१ मई	११।३३	६ अग.	१०।३८	८ अग.	१२।१	१५ नवं.	१२।२५	१७ नवं.	१०।३२
७ फर	२।२०	९ फर.	७।१५	८ मई	४।१३	१० ,,	११।१३	१६ ,,	३।५२	१८ ,,	९।४३	२३ ,,	२०।१५	२५ ,,	१८।१०
१६ ,,	३।५	१७ ,,	२०।५४	१६ ,,	१३।१०	१८ ,,	१२।५८	२५ ,,	११।२६	२७ ,,	६।४	३ दिसं.	६।८	५ दिसं.	११।४८
२४ ,,	९।५३	२६ ,,	१२।५६	२६ ,,	४।५१	२८ ,,	९।१६	२ सित.	१६।१८	४ सितं.	१७।३१	१२ ,,	१७।५०	१४ ,,	१६।१७
५ मार्च	८।१९	७ मार्च	१३।२३	४ जून	९।२९	६ जून	६।४४	१२ ,,	१०।८	१४ ,,	१६।५	२१ ,,	५।५९	२३ ,,	४।४
१४ ,,	१३।४६	१६ ,,	८।१५	१२ ,,	२२।२	१४ ,,	२२।४	२१ ,,	२१।४१	२३ ,,	१६।५७	३० ,,	१४।१४	१ जन., ८५	२०।१०
२२ ,,	१७।३४	२४ ,,	१२।२६	२२ ,,	१२।५७	२४ ,,	१७।४८	२९ ,	२३।४५	१ अक्तू.	२३।४८	९ जन. ८५	०।४४	१० ,,	२१।५७
				१ जुला	१६।१५	३ जुला.	१२।३३	९ अक्तू.	१६।१२	११ ,,	२१।५७	१७ ,,	१३।१८	१९ ,,	१२।२६
												२६ ,,	२२।२४	२९ ,,	४।३३
												५ फर	१०।१	७ फर.	६।५
												१३ ,,	१८।४६	१५ ,,	१८।३९
												२३ ,,	५।५८	२५ ,,	१२।१०
												४ मार्च	२०।३७	६ मार्च	१६।३०
												१३ ,,	०।४०	१५ ,,	०।३

पञ्चक का आरम्भ और समाप्तिकाल (१ जन. ८४ से २१ मार्च ८५ तक) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.
६ जन.	२१। ५	११ जन.	२१।४४	२४ अप्रै	२३।६	२९ अप्रै.	२३।३२	१२ अग.	६।१०	१७ अग.	६।५३	२९ नवं.	८।४२	४ दिसं.	९।६
३ फर.	४।४	८ फर.	४।५९	२२ मई	६।५८	२७ मई	७।१७	८ सितं.	१२।१७	१३ सितं.	१३।१०	२६ दिसं.	१७।३९	३१ ,,	१७।१७
१ मार्च	१०।९	६ मार्च	१०।५९	१८ जून	१५।१४	२३ जून	१५।३६	५ अक्तू.	१८।१०	१८ अक्तू.	१९।९	२३ जन., ८५	२।२७	२८ जन., ८५	१।२८
२८ ,,	१६।१४	२ अप्रै.	१६।५२	१५ जुला.	२३।१०	२० जुला.	२३।४१	२ नवं.	०।४५	७ नव.	१।३८	१९ फर.	९।५८	२४ फर.	९।१०
												१८ मार्च	१६।२		

पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., जम्मू-काश्मीर आदि के मेले (१ जन. '८४ से २१ मार्च' ८५ तक)

मेला	तारीख
लोहड़ी (दाऊं, पंजाब)	१४ जन' ८४
मुक्तसर (पंजाब)	१४ ,,
मस्तूआणा (पंजाब)	१ फर.
बसन्त पचमी	७ ,,
श्री महाशिवरात्रि	२९ ,,
होला (श्री आनन्दपुर साहिब)	१८ मार्च
श्री बीरमदास बधौछी (पटियाला)	२० ,,
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	२१ ,,
श्री शीतला माता (कराली)	२२ ,,
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	३१ ,,
बीमा (नानकसर, पं.)	२ अप्रै
माईसर खाना (पं.)	७ ,,
श्री मनसादेवी (हरियाणा)	९ ,,
बाहुफोर्ट (जम्मू)	९ ,,
मेला माता कांसादेवी (कांसल, नज़दीक चण्डीगढ़) भण्डारा माता कांसादेवी (कांसल)	१४ – १५ अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू)	२८ से ३० अप्रै.
पिंजौर (हरियाणा)	१ मई
डूंगरी जातर (मनाली)	१४, १५ मई
बंजार (हि. प्र.)	१४ से १८ मई
शाढ़ी जातर (नगर, हि. प्र.)	१८ से २३ मई

मेला	तारीख
क्षीरभवानी (काश्मीर)	७ जून '८४
श्रीगंगा दशहरा (हरिद्वार)	८ ,,
नौंमे गुरु नमाणी एकादशी, बरहे (भटिंडा)	९ जून.
भुन्तर (हि. प्र.)	१४ से १६ जून
श्री नयना देवी (हि. प्र.)	४ अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	४ ,,
श्री अमरनाथ (काश्मीर)	११ ,,
माणकपुर शरीफ (प.)	१२ से १४ अग.
कैलाश यात्रा (काश्मीर)	२५, २६ अग.
गोसाईआणा (कराली, प.)	२८ अग.
पात (काश्मीर)	३१ अग. १ सित.
बामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	६ सितं.
छपार (पं.)	९ ,,
गोइन्दवाल (प.)	१० ,,
श्री ज्वालामुखी-तारादेवी (हि. प्र.)	२ अक्तू.
दशहरा (कुल्लू)	४ ,,
शाकम्भरी देवी (उ. प्र.)	८ ,,
बीबबली (अमृतसर)	२४ ,,
रेणुका (हि. प्र.)	४ नव.
बाबा रुद्रानन्द नारी (ऊना) (हि. प्र.)	४ से ८ नव.
जन्म श्री बीरबैरागी नकोदर (प.)	६ नव.
रामतीर्थ (पंजाब)	८ ,,

मेला	तारीख
कपालमोचन (हर.)	८ नव.'८४
पुष्कर (राज.)	८ ,,
बालमेला	१४ ,,
परमण्डल (देविका स्नान, जम्मू)	२२ ,,
जोड़मेला (पंजाब)	२६ से २८ दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर)	२७ दिस.
लोहड़ी (दाऊं, पं.)	१३ जन. १९८५ ई.
मुक्तसर (प.)	१३ ,,
बसन्तपंचमी	२६ ,,
मस्तूआणां (प.)	३१ ,,
श्री महाशिव रात्रि	१७ फर.
होलामेला श्री आनन्दपुर साहब	७ मार्च
श्री गुरु रामराय देहरादून	११ ,,
बीरमदासे बधौछी (पटियाला)	१२ ,,
श्री शीतलामाता (कराली)	१४ ,,
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	२० ,,

मिलान पर विशेष लेख—

गुण-मिलान

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

गत वर्ष (सं० २०४०) के पचांग में भी 'मिलान-पद्धति' नामक लेख हमने प्रकाशित किया था। उस लेख को पढ़ने के बाद अनेक जिज्ञासु पाठकों ने हमसे मिलान सम्बन्धी अनेक शंकाओं के समाधान मांगे और हमसे उन्होंने 'मिलान' पर विस्तार से सरल-सुबोध शैली में कुछ ऐसा लेख प्रकाशित करने के लिए आग्रह किया, जिसे पढ़कर ज्योतिष का सामान्य ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी कुण्डलियों का मिलान कर सके। उनके इस आग्रह की पूर्ति के फलस्वरूप ही यह विस्तृत विशेष लेख पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस लेख में वर (लड़का) और कन्या (लड़की) के जन्म-नक्षत्र-राशि के आधार पर वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशीश, गण, भ, नाड़ी—इन आठ कूटों का सर्वांगपूर्ण सरलतम विवेचन है। परिश्रम से बनाए गए छः चक्र (कोष्ठक) यहां दिए गए है। आप बिना किसी कठिनाई के इन कोष्ठकों की सहायता से आठों कूटों का विचार कर लेंगे। गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषों के शास्त्र-प्रतिपादित परिहारों पर विशेष प्रकाश डाला गया है। अनेक ज्योतिषी लोग कई ऐसे लड़के-लड़कियों के मिलान को गण, षडष्टक नाड़ी आदि दोषों के कारण अक्सर अग्राह्य घोषित कर डालते हैं, जिन्हें शास्त्रोक्त परिहार-वाक्यों का अनुसरण करने पर किसी भी दृष्टि से अग्राह्य नहीं कहा जा सकता। परिहार-वाक्यों का अनुसरण करने पर गण, शत्रुषडष्टक, नाड़ी जैसे महादोष, जो सामान्य दृष्टि से विचार करने पर मिलान में उपस्थित होते हैं, दूर हो जाते हैं। इस लेख में इन महादोषों के परिहारों पर विशेष बल दिया गया है। लड़के एवं लड़की के राशीशों की मित्रता और एकाधिपत्य (दोनों की राशियों का स्वामी एक ही ग्रह) होने पर अनेक गण आदि दोषों का परिहार हो जाता है, इसका विचार तो अनेक ज्योतिषी कर ही लेते हैं लेकिन मुहूर्त्त-शास्त्रकारों का कहना है-यदि राशीश मित्रता और एकाधिपत्य न भी हो तो भी दोनों (लड़के, लड़की) के नवमांशेशों की मित्रता और नवमांशों का एक ही स्वामी (दोनों के नवमांशों का एक ही स्वामी) होने पर भी गण, शत्रुषडष्टक आदि महादोषों का परिहार हो जाता है—

"राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः।
गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्र-पौत्र-विवर्धनः॥

लेकिन लगभग सभी ज्योतिषी वर-कन्या के नवमांशेशों की मित्रता और उनके एकाधिपत्य का विचार करते ही नहीं हैं, क्योंकि यह विचार कुछ श्रमसाध्य है। इस लेख में लड़के-लड़की के नक्षत्र-चरणों द्वारा नवमांशेशों की मित्रता और उनके एकाधिपत्य को एक ही दृष्टि में बतला देने वाला एक अद्भुत कोष्ठक [मित्र नवांश-एकाधिपति नवांश चक्र (६)] में दिया गया है। आप देखेंगे आमतौर पर अग्राह्य बतलाए जाने वाले मिलानों में से लगभग ५० प्रतिशत मिलान इस चक्र (६) को प्रयोग में लाने पर सर्वथा ग्राह्य सिद्ध हो जाते हैं। इस चक्र (६) का निर्माण इस तरह से किया गया है कि लड़के-लड़की के नवमांशेशों की मित्रता एवं उनका एकाधिपत्य जानने के लिए यत्किञ्चित् भी गणना नहीं करनी पड़ती। लड़का एवं लड़की के नक्षत्र-चरणों से ही इसका ज्ञान एकदम हो जाता है। नाड़ी-महादोष के परिहारों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

अष्टकूट गुण चक्र (४) में लड़के-लड़की के नक्षत्रों के अष्टकूटों के अलग अलग गुण एवं उनका योग भी दिया गया है। "गुणमिलान" के बारे में इतना सांगोपांग, सुस्पष्ट विवेचन एवं इतनी उपयोगी सारणियां अन्यत्र शायद ही कहीं आपको मिलें।

यद्यपि हम इस लेख में कुण्डली-मिलान (मंगली-दोष-विचार) पर भी प्रकाश डालना चाहते थे, लेकिन गुण-मिलान के विवेचन में ही बहुत पृष्ठ भर गए है अतः मङ्गली दोष का विस्तृत विवेचन, परिहार आदि सहित अगले वर्ष के पचांग में देने का वचन देते है।

लीजिए अब गुणमिलान के बारे में पढ़िए —

गुणमिलान के लिए हमें नीचे लिखे चार पदार्थ (चीजें) चाहिए—

(१) वर का जन्मनक्षत्र एवं नक्षत्रचरण
(२) वर की जन्मकुण्डली
(३) कन्या का जन्मनक्षत्र एवं नक्षत्रचरण
(४) कन्या की जन्मकुण्डली

मिलान में वैसे तो विचारणीय छोटे-मोटे विषय अनेक है परन्तु उनमें से निम्नांकित दो विषय विशेष विचारणीय है :—

(१) अष्टकूट
(२) मंगली दोष

यहां हमे केवल अष्टकूटों का ही विचार करेंगे :—

अष्टकूट का अर्थ है, आठ कूट। ये आठ कूट निम्नांकित हैं :—

(१) वर्ण कूट
(२) वश्य कूट
(३) ताराकूट
(४) योनिकूट
(५) राशीशमैत्रीकूट अथवा ग्रहमैत्री कूट
(६) गणकूट
(७) भकूट अथवा राशिकूट
(८) नाड़ीकूट

इन आठ कूटों का निर्णय वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों एवं राशियों से किया जाता है। वर्णकूट का १ गुण, वश्यकूट के २ गुण, ताराकूट के ३ गुण, योनिकूट के ४ गुण,

शेष पृ. २१ पर

षट्कूट चक्र (१)

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र →	अश्वि	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण →	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च	च	द्वि.	द्वि.	द्वि	ज.	ज.	ज.	व.	व	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे	मा.	मू.	मू.	गो.	गो.	म.	व्या
राशीश	म	म	म	शु.	शु.	शु	बु.	बु	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म	दे.	रा.
नाड़ी	आ	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ,	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष,	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा	सि.	सि.	अ.	सि	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	मं.	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं	म.	आ.	आ.	म.	अं	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ	आ.	म.	अं.

ताराकूट चक्र (२)

नक्षत्र			अश्वि. म. मू.	भ. पू.फा. पू.षा.	कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन वि. पू.भा.	पुष्य अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.
अश्वि.	म.	मू.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
भ.	पू.फा.	पू.षा.	९	१	२	३	४	५	६	७	८
कृ.	उ.फा.	उ.षा.	८	९	१	२	३	४	५	६	७
रो.	ह.	श्रव.	७	८	९	१	२	३	४	५	६
मृ.	चि.	ध.	६	७	८	९	१	२	३	४	५
आर्द्रा	स्वा.	श.	५	६	७	८	९	१	२	३	४
पुन.	वि.	पू.भा.	४	५	६	७	८	९	१	२	३
पुष्य	अनु.	उ.भा.	३	४	५	६	७	८	९	१	२
आश्ले.	ज्ये.	रे.	२	३	४	५	६	७	८	९	१

भकूट चक्र (३)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मक.	कुम्भ	मीन
मेष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
वृष	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मिथुन	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
कर्क	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
सिंह	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
कन्या	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
तुला	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
वृश्चि.	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
धनु.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
मकर	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
कुम्भ	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
मीन	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
			नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू. फा.	उ.फा.	उ. फा.	ह.	चित्रा
			चरण	१,२,३,४,	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मेष	अश्विनी	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	४	२	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	०	१
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुणयोग	२८	३३	२८½	१८½	२१½	२२½	२६	१७	१९	२३½	३१½	२८	२१	२५	१५½	११	९	१३
	भरणी	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½
			योनि	२	४	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	१
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुणयोग	३४	२८	२९	१९	२१½	१४½	१८	२६	२७	३१½	२३½	२५½	२०	१८	२६	२१½	२०	४
	कृतिका	१	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	३	३	४	४	२	२	२	२	३	३	४	३	३	३	३	३	३	१
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुणयोग	२७½	२९	२८	१८	१०	१६½	२०	२०	२१	२५½	२६½	२३½	१६½	२०	२०	१५½	१५½	१८
वृष	कृतिका	२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	३	३	४	४	२	२	२	२	३	३	४	३	३	३	३	३	३	१
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुणयोग	१८½	२०	१९	२८	२०	२६½	१७½	१७½	१८½	२२	२३	२०	१८½	२२	२२	२१	२१	२३½
	रोहिणी	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	२	२	२	२	४	४	४	२	१	१	२	१	१	१	२	२	२	२
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुणयोग	२३½	२३½	११	२०	२८	३६	२५½	२३½	२२½	२६	२७	१२	१०½	२४½	२७	२६	२६	२०
	मृग.	१,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	२	२	२	२	४	४	४	२	१	१	२	१	१	१	२	२	२	२
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुण योग	२३½	१४½	१८½	२७½	३५	२८	१९	२४	२२½	२६	१९	२१	१९½	१५½	२४½	२३½	२६	१३

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
			चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मेष	अश्विनी	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	१	०	१	१	२	३	२	२	२	२	२	१	१	४	१	१	३	२
			रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	२२½	२६½	२२½	१८½	२४½	१४	१३	२५	२३½	२५	२६	२०	२०	१५	१६	१४½	२४½	२६
	भरणी	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	३	१	१	३	३	२	२	२	२	२	०	०	२	०	०	३	४
			रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	१३½	२९½	२१½	१७½	१७½	१९½	२०	१८	२६	२७½	२६	१०	१०	२०	२४	२२½	१७½	२६½
	कृतिका	१	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	३	१	१	३	३	२	०	२	२	०	१	१	३	१	२	३	३
			रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	२७½	१५½	१९½	१५½	१९½	२५½	२४½	१८	१२	१३½	११½	२५	२५	२७	१९	१७½	१९½	११½
वृष	कृतिका	२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	३	१	१	३	३	२	०	२	२	०	१	१	३	१	१	३	३
			रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण.	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	२२½	१०½	१४½	२०½	२४½	३०½	२०	१३½	७½	१२	१०	२३½	२९½	३१½	२३½	२०	२२	१४
	रोहिणी	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	१	०	०	१	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	८	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	१९	१५½	९½	१५½	२९½	२३½	१४	१९	११½	१६	१७	२०	२४½	२४½	३०½	२७	२७	१९
	मृग.	१,२	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	१	०	०	१	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	[illegible]
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	[illegible]
			गुण योग	१२	२५	१८½	२४½	२१½	२४½	१५	१०	१७	२१½	२५	१३	१९	२७	२९½	२६	१८	[illegible]

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि		वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रोहि.	मृग.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
नक्षत्र	चरण	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
		अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मृग.	३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
		वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
		तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
		योनि	२	२	२	२	४	४	४	२	१	१	२	१	१	१	२	२	२	२
		रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५
		गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
		भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
		नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
		गु.योग	२७	१८	२२	१९½	२७	२०	२८	३३	३१½	१९	१२	१४	२३½	१९½	२८½	३१½	३४	२१
आर्द्रा	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
		वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
		योनि	२	२	२	२	२	२	२	४	१	१	२	१	२	२	२	२	२	२
		रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५
		गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
		भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	७	७
		नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
		गु.योग	१९	२७	२१	२८½	२४½	२६	३४	२८	२५	१२½	२०	१३	२३½	२९½	२१½	२४½	२४½	२८
पुन.	१,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
		वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	३	३	३	३	१	१	१	१	४	४	३	४	०	०	३	३	३	२
		रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५
		गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
		भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
		नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
		गु.योग	२०	२७	२३	२०½	२२½	२३½	३१½	२४	२८	१५½	२२½	१७	२२½	२६½	२१½	२४½	२५½	२७½
पुन.	४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	३	३	३	३	१	१	१	१	४	४	३	४	०	०	३	३	३	२
		रा.मै.	४	४	४	½	½	½	१	१	१	५	५	५	५	५	५	१	१	१
		गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
		भ	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
		नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
		गु.योग	२२½	२९½	२५½	२२	२४	२५	१८	१०½	१४½	२८	३५	२९½	१६½	२०½	१५½	१८	१९	२१
पुष्य	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	३	३	४	४	२	२	२	२	३	३	४	३	३	३	३	३	३	१
		रा.मै.	४	४	४	½	½	½	१	१	१	५	५	५	५	५	५	१	१	१
		गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
		भ	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
		नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
		गु.योग	३०½	२१½	२६½	२२	२५	१८	११	१८	२१½	३५	२८	३०	१९½	१५½	२३½	२६	२७	१२
आश्ले.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
		तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	३	३	३	३	१	१	१	१	४	४	३	४	०	०	३	३	३	२
		रा.मै.	४	४	४	½	½	½	१	१	१	५	५	५	५	५	५	१	१	१
		गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
		भ	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
		नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
		गु.योग	२६	२४½	२२½	१९	११	१९	१२	१२	१५	२८½	२९	२८	१५	१५½	१८½	२१	२१	२६

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	श्रव	धनि.	धनि.	शत.	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.
			चरण	३, ४	१, २, ३, ४	१, २, ३	४	१, २, ३, ४	१, २, ३, ४	१, २, ३, ४	१, २, ३, ४	१	२, ३, ४	१, २, ३, ४	१, २	३, ४	१, २, ३, ४	१, २, ३	४	१, २, ३, ४	१, २, ३, ४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मिथुन	मृग.	३, ४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	१	०	०	१	२	२	२	२	२	२	२
			रा. मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	१४	२७	२०½	१४	११	१४	२३	१८	२५	२०	२३½	११½	१३	२१	२३½	२५½	१७½	२६½
	आर्द्रा	१, २, ३, ४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	०	०	४	२	२	२	२	१	१	२	१	१	२	२
			रा. मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	२१	२७	२१	१४½	१७	३	१६	२८	२८	२३	२३	१७½	१९	१२	१७	१९	२६½	२६½
	पुन.	१, २, ३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	२	३	२	२	३	३	१	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
			रा. मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	२०½	२८	२२	१५½	२१½	७	१४	२७	२७	२२	२३	१७	१८½	१४	१६	१८	२८	२७½
कर्क	पुन.	४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	२	३	२	२	३	३	१	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	१
			रा. मै.	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½	½	½	½	४	४	४
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	२०½	२८	२२	२०	२६	११½	८	२१	२१	२६	२७	२१	१२½	८	१०	१६	२६	२३½
	पुष्य	१, २, ३, ४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	१	३	१	१	३	३	२	०	२	२	०	१	१	३	१	१	३	३
			रा. मै.	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½	½	½	½	४	४	४
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	६	५	५	५	६
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	११½	२६½	२१	१७	१८	२१	१७	११	२१	२६	२५	१३	४½	१९½	१८	२४	१८	२७
	आश्ले.	१, २, ३, ४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	२	३	२	२	३	३	१	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
			रा. मै.	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½	½	½	½	४	४	४
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	८
			गुण योग	२५½	१२½	१७½	१५½	२०	२६	२२½	१६	८	१३	१३	२६	१७½	१९½	११½	१७½	[illegible]	[illegible]

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
			नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रोहि.	मृग.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
सिंह	मघा	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	०	०	०
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	३	३	२	३	१	१	१	२	०	०	३	०	४	४	३	३	३	२
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	४	४	४	५	५	५	५	५	५	४	४	४
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुण योग	२०	२०	१५½	१७½	९½	१७½	२१½	२२½	२०½	१६½	१९½	१६	२८	३०	२७½	१६½	१६½	२१½
	पू.फा.	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	०	०	०
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½
			योनि	३	३	३	३	१	१	१	२	०	०	३	०	४	४	३	३	३	२
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	४	४	४	५	५	५	५	५	५	४	४	४
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुण योग	२६	१८	२०	२१	२३½	१५½	१९½	२८½	२६½	२२½	१७½	१६½	३०	२८	३५	२२½	२२½	७½
	उ.फा.	१	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	०	०	०
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	३	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	३	०
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	४	४	४	५	५	५	५	५	५	४	४	४
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुण योग	१६½	२६	२०	२१	२६	२४½	२८½	२०½	२१½	१७½	२५½	१९½	२७½	३५	२८	१७	१६	१३½
कन्या	उ.फा.	२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	३	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	३	०
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुण योग	१३	२२½	१६½	२१	२६	२४½	३१½	२३½	२४½	२०	२८	२२	१७½	२५	१८	२८	२७	२४½
	हस्त	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	०	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	१
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुण योग	१०	२०	१७½	२२	२५	२६	३३	२२½	२४½	२०	२८	२३	१८½	२२½	१६	२६	२८	२८
	चित्रा	१,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुण योग	१३	५	१९	२३½	२०	१३	१९	२७	२५½	२१	१२	२७	२२½	८½	१४½	२४½	२७	२८

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	अष्टकूट	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
			चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
सिंह	मघा	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	२	३	२	२	३	३	२	२	१	१	२	२	२	३	२	२	३	२
			रा.मै.	०	०	०	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०	०	०	५	५	५
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	२४½	११½	१६½	२२½	२५½	३३	२५	१९	८½	३½	४½	१८½	२४½	२५½	१८½	१८½	१९½	१२
	पू.फा.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	३	२	२	३	३	२	२	१	१	२	२	२	३	२	२	३	३
			रा.मै.	०	०	०	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०	०	०	५	५	५
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	१०½	२५½	१८½	२४½	२३½	२५½	१९	१७	२४	१७½	१८½	४½	१०½	१९½	२४½	२४½	१७½	२५½
	उ.फा.	१	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	०	३	०	०	३	३	२	२	२	२	२	१	१	३	१	१	४	३
			रा.मै.	०	०	०	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०	०	०	५	५	५
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	१६½	२५½	१६½	२२½	३१½	१७½	९½	२५	२५	२०	२०	११½	१७½	११½	१५½	१५½	२६½	२५½
कन्या	उ.फा.	२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	०	३	०	०	३	३	२	२	२	२	२	१	१	३	१	१	४	३
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	१६½	२५½	१६½	१८	२७	१३	१४	२९½	२९½	२४½	२४½	१६	१६½	१०½	१४½	१७½	२८½	२७½
	हस्त	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	४	१	१	२	२	२	२	२	२	२	१	१	०	१	१	३	३
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	२०	२६½	१८½	२०	२६	१३	१५	२७	२८½	२३½	२४½	१८½	१९	८½	१३½	१६½	२६½	२७½
	चित्रा	१,२	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	१
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	०	०	८
			गुण योग	२०	१९	२६½	२८	११	२५	२८	१४	२२	१७	१८½	१५½	१६	२४	१६½	११½	१०½	१९½

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या का नक्षत्र	चरण	अष्टकूट	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रोहि.	मृग.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
		चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
			गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
चित्रा	३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
		वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
		तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
		योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
		रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
		गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
		भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
		नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
		गु.योग	२२½	१४½	२८½	२३½	२०	१२	१३	२१	१९½	२०½	११½	२६½	२५½	११½	१७½	१७½	२०	२१
स्वाती	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
		वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
		योनि	०	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	१
		रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
		गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
		भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
		नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
		गु.योग	२७½	२९½	१७½	१२½	१५½	२६	२७	२६	२८	२९	२७½	१४½	१३½	२५½	२५½	२५½	२७½	२१
विशा.	१,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
		वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
		रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
		गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
		भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
		नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
		गु.योग	२२½	२२½	२०½	१५½	१०½	१८½	१९½	२१	२१	२२	२१	१८½	१७½	१९½	१७½	१७½	१८½	२७½
विशा.	४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
		रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
		गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
		भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
		नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
		गु.योग	१६½	१६½	१४½	१९½	१४½	२२½	१२	१३½	१३½	१९	१८	१५½	२१½	२३½	२१½	१७	१८	२७
अनु.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	३	३	३	३	२	२	२	०	३	३	३	३	२	२	३	३	२	१
		रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
		गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
		भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
		नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
		गु.योग	२४½	१५½	१९½	२४½	२७½	२०½	१०	१५	२०½	२६	१८	२१	२४½	२०½	२९½	२५	२५	११
ज्येष्ठा	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
		तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
		योनि	३	३	३	३	३	२	२	०	३	३	३	३	२	२	३	३	२	१
		रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
		गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
		भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
		नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
		गु.योग	१२	१८½	२४½	२९½	२३½	२२½	१२	२	५	१०½	२०	२६	३१	२३½	१६½	१२	११	२४

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि → / अष्टकूट	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा	उ.षा	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा	पू.भा	उ.भा.	रेव.
			चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
				गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
तुला	चित्रा	३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	०	०	½	½	½
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	१
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	०	८	८	०	८
			गुण योग	२८	२७	३४½	२३½	६½	२०½	२८	१४	२२	२५	२६½	२२½	१८	१६	१६½	१२½	३½	१२½
	स्वाती	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½
			योनि	१	४	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	०	१	½	½	½
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	५	५	५	५	६
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	०	०
			गुण योग	२८	२८	२०	९	२१½	१६½	२३	२७	१९	२२	२३	२६½	२१	२०	२५	१९	१८½	१२½
	विशा.	१,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	३	३	१½
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	०
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	३४½	१९	२८	१७	१६	२०½	२८	२२	१४	१७	१७	३०	२४½	२६	२०	१४	१३	४½
वृश्चिक	विशा.	४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	२	३	१½
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	०	५
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	०
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	२२½	७	१६	२८	२७	३१½	२२½	१६½	८½	१२	१२	२५	२४	२२½	१९½	१९	१८	३½
	अनु.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	१	२	१	१	४	४	०	२	२	२	२	१	०	३	२	१	३	३
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	६½	२०½	१६	२८	२८	२९½	१५½	१३½	२१½	२५	२६	१२	१७	२६	२०½	२४	१८	२७
	ज्येष्ठा	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	१	२	१	१	४	४	०	२	२	०	२	१	१	१	१	१	३	३
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	०
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	१९½	१४½	१९½	३१½	३०	२८	१४	१६½	१६½	२०	२०	२५	२५	१८	१०	६½	२१	[illegible]

अष्टकूट गुण चक्र (४)

वर की राशि				मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र				अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रोहि.	मृग.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
चरण				१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
तुला	चित्रा.	३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
			रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गु.योग	२२½	१४½	२८½	२३½	२०	१२	१३	२१	१९½	२०½	११½	२६½	२५½	११½	१७½	१७½	२०	२१
	स्वाती.	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	०	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	१
			रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गु.योग	२७½	२९½	१७½	१२½	१५½	२६	२७	२६	२८	२९	२७½	१४½	१३½	२५½	२५½	२५½	२७½	२१
	विशा.	१,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
			रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गु.योग	२२½	२२½	२०½	१५½	१०½	१८½	१९½	२१	२१	२२	२१	१८½	१७½	१९½	१७½	१७½	१८½	२७½
वृश्चिक	विशा.	४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
			रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाडी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गु.योग	१६½	१६½	१४½	१९½	१४½	२२½	१२	१३½	१३½	१९	१८	१५½	२१½	२३½	२१½	१७	१८	२७
	अनु.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	३	३	३	३	२	२	२	०	३	३	३	३	२	२	३	३	२	१
			रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाडी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गु.योग	२४½	१५½	१९½	२४½	२७½	२०½	१०	१५	२०½	२६	१८	२१	२४½	२०½	२९½	२५	२५	११
	ज्येष्ठा	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	३	३	३	३	२	२	२	०	३	३	३	३	२	२	३	३	२	१
			रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाडी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गु.योग	१२	१८½	२४½	२९½	२२½	२२½	१२	२	५	१०½	२०	२६	३१	२३½	१६½	१२	११	२४

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा	उ.षा	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा	पू.भा.	उ.भा.	रेव
			चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
तुला	चित्रा	३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	१
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	२८	२७	३४½	२३½	६½	२०½	२८	१४	२२	२५	२६½	२३½	१८	२६	१८½	१२½	३½	१२½
	स्वाती	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½
			योनि	१	४	१	१	२	२	२	२	२	२	१	१	१	०	१	१	०	१
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	५
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	२८	२८	२०	९	२१½	१६½	२३	२७	१९	२२	२२	२६½	२१	२०	२५	१९	१६½	१२½
	विशा.	१,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	[illegible]	[illegible]
			योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	[illegible]
			रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	०	०
			गुण योग	३४½	१९	२८	१७	१६	२०½	२८	२२	१४	१७	१३	३०	२४½	२६	२०	१४	१२	४½
वृश्चिक	विशा.	४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	२	१	१
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१	१½
			योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	०	१	३	३	१
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	१	०	५
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	५	०
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	२२½	७	१६	२८	२७	३१½	२२½	१६½	८½	१२	१२	२५	२४	२४½	१९½	१९	१८	९½
	अनु.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	१	३	१½
			योनि	१	२	१	१	४	४	०	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाडी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	६½	२०½	१६	२८	२८	२९½	१५½	१३½	२१½	२५	२६	१२	११	२१	२४½	२४	१८	२५
	ज्येष्ठा	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	[illegible]
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	[illegible]
			योनि	१	२	१	१	४	४	०	२	२	२	२	१	१	१	१	१	३	[illegible]
			रा. मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	[illegible]
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	[illegible]
			भ	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	[illegible]
			नाडी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	[illegible]
			गुण योग	१९½	१४½	१९½	३१½	३०	२८	१४	१६½	१६½	२०	२०	२५	२४½	१६½	१०	[illegible]	२१	[illegible]

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
			नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रोहि.	मृग.	मृग.	आर्द्रा.	पुन.	पुन.	पुष्य.	आश्ले.	मघा.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त.	चित्रा.
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
धनु	मूल	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	४	१	१	२	१	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाडी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुण योग	१२	२०	२४½	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१७	२३½	२५	१९	९½	१३	१३	२७
	पू.षा.	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½
			योनि	२	२	०	०	१	१	१	२	२	२	०	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाडी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुण योग	२६	१८	१८	१२½	१८	१०	१८	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५	२८½	२७	१३
	उ.षा.	१	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	२	२	१	१	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाडी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुण योग	२४½	२६	१२	६½	१०½	१७	२५	२७	२७	२३	२३	९	८½	२४	२५	२८½	२८½	२१
मकर	उ.षा.	२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	२	२	१	१	२	२	२	२
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुण योग	२७	२८½	१४½	१२	१६	२२½	२०	२२	२२	२८	२८	१४	६½	२०	२१	२४½	२४½	१७
	श्रवण	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	२	२	०	०	१	१	१	२	२	२	०	०	०	२	२	२	२	२
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुण योग	२७	२६	१३½	११	१६	२५	२२½	२१	२२	२८	२६	१५	६½	१८½	२०	२३½	२४½	१९½
	धनिष्ठा	१,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	१	१	१	१	२	२	१	१	१	१
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाडी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुण योग	२०	११	२६	२३½	२०	१२	९½	१६½	१५	२१	१३	२७	१९½	५½	१२½	१५	१७½	१५½

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मकर		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.
			चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
धनु	मूल	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	२	२	१	२	०	०	४	२	२	२	२	१	१	२	१	१	२	२
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गु.यो.	२७	२१	२६	२३½	१५½	१५	२८	२८	२६½	१५	१५	२०	२८½	२१½	१४½	१६	२५	२६½
	पू.षा.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२	४	१	१	२	१	१	२	२
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गु.यो.	१३	२७	२१	१७½	१५½	१७½	२८	२८	३४	२२½	२३	६	१४½	२३½	२८½	३०	२३	३१
	उ.षा.	१	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	२	४	४	२	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गु.यो.	२१	१९	१३	९½	२३½	१७½	२६½	३४	२८	१६½	१४½	१५	२३½	२३½	२९½	३१	३१	२३
मकर	उ.षा.	२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	२	४	४	२	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गु.यो.	२४	२२	१६	१३	२७	२१	१६	२३½	१७½	२८	२६	२६½	१७	१७	२३	३०½	३०½	२२½
	श्रवण	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२	४	१	१	२	१	१	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गु.यो.	२६½	२२	१७	१४	२७	२२	१७	२३	१४½	२५	२८	२८	१८½	१८	२१	२८½	२९½	२२½
	धनिष्ठा	१,२	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	४	१	०
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गु.यो.	२२½	२४½	२९	२६	१२	२६	२१	७	१६	२६½	२७	२८	१८½	२३½	१९	२६½	१५½	२२½

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	अष्टकूट	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
			वर की राशि / नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रोहि.	मृग	मृग.	आर्द्रा.	पुन:	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
				गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
कुम्भ	धनिष्ठा	३, ४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	१	१	१	१	२	२	१	१	१	१
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुण योग	२०	११	२६	३०½	२७	१९	१२	१९	१७½	१२½	४½	१८½	२५½	११½	१८½	१७½	१९	१७
	शत.	१, २, ३, ४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	२	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	४	२	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	०	१
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुण योग	१५	२१	२८	३२½	२५½	२७	२०	१२	१३	६½	१४½	२०½	२६½	२०½	१२½	११½	८½	२५
	पू.भा.	१, २, ३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	१	१	१	१	२	२	१	१	१	१
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुण योग	१८	२५	२०	२४½	३१½	३१½	२४½	१७	१७	१२	२०	१२½	१९½	२५½	१६½	१५½	१५½	१७½
मीन	पू.भा.	४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	१	१	१	१	२	२	१	१	१	१
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
			गुण योग	१४½	२१½	१६½	१९	२६	२६	२५½	१८	१८	१७	२५	१७½	१७½	२३½	१४½	१६½	१६½	१८½
	उ.भा.	१, २, ३, ४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	३	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	३	०
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुण योग	२४½	१६½	१८½	२१	२६	१८	१७½	२५½	२८	२७	१९	२१	१८½	१६½	२५½	२७½	२६½	९½
	रेवती	१, २, ३, ४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	४	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	१
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुण योग	२५	२४½	११½	१४	१७	२६	२५½	२४½	२६½	२५½	२७	१४	१३	२३½	२३½	२५½	२६½	१९½

अष्टकूट गुण चक्र (४)

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
			चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
कुम्भ	धनिष्ठा	३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	०	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	४	१	०
			रा. मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	१८	२०	२४½	२५	११	२५	२९½	१४½	२४½	१८	१८½	१९½	२८	३३	२८½	१८	७	१४
कुम्भ	शत.	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½
			योनि	१	०	१	१	३	३	२	२	२	२	२	१	१	४	१	१	३	२
			रा. मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	०	०	०	०
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	२६	१९	२६	२६½	२१	१९	२२½	२४½	२४½	१८	१८	२४½	३३	२८	१६	८½	१७	१६
कुम्भ	पू.भा.	१,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	०	१	०
			रा. मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	०	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	१८½	२६	२०	२०½	२६½	११	१५½	२९½	३०½	२४	२३	२०	२८½	१६	२८	१३½	२२½	२०
मीन	पू.भा.	४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	४	१	०
			रा. मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुण योग	११½	१९	१३	१९	२५	९½	१५	२९	३०	२९½	२८½	२५½	१७	७½	१६½	२८	३३	३०½
मीन	उ.भा.	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	०	३	०	०	३	३	२	२	२	२	२	१	१	३	१	१	४	३
			रा. मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुण योग	२½	१९½	१२	१८	१९	२१	२४	२२	३०	२९½	२९½	१४½	६	१६	२१½	३३	२८	३५
मीन	रेवती	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	१	३	१	१	३	३	२	२	२	२	२	०	०	२	०	०	२	४
			रा. मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुण योग	१२½	११½	४½	१०½	२७	२२	२६½	२६	२१	२०½	२१½	२२½	१४	१६	१८	२९½	३४	२८

मित्रराशि-एकाधिपति राशिचक्र (५)

राशि	मित्र राशि, एकाधिपति राशि	राशि	मित्र राशि, एकाधिपति राशि	राशि	मित्र राशि, एकाधिपति राशि
मेष	मेष । सिंह । वृश्चिक । धनु । मीन ।	सिंह	मेष । कर्क । सिंह । वृश्चि. । धनु । मीन	धनु	मेष । सिंह । वृश्चि । धनु । मीन ।
वृष	वृष । मिथुन । कन्या । तुला । मकर । कुम्भ	कन्या	वृष । मिथुन । कन्या । तुला ।	मकर	वृष । तुला । मकर । कुम्भ ।
मिथुन	वृष । मिथुन । कन्या । तुला ।	तुला	वृष । मिथुन । कन्या । तुला । मकर । कुम्भ	कुम्भ	वृष । तुला । मकर । कुम्भ ।
कर्क	कर्क । सिंह ।	वृश्चिक	मेष । सिंह । वृश्चि. । धनु । मीन ।	मीन	मेष । सिंह । वृश्चि. । धनु । मीन ।

मित्रनवांश-एकाधिपति नवांश-चक्र (६)

वर या कन्या का जन्मकालिक नवांश (नक्षत्र एवं चरण)									नवांशेश	मित्रनवांश एवं एकाधिपतिनवांश (नक्षत्र एवं चरण)
अश्वि. १	रो. १	पुन. १	मघा १	हस्त १	विशा. १	मू. १	श्रव. १	पू. भा. १	मं.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.-(१ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(१, ४ चरण) कृ., आर्द्रा, आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रे.—(१, ४ चरण)
„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	शु.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.—(२, ३ चरण) भ., मृ., पुष्य., पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(२, ३ चरण) कृ., आर्द्रा., आश्ले., उ. फा., स्वा. ज्ये., उ. षा., श., रे.—(२, ३ चरण)
„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	बु.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.—(२, ३ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(२, ३ चरण)
„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	चं.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.—(४ चरण) भ., मृ., पुष्य., पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(१ चरण)
भर. १	मृ. १	पुष्य १	पू. फा. १	चि. १	अनु. १	पू. षा. १	ध. १	उ. भा. १	सू.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू. श्र., पू. भा.—(१, ४ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(१, ४ चरण) कृ. आर्द्रा, आश्ले. उ. फा. स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रे.—(१, ४ चरण)
„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	बु.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू. श्र., पू. भा.—(२, ३ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा. ध., उ. भा.—(२, ३ चरण)
„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	शु.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.—(२, ३ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु; पू. षा., ध., उ. भा.—(२, ३ चरण) कृ., आर्द्रा., आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श. रे.—(२, ३ चरण)
„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	मं.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू. श्र., पू. भा.—(१ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा. ध., उ. भा.—(१, ४ चरण) कृ., आर्द्रा., आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रे.—(१, ४ चरण)
कृति. १	आर्द्रा १	आश्ले. १	उ. फा. १	स्वा. १	ज्ये. १	उ. षा. १	शत. १	रेव. १	गु.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा—(१ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(१, ४ चरण) कृ., आर्द्रा, आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रे.—(१, ४ चरण)
„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	„ २	श.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.—(२ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(३ चरण) कृ., आर्द्रा, आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रे.—(२, ३ चरण)
„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	„ ३	श.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.—(२ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(३ चरण) कृ., आर्द्रा, आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रे.—(२, ३ चरण)
„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	„ ४	गु.	अश्वि., रो., पुन., म., ह., वि., मू., श्र., पू. भा.—(१ चरण) भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(१, ४ चरण) कृ., आर्द्रा, आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रे.—(१, ४ चरण)

पृष्ठ ६ का शेष

राशीश-मैत्रीकूट के ५ गुण, गणकूट के ६ गुण, भकूट के ७ गुण तथा नाड़ीकूट के ८ गुण माने जाते हैं। इस तरह इन आठों कूटों के कुल गुण ३६ होते हैं। वर-कन्या के नक्षत्रों-राशियों के अनुसार यदि कोई कूट ठीक न हो (अर्थात् दोषपूर्ण हो) तो उसके गुण या तो कुछ कम हो जाते हैं या ज्यादा दोष होने पर शून्य ही हो जाते हैं। इन आठों कूटों के गुणों को वर और कन्या के जन्म नक्षत्रों राशियों के अनुसार नीचे लिखी पद्धति से ज्ञात करके उनका योग कर लेना चाहिए।

पृष्ठ ७ पर दिए गए 'षट्कूट चक्र (१) से वर (लड़के) एवं कन्या के जन्म नक्षत्रों और उनके चरणों से उनके वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी अलग-अलग ज्ञात कर लें।*

तदनन्तर यहीं दिए गए 'ताराकूट चक्र (२) से वर और कन्या के नक्षत्रों एवं चरणों द्वारा दोनों की तारा संख्या मालूम कर लें। इस चक्र (कोष्ठक) के बाईं ओर वाले तीन कालमों में कन्या का नक्षत्र देखें और उसके आगे वर के नक्षत्र के नीचे कन्या की तारा (तारा संख्या) होगी। इसी प्रकार इस चक्र के बाईं ओर वाले तीन कालमों में वर के नक्षत्र को देखकर उसके आगे कन्या के नक्षत्र के नीचे वर की तारा (तारा संख्या) मिलेगी। जैसे—यदि कन्या का नक्षत्र कृत्तिका और वर का नक्षत्र शतभिषा हो तो 'ताराकूट चक्र (२)' में ऊपर बतलाई विधि से कन्या की तारा संख्या ४ और वर की तारा संख्या ७ मिली।

इसके बाद पृष्ठ ७ पर ही दिए गए 'भकूट चक्र (३) से वर और कन्या की राशियों द्वारा दोनों के भकूट भी जान लें। इस चक्र के बाएं कालम में कन्या की राशि देखकर उसके आगे वर की राशि के नीचे वर का भकूट और इसी प्रकार बाएं कालम में ही वर की राशि देखकर उसके आगे कन्या की राशि के नीचे कन्या का भकूट देखें। जैसे - कन्या की राशि वृष और वर की राशि धनु हो तो 'भकूट चक्र (३)' में उपरोक्त पद्धति से कन्या का भकूट ६ और वर का भकूट ८ मिला।

इस प्रकार ऊपर बतलाई विधि से 'षट्कूट चक्र (१)', 'ताराकूट चक्र (२)' एवं 'भकूट चक्र (३)'—इन तीनों चक्रों (कोष्ठकों) की सहायता से वर और कन्या के अष्टकूटों को जानकर उन्हें यथाक्रम (वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशीश, गण, भकूट, नाड़ी-इस क्रम में) ऊर्ध्वाधर पंक्ति में (ऊपर से नीचे की ओर) अलग-अलग आमने-सामने लिखें (अर्थात् कन्या के वर्ण के आगे वर का वर्ण, कन्या के वश्य के आगे वर का वश्य-इत्यादि प्रकार से लिखें)। उदाहरण के लिए—अश्विनी प्रथम चरण वाली कन्या और ज्येष्ठा द्वितीय चरण वाले वर के अष्टकूट इस प्रकार लिखे जाएंगे :—

*षटकूट चक्र (१) में दिए गए संक्षिप्त रूपों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है—वर्ण—क्ष.=क्षत्रिय, वै.=वैश्य, ब्रा.=ब्राह्मण, शू.=शूद्र। वश्य—च.=चतुष्पद, की.=कीट, व.=वनचर, द्वि.=द्विपद, ज.=जलचर। योनि—अ.=अश्व, ग.=गज, मे.=मेष, स.=सर्प, श्वा.=श्वान मा.=मार्जार, मू.=मूषक, म.=महिष, व्या.=व्याघ्र, मृ.=मृग, वा.=वानर, न.=नकुल, सि.=सिंह। राशीश—सू.=सूर्य, चं.=चन्द्र, मं.=मंगल, बु.=बुध, गु.=गुरु, शु.=शुक्र, श.=शनि। गण—दे.=देव, म.=मनुष्य, रा.=राक्षस,। नाड़ी—आ.=आदि (आद्य), म.=मध्य, अं.=अन्त्य।

अष्टकूट ↓	कन्या (अश्विनी प्रथम चरण)	वर (ज्येष्ठा द्वितीय चरण)
वर्ण	क्ष	ब्रा.
वश्य	च	की.
तारा	९	२
योनि	अ	मृ.
राशीश	मं.	मं.
गण	दे	रा.
भकूट	६	८
नाड़ी	आ.	आ.

इस प्रकार कन्या और वर के अष्टकूट पृथक्-पृथक् आमने-सामने लिख लेने के बाद पृष्ठ ८ से १९ तक दिए हुए 'अष्टकूट गुण चक्र (४)' द्वारा कन्या और वर के नक्षत्र एवं चरणों से इन आठ कूटों के गुण कन्या और वर के इन लिखे गए अष्टकूटों के बीच अलग-अलग लिख लें और उन गुणों का योग (जोड़) भी नीचे लिखें।

उदाहरण के तौर पर ऊपर दिए गए अश्विनी नक्षत्र प्रथम चरण की कन्या और ज्येष्ठा नक्षत्र द्वितीय चरण के वर के अष्टकूट और उनके गुण इस प्रकार लिखे जाएंगे :—

अष्टकूट ↓	कन्या (अश्वि. प्रथम चरण)	गुण ↓	वर (ज्येष्ठा द्वितीय चरण)
वर्ण	क्ष.	१	ब्रा.
वश्य	च.	१	की.
तारा	९	३	२
योनि	अ	३	मृ.
राशीश	मं.	५	मं.
गण	दे.	१	रा.
भकूट	६	०	८
नाड़ी	आ.	०	आ.
	गुणों का योग	१४	

गुण-मिलान में राशीश, गण, भकूट और नाड़ी—इन चार कूटों का विशेष ध्यान रखा जाता है। इन कूटों में भी नाड़ी कूट पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है।

यदि राशीशकूट का गुण ०, १ या ½ हो तो राशीशकूट दोष, गणकूट का गुण ० अथवा १ हो तो गणदोष, भकूट का गुण ० हो तो भकूट दोष और यदि नाड़ी कूट का गुण ० हो तो नाड़ी दोष माना जाता है। यदि वर और कन्या की राशियां एक-दूसरे से छठे और आठवें हों तो 'षडष्टक' नाम का भकूट होता है। यदि एक-दूसरे से छठे व आठवें पड़ने वाली वर-कन्या की राशियों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो

षडष्टक नाम का 'भकूट दोष' होता है, जो भकूट दोषों में सबसे बड़ा दोष माना जाता है।

राशीशकूट दोष का परिहार—राशीशकूट दोष का परिहार नीचे लिखी स्थितियों में हो जाता है :—

(१) वर एवं कन्या की राशि एक ही हो लेकिन दोनों के नक्षत्र अलग-अलग हों।

(२) वर-कन्या का नक्षत्र एक ही हो परन्तु राशियां भिन्न-भिन्न हों।

(३) वर-कन्या का नक्षत्र एवं राशि एक ही हो परन्तु चरण (नक्षत्र चरण) भिन्न-भिन्न हों।

(४) भकूट के गुण ७ हों।

(५) वर-कन्या के नवांशेश (चन्द्रमा के नवांशों के स्वामी) यदि परस्पर मित्र हों या दोनों का नवांशेश एक ही ग्रह हो।

वर-कन्या के नवांशेशों की परस्पर मित्रता और नवांशेशों पर एकाधिपत्य जानने के लिए पृ.२० दिया गया "मित्रनवांश, एकाधिपति नवांश चक्र (६)" को प्रयोग में लाइए। इस चक्र में बाईं ओर वाले पहले नौ कालमों में नक्षत्र एवं उनके चरण दिए गए हैं। इन कालमों में लड़की का नक्षत्र एवं चरण ढूंढें, उसके आगे दाईं ओर वाले अन्तिम ("मित्रनवांश एवं एकाधिपतिनवांश" वाले) कालम में यदि वर का नक्षत्र चरण मिल जाए तो दोनों (वर-कन्या) के नवांशेशों की मित्रता अथवा दोनों के नवांशों का एकाधिपत्य (दोनों के नवांशों का एक ही स्वामी) समझना चाहिए। (इस चक्र में बाईं ओर वाले नौ कालमों में वर का नक्षत्र चरण और अन्तिम कालम में लड़की का नक्षत्र चरण भी देखा जा सकता है)। ध्यान रहे—इस चक्र के अन्तिम कालम में नौ-नौ नक्षत्रों के आगे कोष्ठकों में जो चरण लिखे गए हैं वे प्रत्येक नक्षत्र से सम्बन्ध रखते हैं। जैसे—इस चक्र में जहां अन्तिम कालम में "भ., मृ., पुष्य, पू. फा., चि., अनु., पू. षा., ध., उ. भा.—(४ चरण)" लिखा हुआ है, वहां भर. का चतुर्थ-चरण, मृग. का चतुर्थ-चरण, पुष्य का चतुर्थ-चरण—इत्यादि समझना चाहिए। इसी प्रकार इसी चक्र के अन्तिम कालम में जहां "कृ., आर्द्रा, आश्ले., उ. फा., स्वा., ज्ये., उ. षा., श., रेव—(१, ४ चरण)" लिखा है, इसका अर्थ है—कृत्ति. का प्रथम और चतुर्थ चरण, आर्द्रा का प्रथम और चतुर्थ-चरण, आश्लेषा का प्रथम और चतुर्थ-चरण—इत्यादि। इस चक्र के दसवें कालम में नवांशेश ग्रह का नाम लिखा गया है।

ध्यान दें—नवांशेशों की मित्रता और नवांशों पर एकाधिपत्य (अर्थात् दोनों के नवांशों का एक ही स्वामी) होने पर भी 'राशीशकूट दोष' का परिहार तब तक नहीं होगा जब तक कि नवमांशेश बलवान् (उच्चस्थ, स्वराशिस्थ, उदित, या शुभ-ग्रह दृष्ट, त्रिकोणस्थ आदि) न हो—ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। कुछ आचार्य परिहार के लिए नवमांशेशों की बलवत्ता की उपेक्षा भी करते हैं।

राशीशकूट दोष का परिहार होने पर राशीशकूट का गुण (जो 'अष्टकूट गुण चक्र (४)' से मिला है) ० हो तो २½, ½ हो तो ३, १ हो तो ३½ समझने चाहिएं।

गणदोष का परिहार—गणदोष का परिहार नीचे लिखी स्थितियों में होता है :—

(१) वर और कन्या की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों।

(२) वर और कन्या का नक्षत्र एक हो और राशियां भिन्न-भिन्न हों।

(३) वर और कन्या का नक्षत्र और राशि एक हों परन्तु नक्षत्र-चरण भिन्न-भिन्न हों।

(४) यदि कन्या का मनुष्य गण एवं वर का राक्षस गण हो तो गणदोष का परिहार हो जाता है, यदि राशीशकूट के गुण ५ और भकूट के गुण ७ हों।

(५) यदि कन्या राक्षस गण की एवं वर मनुष्य गण का हो तो गणदोष का परिहार हो जाता है यदि वश्य के गुण २, तारा के ३, योनि के ४, राशीश के ५, भकूट के ७ और नाड़ी के ८ गुण हों। दूसरे शब्दों में यूं समझिए—यदि २९ गुण मिलें तो गणदोष का परिहार हो जाता है।

(६) वर-कन्या की राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों या उनका स्वामी एक ही ग्रह हो (राशीश मैत्री, एकाधिपत्य के लिए पृ.२० पर चक्र (५) देखें।)

(७) वर, कन्या के नवांशेश परस्पर मित्र हों या दोनों के नवांशों का स्वामी एक ही ग्रह हो। (नवांशेश मित्रता, नवांशेशों का एकाधिपत्य जानने के लिए पृ.२० पर चक्र (६) देखें।)

गणदोष का परिहार हो जाने पर गणकूट के १ गुण की जगह ४, ० गुण की जगह ३ गुण समझने चाहिएं।

भकूटदोष का परिहार—भकूटदोष का नीचे लिखी स्थितियों में परिहार हो जाता है :—

(१) वर-कन्या की राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों या उन दोनों की राशियों का स्वामी एक ही ग्रह हो।

(२) वर-कन्या के राशीश परस्पर शत्रु हों तो वर-कन्या के नवांश के स्वामियों में मित्रता या उन दोनों का स्वामी एक ही होने पर दुष्ट भकूट का परिहार होता है। यहां नवांशेशों का बली (उच्चस्थ, उदित आदि) होना आवश्यक है।

(३) ताराकूट के गुण ३ हों।

(४) वश्यकूट के गुण २ हों।

भकूटदोष का परिहार होने पर 'अष्टकूट चक्र (४)' से प्राप्त ० गुण के स्थान पर ३½ गुण समझने चाहिए।

नाड़ीकूट दोष का परिहार—इन स्थितियों में नाड़ीदोष का परिहार हो जाता है :—

(१) वर-कन्या की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों।

(२) वर-कन्या का नक्षत्र एक हो और राशियां भिन्न-भिन्न हों।

(३) वर-कन्या की राशि और नक्षत्र दोनों एक हो परन्तु नक्षत्र-चरण भिन्न-भिन्न हों।

(४) पादवेध न हो।

यदि वर-कन्या के नक्षत्रों के चरण प्रथम और चतुर्थ या द्वितीय और तृतीय हो

से पादवेध कहलाता है अर्थात्—यदि वर का जन्म किसी नक्षत्र के प्रथम चरण में तथा कन्या का जन्म किसी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हो अथवा वर का जन्म किसी नक्षत्र के द्वितीय चरण में और कन्या का तृतीय चरण में हो तो पादवेध कहलाता है। इसी प्रकार कन्या का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में एवं वर का चतुर्थ चरण में अथवा कन्या का जन्म द्वितीय चरण में, वर का जन्म तृतीय चरण में हो तो भी पादवेध कहलाता है। यदि इस प्रकार का पादवेध न हो तो नाड़ीदोष का परिहार माना जाता है।

पादवेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार को मुहूर्त्त-मार्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि आदि के रचयिता अनेक आचार्यों एवं ऋषियों ने मान्यता नहीं दी है, लेकिन यह परिहार भारत के ज्योतिषियों में काफी प्रचलित है।

ध्यान दें :—एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में उत्पन्न वर-कन्या का विवाह सर्वत्र वर्जित लिखा है। इसका कोई परिहार नहीं है। नाड़ीदोष का परिहार न मिले तो मिलान सर्वथा निन्दित समझना चाहिए।

नाड़ी दोष का परिहार मिलने पर 'अष्टकूट गुण चक्र (४)' से मिले नाड़ीकूट के ० गुण को ४ गुण समझना चाहिए।

इस प्रकार 'अष्टकूट चक्र (४)' से मिले अष्टकूटों के गुणों के योग में ऊपर बतलाए अष्टकूटों के परिहारों से मिले सभी गुण भी जोड़ दीजिए। जोड़ने पर यदि गुणों की संख्या १६ से कम हो तो मिलान ठीक नहीं समझना चाहिए। ऐसी स्थिति में उस वर और कन्या का सम्बन्ध नहीं हो सकेगा। यदि यह गुणों का योग १६ हो या इससे अधिक हो तो मिलान ठीक समझना चाहिए। लेकिन तब भी दैवज्ञ को उन दोनों (लड़के-लड़की) का सम्बन्ध करने की अनुमति तब तक नहीं देनी चाहिए, जब तक उन दोनों की कुण्डलियों में मंगली दोष का विचार अच्छी प्रकार नहीं कर लिया जाता।

ध्यान रहे :—यदि नाड़ी दोष हो और उसका कोई ऊपर बतलाया गया परिहार भी न मिले तो गुणों का योग भले ही १६ हो या इससे अधिक क्यों न हो तब भी उन दोनों का सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

स्पष्टता के लिए नीचे मिलान के छः उदाहरण दिए जा रहे हैं।

उदाहरण नं० (१) :—

अष्टकूट ↓	लड़की (अश्वि. प्रथम चरण) (मेष राशि)	गुण ↓	लड़का (ज्येष्ठा द्वितीय चरण) (वृश्चिक राशि)
वर्ण	क्ष	१	ब्रा.
वश्य	च.	१	की
तारा	९.	३	२
योनि	अ.	३	मृग
राशीश	मं.	५	मं.
गण	देव	१	रा.
भकूट	६	०	८
नाड़ी	आ.	०	आ.
	गुणयोग	१४	

यहां मेष एवं वृश्चिक एकाधिपति-राशियां (ऐसी राशियां जिनका अधिपति एक ही है) हैं। अतः राशि-एकाधिपत्य से गणदोष और षडष्टक भकूट तो दूर हो जाते हैं लेकिन नाड़ी दोष रहता ही है, इसका यहां कोई परिहार नहीं है। अतः मिलान ठीक नहीं है।

उदाहरण नं० (२) :—

अष्टकूट ↓	लड़की (मघा २, सिंह राशि)	गुण ↓	लड़का (उ. भा. ४, मीन राशि)
वर्ण	क्ष.	१	ब्रा.
वश्य	व.	१	ज.
तारा	८	१½	३
योनि	मृ.	३	गो.
राशीश	सू.	५	गु.
गण	रा.	०	म.
भकूट	६	०	८
नाड़ी	अं.	८	म.
	गुणयोग	१९½	

यहां राशीश-मैत्री से गण और षडष्टक दोषों का परिहार हो जाता है अतः मिलान ठीक है। यहां गण दोष के परिहार से ३ और षडष्टक भकूट दोष के परिहार से ३½ गुण और बढ़ जाएंगे। इस प्रकार १९½ की जगह २६ गुण यहां माने जाएंगे।

उदाहरण नं० (३) :—

अष्टकूट ↓	लड़की (कृत्ति. ४, वृष राशि)	गुण ↓	लड़का (पुष्य ४, कर्क राशि)
वर्ण	वैश्य	१	ब्रा.
वश्य	चतु.	१	ज.
तारा	६	१½	५
योनि	मे.	४	मे.
राशीश	शु.	½	चं.
गण	रा.	०	दे.
भकूट	११	७	३
नाड़ी	अं.	८	म.
	गुणयोग	२३	

यहां राशीश मैत्री नहीं है एवं एकाधिपत्य भी नहीं है, लेकिन नवांशेश मैत्री से गणदोष का परिहार है, अतः मिलान ठीक है। गणदोष के परिहार के कारण यहां २३ गुणों की जगह २६ गुण माने जाएंगे।

शेष पृ. १६४ पर देखें

ग्रहणविवरण (सं. २०४१ वि.)

वि.सं. २०४१ में (२ अप्रैल, ८४ से २१ मार्च, ८५ तक) भूगोल पर निम्नलिखित केवल दो ही ग्रहण दिखाई पड़ेंगे :—

(१) कंकण सूर्यग्रहण (३०-३१ मई १९८४ ई०)

(२) खग्रास सूर्यग्रहण (२३ नवम्बर १९८४ ई०)

ये दोनों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। इस वर्ष चन्द्रमा का कोई भी ग्रहण भूगोल पर नहीं होगा।

भारत में अदृश्य उपरोक्त ग्रहणों का विवरण इस प्रकार है :—

(१) कंकण सूर्यग्रहण (३०-३१ मई, १९८४ ई०)—यह ग्रहण उत्तरी अमेरिका, ग्रीनलैंड, यूरोप में तथा द. अमेरिका के पश्चिमोत्तरी भाग (कोलम्बिया, वेनजुएला आदि) एवं अफ्रीका के माली, नाइजीरिया, अल्जीरिया, मौरितानिया, घाना, मोरक्को आदि देशों में नजर आयेगा। इस ग्रहण की कंकण-आकृति मैक्सिको, मोरक्को एवं अल्जीरिया में देखी जा सकेगी। इस ग्रहण के समय भारत में ३० और ३१ मई की मध्यगत रात्रि होगी।

(२) खग्रास सूर्यग्रहण (२३ नवम्बर, १९८४ ई०)—यह ग्रहण आस्ट्रेलिया, फिलिपाइन्स, न्यूजीलैंड, तस्मानिया, एण्टार्कटिका अर्जेंटायना, चिली एवं इण्डोनेशिया के कुछ द्वीपों में दिखाई देगा। इस ग्रहण की खग्रास-आकृति New Guinea एवं एण्टार्कटिका से ऊपर पेसिफिक सागर में दिखाई देगी। इस ग्रहण के समय भारत में रात्रि होगी।

इन दोनों ग्रहणों के अलावा इस वर्ष तीन (१५ मई, १३ जून और ८-९ नवम्बर, १९८४ ई० को) चन्द्रमा के 'उपच्छाया ग्रहण' भी होंगे। उपच्छाया ग्रहण में चन्द्रमा का बिम्ब कुछ धुंधला पड़ जाता है। उपच्छाया ग्रहण वस्तुतः चन्द्र-ग्रहण नहीं होता। इस वर्ष कोई चन्द्रग्रहण नहीं है। इस वर्ष भारत में न तो कोई सूर्य ग्रहण ही नजर आएगा और न ही कोई चन्द्र-ग्रहण।

सन् १९८५ से १९९९ ई. तक के चन्द्रग्रहण

चन्द्र ग्रहण की तारीख	चन्द्र ग्रहण का मध्यकाल घं० मि०	चन्द्र ग्रहण की तारीख	चन्द्र ग्रहण का मध्यकाल घं० मि०	चन्द्र ग्रहण की तारीख	चन्द्र ग्रहण का मध्यकाल घं० मि०
५ मई १९८५ ई.	१:२३ (रात्रि)	१७ अग. १९८९ ई.	८:३८ (प्रातः)	२९ नवं. १९९३ ई.	१२:१२ (दिन)
२८ अक्तू. १९८५ ई.	११:१० (रात्रि)	१० फर. १९९० ई.	०:४६ (रात्रि)	२५ मई १९९४ ई.	९:१० (रात्रि)
२४ अप्रै. १९८६ ई.	६:१७ (सायं)	६ अग. १९९० ई.	७:५१ (सायं)	१५ अप्रै. १९९५ ई.	५:४० (सायं)
१८ अक्तू. १९८६ ई.	०:५३ (रात्रि)	२१ दिस. १९९१ ई.	३:५५ (दिन)	४ अप्रै. १९९६ ई.	५:३८ (प्रातः)
७ अक्तू. १९८७ ई.	९:१४ (प्रातः)	१५ जून १९९२ ई.	१०:२० (प्रातः)	२७ सित. ,, ,,	८:२२ (प्रातः)
२७ अग. १९८८ ई.	४:२७ (दिन)	१० दिस. १९९२ ई.	५:१२ (प्रातः)	२४ मार्च १९९७ ई.	१०:१८ (प्रातः)
२० फर. १९८९ ई.	९:१४ (रात्रि)	४ जून १९९३ ई.	६:३४ (सायं)	१७ सित. ,, ,,	०:२१ (रात्रि)
				२८ जुला. १९९९ ई.	४:५६ (सायं)

नोट :—(i) ऊपर दिया गया चन्द्रग्रहण का मध्यकाल भा. स्टै. टा. है।

(ii) ई. सन् १९९८ में कोई चन्द्रग्रहण नहीं होगा।

(iii) ऊपर दिए गए चन्द्रग्रहणों में से सिर्फ वही चन्द्र ग्रहण भारत में दिखाई देंगे जिन ग्रहणों के समय भारत में रात्रि होगी।

(iv) ऊपर दिया गया चन्द्रग्रहणमध्यकाल लगभग है।

स्नान-दान-जप के लिए ग्रहण के समान महत्त्वपूर्ण योग (सं. २०४१)

कुछ ऐसे पर्व (योग) भी हैं जो प्रतिवर्ष नहीं आते। इन पर्वों की घटना के लिए कुछ विशेष तिथि, वार, नक्षत्र और योगों का मेल होना आवश्यक है इस प्रकार का मेल कभी-कभी घटित होता है। यहां हम कुछ इन योगों के बारे में बतला रहे हैं। इन योगों के समय स्नान, दान, जप करने का माहात्म्य कहीं-कहीं तो ग्रहणों से भी अधिक माना गया है।

पद्मक योग—सूर्य की विशाखा नक्षत्र में स्थिति के समय कृत्तिका नक्षत्र होने पर पद्मक योग बनता है। इस योग के समय तीर्थराज पुष्कर (राज.) में स्नान दान का बहुत माहात्म्य है। षष्ठी तिथि की समाप्ति और सप्तमी तिथि का प्रारम्भ यदि रविवार के दिन हो तब भी पद्मकयोग माना जाता है। किसी भी तीर्थ में इस योग के समय स्नान, दान, जप करने का माहात्म्य हजारों सूर्य ग्रहणों के समान शास्त्रकारों ने लिखा है।

वारुणी-महावारुणी-महामहावारुणी पर्व—चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के समय शतभिषक नक्षत्र होने पर वारुणी पर्व, चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के समय शतभिषक् नक्षत्र और शनिवार हो तो महावारुणी पर्व और इसी प्रकार चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के समय शतभिषक् नक्षत्र, शनिवार और शुभ योग मिल जाएं तो महामहावारुणी पर्व कहलाता है। इन योगों के समय गंगा में स्नान, दान, जप का करोड़ों सूर्यग्रहणों के समान भारी माहात्म्य शास्त्रों में लिखा गया है।

गजच्छाया योग—आश्विन कृष्ण अमावस्या के समय हस्तनक्षत्र हो और उस समय सूर्य भी हस्त नक्षत्र में ही हो तो 'गजच्छाया योग' बनता है। इस योग में पितृ-श्राद्ध और दान का माहात्म्य माना गया है।

अर्धोदय, महोदय योग—माघी अमा. के समय रविवार, श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग मिल जाएं तो 'अर्धोदय योग' बनता है। माघी अमा. के समय यदि रविवार श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग में से कोई दो ही मिलें तो 'महोदय योग' माना जाता है। इन दोनों योगों के समय किसी भी तालाब या नदी में स्नान का फल गंगास्नान के समान माना गया है। त्रिवेणी संगम में इन योगों के समय वि[illegible] माहात्म्य लिखा है। निर्धनों को इन योगों में दान देना बहुत ही पुण्यप्रद कहा गया

क्षयाधिमास चर्चा

शक्तिधर शर्मा

वि० सं० २०३९ (ई० १९८२-८३) में दशहरा दीपावली, वसन्त पञ्चमी, शिवरात्रि, होली आदि छः मास तक के व्रत पर्वों में एक-एक मास का अन्तर पञ्चांगों में रहा। इस बारे में जनता का हमारे साथ अभी तक पत्रव्यवहार चलता रहा। क्षयमास का अर्थ लुप्तमास नहीं होता, न ही क्षयतिथि लुप्त-तिथि होती है, न ही क्षय-बार्हस्पत्य वर्ष लुप्तवर्ष होता है। क्षय शब्द एक सापेक्ष लाक्षणिक प्रयोग है। दार्शनिक एवं गणितीय की दृष्टि से न तो काल का लोप हो सकता है, न ही दो मास एक दूसरे में घुस सकते हैं—हां वस्तुतः दोषपूर्ण गणितीय परिभाषा के कारण लुप्तमास प्रतीत होता है। दो मासों के व्रतपर्व एक मास में मनाने का आग्रह करने वाले पञ्चांगकार अपने पिछले पञ्चांगों को तो देखें—व्रतपर्वों के क्रम में गड़बड़ी, व्रतपर्वों के कालों की अवधि में कमी एवं कुछ व्रतपर्वों के प्रारम्भ की तारीखों से पहले ही समाप्ति की तारीखें आईं। पत्र-व्यवहार में जब हमने उनसे इनका उत्तर पूछा गया, तब वे लोग मूक रहे।

हमें गलत प्रचार का दोष दिया गया। नाथद्वारा के एक पंचागकर्त्ता से हमारे पक्ष में निर्णय की सूचना मिली परन्तु वे अन्ततक निर्णय बदलते रहे। हमारे पास सभी पत्र मौजूद हैं। जगद्गुरु श्री पुरीपीठाधीश शंकराचार्य जी के साथ वाराणसी में संस्कृतविश्वविद्यालय के पञ्चांगकर्त्ता के साक्ष्य में सन् १९८१ में बात हुई थी—तब वे संसर्प को शुद्ध स्वीकार कर रहे थे। बाद में किन स्थितियों में उन्होंने विरुद्ध मत पर हस्ताक्षर किये? यह हम नहीं जानते। चण्डीगढ़ सभा में उन्होंने अव्यवहित संसर्प को ही शुद्ध मानने पर बल दिया जबकि व्यवहित संसर्प में भी तो व्रतपर्वों में अव्यवस्था, लोप व प्रारम्भ होने से पूर्व समाप्त होने की स्थिति पैदा होती है। वस्तुस्थिति तो यह है—कि यह पञ्चांगकारों की पुरानी चाल रही है। जब भी व्यवहित क्षयमास के समय गलती हुई यह युक्ति दे दी।

श्री कमलाकर भट्ट ने ३०१ वर्ष पूर्व यही स्थिति पाकर यह युक्ति दी। उस समय वाराणसी में संसर्प को शुद्ध माना गया। १६० वर्ष पूर्व वे भी गलती कर बैठे, जो साधारणतया स्वाभाविक था। उस समय उनके विरोधपक्ष के कारण दो-दो बार व्रतपर्व मनाए गए। नेपाल में पण्डितों को जेलयातनाएं भी सहनी पड़ीं। राजस्थान से प्रकाशित लक्ष्मण पत्रिका में कुछ तथ्य प्रकाशित हुए हैं—कि १९ वर्षपूर्व ब्रह्मलीन करपात्री जी काशी गए तब वे संसर्प को शुद्ध मानने के पक्ष में थे। परन्तु वहां के पूर्व प्रकाशित पञ्चांगों के सम्पादकों एवं पं० श्री राजेश्वर द्राविड़ शास्त्री जी के अनुरोध से वे उनके पक्ष में हो गए। १९ वर्ष पूर्व शृंगेरीपीठ में संसर्प मास को शुद्ध माना गया। किञ्च १६० वर्ष पूर्व का तेलगू में संसर्पपक्षीय पञ्चांग (जिसके दशहरा, दीपावली वाले संसर्प मास के पृष्ठ हमने सं० २०४० के पञ्चांग में प्रकाशित किये तथा अपनी पुस्तक "क्षयाधिमास विमर्श" में भी दिये हैं।) जगद्गुरु पूज्य शृंगेरीपीठाधीश श्री शंकराचार्य जी के पूर्वाश्रम के भागिनेय श्री चिन्तामणपाटी जी से प्राप्त हुआ। उनके परिवार ने संसर्प पक्ष को ही शास्त्रीय माना। इससे जनता स्वयं वास्तविक स्थिति समझ सकती है।

इस विवाद में कुछ दैनिक समाचार-पत्रों, साप्ताहिकहिन्दुस्तान, धर्मयुग आदि में शास्त्रीयदृष्टि से अप्रामाणिक लेख प्रकाशित हुए। इनके द्वारा विरुद्ध प्रचार के बावजूद भी भारत में सर्वत्र ही दो बार पर्व मनाए गए। उड़ीसा में गौडीयमिशन की सभा में यह स्वीकार किया, कि सं० २०३९ के मार्तण्डपञ्चांग के प्रथम पृष्ठों में प्रकाशित लेख प्रामाणिक है और उन्होंने पुरी की पण्डितसभा के निर्णय को अमान्य ठहराया। इस विषय में कटक से प्राप्त इंगलिश में लिखा पत्र हमारे पास है।

मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि सभी भागों से आंकड़े हमें प्राप्त हुए हैं। जिनसे यह सिद्ध होता है कि संसर्पपक्ष बहुत प्रबल रहा। सुप्रीमकोर्ट ने तो अपने अवकाश संसर्प पक्ष के अनुसार ही रखे। प्रकृति ने भी मासयुगलीकरण पक्ष वालों के दशहरे के दिन रावण मेघनाद आदि के पुतलों को वर्षा, तूफान से मीलों दूर फैंककर तथा उनकी दीवाली के दिन वर्षा से उनके दीपों को जलने न देकर, एवं उसी दिन श्री विनोबा जैसे सन्त के निधन से अवकाशों में हेर फेर करने वालों को भी उनके आफिसों, सचिवालयों में दीपावली न मनाते देखकर उनकी गलती का ऐहसास उन्हें करा ही दिया। इससे पूर्व कुल्लू के देवताओं ने भी संसर्प पक्ष को शुद्ध घोषित किया। एक मास बाद वाली दशहरा-दीवाली के दिनों में इन क्षेत्रों तथा जम्मू आदि में बहुत तूफान आते रहे हैं।

ध्यान रहे—जिन पञ्चाङ्गकारों ने एक मास का लोप दिखा कर मास एवं पक्ष दिखलाए हैं वे सरासर गलत अशास्त्रीय-पद्धति अपना कर अपने रिकार्ड खराब कर चुके हैं—ऐसे वेधशाला श्री जन्मभूमि, श्री विश्वविजय आदि पञ्चाङ्गों के रिकार्ड (भविष्य में इनके मतानुसार क्षयमासों में व्रतपर्वों के प्रारम्भ होने से पूर्व ही समाप्त होने की तारीख आने आदि अव्यवस्थाओं के कारण) साधारण जनता द्वारा भी हेय समझे जाएंगे। इसके विपरीत श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग, बिहार तथा बनारस के संस्कृत विश्व-विद्यालयों के पञ्चाङ्ग तथा पञ्चाङ्गदिवाकर, मध्यप्रदेश के श्रीनीमच पञ्चाङ्ग, राजस्थान के श्री ईश्वरीदत्त जी तथा अन्य विद्वानों के पञ्चाङ्ग, केरल के पञ्चाङ्ग आन्ध्र एवं काञ्ची के शंकराचार्य, पुष्पगिरिपीठ, तारकेश्वरीपीठ, गौडीयमिशन, रामकृष्ण मिशन आदि के रिकार्ड ही प्रामाणिकरूप से शास्त्रीय माने जाएंगे। इस विषय में अपने सन्देहों को निवृत्त करने के लिए हमारी "क्षयाधिमास विमर्श" पुस्तक तथा पण्डित ईश्वरीदत्त जी की क्षयाधिमास मीमांसा देखें। हम इस विषय में चर्चा करने के लिए हमेशा तैयार हैं।

धर्मशास्त्रीय-संविधान तथा ऋषिवाक्यों की रक्षा करने में सहयोग देकर पुण्यार्जन करने वाले सहयोगी पञ्चागकारों एवं जनता को साधुवाद करते हुए उन्हें धन्यवाद देते हैं।

क्षयाधिमास विमर्श—प्रो० प्रियव्रत शर्मा एवं डा० शक्तिधर शर्मा द्वारा लिखित यह पुस्तक उनके शोधकार्य का परिणाम है। इसमें क्षयमास आदि के विषय में विस्तृत शास्त्रीय विवेचन किया गया है। (मूल्य २५ रु०)

प्रतोद यन्त्र—एक चाबुक की शकल का यन्त्र जिससे छाया द्वारा समय का ज्ञान होता है। श्री गणेशदैवज्ञ कृत इस प्रतोदयन्त्र लघु-ग्रन्थ की दो पाण्डु लिपियों से डा० शक्तिधर ने इसका सम्पादन किया है और हिन्दी में भूमिका अंग्रेजी में टीका भूमिका में ऐसे यन्त्रों के सिद्धान्त एवं ऐतिहासिक दृष्टि से विकास का विवेचन किया गया है। (मूल्य १० रु०)

प्राप्ति स्थान—मार्तण्ड-ज्योतिष कार्यालय P. O. कुराली (रोपड़), [पंजाब]

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का चमत्कार

[प्रतिवर्ष पाठकों के कल्याणार्थ एवं आश्चर्यजनक चमत्कार अनुभव करने के लिए यन्त्र-मन्त्रादि देते आ रहे है, इन यन्त्र मन्त्रादि का संकलन विभिन्न ग्रन्थों से किया गया है, इस गुप्तविद्या से चमत्कार की अनुभूति तभी सम्भव है, जब आप मन्त्र-शास्त्रवेत्ता, गुरु के तत्वावधान में दृढ़-इच्छाशक्ति से श्रेष्ठ समय में सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं—सम्पादक]

कर्णपिशाचिनी मन्त्र—

"ॐ श्रवणपिशाचिनि मुण्डे स्वाहा ।"

विधि—इसमन्त्र का जाप ग्रहण के समय या दीपावली की रात्रि से करना प्रारम्भ करे। एकलाख बार इसमन्त्र का जाप करने से सिद्धि होती है। जब किसी प्रश्न का उत्तर चाहें तो कूठ को २१ बार उल्लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने हृदय, मुख, दोनों कानों एवं पैरों को इस कूठ से पोत लें तो सोते समय कर्णपिशाचिनी आपके प्रश्न का उत्तर कान में कह देगी।

स्वप्न में सट्टा, लाटरी तेजी-मन्दी जानने के लिए मन्त्र—

"ॐ हिलि हिलि शूलपाणये नमः"

विधि—इस मन्त्र का पुरश्चरण जेठे सोमवार से प्रारम्भ करना चाहिए। स्नान करके कम्बल के आसन पर बैठकर सातदिन तक रात्रि में नियमितरूप से शिवजी को स्नान कराएं। फिर गाढ़े दही में काले तिल, चावल मिलाकर पेड़ा बना के शिव पिण्डी पर रख दें। तत्पश्चात् धूप दीप नैवेद्य एवं पुष्पों से शिवपूजन करके, आरती करने के बाद उपरोक्त मन्त्र का निष्ठापूर्वक जाप करें। इक्कीस माला जाप प्रतिदिन बिना नागा करें। जप से पूर्व 'अभीष्टकार्य की सिद्धि के लिए मन्त्रजाप कर रहा हूं'—यह संकल्प अवश्य करें। मन्त्रजाप के बाद चुपचाप शयन करें, इच्छितकार्य का उत्तर स्वप्न में सही सही मिलेगा—यह मन्त्र विशिष्टव्यक्ति के द्वारा अनुभूत है।

मनोकामना शीघ्र पूर्ण करने के लिए अनुभूत मन्त्र—

आपके कार्य में देरी हो रही हो या काम बनते-बनते बिगड़ने की शंका हो तो निम्नांकित मन्त्र को एकादशी का व्रत रखकर १००८ बार जाप करें, मनोकामना अविलम्ब पूर्ण होगी।

मन्त्र—"ॐ नमः कामाक्षायै देव्यै नमः। ॐ ह्रीं क्ली श्रीं अं कं चं टं तं पं यं शं ऐं सां ऐं मनःकामनां पूर्णं कुरु कुरु स्वाहा।"

नौकरी (कारोबार) प्राप्ति के लिए साबर मन्त्र—

"ॐ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठया लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरख नाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार धार मार मार शब्द सांचा फुरो वाचा।"

विधि—मृगछाला (मृगचर्म) पर बिना सिला कपड़ा पहन कर बैठें। १०८ बार रुद्राक्ष की माला से इसमन्त्र का जाप करके खीर की १० आहुतियां डालें। एक सप्ताह जाप करके आहुतियां डालें, आजीविका का साधन बन जाएगा। शुक्लपक्ष की द्वितीया से मन्त्रजाप शुरू करें।

नौकरी प्राप्ति के लिए विशेष यन्त्र—

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इसयन्त्र को शुक्लपक्ष के पहले बृहस्पति वार को लाल चन्दन व केसर की स्याही से कुत्ते के नाखून से भोजपत्र पर लिखकर दाहिनी भुजा पर धारण करने से सभी ग्रहों की शान्ति हो जाती है तथा रोग, शोक कष्ट, भय, भूतप्रेत बाधा शान्त होकर रोजगार प्राप्त होता है। यह यन्त्र अद्भुत प्रभावशाली एवं अनुभूत है।

पशु-आकर्षण यन्त्र—

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
४	६	२१	२४

पशु के चले जाने पर इस यन्त्र को काली स्याही से सेहे के कांटे से लिख कर खूंटे के नीचे रख कर खूंटा गाड़ दें, तीन दिन में पशु स्वयं चला आएगा। तीन दिन तक किसी अन्य पशु को खूंटे पर न बांधें।

स्वप्न में आप प्रश्न का उत्तर जान सकते हैं—

कनेर के फूल पर निम्नांकित मन्त्र को १०८ बार पढ़कर सिरहाने के नीचे रख कर सो जाएं। एक सप्ताह तक ऐसा करने पर आप अपने प्रश्न का उत्तर उपचार-सहित स्वप्न में ही जान सकेंगे।

मन्त्र—"ॐ नमो मामाडे मद्दरे चिटकाय सरवार्थ सिद्ध गिरे तरे मम सुपने दर्शाया कुरू कुरू स्वाहा।"

कुछ तन्त्र प्रयोग—

(१) उल्लू की पीठ की हड्डी लेकर केसर एवं कस्तूरी के साथ घिसकर मस्तक पर तिलक करके जिसके पास जाएंगे वह प्रेमपूर्वक व्यवहार करेगा।

(२) यदि स्त्री सांप के दांत को अपनी जेब में रखे तो गर्भ स्थिति नहीं होगी।

(३) सिन्दूर व सफेद आक की जड़ को केले के रस में घिस कर मस्तक पर लगाने से जगत् वशीकरण हो।

केरल मत से प्रश्न के पिण्ड द्वारा शुभाशुभ फल

प्रश्नकर्त्ता के मुख से जो अक्षर निकले—उसी से प्रश्न पिण्ड बनावे । प्रश्नकर्त्ता से पुष्प या फल का नाम सुन कर प्रश्न पिण्ड बनावे ।

।। अथ स्पष्टार्थ चक्र (स्वर ध्रुवांक-चक्रम्) ।।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
१२	२१	११	१९	१५	२२	१८	३	२५	१९	२५

।। अथ व्यञ्जन ध्रुवांक चक्रम् ।।

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ट्
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०
ठ्	ड्	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	फ्
१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	२३	३५	२७	१८
ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२

उदाहरण :—जैसे किसी ने प्रश्न किया तो उससे पुष्प का नाम ग्रहण करवाने से गुलाब का नाम लिया । ध्रुवांक के चक्रों से अंक ग्रहण किये जैसे (ग् = २१ उ = १५ ल् = १३ आ = २१ ब = २६ अ = १२) वर्ण और स्वर के सब ध्रुवों का योग किया तो १०८ यह प्रश्न पिण्ड हुआ ।

लाभ प्रश्न विचार

लाभालाभ का प्रश्न हो तो प्रश्न-पिण्ड में ४२ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में लाभ, २ शेष में अल्प लाभ, ० शेष में हानि समझना ।

जय-पराजय प्रश्न-विचार

जय पराजय प्रश्न-पिण्ड में ३४ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष मे जय, २ में सन्धि, में ० में पराजय कहना चाहिए ।

सुख-दुःख प्रश्न-विचार

सुख-दुःख प्रश्न-पिण्ड में ३७ जोड़ कर २ से भाग देने पर १ शेष में सुख, ० शेष में दुःख समझना चाहिए ।

गमन-प्रश्न विचार

गमन प्रश्न-पिण्ड में ३३ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गमन, २ शेष में स्थिर और ० शेष में आधे मार्ग में ही लौटना पड़े ।

जीवन-मरण विचार

जीवन-मरण प्रश्न-पिण्ड में ४० जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में जीवन, २ में कष्ट से जीवन, शून्य में मरण फल कहना चाहिए ।

यात्रा-प्रश्न

यात्रा-सम्बन्धी प्रश्न-पिण्ड में ३९ जोड़ कर ३ से भाग देने से १ शेष में उत्तम यात्रा, २ में अल्प यात्रा तथा शून्य में यात्रा नहीं होती ।

वर्षा-प्रश्न

वर्षा प्रश्न पिण्ड में ३२ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में पूर्ण वर्षा, २ में मध्यम और शून्य में वहां वर्षा नहीं होती ।

गर्भ-विचार प्रश्न

गर्भ है या नहीं इस प्रश्न-पिण्ड में २६ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गर्भ, २ में गर्भ-स्राव सन्देह, ० शेष में गर्भ नहीं है इस प्रकार समझें ।

तेजी-मन्दी का प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता (मन्दी), २ में समान और शून्य में तेजी समझना ।

सत्यासत्य प्रश्न

यह बात सत्य है या असत्य ऐसे प्रश्न-पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य और शून्य में असत्य कहना ।

पुत्र-कन्या जन्म-प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र, २ में कन्या और शेष शून्य में गर्भ का अभाव व नपुंसक कहना ।

विवाह-प्रश्न

प्रश्न पिण्ड में ८ से भाग देकर १ शेष में बिना यत्न से, २ में अधिक यत्न से; विवाह कहना । ३ शेष में विवाह नहीं हो । ४ शेष में कन्या का मरण, ५ में चाचा आदि का मरण, ६ में राजभय, ७ में वर-कन्या दोनों का मरण व श्वसुर का मरण, ८ याने ० शेष हो तो विवाह से सन्तान का मरण कहना ।

कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्त्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे । यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो । ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे । ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे । २।८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है ।

पंचदशी यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

वायदा व्यापार और आपकी ग्रहस्थिति

[वायदा के व्यापार में लाखों व्यक्ति बरबाद होते देखे गए हैं. वायदा के व्यापार से आप लाभ ले सकेंगे या नहीं ? इस प्रश्न के उत्तर में आप अपनी जन्मकालीन ग्रह स्थिति का अध्ययन करें; अनुभव पूर्ण इस लेख में दिए गए योग आप को सट्टे से होने वाली बरबादी से बचा सकते हैं ।

—सम्पादक]

(१) जिस मनुष्य के जन्माङ्ग में दूसरे स्थान पर वृष या मीन राशि हो और धन स्थान में बली शुक्र हो, तो मनुष्य चांदी, रूई, वस्त्र, कपास, सूत, सिल्क के व्यापार अथवा मिल, कल कारखानों से धनाढ्य बन सकता है ।

(२) जिस जन्म कुन्डली के चतुर्थ स्थान में २-४-७ का अंक हो बुध, शुक्र, शनि, इनमें कोई ग्रह बली होकर बैठा हो तो रूई, फीचर, सट्टा, लाटरी अथवा विदेश से द्रव्य की प्राप्ति अनायास होती रहती है ।

(३) जन्म कुन्डली के पंचम स्थान में १-४-५-६ अंक हों एवं नीच नवांश रहित सूर्य गुरु बैठे हों तो घोड़ों की रेस, लाटरी, पृथ्वी में गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है ।

(४) अष्टम स्थान में जिसके २-४-६-१२ चन्द्र, गुरु, बुध, शुक्र इनमें से कोई बली ग्रह बैठा हो तो अचानक सट्टा वायदा व्यापार से द्रव्य प्राप्त होता है ।

(५) नवम स्थान में ४-६-१२ का अंक हो बुध, गुरु, बुध, शुक्र, इनमे से कोई ग्रह हो तो शेयर मार्केट अथवा सरसों, गुवार, गुड़ के व्यापार से धनवान् बनता है ।

(६) जिस पुरुष की जन्मकुन्डली के दशम स्थान में ७-१० का अंक हो और शनि बैठा हो तो उस पुरुष को शेयर, आयरन, मशीनरी, लोहे का सामान, तिल, तेल, सरसों, अलसी, मूंगफली, खोपरा, बुरड़ी, कंबल, ऊन, बकरी, भैंस इत्यादि व्यापार द्वारा द्रव्य प्राप्त होता है ।

(७) ग्याहरवें स्थान पर २-६-८ का अंक हो और उच्च नवांश के चन्द्र, बुध, शनि इसमें कोई ग्रह आ जाये तो वह बड़ा वफादार होता है, बड़े-बड़े कल कारखानों का स्वामी बनता है । अनायास द्रव्य प्राप्त होता है अथवा गड़ा हुआ मिलता है । लाटरी शेयर, टाटा डिफर्ट, आईरन द्वारा द्रव्य मिलता है ।

(८) दूसरे घर का स्वामी बुध होकर यदि लाभ स्थान में आता है तब सट्टे से लाभ अच्छा होता है ।

(९) लग्न का मालिक, दूसरे स्थान का स्वामी, आठवें स्थान का मालिक यह तीनों ग्रह यदि एकादश स्थान में आ जाते हैं तब सट्टे से लाभ होता है ।

(१०) चन्द्रमा आठवें स्थान में २-१२ के अंक पर आ जावे और क्रूर ग्रहों की दृष्टि न हों तो वायदा मार्केट से द्रव्य प्राप्त होता है ।

(११) गुरु मीन राशि का होकर, दूसरे, सातवें, ग्याहरवें स्थान में कहीं पर बैठा हो तो सट्टे से लाभ होता है ।

(१२) एकादश स्थान में तीन का अंक हो और वहां पर रवि, गुरु, बुध में से कोई ग्रह बली होकर बैठा होवे तो शेयर, सरसों, सण, सुवर्ण, अलसी, रूई के व्यापार करने वाला होता है ।

(१३) वृष राशि पर शुभ दृष्ट मंगल १-४-७-१० इनमें से किसी भी स्थान पर होवे तो सट्टे के व्यापार द्वारा अच्छा लाभ होता है ।

(१४) लग्न मे ९ का अंक हो उच्च नवांशस्थ गुरु वहां पर बैठा होवे तो सुवर्ण के व्यापार से लाभ होगा ।

(१५) अष्टम स्थान में कर्क राशि का पूर्ण चन्द्रमा हो तो चांदी के व्यापार से लाभ होगा ।

(१६) एकादश स्थान में तुला राशि पर शुक्र बैठा हो तो चांदी, सुवर्ण दोनों के व्यापार द्वारा लाभ होगा ।

(१७) दूसरे स्थान में अथवा दशवें स्थान पर बुध, कन्या राशि पर हो तो व्यापार द्वारा धनी बन जाता है ।

(१८) यदि सप्तम स्थान में ३-६ का अंक हो और वहां मित्र या उच्च नवांशस्थ बुध बैठा हो तो रूई, चांदी शेयर के सट्टे से लखपति बन जाता है ।

(१९) मीन का वर्गोत्तमी शुक्र चतुर्थ स्थान में हो तो गड़ा हुआ धन या लाटरी द्वारा धनी बनता है ।

(२०) वृष का मंगल छठे स्थान पर हो तो गड़ा धन मिलता है ।

(२१) मकर व कर्क राशि पर गुरु छटे स्थान पर जिसकी कुन्डली में हो तो गड़ा हुआ धन मिलता है ।

(२२) चतुर्थ स्थान में यदि वृष राशि का शुक्र हो तो उसके जमीन जायदाद स्वत: हो जाती है ।

(२३) कर्क लग्न में सूर्य, तुला राशि पर बैठा हो शनि चतुर्थ स्थान पर बुध, शुक्र ५-६ अंक के दूसरे अथवा तीसरे स्थान पर बैठा हो तो वह मनुष्य निश्चय ही बड़ा धनी होता है।

इस प्रकार के ग्रहयोग जिसके हों उस प्राणी को सही सट्टे द्वारा द्रव्य प्राप्त होता है अन्य व्यापारी जिनको सट्टे से लाभ नहीं वह अपना द्रव्य नष्ट कर पीछे पछताया करते हैं। इस कारण व्यापारी को चाहिये कि प्रथम इस बात का विचार करे कि मुझे सट्टे से लाभ है या नहीं ? पूर्ण निश्चय हो जाने पर ही व्यापार सट्टा करे अन्यथा नहीं ।

व्यापार विमर्श सं० २०४१ ई०

'व्यापारे वसति लक्ष्मीः'—यह उक्ति अनुभव के आधार पर खरी उतरती है ; क्योंकि सेवावृत्ति-वाला व्यक्ति कभी लक्षाधीश नहीं देखा गया । हां, व्यापार के माध्यम से व्यक्ति कोट्यधीश बने हैं ।

जीवन के सभी पहलूओं पर विचार करने से यह बात निस्सन्देह सत्य सिद्ध हो चुकी है, कि भाग्य में जितना आपको लाभ होना लिखा है, उतना ही होगा । भाग्य के द्वारा निर्धारित अधिकार से अधिक आपका परिश्रम एवं विद्या भी आपको नहीं दिला सकते—"भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् ।" मनुष्य की बुद्धि भी भाग्य के संकेत पर ही मनुष्य को हानि लाभ की ओर प्रेरित करती है । मनुष्य के भाग्य में हानि लाभ के संकेत को पढ़ने के लिए ग्रहगति का रहस्यात्मक-ज्ञान मनुष्य को ऋषियों से प्राप्त हुआ है । अतः व्यापार बढ़ाने से पहिले संभावित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहगति को ध्यान में रखना परमावश्यक है. अपनी कुण्डली में नेष्टग्रह से सम्बन्धित-वस्तु का व्यापार न करें. आपके लिए इस वर्ष जो ग्रह लाभप्रद है, उससे सम्बन्धित वस्तु के व्यापार से लाभ ले सकते हैं । अतः वर्षारम्भ में ही जन्मपत्र भेजकर व्यापारिक दृष्टि से विचार करा लेना आवश्यक है।

संवत २०४० में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नैपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति-प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है, कि इस साल व्यापारिक जगत में विशेष उथल-पुथल होगी । अनाजों में भयंकर तेजी मन्दी आएगी, सरसों, तिल, तेल, घी, रूई, गुड़, खाण्ड, एव रेयान चांदी-सोना आदि के भावों में भी ज़बरदस्त उतार-चढ़ाव आयेंगे । कहने का तात्पर्य यह है, कि इस वर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं । अतः वार्षिक ग्राहक बनकर समय-समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें । इस वर्ष ग्रहचाल के खिलाफ चलने वाले व्यापारी भारी हानि में रहेंगे । नोट कर लें ।

'व्यापार विमर्श' में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को सावधान करते रहे हैं, गत वर्ष भी हजारों व्यापारी सोना, चांदी एवं अन्य जिन्सों में लाभ उठा चुके हैं । ताजा परामर्श प्राप्त करके हमारे ग्राहक व्यापारी लाखों का लाभ उठा गए हैं । इस वर्ष भी हम सं० २०४१ में ग्रहगति के अनुसार तेजी मन्दी की विशेष लाइनों का संकेत यहां देंगे तथा सामयिक तेजी-मन्दी का भी विवेचन करेंगे । फिर भी व्यापारियों से आग्रह है, कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखते हुए अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करने के लिए आगे बढ़ें ।

वायदा-व्यापारियों के लिए हिदायतें

(१) सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो । (२) सदैव याद रखो, कि वायदा व्यापार में नुकसान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुकसान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुकसान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है । (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ-साथ ग्रह-गति के आधार पर निर्णय कर लें, कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का ? मन में यह धारणा बांध कर बाजार का रुख देखें । यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें । (४) यदि यह योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दी के मोटे कारण भी दिखलाई देने लगें और व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो तो ऐसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बेचाव करते रहिए, थोड़ा-थोड़ा सौदा काट कर नफा से मुलटते रहिए ।

(५) व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की ? यह जानने के लिए 'खास' वस्तु के भावों को देखना चाहिए । यदि उस वस्तु में हर तीसरे चौथे आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नए-नए भाव आते चले जाएं, जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो, कि वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही है, उसे मन्दे के उछाले में बेच दें । (६) यदि मन्दी के भाव छटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आएं तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है । (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें । मानलो, आपने तेजी का काम किया, उधर सौदा करते ही बाजार में मन्दे की लहर चल रही हो तो किसी भी समय तेजी का उछाला आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुकसान से बच जाओगे । हमेशा ग्रहयोग को आधार मान कर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभदशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है । इसके विरुद्ध खोटी ग्रहस्थिति वाले व्यापारियों को वायदों का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है । अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते है ।

इस वर्ष 'ग्रीष्म सस्य जातक' कुण्डली के अनुसार अनाजों में भयंकर तेजी बनेगी, कुछ स्थानों पर प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि होने से सुखाग्रस्त क्षेत्र घोषित करने पड़ेंगे । परिणामस्वरूप तेजी का बोलबाला रहेगा । ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली में चतुर्थभाव में शनि-मंगल-चद्र का सम्बन्ध कहीं अकाल की स्थिति को बनाएगा, जिससे व्यापारिक क्षेत्र प्रभावित होगा ।

शरत्सस्यजातक कुण्डली के अनुसार ईख, गुड़, खाण्ड आदि रस पदार्थ तेज रहेंगे ।

अप्रैल—शनि-मंगल मासारम्भ से पूर्व ही वक्री चल रहे हैं; २ अप्रैल को नेपच्यून भी वक्री हो जाता है । क्योंकि नेपच्यून बृहस्पति की राशि (धनु) में है तथा बृहस्पति

१५ जुलाई को कर्क संक्रान्ति रविवारी है ; शुक्र बुध के साथ सूर्य का सम्बन्ध रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी एवं सोना में अच्छी तेजी का संकेत देता है। अनाजों में कुछ मन्दी के बाद तेजी बनेगी। २० जुलाई तक तिल, तेल, सरसों, गुड़, खण्ड, अनाज, सूत, सण, सोना, चान्दी, तिल, चावल में तेजी रहेगी। २१ जुलाई से गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई आदि मन्दे होंगे गेहूं, चना, जौ, सूत, रुई, वस्त्र, देवदारु में तेजी का रुख रहेगा।

२२ जुलाई को शुक्र के उदय होने पर मासान्त तक बाजार के ट्रेण्ड के खिलाफ़ काम न करें, हानि भय है। बाजार के रुख के अनुसार काम करके अच्छा लाभ ले सकेंगे। घी खाण्ड में मन्दा रहेगा। रुई, वस्त्र, सूत, सण, सोना, चान्दी, तिल, चावल में तेजी रहेगी ; लेकिन फिर भी बाजार का रुख देख कर ही काम करने की सलाह है।

अगस्त—२ अगस्त को शुक्र सिंह राशि में दाखिल हो रहा है ; सिंहस्थ-शुक्र वर्षा में रुकावट डालने वाला माना गया है, लेकिन सिंहस्थ-शुक्र के साथ बुध होने से तथा बृहस्पति की दृष्टि होने से वर्षा में रोक नहीं पड़ेगी, वर्षा अच्छी होगी। इस समय व्यापारी जोरदार तेजी या मन्दी की आशा रक्खें क्योंकि बुध-शुक्र का मेल चलो आ रही लाईन को बढ़ावा देता है। हमारे विचार से चांदी, रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी आएगी। गुड़, खाण्ड, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन में भी मन्दे की आशा है। बाजार का रुख देखकर तदनुसार ही काम करें। ४-५ अगस्त को वर्षा का योग बनता है। ५ अगस्त को वृश्चिक राशि में मंगल, केतु के साथ सम्बन्ध बनाता है। मंगल तेल-वाना, चांदी-सोना, रुई, कपास, जूट एवं शेयर बाजारों को विशेष रूप से प्रभावित करने वाला ग्रह है। वृश्चिक मंगल की अपनी राशि है, यूरेनस भी वृश्चिक राशि में है, अतः बाजारों में धीरे धीरे तेजी कम हो सकती है, तेजी के बीच बीच मन्दे के झटके आ कर बाजार नीचे जाते नजर आएंगे। ९-१० अगस्त को अनाजों में मन्दे का ट्रेण्ड बनेगा। कपास, रुई, तिलहन में भारी तेजी आएगी, बाजार का रुख देखकर अच्छा लाभ ले सकेंगे। ११ अगस्त को कुलथ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, व सोना-चान्दी में मन्दा रहेगा, रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी आएगी। १४ अगस्त को बाजार का रुख बदलेगा। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवं रुई में अच्छी तेजी की उम्मीद है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं शेयरों में भी तेजी का ट्रेण्ड चलेगा। १८ अगस्त को वक्री बुध-शुक्र एवं २२ अगस्त की मंगल-केतुयुति का प्रभाव व्यापार पर विशेष होगा। बाजारों में विशेष तेजी आएगी। अफवाहों से बाजार टूट टूट कर ऊपर उठेंगे। रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, जूट, सोना तथा शेयर बाजार गर्म रहेंगे, तिल, तेल, घी, सरसों, तोरिया आदि में भी अच्छी तेजी आएगी।

यह तेजी का ट्रेण्ड उत्तम-मध्यम रूप से २० अगस्त तक चल सकता है। २१ अगस्त को वक्री बुध अस्त होता है। अनाजों में तेजी का ट्रेण्ड रहे तथा रुई में झटके से मन्दी आएगी, चांदी तेज, पाट हैसियन और शेयरों में मन्दा आएगा। २६ अगस्त तक रुई में अच्छी तेजी बन सकती है। इस मास में जलवायु के विचार से कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी रहने से भी तेजी का ट्रेण्ड बना रहेगा।

२७ अगस्त को शुक्र कन्या राशि में आ जाता है। शुक्र अकेला ही कभी-कभी जोरदार मन्दी ला देता है अतः बाजार की चाल पर नजर रक्खें। २८ अगस्त को सूर्य एवं वक्री बुध की युति होगी बाजारों में एक सप्ताह के लिए अच्छी घटाबढ़ी चलेगी, रुई, कपास, तिलहन, बारदाना, अनाज के व्यापारी विचारपूर्वक काम करके अच्छा लाभ ले सकेंगे। हमारे विचार में चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी। गेहूं आदि अनाज एवं गुड़, खाण्ड, ऊनी व रेशमी वस्त्र तेज होंगे। चावलों में विशेष तेजी का झटका आ सकता है। २९ अगस्त को गुरु के मार्गी होने पर रुई और चान्दी में जोरदार मन्दा बनेगा। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तमाखू में तेजी का रुख रहेगा। मासान्त में जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा आदि में तेजी बनेगी।

सितम्बर—४ सितम्बर को हस्त में शुक्र एवं ज्येष्ठा में मंगल आता है। साथ ही मंगल एवं यूरेनस की युति भी हो रही है। इस समय अगर रुई, चांदी, चावल में मन्दा चले तो जी भरकर स्टाक कर लें, २० सितम्बर के बाद अच्छी तेजी से उत्तम लाभ ले सकेंगे। अगर ४ सितम्बर को जोरदार तेजी आए तो तेजी का व्यापार बढ़ावें, अच्छा लाभ मिलेगा। यह चांस चांदी, रुई, चावल, गुड़ खाण्ड, तिलहन वालों को लाभ देगा। हमारे विचार में फसल का नुक्सान होने के समाचार से यह चांस तेजी का ही है, फिर भी बाजार का रुख देखकर ही काम करें।

६ सितम्बर को बुध उदय होगा। तिल, घी, पाट हैसियन एवं लाल मिर्च में तेजी रहेगी। रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी रहे। ७ सितम्बर को बुध एवं १० सितम्बर को नेपच्यून मार्गी हो रहा है, वायदा व्यापार की लाईन बदल सकती है, बाजार के रुख को जांच कर काम करें। रुई में पहले मन्दी फिर तेजी, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दे का रुख रहेगा। १२ से १६ सितम्बर तक रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, घी, तिल, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, में तेजी का वातावरण रहेगा। १७ सितम्बर को गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाज मन्दे होंगे।

२० सितम्बर को शुक्र अपनी राशि तुला में आकर शनि के साथ राशि सम्बन्ध करता है ;—तुला राशि विशेषतया कपास, रुई, चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड से सम्बन्धित है। शनि प्रधानतया तिलहन बाजारों को प्रभावित करता है। शुक्र स्वाती नक्षत्र में है ; स्वाती नक्षत्र तेलवाना और रुई, कपास का प्रतिनिधि नक्षत्र है। अतः व्यापारी नोट कर लें कि इस समय रुई, चांदी, चावल, तिल, सरसों, तोरिया, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, सोना में जबरदस्त तेजी आएगी। बाजार का रुख देखकर उत्तम लाभ की आशा रक्खें; ताजा परामर्श के लिए पत्र व्यवहार करें। इस समय भाव उत्तम बनेंगे। २४ सितम्बर के बाद चांदी में कुछ मन्दा बनेगा। छोटे-मोटे अनाजों के भाव तेज ही रहेंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी।

२६ सितम्बर को शुक्र प्लूटो की युति हो रही है, रुई, कपास, तेलवाना, गुड़, खाण्ड, चान्दी आदि में तेजी की प्रधानता रहेगी। २७ सितम्बर को बुध के कन्या राशि में आने पर तेजी का बल और बढ़ेगा, तिलहन, गुड़ खाण्ड, सोना-चान्दी, रुई, कपास के व्यापारी मासान्त तक तेजी से लाभ ले सकेंगे।

अक्तूबर—३ अक्तूबर को मंगल-नेपच्यून की युति के परिणामस्वरूप तांबा, सोना आदि धातु तथा गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन में कुछ देर की तेजी के बाद मन्दा रहेगा। धनु राशि के मंगल-यूरेनस का गुरु के साथ सम्बन्ध होने से बाजार टूट कर मन्दे की ओर रहेगा। शुक्र-शनि एक राशिस्थ होने से भी तिलहन, गुड़-खाण्ड, चान्दी आदि के बाजारों में अच्छी घटाबढ़ी रहेगी, अतः मन्दे में खरीदें और तेजी में बेचने से ही लाभ रहेगा। ६ अक्तूबर के लगभग रुई व अनाज मन्दे रहेंगे।

८ अक्तूबर को शुक्र-शनि की अशांत्मकयुति बहुत महत्त्वपूर्ण है। दालवाना एवं सभी प्रकार के अनाजों के व्यापारी इस समय उत्तम तेजी से अच्छा लाभ लेंगे तथा सोना, चान्दी, गुड़, घी, तिलहन के व्यापारी भी अच्छा लाभ लेंगे। तेजी में रहने की सलाह है। ११ अक्तूबर को सूर्य-बुध एवं १४ अक्तूबर को मंगल-गुरु की अंशात्मक युति एव शुक्र के वृश्चिक में आने पर भी रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, छोटे-मोटे अनाजों में उत्तम तेजी से लाभ उठा सकेंगे। लेकिन ध्यान दें यह तेजी अधिक देर ठहरेगी नहीं, जब भी अच्छा लाभ मिले तुरन्त लाभ ले लें। १४ अक्तूबर सांय ही मन्दे का वातावरण बन सकता है, अतः विचारपूर्वक काम करें।

१६ अक्तूबर को मंगलवारी संक्रान्ति चावल, चना, गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, चान्दी-सोना में तेजी लाएगी। १८ अक्तूबर को बाजार मन्दे रहेंगे।

१९ अक्तूबर को व्यापारी नोट करें, कि इस दिन शुक्र-केतु और सूर्य-बुध की युति होगी, अतः तेल, घी, गुड़, खाण्ड, सरसों, तोरिया, एरण्ड, खल, बिनौला एवं अनाजों में तेजी रहेगी, बाजार के रुख को ध्यान में रखकर काम करें।

२५ अक्तूबर को सूर्य-प्लूटो और २९ अक्तूबर को बुध-शनि तथा ३० अक्तूबर को बुध-केतु की अंशात्मक युति को भी व्यपारी ध्यान में रखें। इन तारीखों में प्रत्येक व्यापारी चान्दी-सोना, तेल-तिलहन, गुड़-खाण्ड, दालें, अनाज एवं रुई कपास के व्यापारी तेजी का ध्यान करके काम करें तो लाभ मिलेगा। बीच में २६ से २७ अक्तूबर तक बाजारों में मन्दे का झटका भी आ सकता है। अतः सावधानी से काम करें।

नवम्बर—२ नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर शुक्र और केतु के साथ योग करेगा। इस समय अगर बाजार तेजी का है तो तेजी में रहें। यदि बाजार में मन्दी है तो मन्दे में रहने से लाभ रहेगा। हमारा विचार तेजी आने का है। अतः चावल, कपास, गुड़ खाण्ड, तिलहन, दालें व अन्य अनाजों में विशेषतः रुई, चांदी में तेजी का ही विचार है। ५ नवम्बर को बुध केतु की युति भी तेजी ही करेगी, तेजी में ही रहें। ६ नवम्बर को मंगल मकर राशि में आ जाता है, रुई, सोना, चान्दी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड घी, तेल, अलसी एवं ऊन में तेजी एवं अनाजों में कुछ मन्दी रहे। ८ नवम्बर को धनु राशि में गुरु-शुक्र का मेल मन्दे पर रोक लगा सकता है। बाजार के रुख को देखकर काम करें। रुई, सूत, कपास, तिलहन में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। ११ नवम्बर को सूर्य-शनि की युति का प्रभाव विशेषतया अरहर, मूंगी, मोठ, माह, चना, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा तथा तेल, घी, तिलहन पर पड़ेगा, तेजी को ध्यान में रखकर काम करें। १३ नवम्बर को शुक्र-नेपच्यून की युति एवं १५ नवम्बर को बुध यूरेनस की युति एवं वृश्चिक संक्रान्ति के प्रभाव के कारण खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। झटके के साथ बाजारों में मन्दे एवं कुछ तेजी के रिएक्शन आएंगे। अतः इस समय एक तरफ व्यापार करके लाभ नहीं ले सकेंगे, बाजार के रुख को देखकर मन्दे में खरीदें तेजी में बेचने से लाभ मिलेगा। १९ नवम्बर तक मन्दे के अच्छे रिएक्शन आने की उम्मीद है। २० नवम्बर को श्रवण नक्षत्र में बुध आने पर गेहूं जौ, चना, ज्वार, बाजरा में भारी तेजी आएगी, तिल, धातु, सोना चान्दी भी तेज रहेंगे। नवम्बर २२ तक तेजी रहेगी।

२३ नवम्बर को धनु राशि के गुरु बुध मन्दे का वातावरण बनायेंगे। इस समय घी तेल, सरसों, तोरिया, सोना चान्दी एवं अन्य बाजारों में मन्दा बनेगा; तेजी में न रहें। २५ नवम्बर को गुरु-शुक्र के युद्ध में शुक्र परास्त हो जाता है, अतः वर्षा की कमी से तथा अन्य राजनैतिक गतिविधि के कारण पैट्रोल, तेल, चान्दी, सोना एवं तेलवाना में अच्छी तेजी या अच्छा मन्दा आएगा; अतः सूझबूझ से काम करें।

२८ नवम्बर के बाद मासान्त तक तेजी का रुख रहेगा!

दिसम्बर—३ दिसंबर को शुक्र मकर राशि में आकर उच्च मंगल साथ के सम्बन्ध करेगा। गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि सब अनाजों में तेजी आती है, रुई और चान्दी में पहले घटाबढ़ी होकर फिर तेजी आएगी। ४ दिसम्बर को रुई और चान्दी में झटके के साथ तेजी के बाद मन्दा आएगा। शेयर, सूखा मेवा, फल एवं चान्दी में ४ से ६ दिसम्बर तक अच्छी तेजी आएगी, उत्तम लाभ ले सकते हैं। इसी बीच ५ दिसम्बर को सूर्य-यूरेनस युति का प्रभाव अनाजों पर पड़ेगा, अनाजों में तेजी आएगी। ८ दिसम्बर को अनाजों में तेजी ही चलेगी लेकिन रुई में झटके के साथ जल्दी ही मन्दा आने के योग हैं, चांदी तेज, पाट, हैसियन, और शेयर मन्दे रहेंगे। १२ दिसम्बर को भी बाजार मन्दे में रहेंगे। ध्यान दें, कि—नवम्बर के अन्तिम सप्ताह एवं दिसम्बर के पूर्वार्ध में अनाज, दालवाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, घी, रुई, कपास का स्टाक करने पर आगे जनवरी १९८५ ई० तक भयंकर तेजी से व्यापारी उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। इस बारे में ताजा एवं अन्तिम निर्णय प्राप्त करने के लिए अपने जन्म पत्र के साथ 25 रुपये फीस भेजकर पत्र व्यवहार करें, फीस आने पर अन्य लाभप्रद चांस भी लिखेंगे।

१४ दिसम्बर को सूर्य और बुध की युति होगी। 20 दिसम्बर को शनि वृश्चिक राशि में दाखिल होकर बुध और केतु के साथ सम्बन्ध बनाएगा। ध्यान दें, कि बुध वक्री होकर वापस पुनः वृश्चिक राशि में आया है। इस मास में शनि-केतु का सम्बन्ध तथा शनि केतु पर राहु की दृष्टि को ध्यान में रखें। यह योग २९ जनवरी १९८५ ई० तक चलेगा। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मसूर, आजवायन, मेवा, रुई, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, तोरिया, घी, गुड़, खाण्ड में जबरदस्त तेजी या मन्दे की लाईन बनेगी, हमारे विचार से तेजी आने का विचार है, फिर भी बाजार के रुख को जाचकर उत्तम लाभ प्राप्त किया जा सकेगा। यह चांस उत्तम लाभ का है; विचारपूर्वक काम करें।

२३ से २५ दिसम्बर तक रुई कपास, सोना, चान्दी के व्यापारी होशियारी से काम करें; मन्दे के रिएक्शन आ सकते हैं। २६ दिसम्बर से खाण्ड एवं गुड़ में भारी तेजी रहेगी।

पौष संक्रान्ति शनिवारी है, माघ संक्रान्ति रविवारी एवं फाल्गुन संक्रान्ति मंगलवारी पड़ती है—यह खप्पर योग बन जाता है। इस योग का प्रभाव मौसम एवं जलवायु पर होगा। राजनैतिक उलझनें सामने आएंगी, खड़ी फसलों को नुकसान पहुंचेगा।

इसके साथ ही विशेष विचारणीय बात यह है कि २२ दिसम्बर के लगभग मंगल अतिचारी हो रहा है, मंगल, जब भी अतिचारी हुआ है तब बाजारों में जबरदस्त तेजी या जबरदस्त मन्दी आई है। अतः इस समय हाजर एवं वायदा के व्यापारी असाधारण

घटाबढ़ी को ध्यान में रखकर काम करें, बाजार के रुख के विरुद्ध काम भूलकर भी न करें, लम्बी तेजी या मन्दे की लाईन बनेगी ;—हमारा विचार मासान्त तक उत्तम तेजी का ही है।

जनवरी (१९८५ ई०)—४ जनवरी को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आ जाता है, इसी दिन शनि-केतु की अंशयुति भी बहुत महत्त्वपूर्ण है, शनि-केतु के साथ बुध का सम्बन्ध भी है; इस समय विशेष ध्यान देने योग्य बात है, कि बृहस्पति ५ जनवरी को अस्त हो रहा है अतः ४ जनवरी को तेलवाना, सोना-चान्दी, गुड़, खाण्ड में तेजी का उछाला आने के बाद जल्दी ही मन्दे का रुख बनेगा। बाजार के रुख को देखें अगर मन्दा है तो ६ जनवरी से और मन्दा बन जाने की उम्मीद रक्खें, अन्यथा तेजी में रहें। हमारा विचार सामान्यतः मन्दे का ही है।

१० जनवरी को बृहस्पति मकर राशि में आ जाता है—यह तूफानी तेजी या मन्दी का अवसर है, इस समय बाजार के रुख के विरुद्ध काम करने वाले व्यापारी जबरदस्त हानि में रहेंगे। ध्यान दें कि गुरु की अस्तावस्था में राशि बदली है; अत एक-दो दिन बाजार के रुख देख कर व्यापार बढ़ावें, **हमारे विचार से मकर संक्रान्ति के लगभग ही गुड़ और खाण्ड में भारी तेजी आएगी। रुई में पहले मन्दी और बाद में तेजी बनेगी। नोट करें, कि मई १९८५ ई० के बाद रुई में भयंकर तेजी की लम्बी लाईन बनेगी, रुई में व्यापारी लाखों का लाभ लेंगे। मकर का गुरु गेहूं, जौ, चना आदि में एकाएक तेजी करेगा, इस समय स्टाकिस्ट भारी लाभ में रहेंगे।** कपूर, चन्दन, मूंगफली, तांबा, सोना, चांदी, सरसों भी तेज रहेंगे। **व्यापारी सावधान—बाजार के रुख के मुताबिक काम करें। तेजी के हालत में, इस तेजी का लाभ गुरु के मकर-राशि प्रवेश से १५ दिन के अन्दर ही ले लें, अन्यथा पीछे मन्दा होने से हानि की सम्भावना है।**

१५ जनवरी को अस्त गुरु की सूर्य से अंशात्मक-युति का प्रभाव बाजारों पर जबरदस्त तेजी के रूप में देखेंगे। लेकिन चांदी-सोना में अच्छा मन्दा आ सकता है, प्राकृतिक-प्रकोप या किसी अन्य कारणों से फसल को हानि पहुंचेगी। मकर एवं कुम्भ राशि के सूर्य-शुक्र-मंगल है, २० जनवरी के लगभग चन्द्रमा का इन से सम्बन्ध कहीं भयंकर दुर्भिक्ष का संकेत देता है—

"मार्कभौमो भृगुश्चैव शनिक्षेत्रे समाश्रिताः
यदा निशापतिस्तत्र तदा दुर्भिक्षतो भयम्।"

२५ जनवरी को मीन राशि का मंगल-शुक्र से सम्बन्ध करके रुई, अनाज, सरसों, तिल, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड में तेजी आएगी। सब तरह के अनाजों में उत्तम तेजी बनने का योग है। **यह तेजी ('आगे की फसल खराब होना, आदि अफवाहों से) मासान्त तक चलेगी। बारदाना, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, तेल, तिलहन एवं गुड़, खाण्ड के व्यापारी तेजी से अच्छा लाभ लेंगे।** २७ जनवरी को मकर का बुध रुई, सोना, चांदी में भारी तेजी बनाएगा।

३१ जनवरी को बुध-गुरु युति का प्रभाव भी सभी बाजारों पर तेजी का होगा।

फरवरी—मासारम्भ में ही गुरु के उदय होने पर बाजार का रुख बदल सकता है, अतः सावधानी से काम करें। चान्दी एवं अनाजों में तेजी तथा सोना में मन्दा रहे। ५ फरवरी के लगभग गुड़, खाण्ड, अलसी चना चावल तेज रहेंगे। ११ फरवरी तक अनाजों एवं गुड़ खाण्ड में अच्छी तेजी रहेगी, लेकिन सोना चान्दी और रुई में मन्दे का रुख रहे।

१२ फरवरी को कुम्भ संक्रान्ति मंगलवार को है। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली एवं राई में तेजी आएगी। रुई, पाट, अलसी, एरण्ड गेहूं आदि अनाज व गुड़, खाण्ड, शक्कर के व्यापारी बाजार के रुख के अनुसार काम करें।

१५ फरवरी को कुम्भ राशि का बुध घी, तेल, रस, गुड़-खाण्ड, में अच्छी तेजी आएगी। १९ फरवरी को अस्त-बुध की सूर्य के साथ युति होगी, सर्वविध अनाज, सरसों, तोरिया, तेल, घी, गुड़, खाण्ड में झटके की तेजी बनेगी। वर्षा की कमी से कृषक वर्ग चिन्तित रहेगा। फरवरी के मास में विशेष तेजी या मन्दे के विशिष्ट योग नहीं बनते लेकिन बाजार के रुख को ध्यान में रखकर मन्दे में खरीदकर तेजी में बेचने के सिद्धान्त से अच्छा लाभ ले सकेंगे। २१, २२, २३, फरवरी को अनाजों में अचानक अच्छी तेजी आने की उम्मीद है। २२ फरवरी से २६ फरवरी तक गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, रुई में बाजार अनिश्चित रहेंगे, मन्दे का ट्रेण्ड रह सकता है, अतः विचारपूर्वक काम करें।

मार्च—३ मार्च को बुध मीन में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा, ७ मार्च को वृश्चिक-राशि में शनि वक्री है तथा बुध अतिचारी चल रहा है, राहु और मंगल एक साथ मेश राशि में है। सभी प्रकार के अनाज, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी एवं तेजी के जोरदार झटके आएंगे, मन्दे में खरीदें तेजी में बेचें। सोना चान्दी में घटाबढ़ी के साथ पहले तेजी फिर बाद में उतनी ही मन्दी आएगी। **व्यपारी नोट करें—मार्च के पहले सप्ताह में सोना-चान्दी आदि धातु मूंगा, मोती आदि रत्न, ऊन, रुई, कपास, पाट बारदाना गुड़ आदि रस पदार्थों में जोरदार तेजी भी बनेगी ; यह तेजी उत्तम-मध्यम रूप से 15 दिन तक चल सकती है।** इस मास की ग्रह चाल के अनुसार राजनैतिक वातावरण एवं विश्व के प्रमुख देशों की व्यापारिक-नीति का प्रभाव बाजारों पर पड़ेगा; अतः बाजार के रुख को अच्छी तरह समझ कर ही काम करना बुद्धिमता है। ७ मार्च को चली आ रही लाईन बदल सकती है।

१० मार्च को श्रवण नक्षत्र के गुरु में गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी आदि अनाजों में मन्दी हो। १८ मार्च को शुक्र के वक्र होने पर घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, आदि अनाजों में एवं रुई में अच्छी तेजी की आशा रक्खें, अच्छी तेजी के बाद जल्दी ही मन्दा आएगा नोट कर लें। मीन संक्रान्ति एवं अमावस दोनों गुरुवारी होने से अनाजों में, तेलवाना, गुड़ खाण्ड एवं सोना-चान्दी में तेजी आएगी।

मासान्त तक बाजारों में अच्छे उतार-चढ़ाव आएंगे अतः आप बाजार के रुख के अनुसार काम करके अच्छा लाभ ले सकते हैं।

नोट :—इस वर्ष व्यापारियों के लिए उत्तम लाभ के चांस आ रहे हैं; इस विषय में यदि आप हमारा परामर्श चाहते हैं तो आज ही २५ रुपए भेजकर अपना नाम हमारे रजिस्टर में दर्ज करा लें। हम अपने उन व्यापारियों को समय-समय पर चांस भेजते हैं, जिनका नाम हमारे पास दर्ज होता है।

पता—
ज्योतिभूर्षण पं० इन्दु शेखर शास्त्री एम० ए०
मार्तण्ड कार्यालय,
मु० पो० कुराली (जि० रोपड़) पंजाब

आकाशी कौंसिल का विचार (सं० २०४१ वि०)

विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति पर ग्रहों का प्रभाव

समय परिवर्तन के साथ ही विश्व की परिस्थितियां करवट लेती रहती हैं, जिससे विश्व की घटनाओं को साक्षित्वप्रदान करने वाले इतिहास का जन्म हुआ करता है। विश्व में घटित होने वाली घटनाओं में सफलता-असफलता के परिणाम-स्वरूप मनुष्य अनेकत्र भाग्य को कोसता भी देखा गया है। आखिर इस घटनाक्रम को जन्म देने वाली एवं इस विश्व की गतिविधि को संचालित करने वाली कौन सी अदृश्य-शक्ति है ? इस बारे में हम 'ईश्वरीय प्रेरणा' किंवा 'भवितव्यता' को स्वीकार करते हैं। गीता में भगवान् ने इस गतिविधि के हेतु कालरूप में स्वयं को स्वीकार किया है :—
"कालः कलयतामहम् ।"

आज विज्ञानयुग में हम बिनातर्क के किसी भी बात को स्वीकार करने को उद्यत नहीं हैं। तर्कसंगत-विश्लेषण एवं अनुसंधान के परिणामस्वरूप कालविधान-शास्त्र, ज्योतिषशास्त्र ने अघटित-घटनाक्रम को जन्म देने में ग्रहों के आकर्षण विकर्षण एवं युतिप्रतियुति को ही कारण बताया है। ग्रह कोई निष्क्रिय-पिण्ड नहीं हैं, इनमें क्षणिक-स्पन्दन भी विश्व के मानचित्र को बदल देने की क्षमता रखता है। इसमें सन्देह नहीं, कि—भूकम्प, भयरोग-विग्रह आदि सभी विश्वजनीन-घटनाओं को जन्म देने में ईश्वरीय-प्रेरणा से संचालित 'ग्रहों की गति' भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है।

अनन्तकाल से महर्षियों द्वारा उपलब्ध इसशास्त्र पर मनन होता रहा है। इस शास्त्र के आधार पर अपनी बुद्धि के अनुसार सूक्ष्म ग्रह गति से प्राप्त 'संकेतग्रह' को ही 'भविष्यवाणी' के रूप में प्रतिफलित करके विश्व में घटित होने वाली घटनाओं का चित्र आपके समक्ष उपस्थित करते हुए ५६ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस पंचाग में प्रकाशित आश्चर्यजनक अव्यभिचरित-भविष्यवाणियों में सर्वसाधारण व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरू जैसे महान् ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है; परिणामस्वरूप आज भी यह पंचांग अपनी सफल, भविष्यवाणियों के लिए गण्यमान्य नेताओं एवं अन्य सभी पाठकों के लिए विशेष आकर्षण का विषय है।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म ग्रहगणित एवं विशिष्ट लेखों के कारण भारत के विद्वद्वर्ग एवं धर्माचार्यों के आशीर्वाद के रूप में जो श्रेय-सम्मान आपके इस पंचांग को प्राप्त हुआ है, वह गौरव का विषय है एवं हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है।

'श्रीमार्तण्ड पंचांग' की गतवर्षों की भविष्यवाणियों का दिग्दर्शन इस प्रकार है—

भारत के स्वतन्त्र होने की घोषणा, श्रीगांधी एवं श्री नेहरू के निधन की भविष्य-वाणी, रूस के बुल्गानिन-ख्रुश्चेव के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी, चीन में माऊ-माऊ युगान्त की घोषणा, श्री रीगन की सफलता, पाक के विभाजन की भविष्यवाणी एवं समय-समय पर सत्ता परिवर्तन की घोषणा, कांग्रेस का विभाजन, जनता पार्टी की विजय एवं पतन की आश्चर्यजनक भविष्यवाणी पुनः श्रीमती गांधी के नेतृत्व की घोषणा, ईरान-ईराक युद्ध एवं ऐतिहासिक भूकम्पों की भविष्यवाणी, इसके अतिरिक्त भारत एवं अन्य देशों में घटित होने वाली असंख्य सफल भविष्यवाणियां करने का गौरव आपके इस पंचांग को प्राप्त है। स्थानाभाव के कारण यद्यपि सभी सफल भविष्यवाणियों को यहां अंकित करना सम्भव नहीं, पुनरपि नमूने के तौर पर कुछेक आश्चर्यचकित करने वाली सफल भविष्यवाणियां सं० २०४० के पंचांग से यहां अंकित कर देना उचित समझते हैं—

(१) पृ० ३६ कालम १, पंक्ति २० से २४ तक लिखा है—

"किसी मुस्लिम देश में जनता एवं शासक में परस्पर व्यवहार अशान्तिमय होने से शासक को सत्ता से च्युत होना पड़ेगा या रक्तपात के बाद क्रान्ति आएगी। अगर शासक ने विवेक से काम न लिया तो भारी जनधन हानि के बाद आगे देश को भारीक्षति का सामना करना पड़ेगा।"

पाकिस्तान के घटनाक्रम को ध्यान में रखकर इस भविष्यवाणी का मूल्यांकन कर सकते हैं।

(२) आगे 'पाकिस्तान' शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ ३९ पर स्पष्ट लिखा था—

"कन्या राशि से शनि निकाल चुका है। वहां पर निरंकुश शासन सत्ता में परिवर्तन अवश्य होगा। लोकतन्त्र का स्वप्न शीघ्र पूरा होने वाला नहीं, दिसम्बर ८३, से मार्च ८४ के अन्दर विशेष घटनाक्रम जारी होगा। इसवर्ष वहां पर राजनैतिक विद्रोह, उलट-फेर से एकबार अशान्ति का वातावरण बनकर पुनः शान्ति बनेगी।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार घटनाचक्र चल रहा है। इस आश्चर्यजनक भविष्यवाणी की सफलता शतप्रतिशत सम्भावित है।

(३) मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली की चर्चा में लिखा था—

"मुस्लिम राष्ट्रों में शत्रुभाव बढ़ेगा। परस्पर ईरान-ईराक में शत्रुता चरमसीमा पर पहुंचेगी एवं एक दूसरे को हानि पहुंचाने में कसर न छोड़ेंगे।"

स्पष्ट है, कि उक्त देशों में कितना संघर्षमय वातावरण रहा है।

(४) सं० २०४० में पृ० ३७ पर कालम २, पंक्ति २८ से ३७ तक भारत में घटित हो रही क्षेत्रीय साम्प्रदायिकता की भविष्यवाणी इन शब्दों में की गई थी—

"क्षेत्रीयता एवं साम्प्रदायिकता का उन्माद इस वर्ष के उत्तरार्ध में ज्यादा बढ़ेगा। किसी प्रान्त में धर्म को राजनीति में समाविष्ट करने की प्रवृत्ति आगे बढ़ कर शासन के लिए विषम समस्या को जन्म देगी। पंजाब, आन्ध्र प्रदेश आदि में ये तत्त्व अधिक सक्रिय रहेंगे।

(५) आन्ध्र प्रदेश आदि निर्वाचनों में कांग्रेस (इ) के पराजय की घोषणा स्पष्ट शब्दों में (पृष्ठ ३८, कालम ९, पंक्ति ८ से १२ तक) इस प्रकार की गई थी—

"पदारूढ़ पार्टी को कुछ प्रान्तीय निर्वाचन क्षेत्रों में जनमानस को जीतने में भारी कठिनाई होगी। परिणामस्वरूप पश्चिमी बंगाल, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं कर्नाटक तथा अन्य दक्षिणी भारत में विपक्ष पृथक्तावाद एवं साम्प्रदायिकता का

आश्रय लेकर केन्द्र में पदारूढ़ पार्टी के प्रभाव को इन प्रान्तों में नगण्य बनाने का प्रयत्न करेगा, सफलता भी मिलेगी।

(२) पृष्ठ [illegible] पर पंजाब शीर्षक में, पंजाब की [illegible] का चित्रण इस प्रकार किया गया था —

"प्रधान नेता को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। कुछ विदेशी शक्तियां प्रान्त में साम्प्रदायिकता को गुप्त रूप से बढ़ावा देंगी, समस्या का समाधान शान्तिपूर्ण ढंग से संभव न होगा।"

(३) पृ० [illegible] पर 'हिमाचल' शीर्षक के अन्तर्गत यहां के प्रधान पद परिवर्तन की भविष्यवाणी गतवर्ष इन शब्दों में की गई थी—

प्रधान शासक (श्री रामलाल जी) की नामराशि के आधार पर शनि इनके समक्ष नानाविध राजनैतिक समस्याओं को खड़ा कर देगा। विरोधी पक्ष राजनैतिक गतिरोध पैदा करेगा। सत्तारूढ़ पार्टी में भी प्रधान शासक के प्रति असन्तोष रहेगा; अन्तत: यहां प्रधान पद में मई से पूर्व ही परिवर्तन का योग है।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार श्री रामलाल जी का मई से पूर्व ही (लगभग ८ अप्रैल को) पद त्याग करना पड़ा।

पाठको! सभी भविष्यवाणियों की सफलता को अंकित करना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं। अस्तु, भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय मुझे नहीं, उन महर्षियों को ही है जिन्होंने असम्प्रज्ञात स्थिति में सब अनुभव करके ग्रहों के संकेतों को समझने का मार्ग बताया है। इस सफलता के श्रेयभागी हमारे लाखों पाठक हैं जो समय-समय पर भविष्यवाणियों की सत्यता का मूल्यांकन करके पत्र द्वारा हमें प्रतिवर्ष विचारपूर्वक कुछ न कुछ भविष्यकथन के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

अब हम सं० २०४१ की ग्रहगति को ध्यान में रखकर आगे घटित होने वाले घटनाक्रम को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं —

संवत् २०४१ वि. की ग्रहस्थिति का विश्व पर प्रभाव

इसवर्ष-ग्रहपरिषद के निर्वाचन में प्रधानपद क्षीणचन्द्र को एवं मन्त्रीपद दैत्य गुरु शुक्र को प्राप्त हुआ है। सूर्य को नीरसेश एवं सस्येश दो पद प्राप्त हैं, गुरु को भी मेघेश-फलेश ये दो पद प्राप्त हुए हैं। भौम एवं शनि को क्रमश: रसेश एवं धान्येश का पद प्राप्त हुआ है। पद विभाजन से स्पष्ट है कि सत्ता में सन्तुलन है लेकिन राजा एवं मन्त्रीपद पर आसीन ग्रहों की दृष्टि से यह ज्ञात होता है, कि विश्व के कुछ देश प्रधान राजनीतिज्ञों के कुचक्र (कुनीति) के कारण पतनोन्मुख होंगे। विकासशील देश इस कुचक्र के विशेष शिकार होंगे। गल्फ देशों में युद्ध की ज्वाला तीव्र होगी, कहीं अराजकता कहीं हिंसा, रक्तपात से पड़ोसी देश भी चिन्तित होंगे।

जगतलग्न कुण्डली के अनुसार चतुर्थ स्थान में मं० केतु है, तीसरे उच्च शनि है, अत: दक्षिणी अफ्रीका, दक्षिण-पश्चिमी देशों के लिए एक विशेष कानून व्यवस्था का प्रयास करेगा, कुछ सफलता भी मिलेगी। इस वर्ष का प्रतिरक्षामन्त्री गुरु, जगत्कुण्डली में वक्री है, अत: अफगानिस्तान, फ्रांस, काबुल बलोचिस्तान एवं बंगला देश में सैन्यबल बढ़ेगा, कहीं सेना को राष्ट्रहित में प्रयोग किया जाएगा।

विकासशील देशों की स्थिति

इसवर्ष की ग्रह स्थिति के अनुसार समृद्ध देशों में हथियारों की दौड़ लगी रहेगी, जबकि विकासोन्मुख देशों को भी अपनी रक्षा के लिए व्ययभार वहन करना पड़ेगा। परिणामस्वरूप विकास पर व्यय कम होगा।

वर्षारम्भ में ही शनि मंगल वक्री हैं। २९ अप्रैल से ६ ग्रह वक्री हो जाते हैं, २ मई को मंगल वक्री अवस्था में राशि परिवर्तन करके शनि के साथ राशि सम्बन्ध बनाता है, यह शनि-मंगल का राशि-सम्बन्ध ५ अगस्त तक लगातार बना रहता है—

इस ग्रह स्थिति के आधार पर विश्व में निरस्त्रीकरण की समस्याएं और भी जटिल होती दिखाई देती हैं। समृद्ध एवं सशक्त देशों में शस्त्र-प्रणालियों की नई तकनीक सामने आएगी। नई तकनीकियों से आगे नई रणनीतियों को बढ़ावा मिलेगा। अणुशस्त्रों के परीक्षण.प्रतिबन्ध सम्बन्धी वार्ताएं विफल रहेंगी, परिणामस्वरूप परमाणु युद्ध का आतंक आगे विश्व के लिए भारी समस्या बनेगा। इस प्रकार छोटे विकासशील देश किंकर्तव्य विमूढ़ होकर निर्गुट न रह पाएंगे युद्ध विभीषिका के परिणामस्वरूप छोटे विकासोन्मुख देश समृद्ध देशों की गोद में जा लगेंगे।

भय रोग-उपद्रव—2 मई से अगस्त तक का समय विश्व के समक्ष अभूतपूर्व घटनाओं को जन्म देगा। शनि-मंगल का राशि सम्बन्ध किसी मुस्लिम राष्ट्र में भयंकर रक्तपात या आन्तरिक क्रान्ति को जन्म देगा। किसी पड़ोसी देश से उलझने की प्रवृत्ति से विश्व-शान्ति भंग होगी। लेकिन इस अवधि में कोई बड़ा भयंकर युद्ध होने वाली ग्रहस्थिति नहीं है। पश्चिम एशिया की स्थिति बिगड़ती जाएगी। इजराइल एवं अरब देशों में आगे भीषण युद्ध होगा। फ्रांस में, विशेषत: दक्षिण पूर्वी क्षेत्र में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस वर्ष सितम्बर तक प्राकृतिक प्रकोप एवं अकाल की स्थिति से कुछ देश विशेष उलझन में फसेंगे। वर्ष के पूर्वार्ध में आगजनी किंवा यान दुर्घटनाओं में भारी जन धन हानि के योग हैं। दुर्घटनाएं अधिकतर शनिवार या मंगलवार को होंगी। शनि-मंगल यूरेनस नेपच्यून आदि ग्रहों की स्थिति के अनुसार इसवर्ष कुछ विशेष प्रकार के रोग पनपेंगे जनहानि के समाचार मिलेंगे।

२० दिसम्बर १९८४ को शनि वृश्चिक में आकर केतु के साथ सम्बन्ध करेगा। यह योग २१ जनवरी १९८५ ई० तक चलेगा। इस अवधि में दुर्घटना, बीमारी एवं प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प तूफान आदि से कहीं भारी हानि होगी। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। मंहगाई बहुत बढ़ जाएगी, शासन का अंकुश व्यापार पर लगेगा।

६ मार्च १९८५ ई० से संवत् के अन्त तक का समय भी कष्टप्रद है। इस अवधि में कहीं सत्ता में परिवर्तन एवं कहीं आंतरिक अशान्ति बढ़ेगी। अग्निकाण्ड, वायुयान दुर्घटना, किंवा रोग विशेष से जनधन हानि संभव है। जहां तक अणुयुद्ध (महायुद्ध) का प्रश्न है, हम स्पष्ट कर देना उचित समझते हैं कि विश्वव्यापी विनाश की स्थिति अभी बहुत दूर है, छोटे मोटे देशों में जंग तो होते ही रहेंगे लेकिन व्यापक विनाश का भयावह चित्र अभी १५ वर्ष से पूर्व अर्थात् सन् १९९९ से पूर्व किसी भी स्थिति में संभव नहीं है। इस अवधि के बाद ईश्वर समृद्ध देशों को सद्बुद्धि दे तभी कल्याण है।

यूरोप के देश—यूरोपीय देशों की ग्रह स्थिति के अनुसार धनस्थान में शनि-मंगल प्लूटो की स्थिति यूरोपीय देशों में व्यापारिक स्थिति को विशेष उलझनपूर्ण बना देगी। कुछ देशों से व्यापारिक सम्बन्ध टूटेंगे एवं कुछ से नए सम्बन्ध स्थापित होंगे। वाणिज्य व्यवसाय की नीति में विशेष परिवर्तन आएंगे। यूरोप के देश आर्थिक समस्या में उलझेंगे, विकास के लिए उपयोगी धन का प्रयोग शस्त्र-भण्डार के लिए होगा।

यूरोप के देशों की कुण्डली

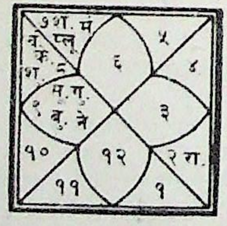

(१ जन० १९८४ ई०)

यहां के ब्रिटेन, कनाडा, आदि में प्रवासी लोगों की समस्या उभर कर सामने आएगी रंगभेद-नीति भी कहीं विषमरूप धारण करेगी, परिणामस्वरूप प्रवासी लोगों को विषम स्थिति में से गुजरना होगा।

पाठक नोट करें, कि १९८८ तक का समय यूरोप के देशों के लिए बहुत भयावह है इन वर्षों में यहां के कुछ देशों को युद्धमय वातावरण में उलझने को विवश होना पड़ेगा। इस वातावरण में रूस का हस्तक्षेप रहेगा।

यूरोप के देशों की कुण्डली में कालसर्प योग एवं तुला राशि में शनि-मंगल की स्थिति आगामी वर्षों में भयावह स्थिति को जन्म देगी। उत्तर-दक्षिणी कोरिया-जर्मनी में विशेष परिवर्तन एवं सन्धियां होंगी।

पश्चिमी यूरोप के देश अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में एक-दूसरे का सहयोग अवश्य देंगे। इस प्रकार यूरोप की समाजवादी बिरादरी में भी प्रगति होगी। दक्षिणी यूरोप में फ्रांस, ग्रीस, स्पेन में समाजवाद जोर पकड़ेगा। यहां के शासकों को कठिन परिस्थिति का सामना करना होगा। वर्षारम्भ से जुलाई एवं नवम्बर से जनवरी, १९८५ ई० तक विशेष ऐतिहासिक घटनाएं घटेंगी। लेबनान की समस्या का हल निकलेगा। इजराइल, सीरिया और फिलिस्तीन को अपनी-अपनी सेनाएं वापिस बुलाने पर विवश होना पड़ेगा। अरब देश—अप्रत्यक्ष रूप से इजराइल को मान्यता देंगे।

मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली—इस कुण्डली का दायां भाग कालसर्प योग से ग्रस्त है जोकि समय भयावह घटनाओं का संकेत देता है। संवत् के शुरू से अगस्त तक के समय में यावन राष्ट्रों में कहीं भयानक स्थिति बनेगी, किसी देश में प्रधान नेता के विरुद्ध क्रान्ति से जन-धन हानि होगी, किसी देश के मानचित्र में ऐतिहासिक परिवर्तन आने का योग भी है। पाक में सिन्ध एवं बलोचिस्तान में भयंकर क्रान्ति रक्तपात सम्भव है। इराक-इरान युद्ध में पाक एवं सऊदी अरब का हस्तक्षेप

मुस्लिम देशों की कुण्डली

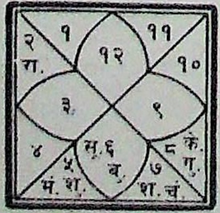

८ अक्तूबर १९८३ ई०
(इष्ट २८।५३)

होगा। पाक की कुनीति उसे विनाश की ओर ले जाएगी। २७ सितम्बर, १९८४ से आगे का समय मुस्लिम देशों के लिए इतना भयावह नहीं। इस वर्ष पाक, बंगला देश, तुर्की, यूनान, ईराक, ईरान, केन्या आदि में आन्तरिक अशान्ति से स्थिति उलझनपूर्ण बनेगी। उपरोक्त मुस्लिम देश पड़ोसी देशों की शान्ति को भी भंग कर सकते हैं। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।

भारत एवं भारत सरकार

स्वतन्त्र भारत का ३८वां वर्ष प्रवेश

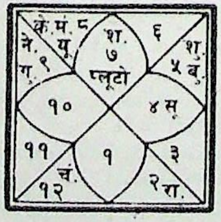

१५ अग. १९८४

भारतीय गणतन्त्र का ३५वां वर्ष

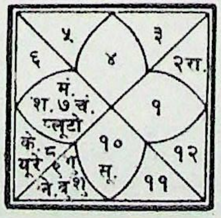

२६ जन. १९८४

इससे पहले कि हम भारत के ३८वें वर्ष की कुण्डली का परिशीलन करें। हमें ३७वें वर्ष की कुण्डली पर भी ध्यान देना होगा, क्योंकि १४ अगस्त, १९८४ से पूर्व तक ३७वें वर्ष के ग्रह अपना प्रभुत्व रखते हैं।

३७वें वर्ष की ग्रह स्थिति के अनुसार अगस्त से पूर्व का समय भारत के लिए अग्नि-परीक्षा का है। वर्षारम्भ में ही शनि. मंगल वक्रगति से चल रहे हैं। २ मई को वक्री मंगल अपनी राशि बदल कर वक्री शनि के साथ मेल करेगा—यह ग्रहस्थिति भारत में कई अघटित घटनाओं को जन्म देगी। ५ अगस्त तक भारत के समक्ष राजनैतिक उलझनें विषम रूपेण चिन्तनीय होंगी। इस अवधि में किसी दुर्घटना किंवा अकस्मात् किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का विछोह सहना पड़ेगा। संवत् के प्रारम्भ से अगस्त तक की अवधि में प्रान्तीय-साम्प्रदायिकता का उन्माद भी विषमरूप धारण करेगा। प्रान्तीय समस्याओं को सफलतापूर्वक सुलझाने में शासन निरुत्तर सा मालूम देगा। कुछ प्रान्तों में कलह से असुरक्षा एवं अराजकता का सा वातावरण बन सकता है। अतः इस अवधि में राष्ट्रनायकों को विवेक एवं सन्तुलन-प्रज्ञा से काम लेना होगा। विशेषतः १९ जून तक के समय में भारत को अपने सैन्य-बल को सीमा प्रान्तों पर सबल बनाना पड़ेगा। कहीं किसी पड़ोसी देश की कुनीति से सीमा प्रान्तों पर शान्ति भंग होने का योग है। अगस्त तक के समय में भूकम्प, किंवा तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से किसी प्रान्त में भीषण जन-धन

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

आश्रय लेकर केन्द्र में पदारूढ़ पार्टी के प्रभाव को इन प्रान्तों में नगण्य बनाने का प्रयत्न करेगा, सफलता भी मिलेगी।

(२) पृष्ठ [illegible] पर पंजाब शीर्षक में, पंजाब की स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया गया था—

"प्रधान नेता को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। कुछ विदेशी शक्तियां प्रान्त में साम्प्रदायिकता को गुप्त रूप से बढ़ावा देंगी, समस्या का समाधान शान्तिपूर्ण ढंग से संभव न होगा।"

(३) पृ० [illegible] पर हिमाचल' शीर्षक के अन्तर्गत यहां के प्रधान पद परिवर्तन की भविष्यवाणी गतवर्ष इन शब्दों में की गई थी—

प्रधान शासक (श्री रामलाल जी) की नामराशि के आधार पर शनि इनके समक्ष नानाविध राजनैतिक समस्याओं को खड़ा कर देगा। विरोधी पक्ष राजनैतिक गतिरोध पैदा करेगा। सत्तारूढ़ पार्टी में भी प्रधान शासक के प्रति असन्तोष रहेगा; अन्ततः यहां प्रधान पद में मई से पूर्व ही परिवर्तन का योग है।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार श्री रामलाल जी का मई से पूर्व ही (लगभग ८ अप्रैल को) पद त्याग करना पड़ा।

पाठकों! सभी भविष्यवाणियों की सफलता को अंकित करना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं। अस्तु, भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय मुझे नहीं, उन महर्षियों को ही है जिन्होंने असम्प्रज्ञात स्थिति में तब अनुभव करके ग्रहों के संकेतों को समझने का मार्ग बताया है। इस सफलता के श्रेयभागी हमारे लाखों पाठक हैं जो समय-समय पर भविष्यवाणियों की सत्यता का मूल्यांकन करके पत्र द्वारा हमें प्रतिवर्ष विचारपूर्वक कुछ न कुछ भविष्यकथन के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

अब हम सं० २०४१ की ग्रहगति को ध्यान में रखकर आगे घटित होने वाले घटनाक्रम को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं—

संवत् २०४१ वि. की ग्रहस्थिति का विश्व पर प्रभाव

इसवर्ष-ग्रहपरिषद के निर्वाचन में प्रधानपद क्षीणचन्द्र को एवं मन्त्रीपद दैत्य गुरु शुक्र को प्राप्त हुआ है। सूर्य को नीरसेश एवं सस्येश दो पद प्राप्त हैं, गुरु को भी मेघेश-फलेश ये दो पद प्राप्त हुए हैं। भौम एवं शनि को क्रमशः रसेश एवं धान्येश का पद प्राप्त हुआ है। पद विभाजन से स्पष्ट है कि सत्ता में सन्तुलन है लेकिन राजा एवं मन्त्रीपद पर आसीन ग्रहों की दृष्टि से यह ज्ञात होता है, कि विश्व के कुछ देश -प्रधान राजनीतिज्ञों के कुचक्र (कुनीति) के कारण पतनोन्मुख होंगे। विकासशील देश इस कुचक्र के शिकार होंगे। गल्फ देशों में युद्ध की ज्वाला तीव्र होगी, कहीं अराजकता कहीं हिंसा, रक्तपात से पड़ोसी देश भी चिन्तित होंगे।

जगतलग्न कुण्डली के अनुसार चतुर्थ स्थान में म० केतु है, तीसरे उच्च शनि है, अतः दक्षिणी अफ्रीका, दक्षिण-पश्चिमी देशों के लिए एक विशेष कानून व्यवस्था का प्रयास करेगा, कुछ सफलता भी मिलेगी। इस वर्ष का प्रतिरक्षामन्त्री गुरु, जगत्कुण्डली में बली है, अतः अफगानिस्तान, फ्रांस, काबुल बलोचिस्तान एवं बंगला देश में सैन्यबल बढ़ेगा, कहीं सेना को राष्ट्रहित में प्रयोग किया जाएगा।

विकासशील देशों की स्थिति

इसवर्ष की ग्रह स्थिति के अनुसार समृद्ध देशों में हथियारों की दौड़ लगी रहेगी, जबकि विकासोन्मुख देशों को भी अपनी रक्षा के लिए व्ययभार वहन करना पड़ेगा। परिणामस्वरूप विकास पर व्यय कम होगा।

वर्षारम्भ में ही शनि मंगल वक्री हैं। २९ अप्रैल से ६ ग्रह वक्री हो जाते हैं, २ मई को मंगल वक्री अवस्था में राशि परिवर्तन करके शनि के साथ राशि सम्बन्ध बनाता है, यह शनि-मंगल का राशि-सम्बन्ध ५ अगस्त तक लगातार बना रहता है—

इस ग्रह स्थिति के आधार पर विश्व में निरस्त्रीकरण की समस्याएं और भी जटिल होती दिखाई देती हैं। समृद्ध एवं सशक्त देशों में शस्त्र-प्रणालियों की नई तकनीक सामने आएगी। नई तकनीकियों से आगे नई रणनीतियों को बढ़ावा मिलेगा। अणुशस्त्रों के परीक्षण-प्रतिबन्ध सम्बन्धी वार्ताएं विफल रहेंगी, परिणामस्वरूप परमाणु युद्ध का आतंक आगे विश्व के लिए भारी समस्या बनेगा। इस प्रकार छोटे विकासशील देश किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर निर्गुट न रह पाएंगे युद्ध विभीषिका के परिणामस्वरूप छोटे विकासोन्मुख देश समृद्ध देशों की गोद में जा लगेंगे।

भय रोग-उपद्रव—2 मई से अगस्त तक का समय विश्व के समक्ष अभूतपूर्व घटनाओं को जन्म देगा। शनि-मंगल का राशि सम्बन्ध किसी मुस्लिम राष्ट्र में भयंकर रक्तपात या आन्तरिक क्रान्ति को जन्म देगा। किसी पड़ोसी देश से उलझने की प्रवृत्ति से विश्व-शान्ति भंग होगी। लेकिन इस अवधि में कोई बड़ा भयंकर युद्ध होने वाली ग्रहस्थिति नहीं है। पश्चिम एशिया की स्थिति बिगड़ती जाएगी। इजराइल एवं अरब देशों में आगे भीषण युद्ध होगा। फ्रांस में, विशेषतः दक्षिण पूर्वी क्षेत्र में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस वर्ष सितम्बर तक प्राकृतिक प्रकोप एवं अकाल की स्थिति से कुछ देश विशेष उलझन में फसेंगे। वर्ष के पूर्वार्ध में आगजनी किंवा यान दुर्घटनाओं में भारी जन धन हानि के योग हैं। दुर्घटनाएं अधिकतर शनिवार या मंगलवार को होंगी। शनि-मंगल यूरेनस नेपच्यून आदि ग्रहों की स्थिति के अनुसार इसवर्ष कुछ विशेष प्रकार के रोग पनपेंगे जनहानि के समाचार मिलेंगे।

२० दिसम्बर १९८४ को शनि वृश्चिक में आकर केतु के साथ सम्बन्ध करेगा। यह योग २९ जनवरी १९८५ ई० तक चलेगा। इस अवधि में दुर्घटना, बीमारी एवं प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प तूफान आदि से कहीं भारी हानि होगी। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। मंहगाई बहुत बढ़ जाएगी, शासन का अंकुश व्यापार पर लगेगा।

६ मार्च १९८५ ई० से संवत् के अन्त तक का समय भी कष्टप्रद है। इस अवधि में कहीं सत्ता में परिवर्तन एवं कहीं आंतरिक अशान्ति बढ़ेगी। अग्निकाण्ड, वायुयान दुर्घटना, किंवा रोग विशेष से जनधन हानि संभव है। जहां तक अणुयुद्ध (महायुद्ध) का प्रश्न है, हम स्पष्ट कर देना उचित समझते हैं कि विश्वव्यापी विनाश की स्थिति अभी बहुत दूर है, छोटे मोटे देशों में जंग तो होते ही रहेंगे लेकिन व्यापक विनाश का भयावह चित्र अभी १५ वर्ष से पूर्व अर्थात् सन् १९९९ से पूर्व किसी भी स्थिति में संभव नहीं है। इस अवधि के बाद ईश्वर समृद्ध देशों को सद्बुद्धि दे तभी कल्याण है।

यूरोप के देश--यूरोपीय देशों की ग्रह स्थिति के अनुसार धनस्थान में शनि-मंगल प्लूटो की स्थिति यूरोपीय देशों में व्यापारिक स्थिति को विशेष उलझनपूर्ण बना देगी। कुछ देशों से व्यापारिक सम्बन्ध टूटेंगे एवं कुछ से नए सम्बन्ध स्थापित होंगे। वाणिज्य व्यवसाय की नीति में विशेष परिवर्तन आएंगे। यूरोप के देश आर्थिक समस्या में उलझेंगे, विकास के लिए उपयोगी धन का प्रयोग शस्त्र-भण्डार के लिए होगा।

यूरोप के देशों की कुण्डली

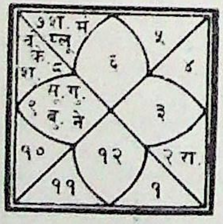

(१ जन० १९८४ ई०)

यहां के ब्रिटेन, कनाड़ा, आदि में प्रवासी लोगों की समस्या उभर कर सामने आएगी रंगभेद-नीति भी कहीं विषमरूप धारण करेगी, परिणामस्वरूप प्रवासी लोगों को विषम स्थिति में से गुज़रना होगा।

पाठक नोट करें, कि १९८८ तक का समय यूरोप के देशों के लिए बहुत भयावह है इन वर्षों में यहां के कुछ देशों को युद्धमय वातावरण में उलझने को विवश होना पड़ेगा। इस वातावरण में रूस का हस्तक्षेप रहेगा।

यूरोप के देशों की कुण्डली में कालसर्प योग एवं तुला राशि में शनि-मंगल की स्थिति आगामी वर्षों में भयावह स्थिति को जन्म देगी। उत्तर-दक्षिणी कोरिया-जर्मनी में विशेष परिवर्तन एवं सन्धियां होंगी।

पश्चिमी यूरोप के देश अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में एक-दूसरे का सहयोग अवश्य देंगे। इस प्रकार यूरोप की समाजवादी बिरादरी में भी प्रगति होगी। दक्षिणी यूरोप में फ्रांस, ग्रीस, स्पेन में समाज़वाद जोर पकड़ेगा। यहां के शासकों को कठिन परिस्थिति का सामना करना होगा। वर्षारम्भ से जुलाई एवं नवम्बर से जनवरी, १९८५ ई० तक विशेष ऐतिहासिक घटनाएं घटेंगी। लेबनान की समस्या का हल निकलेगा। इज़राइल, सीरिया और फिलिस्तीन को अपनी-अपनी सेनाएं वापिस बुलाने पर विवश होना पड़ेगा। अरब देश—अप्रत्यक्ष रूप से इज़राइल को मान्यता देंगे।

मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली—इस कुण्डली का दायां भाग कालसर्प योग से ग्रस्त है जोकि समय भयावह घटनाओं का संकेत देता है। संवत् के शुरू से अगस्त तक के समय में यावन राष्ट्रों में कहीं भयानक स्थिति बनेगी, किसी देश में प्रधान नेता के विरुद्ध क्रान्ति से जन-धन हानि होगी, किसी देश के मानचित्र में ऐतिहासिक परिवर्तन आने का योग भी है। पाक में सिन्ध एवं बलोचिस्तान में भयंकर क्रान्ति रक्तरंजित सम्भव है। इराक-इरान युद्ध में पाक एवं सऊदी अरब का हस्तक्षेप होगा। पाक की कुनीति उसे विनाश की ओर ले जाएगी। २७ सितम्बर, १९८४ से आगे का समय मुस्लिम देशों के लिए इतना भयावह नहीं। इस वर्ष पाक, बंगला देश, तुर्की, यूनान, ईराक, ईरान, केन्या आदि में आन्तरिक अशान्ति से स्थिति उलझनपूर्ण बनेगी। उपरोक्त मुस्लिम देश पड़ोसी देशों की शान्ति को भी भंग कर सकते हैं। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।

मुस्लिम देशों की कुण्डली

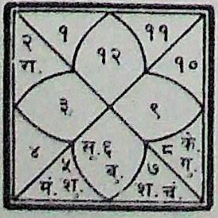

८ अक्तूबर १९८३ ई०
(इष्ट २८।५३)

भारत एवं भारत सरकार

स्वतन्त्र भारत का ३८वां वर्ष प्रवेश

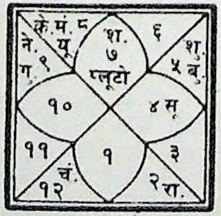

१५ अग. १९८४

भारतीय गणतन्त्र का ३५वां वर्ष

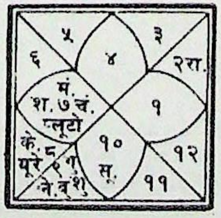

२६ जन. १९८४

इससे पहले कि हम भारत के ३८वें वर्ष की कुण्डली का परिशीलन करें। हमें ३७वें वर्ष की कुण्डली पर भी ध्यान देना होगा, क्योंकि १४ अगस्त, १९८४ से पूर्व तक ३७वें वर्ष के ग्रह अपना प्रभुत्व रखते हैं।

३७वें वर्ष की ग्रह स्थिति के अनुसार अगस्त से पूर्व का समय भारत के लिए अग्नि-परीक्षा का है। वर्षारम्भ में ही शनि, मंगल वक्रगति से चल रहे हैं। २ मई को वक्री मंगल अपनी राशि बदल कर वक्री शनि के साथ मेल करेगा—यह ग्रहस्थिति भारत में कई अघटित घटनाओं को जन्म देगी। ५ अगस्त तक भारत के समक्ष राजनैतिक उलझनें विषम रूपेण चिन्तनीय होंगी। इस अवधि में किसी दुर्घटना किंवा अकस्मात् किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का बिछोह सहना पड़ेगा। संवत् के प्रारम्भ से अगस्त तक की अवधि में प्रान्तीय-साम्प्रदायिकता का उन्माद भी विषमरूप धारण करेगा। प्रान्तीय समस्याओं को सफलतापूर्वक सुलझाने में शासन निरुत्तर सा मालूम देगा। कुछ प्रान्तों में कलह से असुरक्षा एवं अराजकता का सा वातावरण बन सकता है। अतः इस अवधि में राष्ट्रनायकों को विवेक एवं सन्तुलन-प्रज्ञा से काम लेना होगा। विशेषतः १९ जून तक के समय में भारत को अपने सैन्य-बल को सीमा प्रान्तों पर सबल बनाना पड़ेगा। कहीं किसी पड़ोसी देश की कुनीति से सीमा प्रान्तों पर शान्ति भंग होने का योग है। अगस्त तक के समय में भूकम्प, किंवा तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से किसी प्रान्त में भीषण जन-धन

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

हानि का योग भी है। ३७वें वर्ष में कालसर्प योग भारत के शासकों के लिए अग्नि-परीक्षा का है। अतः इस अवधि में थोड़ी भूल भी हानिकारक होगी।

श्रीमती गांधी की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि की महादशा में राहु का अन्तर जुलाई, १९८३ से मई, १९८४ तक रहेगा। इसी अवधि में शनि वृश्चिक राशि में एवं बृहस्पति धनु एवं मकर राशियों में भ्रमण करेगा। अतः अगस्त तक गोचर में शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध एवं २० दिसम्बर १९८४ के बाद शनि-केतु का राशि सम्बन्ध (जोकि २९ जनवरी १९८४ तक चलेगा) श्रीमती गांधी के लिए अग्नि-परीक्षा का है। मन्त्रिमण्डल में एवं कुछ प्रान्तों के मुख्य मन्त्रियों में परिवर्तन करने होंगे। इसी बीच श्रीमती गांधी अनेक समस्याओं को सुलझाने में सफल भी होंगी। प्रभाव बढ़ेगा, विरोधी हतप्रभ होंगे। श्रीमती गांधी अपनी पार्टी को सशक्त बनाने के लिए अकस्मात् विशेष पग उठाएंगी। श्रीमती गांधी को अगस्त, १९८४ तक तथा दिसम्बर से फरवरी १९८४ तक के समय में अनेकों पेचीदा समस्याओं से विशेष विवेक से निपटना होगा अन्यथा पार्टी की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचेगी। वृश्चिक राशि का शनि स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताप्रद है, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की दृष्टि से सतर्क रहना चाहिए। भगवती मां इन्हें दीर्घतम आयु प्रदान करे ताकि देश को कुशल नेतृत्व प्राप्त होता रहे।

३८वें वर्ष की ग्रहस्थिति इतनी उलझनपूर्ण नहीं। फिर भी दिसम्बर एवं जनवरी १९८५ तक का समय सावधानी का है। ३८वें वर्ष की ग्रह चाल के अनुसार प्रधान नेताओं का प्रभाव बढ़ेगा, समस्याओं का समाधान भी निकलेगा। विपक्ष अपना सशक्त विकल्प बनाने में सक्रिय पग उठाएगा।

राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह जी ने बुध की महादशा एवं सूर्य की अन्तर्दशा में पद शपथ ग्रहण की थी जो कि नवम्बर, १९८३ तक प्रभाव करेगी, इसके बाद का समय स्वास्थ्य की दृष्टि से सावधानी का है। प्रतिष्ठा एवं देश-गरिमा की दृष्टि से इनकी ग्रह स्थिति अच्छी है। महामहिम राष्ट्रपति एवं अन्य देश के कर्णधारों को ईश्वर स्वस्थ एवं सकुशल रखे ताकि देश को उत्तम नेतृत्व प्राप्त होता रहे।

भारतीय गणतन्त्र कुण्डली पर विचार करने) पर ज्ञात होता है, कि चतुर्थ भाव में शनि, मंगल, चन्द्र प्लूटो के एक साथ होने से वर्ष में विकट समस्याओं, चुनौतियों का सामना करना होगा। देश के सर्वोच्च नेता के लिए अग्नि परीक्षा का समय है। देश की आन्तरिक समस्याएं इस तरह पेचीदा बनेंगी कि उन्हें सहज में सुलझाना सम्भव न होगा। देश में कहीं दुर्भिक्ष की चुनौती कहीं साम्प्रदायिकता का विष, कहीं शत्रु देश की गति-विधि की चिन्ता ये सब मिलकर शासकों को चिन्तित करेंगी। राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू पर भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए विशेष व्यवस्था बनेगी। इस वर्ष भारत के व्यापारिक सम्बन्ध कुछ देशों से टूटकर नये बनेंगे। देश का कुशल नेतृत्व इन सभी समस्याओं को बड़ी बुद्धिमता से हल कर देगा। ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है।

ग्रह गति से प्राप्त संकेतों से ज्ञात होता है, कि आगामी दो वर्षों में संविधान में नये संशोधन एवं परिवर्धन होंगे। दलीय प्रणाली का विकास भी सम्भव है।

निर्वाचन की दृष्टि से विचार करने पर ग्रह गति से यह संकेत मिलता है, कि निर्वाचन अपने सुनिश्चित समय पर नहीं हो पाएंगे, अवधि से पूर्व या पीछे हटकर ही यह समय आएगा। राष्ट्र के वातावरण एवं कार्य प्रणाली के सुव्यवस्थित होने पर ही अकस्मात् घोषणा होगी। ग्रह गति के अनुसार सम्वत् २०४० के अन्त तक यदि निर्वाचन हो जाए तो देश में विपक्षी दल अपना बहुमत नहीं बना सकेगा, अन्ततः कांग्रेस (ई) की विजय सुनिश्चित है। ध्यान दें, अभी मिली-जुली एक सरकार का स्वप्न पूरा होने वाला नहीं। क्योंकि सभी विपक्षी नेताओं में एक ताल-मेल का पूरी तरह अभी योग नहीं नहीं रहा। सन् १९८५ मध्य तक पार्टी में विलक्षण उलट-फेर होंगे, जोकि कांग्रेस (ई) को और भी मजबूत बना देंगे।

प्लूटो आदि की गति के आधार पर ज्ञात होता है, कि भारत अणु ऊर्जा में आत्म-निर्भर होगा, अन्तरिक्ष विज्ञान में नाम ऊंचा उठेगा।

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

व्यापारिक क्षेत्र पर विचार करने पर ज्ञात होता है, कि इस वर्ष व्यापार क्षेत्र में विशेष परिवर्तन एवं परिवर्धन होंगे ब्रिटेन, रूस, जापान एवं कनाडा आदि देशों से सम्बन्ध बढ़ेंगे। भारत से ऊनी व रेशमी कपड़े, इंजनीयरिंग सामान एवं तम्बाकू, चमड़ा, औषधियों का निर्यात होगा। व्यापारिक दृष्टि से भारत प्रगति करेगा।

भारत की जलवायु और वर्षा

यह वर्ष वर्षा की दृष्टि से बड़ा ही अनिश्चित है। क्योंकि वर्षा ऋतु में शनि-मंगल का योग ५ अगस्त तक रहता है, यह स्थिति भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं भयंकर सूखा या कहीं भयंकर वर्षा से बाढ़ आदि का संकेत देती है। हां, इस अवधि में कड़ककर बिजली गिरकर अनेकत्र जन-धन हानि के समाचार भी मिलेंगे। वर्षा आवश्यकतानुसार बहुत कम या बहुत अधिक मात्रा में होगी। वर्षा ठीक समय पर न होने से भी हानि होगी।

जून में सू. बु. शु. तीनों आर्द्रा नक्षत्र में आकर बम्बई और गोआ की ओर बाढ़ की स्थिति बनाएंगे। अन्य स्थानों पर भी वर्षा होती रहेगी।

जुलाई १८, १९, २०, एवं ५, ६ अगस्त को वर्षा होगी।

आगे दिसम्बर १९८४ से जनवरी १९८४ के अन्त तक पुनः वर्षा में अनिश्चितता बनी रहेगी। कहीं सूखा, कहीं अधिक वर्षा से हानि होगी। इस अवधि में शीत लहर से जन-हानि के समाचार भी मिलेंगे।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन है, जब तक शनि वृश्चिक में प्रवेश नहीं करता तब तक यहां की स्थिति चिन्तनीय रहेगी। शासन को यहां शांति स्थापित करने के लिए यहां के विशिष्ट व्यक्तियों का विश्वास प्राप्त करना होगा। अन्यथा केन्द्र सरकार से वैमत्य बना रहेगा। स्थिति और विषम बन सकती हैं। अगस्त तक का समय तथा दिसम्बर जनवरी तक का समय केन्द्र के लिए चिन्तनीय है।

हरियाणा—प्रभाव राशि मिथुन है। दिसम्बर १९८६ के बाद यहां की राज-नीति में विशेष परिवर्तन होंगे। मार्च तक प्रधान पद में परिवर्तन होगा। प्रधान शासक

के समक्ष विशेष समस्याएं उपस्थित होंगी। क्षेत्रीय प्रगति एवं सम्पन्नता के लिए नये नियम लागू होंगे।

हिमाचल प्रदेश—प्रभाव राशि मीन है। दिसम्बर के बाद का समय राजनैतिक दृष्टि से उलझनपूर्ण है। राजनीतिक अस्थिरता रहेगी। मन्त्रिमण्डल में विशेष परिवर्तन होंगे। जंगल-वन्य संपदा के प्रसार पर विशेष बल देगा। नई जलविद्युत् योजनाएं बनेंगी। जिससे प्रान्त की समृद्धि एवं तरक्की होगी।

उत्तर प्रदेश—वर्षारम्भ से अगस्त तक शनि-मंगल के सम्बन्ध के समय विशेष घटनाएं घटित होंगी। प्रधान वर्ग के लिए समय उलझनपूर्ण है। दिसम्बर १९८४ से जनवरी १९८५ तक का समय भी नेष्ट है। प्रधान नेता अपनी कार्यकुशलता का परिचय देंगे, समस्याओं का हल निकलेगा। यहां के मन्त्रिमण्डल में अचानक कुछ आवश्यक परिवर्तन होंगे।

राजस्थान—प्रभाव राशि तुला में शनि-मंगल का योग अगस्त तक यहां की कृषि सम्पदा के लिए नेष्ट है, तथा शासकवर्ग के समक्ष चुनौती का समय है। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। यहवर्ष राजनीतिक दृष्टि से निस्सदेह उलझनपूर्ण है। प्रधान पद में परिवर्तन होगा।

बिहार—यहां इसवर्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी.। केन्द्र से सहायता लेनी पड़े।

महाराष्ट्र—यहां स्थानीय कांग्रेस के नेताओं में परिवर्तन होने से कांग्रेस की स्थिति में सुधार होगा। ग्रह गतिवश शासनसत्ता में भी परिवर्तन नहीं होगा।

मध्यप्रदेश—प्रभाव राशि वृष है, वृश्चिक में स्थित शनि की वृष राशि पर नजर है, यहां की शासन सत्ता में अचानक परिवर्तन आएगा। अगस्त तक का समय इस प्रान्त के लिए विशेष उलझन पूर्ण है।

काश्मीर—प्रभाव राशि मीन है। विशेष नए कर लगेंगे, अभी दो वर्ष तक "विशेष दर्जा" देने की समस्या विवादास्पद रहेगी। साम्प्रदायिक राजनीति के आधार पर जम्मू काश्मीर को एक इकाई के रूप में रखना कठिन होगा। सत्तारूढ़ पार्टी के अन्दरूनी मामले उलझेंगे, प्रधान नेता उलझन में पड़ेंगे। सीमा प्रान्तों पर सीमा सुरक्षा की दृष्टि से सतर्क रहना होगा। मन्त्रिमण्डल मे परिवर्तन होगा।

विश्व के प्रमुख कुछ राष्ट्र

अमेरिका—प्रभाव राशि मिथुन के अनुसार धन राशि का वृहस्पति इस देश के लिए शुभ है। विज्ञान में प्रगति एवं सर्वोच्चशक्ति के रूप में प्रतिष्ठा बनाए रखेगा। छोटे एवं परस्पर शत्रु देशों में युद्धाग्नि को हवा देगा। अणुशस्त्र भण्डारण में सबसे आगे रहेगा। अंतरिक्षयुद्ध की तैयारी करेगा। शान्ति स्थापना के लिए सभी योजनाएं प्रदर्शनमात्र होंगी। २० नवम्बर तक यहां विशेष परिवर्तन संभव है। भारत से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

रूस—प्रभाव राशि तुला होने से अगस्त तक का समय विशेष उलझन पूर्ण है। विदेश नीति में परिवर्तन आएगा। कुछ देशों से व्यापारिक सम्बन्ध बिगड़ेंगे। यहां के प्रधान शासक के समक्ष शनि मंगल योग में अगस्त तक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं उपस्थित होंगी। मई १९८४ में अन्तरिक्ष यात्रा में भारत की सहायता करेगा। भारत से सम्बन्ध मधुर रहेंगे परन्तु भारत के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप होने से सम्बन्ध पूर्ववत् न रहें। फ्रांस ब्रिटेन एवं अमेरिका आदि से किसी विषय पर वैमत्य रहेगा। अफगानिस्तान की समस्या प्रधान शासक के लिए आगे सर दर्द बनेगी। एन्टार्कटिक क्षेत्र में युद्धमय वातावरण उपस्थित होगा।

चीन—प्रभाव राशि तुला में शनि-मंगल अगस्त तक रहेंगे। इस समयावधि में चीनी क्षेत्र तिब्बत में भयंकर अशान्ति रहेगी। इस समय चीन की नीति में एवं शासन सत्ता में विशेष परिवर्तन सम्भव है। कहीं भयंकर सूखा कहीं जनधनहानि होगी। सीमावर्ती क्षेत्रों पर कुदृष्टि से किसी क्षेत्र में अशान्ति व्याप्त रहेगी। जनवरी १९८५ ई० के बाद चीनशासित तिब्बतक्षेत्र के बारे में देश की नीति में विशेष परिवर्तन होंगे। भारत से सीमा विवाद हल न होगा। व्यापारिक सम्बन्ध बनेंगे।

ब्रिटेन—प्रभाव राशि मेष है। दिसम्बर १९८४ से जनवरी १९८५ तक मेष में मंगल राहु का योग यहां की शासन सत्ता के लिए परेशानी वाला है। आयरलैंड आदि में तथा कुछ अन्य भागों में असन्तुष्ट तत्त्व उभरेंगे। अग्निपरीक्षा का समय है। शेष समय अनुकूल रहेगा।

पाकिस्तान—यहां अगस्त तक का समय उलझनपूर्ण है, इस अवधि में ही सत्ता परिवर्तन अनिवार्य है आगे वृश्चिक के शनि में बलोचिस्तान की समस्या पेचीदा बनेगी। प्रजातन्त्र बहाली का संघर्ष सफल होगा। राजतन्त्र को नई दिशा मिलेगी। सिन्ध पंजाब बलूचिस्तान में सैनिक शासन का विरोध संवत् आरम्भ होने से पूर्व ही फलदायक सिद्ध होगा।

पाठको! अतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिर्विज्ञान दृष्ट्या एवं प्रभुकृपा से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं अल्पविषया मति में स्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष प्रस्तुत कर दी है। उस प्रभु की प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य-लेखन में प्रवृत्ति बालचापल ही तो है :—

"तत्त्वं वागीश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

श्री मार्त्तण्ड भवन, कुराली।
ता० ११ सितं० १९८३ ई०

शुभचिन्तक—
इन्दुशेखर शर्मा

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत-स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना-कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया, और छीक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था। जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छीक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे, कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें-वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

सुता जन्म सिंहराशि में, धन-मृग जन्मे बाल। अर्ध-शब्द शिशुकरत भयो भाषत बुद्धि रसाल॥

पितृपरोक्ष ज्ञान—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शैय्या तहां भय जहां कुज होय। रविस्थान में दीप कही शनी लोह कही सोय?

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान—प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय, तृतीय—ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम, षष्ठ—वायव्य। सप्तम—पश्चिम। अष्टम, नवम—नैऋत। दशम—दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति-स्थान से पाकशालादि विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

शनि से अशुभ (बैसा) स्थान जानना चाहिए। दोहा—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। या लग्नपं दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार ॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत्य।

चन्द्रातैल-ज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो० तनुस्थान शशि आई, दां शशि षष्टे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीपक तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसारउपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि स्वनवमांश स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहें।

शय्या—शिर व पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषड्कान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०।२२ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो वहां सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना।

दो०—मीन-मिथुन-सिंह-तुला, मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल ॥

अथ चिह्नज्ञानम्—दोहा षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण ॥ भानु तथा सौरी तनधन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वाम कर्ण या मस्तके अवश चिह्न दरशाह ॥ सुहृद भाव मे कवि तब भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु का चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनि देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर चलता कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहे शशी जो खीन। कण्टक शुभ खगना असैं, वेगि ताहि यमलीन।
बसै चन्द्रा द्वादसै अष्ट भवन २ पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास मे शिशु मरे मातु पिता संताप।
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगा—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियधर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगा—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुर्वसिंह अज, दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखवयोगा—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताकी अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वावीस ॥ पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। बीर्य्यहीन नर होंय तो अधिक व्याधि रुजताय ॥

बन्धनयोगा—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूरं करि निवसै कारागार ॥

सर्पवेष्टितयोगा—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्मयोगा—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हों, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा—जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा, वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

सुखदयोगा:—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह २ परे तो जानो सुख संग ॥ जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्फ पट बसे विलब भानु ॥

कुष्ठयोगा:—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कहू कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट ॥ जलगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंडे कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुम:—आगे पीछे चन्द्र के जो न परैं ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय ॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासू। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्याभिचारिणी बुधवर कहैं कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहे पति को तजे तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो तेन ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम ॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुबो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसै बुधजन कहत विचारि ॥

वैधव्य विषकन्यायोगा:—चौ० रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार ॥ साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय ॥४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय ॥ मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखी जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—सदन में भूमिसुत जन्म सबन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य विषकन्याभंगयोगा:—जन्मलग्न वा चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यावियोग:—शे अष्टमे काकबन्ध्या। मन्दाकविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई-केन्द्रघात नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत ताके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ धन गुरु आवे धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई ॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी ॥ रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा......कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर ॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत ॥

अशुभ प्रसव मास—कातिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मागशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत में कुत्तिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे, कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कातिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हों तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चांदी, सोना, तांबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता-पिता, को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, पड़ोसियों को एवं टेवा बनाने वाले ज्योतिषी को भी भय होता है। ऊपर की प्रथम पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहिले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अर्थकनक्षत्रजनन-फलम:—वृद्धगर्ग कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जो जोड़ें राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० शे०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचरस्थ शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावें तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशु ना	धन ना	धन ला	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा
फलम्	(१।२।३च.) श्वसुरहानि	(२।३।४च) सास नाश	ज्येष्ठ नाश	(४च) देवर नाश

सुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करने चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल		आश्लेषा पाद फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वो.	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा,	मतिमा,	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमी	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसभायोगे ईषच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम् ॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥ बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम् ॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥

अथाभुक्तमूलविचार—ज्येष्टा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग करदे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

गण्डमूलात्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	पशु हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	सिरअंगपीड़ा	कान्तिमुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहृ	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्त
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढ़ा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठांत्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो, इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें या नवमे गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो, (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ ग्रह को ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय ॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगा :—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगाः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषन ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भय	श्रीः	मानभग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ा	मुक्तना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नलाः	धननाश	सुख	रोगः	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभीः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोकः	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभी.	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाशः	सुख	शोकः	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक;	धनला.	वस्त्रला.	दुःख	धनलाभ	धनला.
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःख	वैर	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशिके उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकमे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा के	ग्रहाः
मा.१	दि. २।	मा१॥	मा१	मा१२	मा. १	मा३०	मा १८	एकार्थभोग
आदौ.	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमयः
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गंतव्यराशे प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालः	पन्ना	म पुष्परागा	हीरा	नीलम्	गोमेदम्	वैडूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	कहेम	वैडूर्यम्	लाजावर्तः	लाजावर्तः

पूतनाग्रसित लक्षण एवं शान्ति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे २ गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर बनदेवता या नगरदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्रता में ही बालक के साथ सो जावे तो **बालकांता** नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा— जिस बालक के नखों और दांतो में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योनिर्दानं निवासश्च तत्र रात्रौ---ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव॥ इत्यस्य जपः ततोऽनेनेव मन्त्रेण सदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो---ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥१॥ कृष्ण! रक्ष शिशु शङ्ख मधुकैटभ-मर्दनः। प्रातः सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययो ॥२॥ महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदनः। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि. महाभयान्। त्राहि त्राहि हरेनित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥४॥

इन चार मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग करदे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

गण्डमूलात्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	पशु हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	सिरअगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पतिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहृदरिद्री		खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीडा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकीर्तियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्त
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढ़ा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठांघ्रपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो, इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमे गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो, (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ ग्रह को ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय ॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगा:—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जांरज योगाः--भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषन ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानना.	भय	श्री:	मानभग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीड़ा	मुकुना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्र:	अन्नला:	धननाश	सुखं	रोग:	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोग:	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौम:	शत्रुभी:	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी:	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोक:	धनलाभ	धनना.
बुध:	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभी.	पणुलाभ	सुख	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश:	सुखं	शोक:	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक;	धनला.	वस्त्रला.	दु:ख	धनलाभ	धनला.
शनि:	भय	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी:	पुत्रनाश:	धनला.	दोष:	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहु:	हानि:	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुख	धनला.	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशिके उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकमे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा के	ग्रहा:
मा.१	दि. २।	मा१॥	मा१	मा१२	मा. १	मा३०	मा १८	एकार्थभोग
आदौ.	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गंतव्यराशे: प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणय:

सू.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल:	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	हीरकम्	इन्द्रनीलम्	लाजवर्त:	लाजवर्त:

पूतनाग्रसित लक्षण एवं शान्ति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे २ गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर वनदेवता या नगरदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्रता में ही बालक के साथ सो जावे तो **बालकांता** नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूल मांला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्ण रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा— जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दान निवासश्च तत्र रात्रौ---ॐहिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो न: सुतानिव॥ इत्यस्य जप: ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्ति:॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो---ॐवासुदेवो जगन्नाथ: पूतनातर्जनो हरि:। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥१॥ कृष्ण! रक्ष शिशु शङ्ख मधुकैटभ-मर्दन:। प्रात: सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययो: ॥२॥ महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदन:। यद्गोरज: पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि. महाभयान। त्राहि त्राहि हरेनित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥४॥

इन चार मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

अथ बाल पूतना विधान—आगे लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थानं-स्पर्श निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरन्तर करें । चौथे दिन पलास, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्रों को उबाल कर बालक को मन्त्र पाठपूर्वक स्नान कराना तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना ।। तदनंतर ओं द्यौशांतिरन्तरिक्ष ०८ इत्यादि शांति मन्त्रों व मार्जन व मन्त्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान-स्पर्श पूर्वक यह मन्त्र पढ़े—ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ! ग्रहस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।। ओं सर्वमातर इमं ग्रह सहरतु हु रादय२ स्फोटय २ स्वाहा । गर्ज २ से २ गृह्ण २ आमर्दय २, हिम २, हुवः एवं सिद्धि रुद्रो ज्ञापय स्वाहा ।। इति रक्षा मन्त्रः ।।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निमर्णार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपुर, लोहवान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दी वै श्रवणस्तथा । रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब-पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झण्डी, पुष्प चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रांह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रं दुष्टाग्रहा गच्छन्तिवतः स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एक सेर लाल भात, आधे सेर पूर्ण पोली, (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	लसुन, गौश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गौघृत
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल-चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली, सायं, पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	
पञ्चम दिन मास वर्ष में, बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	ओं भगवती ह्रींह्रीं ह्रं ह्रं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्णअस्त्र ठःठः चामुंडे सर्वार चण्डिकेठःठः स्वाहा ।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली,७पूड़ियां, १ प्रहर दिनचढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ७ पूड़ियां सायं काल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत ।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन ५, रंग की झण्डी५ दीपक ५ ।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	अं नमो भगवतेवासुदेवाय कृष्णाय मडल बलिमादाय हन२ हुंफट्स्वाहा	
दशम दिन मास वर्ष में, रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये ।	गुड़ के घी भुने चावल, गौ घृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हु फट् स्वाहा	गौश्रृंग, लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गौघृत
एकादश दिन मास वर्ष में, सुदंशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ अफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ओं ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में, अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर ।	ओं नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टानां ह्रांह्रं स्वाहा	

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशांत्यर्थं दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिनसंख्या १च	२च	३च	४च	रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्राः	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदानम्	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमन्त्र जपः	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे ।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२७	अग्निर्मर्धेति मन्त्रः	कछुए के मुख में घी दें
रोहिणी	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मयवेति मन्त्रः	सर्प को दूध दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्रइति मन्त्रः	बकरी के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदानम्	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौ रितिमन्त्रः	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गोऽजादिदानम्	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राज्यदानम्	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दे
उ. फा.	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्यावर्द्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदानम्	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलावे
चित्रा	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरीगति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर व धतूरे के फूल वन में रखे
स्वाती	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़ चावल खिलावे
विशाखा	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दे
अनुराधा	गोघृतदानम्	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दे
ज्येष्ठा	तिलदानम्	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रः	बन्दरों को गुड़ तिल डाले
मूल	रौप्यपात्रदा	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
पू. षा.	गोमुक्तादानम्	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोते की बलि दे
उ. षा.	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डाले
श्रवण	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त मीठा की बलि दे
धनिष्ठा	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	वसो पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दे
शतभिषा	भोजनान्नदानम्	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलावे
पू. भा.	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि दे
उ. भा.	अन्नदानम्	१०	३	८	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलावे
रेवती	फल दा. कन्यापू.	१८	१०	९	२०	पूषन्तवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दे

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	८	९	१०
नक्षत्र	मूल	भ.	कृ.	रो.	श्लेषा

जन्मै सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरै कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बहुरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) च० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश को दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर व गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) सा० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उन की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट—

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मन्त्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान जप करे।

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में 'रोग नक्षत्र' का नाम दिया है। रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'—वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें—ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता ४।६।१४ आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू.षा. या हस्त व पू.भा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।८।१२।१४।३० तिथि, भरणी कृत्ति आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रो	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

तिथिकष्टावलौ यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतनदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिण्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्करावलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षोद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रोप्यदान
३०	पितर	१८	सूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावलौ यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्ग विशेष में पीड़ा कष्ट घाव फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु—विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो दैवज्ञ तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस 'पीड़ित-भाव' को देखे। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की सम्भावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति करावे। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांक चक्र

भाव→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अङ्ग→	सिर	मुख	भुजाएँ	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएँ	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

कुछ दैवज्ञ यहां भावों की जगह मेषादि राशियों की कल्पना करके इसी तरह से विचार करते हैं।

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खं सुदंनं खं हुं फट् स्वाहा"—इस मन्त्र का उच्चारण करे।

ग्रहगोचराद्यंदशा कमाद्यैग्रंहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दानसमय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूंर श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलास
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरीरक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वंपुष्प	हाथीदांत	कपूंर शस्त्र	फल	१६०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक घोड़ा	पीतफल	१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल घोड़ा	धूप	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नम	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्या	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूंर	मसरी श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्येशवत्	मुन्येशमन्त्रः	मुन्येशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करे। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके ता लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तन्दनतर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एव अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :—लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परता तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार केव्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-लिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करे। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही—चावल, घी-खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार :—सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करे। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति—सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावे।

मंगल शान्ति का सरल उपचार :—लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे। फिर तीन तुलसीदल, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार से तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्म नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार :—हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें। उस दिह पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के वेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चांवल आदि ही खावें और यही दान करे। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करे। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि कर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार :—पीले वस्त्र रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलाये। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार :-सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल आदि सफेद फूल, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से आरम्भ करे : व्रत ५१ या १९ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग) गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार :—घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके१८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचार :-नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पेन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, बिधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करे, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निभयं लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्...राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्॥ हानिः स्यान्मरणं विदेश-गमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४.जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७. अष्टगंध—अगर, कस्तूरी, कुंकुम कपूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कपूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष:— नक्षत्र वा राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोग जाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्य तत्रादिमाक्षरम्)

राशय:	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशय:	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	०	रे	तू	०	नी	य	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फा	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढा	०	जी	खा	खो	०	गे	सू.	०	दी	ञ	चि

ध्यान दें,—नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा तो ङ की जगह ग, ञ की जगह द तथा ण की जगह पू से नाम प्रारम्भ करें। ऐसा करने से नक्षत्र भेद नहीं होता।

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स स्वर एव हि ॥३॥ **अथ जन्मराशि-नामराश्यो: प्रधानता निर्णीयते**—विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णय—वैश्वप्रान्त्यांघ्रि: श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्—चूल अ मेष:, इ वो वृष:, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्क:, माटे सिंह:, टो प ण ठ पो कन्या ॥
राते तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनु:।
भोजा खागी मकर: गुसद कुम्भ: दीथझञची मीन: ॥

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर लिया है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे—मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रह होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

टिप्पणी—(१) जज्ञोर्ज्ञ: यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशि:। कष-संयोगे क्ष:, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशि:। एवं श्वान्तारानस्य कुम्भराशि। (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेदव्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मेखलोन्मोकौ विवाह: षोडशी क्रिया ॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभाता रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक (Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भ्रमणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की पारिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन-फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या आदि का विचार

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो, तो ढैय्या और साढ़ेसाती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्रशनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धन-हानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह, रोग, पशु पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्म-कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो ढैय्या साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में लग्नेश पंचमेश, नवमेश होकर ३, ६, ११ वें स्थित हो तो सुख-सम्पति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि-अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम-रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित देता है। शान्त्यर्थ—सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें, या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें। अष्टगन्ध से शुभ मुहूर्त में बना हुआ शनियन्त्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है :

मेष राशि वालों को बीच के अढ़ाई वर्ष खराब है। वृष को पहले अढ़ाई वर्ष खराब है। मिथुन को अन्त के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। कर्क को बीच के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। सिंह को पहले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ है। तुला का आखिर के अढ़ाई वर्ष खराब है। वृश्चिक को अन्तिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी बीच के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ है। धनु को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। मकर को पहले ५ वर्ष, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष खराब है। कुम्भ को आदि अन्त के अढ़ाई-अढ़ाई वर्ष, विशेषतया अन्त के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़े सात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं।

सन् १९८२ में ई० ५ अक्तूबर को मेष के चन्द्रमा में शनि तुला में प्रविष्ट हुआ था, १९ दिस. १९८४ ई० तक शनि तुला में ही रहेगा; तत्पश्चात् २० दिस. १९८४ को वृश्चिक के चन्द्रमा में शनि वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होगा। तुला एवं मकर के शनि का मेषादि राशियों के लिए साढ़ेसाती, ढैय्या निम्नलिखित हैं :—

तुलास्थ शनि का मेषादि राशियों के लिए शुभाशुभ फल

कर्क—(ढैय्या), तांबे के पाए, शुभ हैं।

कन्या—(साढ़ेसाती), लोहे के पाए, कष्टप्रद हैं।

तुला—(साढ़ेसाती), तांबे के पाए, शुभ हैं।

वृश्चिक—(साढ़ेसाती), सोने के पाए, हानिप्रद हैं।

मीन—(ढैय्या), चांदी के पाए, शुभ हैं।

वृश्चिक राशिगत शनि का मेषादि राशियों के लिए शुभाशुभ फल

सिंह—(ढैय्या), लोहे के पाए, कष्टप्रद हैं।

तुला—(साढ़ेसाती), चांदी के पाए, शुभ हैं।

वृश्चिक—(साढ़ेसाती), सोने के पाए, हानिप्रद हैं।

धनु—(साढ़ेसाती), लोहे के पाए, कष्टप्रद हैं।

मेष—(ढैय्या), लोहे के पाए, कष्टप्रद हैं।

गुरु का शुभाशुभ फल

वर्षारम्भ से—२१ दिसम्बर (१९८३ ई.) को गुरु धनु में आकर ९ जन. १९८५ ई. तक धनु में ही रहेगा। १० जन. १९८५ ई. को गुरु मकर में आकर संवत् के अन्त तक मकर में ही रहेगा। धनु एवं मकर के गुरु का गोचर फल इस प्रकार :—

धनु राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम

मकरस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ

गुरु का विशेष फल—गुरु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होता है तब तक उस राशि वालों को विद्या व सन्तति की ओर से सुख, मित्र-बन्धु मिलाप, मान-वृद्धि खुशी, धन लाभ व शुभ यात्रादि अच्छे फल प्रदान करता है और जिन राशि वालों को अशुभ फलप्रद होता है, उन्हें धन-मान हानि व सन्तति की ओर से चिंता, वृथा यात्रा, शारीरिक कष्ट, बड़ों से वैमनस्य आदि अशुभ फलप्रद होता है।

शान्त्यर्थ—गुरुवार का व्रत करें, जप-दान करें, चिड़िया आदि पक्षियों को हल्दी से पीले किए हुए चावल डालें। गुरु शान्ति यन्त्र धारण करें।

राहु का शुभाशुभ फल

१३ जुलाई, १९८३ ई० को राहु वृष में आकर २८ जन. १९८५ ई० तक वृष में ही रहेगा। २९ जन. '८५ को राहु मेष में प्रविष्ट होकर वर्षान्त तक मेष में ही रहेगा।

वृष राशि के राहु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ

मेष के राहु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ

राहु का विशेष फल—राहु जब जिस राशि को शुभ-फलप्रद होता है तब तक उस राशि वाले व्यक्ति को प्रिय मिलन, द्रव्य लाभ, स्वास्थ्य सुख, घर में संतोष, कुटुम्ब में वृद्धि आदि शुभ फल देता है। जिस राशि वालों को मध्यम होता है, उन्हें यदाकदा किंचित शत्रु भय, कुछ हानि, लाभ कम, वृथा कलह, द्रव्य चिन्ता आदि फल देता है और जिन राशि वालों का अशुभ होता है, उन्हें अकस्मात् हानि, चोर-रोग भय, खर्च अधिक, मित्र-बन्धु वियोग, गृह-कलह, अशुभ विचारों की ओर मन की दौड़ इत्यादि फल देता है।

शान्त्यर्थ—प्रत्येक मास के पहले बुधवार की रात को तैलपक्व भोज्य गरीबों को दें या कुत्तों को डालें। दुर्गा पाठ करें। राहु-शान्ति यन्त्र धारण करें।

राशि	वैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १३ जून तक)	आषाढ़ (१४ जून से १४ जुला. तक)
	बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४१)		
मेष	स्थानान्तरण हो, बन्धनभय, सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद में हानि, धन हानि, मन अशान्त, शिव पूजन से कल्याण अप्रैल १८, १९, २७ २८ २९ मई ७,८ अशुभ।	कलह से दूर रहें, क्रोध में कमी, वृथाव्यय, निजी जनों से अनबन, मन अशान्त, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। मई १५, १६, २५, २६, जून ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	सिर व नेत्र कष्ट, धन लाभ हो, राजभय, निजी जनों से मदद मिले, गुप्त चिन्ता, भाग्य साथ देगा। जून २१, २२, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
वृष	हानिभय, उदरविकार, उत्साह बना रहे, गुप्त चिन्ता, स्त्री कष्ट, परिश्रम के अनुरूप लाभ न हो। अप्रैल १३, २०, २१, २२, ३०, मई १, ९, १० अशुभ।	स्थानान्तर या कारोबार का विचार, यात्रा में कष्ट, शरीर कष्ट, शत्रुप्रबल, मनखिन्न, वैभव में मन लगे। मई १७, १८, १९, २७, २८, जून ५, ६ अशुभ।	वायु विकार, यात्रा हो, स्वतन्त्र कार्य में हानि, शत्रु हतोत्साह, बनते कार्य में बाधा। जून १४, १५, २३, २४, २५, जुला. २, ३, ११, १२ अशुभ।
मिथुन	द्रव्यलाभ, सन्तान द्वारा वृथाव्यय, नेत्र कष्ट, पैर में चोट का भय, मंगल, केतु दान से कल्याण आमदन अच्छी। अप्रैल ५, ६, १४, १५, २३, २४, मई २,३, ११, १२ अशुभ।	सन्तति कष्ट, पढ़ाई में मन न लगे, मासान्त में व्यय अधिक शरीर कष्ट। मई २०, २१, २९, ३०, ३१, जून ७, ८ अशुभ।	मन प्रसन्न, धन लाभ, वृथा कालक्षेप, असफल योजनाएं, स्त्री सुख, व्यय विशेष। जून १, ६, १७, २६, २७, जुला. ४, ५, ६, १३, १४ अशुभ।
कर्क	धन लाभ, सुख, वृथा विवाद, शत्रु वृद्धि, रक्तपित्तविकार, अशुभ समाचार, कारोबार ठीक, लाभ कम। अप्रैल १६, १७, २५, २६, मई ४, ५, ६, १३ अशुभ।	उन्नतिप्रद विचार, नई योजना, घरेलू झंझटों से मनखिन्न, चिन्ता, कारोबार में रुकावट, वृथाव्यय, नेत्र कष्ट। मई २२, २३, २४, जून १, २, ९, १० अशुभ।	सेहत ठीक, भाग्य साथ दे, कारोबार में रुकावटें, आय का नया साधन बने, मित्रों से अनबन, कलह भय। जून १८, १९, २०, २८, २९, जुला. ७,८ अशुभ।
सिंह	स्वास्थ्य लाभ, पराक्रम बढ़े, मित्रों से वैमनस्य, वंश-वृद्धि, अकस्मात कष्ट, धनहानि, कारोबार यथावत्। अप्रैल १८, १९, २७, २८, २९, मई ७, ८ अशुभ।	उत्साह वृद्धि, निजीजनों से अनबन, सन्तान के कारण व्यय, सुखलाभ, कारोबार में बाधा। मई १५, १६, २५, २६, जून ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	अर्थ लाभ, पीड़ा कष्ट, सन्तति सुख, कारोबार ठीक, स्त्री से मनमुटाव। जून २१, २२, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
कन्या	उत्साह वृद्धि, शत्रु बढ़ें, धन सम्बन्धी नई योजना। अप्रैल, १३, २०, २१, २२, ३०, मई १, ९, १० अशुभ।	क्रोध बढ़े, वृथाकलह से बचें, हानि, मित्रों से मेल, विद्या में बाधा व सन्तति चिन्ता, कारोबार ठीक, चोर भय। मई १७, १८, १९, २७, २८, जून ५, ६ अशुभ।	अकारण विवाद, यात्रा सुख, हाथ तंग रहे, स्त्री सुख, निजीजन विरोध, नेत्र व सिर पीड़ा, चोर भय। जून १४, १५, २३, २४, २५, जुला. २, ३, ११, १२ अशुभ।
तुला	वायु-पित्त-विकार, आमदन अच्छी बन्धु मेल, विरोधी पक्ष प्रबल, यात्रा में चोरभय, कार्य में लाभ, अप्रैल ५, ६, १४, १५, २३, २४, मई २, ३, ११, १२ अशुभ।	समय अनुकूल नहीं, मन अशान्त, गृहकलह, चोर भय, स्त्री कष्ट, फजूल खर्च हो, शनि-मंगल दान से कल्याण। मई २०, २१, २९, ३०, ३१, जून ७, ८ अशुभ।	शत्रु प्रबल, रोग से कष्ट, निजीजनों से अनबन, पाप में मन लगे, आय से अधिक व्यय, शिव पूजन से कल्याण। जून १६, १७, २६, २७, जुला. ४, ५, ६, १३, १४ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, धन लाभ, विद्या, बुद्धि ठीक गृह कलह व वृथा विवाद से बचें। अप्रैल १६, १७, २५, २६, मई ४, ५, ६, १३ अशुभ।	सेहत गड़बड़, कुटुम्ब सुख, गुप्त शत्रुओं से सावधान, स्त्री से अनबन, व्यय विशेष, कर्जा बढ़े। मई २२, २३, २४, जून १२, ९, १० अशुभ।	हानि, रोग भय, धन लाभ, बन्धुजन कष्ट, सन्तान से सुख, शत्रु प्रबल, स्त्री सुख, चोट भय। जून १८, १९, २०, २८, २९, जुला. ७,८ अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, धनलाभ, सन्तान सुख, रोग व शत्रु से कष्ट, राजाभय, इज्जत बनी रहे। अप्रैल १८, १९, २७, २८, २९, मई ७, ८ अशुभ।	वायु विकार, वृथाव्यय, निजी जन विवाद, सन्तान के कारण व्यय विशेष, विरोधी पक्ष कमजोर, कारोबार यथावत् स्त्री सुख। मई १५, १६, २५, २६, जून ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	खुशी का समाचार, निजीजन कष्ट, सत्पुरुष से मेल, यात्रा में कष्ट, मासान्त में लाभ हो। जून २१, २२, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, सुख लाभ, मान हानि भय, सन्तान कष्ट, वृथा कलेश, धन लाभ शुभ में कम। अप्रैल १३, २०, २१, २२, ३०, मई १, ९, १० अशुभ।	कारोबार कमजोर, हिस्सेदारी में बिगाड़, मित्रों से अनबन, सन्तति कष्ट, व विद्या में अड़चनें, खर्च विशेष। मई १७, १८, १९, २७, २८, जून ५, ६ अशुभ।	रोग शोक, वंशवृद्धि, शत्रु परास्त, कारोबार में वृद्धि या रद्दोबदल, स्त्री सुख। जून १४, १५, २३, २४, २५, जुला. २३, ११, १२ अशुभ।
कुम्भ	वायु विकार, आमदन ठीक, बन्धु सुख, घरेलू झंझट, कारोबार ठीक, अप्रैल ५, ६, १४, १५, २३, २४, मई २, ३, ११, १२ अशुभ।	रक्त-पित्त विकार, धन लाभ, बन्धु सुख, सितारा कमजोर। मई २०, २१, २९, ३०, ३१, जून, ७,८ अशुभ।	वैरवृद्धि, अशुभ समाचार, मित्र मिलाप, अर्थ लाभ होकर हाथ न लगे। पाप कर्म में मन। जून १६, १७, २६, २७, जुला. ४, ५, ६, १३, १४ अशुभ।
मीन	मन प्रसन्न, विलासिता में धन लगे, स्वतन्त्र कारोबार में हानि भय, बन्धुओं से अनबन, धन लाभ, अप्रैल १६, १७, २५, २६, मई ४, ५, ६, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ होने पर भी जेब रिक्त, निजीजनों से अनबन, सन्तति चिन्ता, झगड़े से दूर रहें। चोर भय। मई २२, २३, २४, जून १, २, ९, १० अशुभ।	शत्रु से हानि, सेहत ठीक, अर्थलाभ, मान-धनहानि भय, सूर्य पूजा से कल्याण, शत्रु प्रबल, कारोबार कम, जून १८, १९, २०, २८, २९, जुला. ७,८ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४१)

राशि	श्रावण (१५ जुलाई से १५ अगस्त तक)	भाद्रपद (१६ अग. से १५ सितं. तक)	आश्विन (१६ सित. से १५ अक्तू. तक)
मेष	वृथाव्यय सेहत अपेक्षाकृत ठीक, धनलाभ, बेइज्जती का भय, स्त्री कष्ट, मासान्त ठीक। जुला. १८, १९, २०, २८, २९, अग. ५, ६, १५ अशुभ।	नेत्र व शिर पीड़ा, सन्ततिसुख, शत्रु हतप्रभाव, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक, व्यय-आय का साधन। अग. १६, २४, २५, सित. १, २, ११, १२ अशुभ।	रुके काम बनें, कोष में कमी, बन्धुसुख, शत्रु कम, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक। सित. २०, २१, २२, २९, ३०, अक्तू. ८, ९, १० अशुभ।
वृष	यात्रा में कष्ट व चोरी भय, शत्रु से भय, शत्रु हतप्रभ, गुप्त चिन्ता, बनते काम में रुकावट। जुला. २१, २२, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	वायुपीड़ा, वाहनसुख, विरोधीपक्ष कमजोर, राज्य पक्ष शुभ, स्त्री कष्ट। अग. १७, १८, १९, २६, २७, सित. ३, ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	अकारण मन चिन्तित, सन्ततिपक्ष से चिन्ता, रोग भय, कारोबार यथावत्। सित. २३, २४, अक्तू. १, २, ११, १२ अशुभ।
मिथुन	स्वतन्त्र कार्य में हानि, वैभव में मन लगे, असफल योजनाएं बनें, पैर पर चोटभय, स्त्री सुख। जुला. १५, २३, २४, २५, अग. १, २, १०, ११ अशुभ।	सुख लाभ, कोष में वृद्धि, सन्तति सुख, पैर में चोट भय, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। अग. २०, २१, २८, २९, सित. ६, ७ अशुभ।	शत्रु से भय, मानहानि भय, आमदन अच्छी, वृथा व्यय, उत्साह वृद्धि। सित. १६, १७, २५, २६, अक्तू. ३, ४, १३, १४ अशुभ।
कर्क	यात्रा में कष्ट भय, निजीजन पीड़ा, सम्पत्ति विवाद, शत्रु प्रबल, कारोबार में बाधा, व्यय अधिक। जुला. १६, १७, २६, २७, अग. ३, ४, १२, १३, १४ अशुभ।	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट, मित्रों से मदद, विद्या व सन्तान से सन्तोष, रोग से मुक्ति। अग. २२, २३, ३०, ३१, सित. ८, ९, १० अशुभ।	धन लाभ, रोग भय, अशुभ समाचार, कारोबार ठीक। सित. १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १५ अशुभ।
सिंह	सेहत गड़बड़, व्यय अधिक, निजीजन विरोध उत्साह प्रबल रहे, सम्पत्ति हानि, बुद्धि ठीक। जुला. १८, १९, २०, २८, २९, अग. ५, ६, १५ अशुभ।	स्वास्थ्य लाभ, कोषवृद्धि, सम्पत्ति लाभ, सुहृज्जन मिलन, अग. १६, २४, २५, सित. १, २, ११, ११ अशुभ।	राज भय, कारोबार में हानि, कार्यान्तर से लाभ, मान बना रहे। सित. २०, २१, २२, २९, ३०, अक्तू. ८, ९, १० अशुभ।
कन्या	कोष में कमी, घरेलू झंझट, मित्रमिलाप, सन्तति चिन्ता, व्यय अधिक। जुला. २१, २२, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	वायु विकार, धन लाभ, उत्साह प्रभाव बढ़े, बन्धु सुख, स्त्री सुख, व्यय अधिक। अग. १७, १८, १९, २६, २७, सित. ३, ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	यात्रा हो, शत्रु परास्त, धन लाभ, उत्साह प्रबल रहे, सत्पुरुष से मेल। सित. २३, २४, अक्तू. १, २, ११, १२ अशुभ।
तुला	नई उलझनें, मन अशान्त, बन्धुओं से मदद, यात्रा में चोर भय, शनि-मंगल दान करें। जुला. १५, २३, २४, २५, अग. १, २, १०, ११ अशुभ।	नई योजना, व्यय, योजना असफल, गुप्त चिन्ता, आमदन अच्छी, अग. २०, २१, २८, २९, सित. ६, ७ अशुभ।	बनते काम में बाधा, नेत्र व शिर पीड़ा, रोग कष्ट, घरेलू झंझटों में मन चिन्तित। सित. १६, १७, २५, २६ अक्तू. ३, ४, १३, १४ अशुभ।
वृश्चिक	रक्त-पित्त विकार, अर्थ लाभ, उत्साह क्षीण, सन्तति, स्त्री-सुख, रोग भय, कारोबार कुछ ठीक। जुला. १६, १७, २६, २७, अग. ३, ४, १२, १३ १४ अशुभ।	पित्तविकार, उदरव्याधि, अर्थलाभ, निजीजन विरोध, कारोबार ठीक, शनि का दान करें। अग. २२, २३, ३०, ३१, सितं. ८, ९, १० अशुभ।	उदरविकार, क्रोध बढ़े, कोष में कमी, गुप्त चिन्ता, खर्च विशेष बढ़े। सित. १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १५, अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, आर्थिक चिन्ता, सत्पुरुष से मेल, चोटभय, मासान्त में कारोबार ठीक। जुला. १८, १९, २०, २८, २९, अग. ५, ६, १५ अशुभ।	अरिष्ट भय, आर्थिक लाभ, बन्धु सुख, पैर में चोटभय, अग. १६, २४, २५, सितं. १, २, ११, १२ अशुभ।	कष्टभय, रोग व शत्रुवृद्धि, कारोबार कुछ ठीक, अचानक खर्च अधिक। सितं. २०, २१, २२, २९, ३०, अक्तू. ८, ९, १० अशुभ।
मकर	पित्त-वायु विकार, विवाद में जय, निजीजन कष्ट, चोट भय, वृथा खर्च, कारोबार में घाटा। जुला. २१, २२, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९, अशुभ।	देह पीड़ा, द्रव्यलाभ, मन अशान्त, वायु रोग भय, कारोबार में आमदन, शुभ व्यय। अग. १७, १८, १९, २६, २७, सित. ३, ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	नई योजनाएं, कारोबार में उलझन, कोष में कमी, शुभ व्यय। सित. २३, २४, अक्तू. १, २, ११, १२ अशुभ।
कुम्भ	आमदन अच्छी, उत्साह की कमी उपव्यय, घरेलू व कारोबार की चिन्ता। जुला. १५, २३, २४, २५, अग. १, २, १०, ११ अशुभ।	धन लाभ, सुख, शत्रुहानि, यात्रा में हानि, सूर्य पूजा से लाभ होगा, कारोबार ठीक। अग. २०, २१, २८, २९, सित. ६, ७ अशुभ।	रोगकष्ट, मान हानि भय, झगड़े से बचें, कारोबार ठीक। सित. १६, १७, २५, २६, अक्तू. ३, ४, १३, १४ अशुभ।
मीन	मनोबल प्रबल, आय-व्यय बराबर, उत्साह बना रहे, सन्तान व स्त्री की ओर से चिन्ता। जुला. १६, १७, २६, २७, अग. ३, ४, १२, १३, १४ अशुभ।	शरीर स्वस्थ, श्रेष्ठ खान-पान, धन लाभ, उत्साह वृद्धि, भाग्य प्रबल, व्यवसाय में लाभ। अग. २१, २३, ३०, ३१, सित. ८, ९, १० अशुभ।	क्लेश भय, यात्रा, वृथा व्यय, रोग से कष्ट, कारोबार में लाभ। सित. १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १५ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं० २०४१ वि०)

राशि	कार्तिक (१६ अक्तू. से १४ नवं. तक)	मार्गशीर्ष (१५ नवं. से १४ दिसं तक)	पौष (१५ दिसं. से १२ जन. १९८५ ई. तक)
मेष	फजूल खर्चा, यात्रा में कष्ट, गुप्त शत्रु से सावधान, रुके काम बनें । सूर्य-शनि दान से कल्याण । अक्तू. १८, १९, २६, २७, नवं. ४, ५, ६, १४ अशुभ ।	आय अच्छी परन्तु व्यय से हाथ तंग, मानहानि भय, वृथा विवाद से बचें, सेहत ठीक । नवं. १५, २२, २३, दिस. २, ३, ११, १२ अशुभ ।	स्वास्थ्य ठीक, आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी, कार्य में मन न लगे, वृथा विवाद में व्यय, कारोबार ठीक । दिसं. २०, २१, २९, ३०, जन. ८, ९ अशुभ ।
वृष	नेत्र कष्ट, धन लाभ, शत्रु कमज़ोर, उलझनें बढ़ें, अपमान भय । अक्तू. २०, २१, २८, २९, नवं. ७, ८ अशुभ ।	वायु विकार, द्रव्य लाभ, सुखद समाचार, स्त्री कष्ट,कारोबार ठीक, मान बढ़े । नवं. १६, १७, २४, २५, २६, दिस. ४, ५, ६, १३, १४ अशुभ ।	कफ वायु विकार, कोष में कमी, मान हानि भय, विरोधी कमज़ोर, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक । दिस. १५, २२, २३ ३१, जन. (१९८५ ई.) १, २, १०, ११ अशुभ ।
मिथुन	कफ-वायु विकार, सन्तति चिन्ता, मन अशान्त, उदर व्याधि, विरोधी प्रबल । अक्तू. २२, २३, ३०, ३१, नवं. १, ९, १०, ११ अशुभ ।	धन लाभ, कारोबार सम्बन्धी नई योजनाएं, मित्र मिलाप, मासान्त में धन-मान, हानि भय । नव. १८, १९, २७, २८ दिसं ७, ८ अशुभ ।	लाभ होकर हाथ न लगे, सन्तान हेतु विशेष खर्च, गुप्त चिन्ता, कष्ट भय । दिस. १६, १७ २४, २५, जन. ३, ४, १२ अशुभ ।
कर्क	रोग भय, वाहन से चोट भय, नई योजना, उत्साह बना रहे, आय-व्यय बराबर । अक्तू. १६, १७, २४, २५, नवं. २, ३, १२, १३ अशुभ ।	बन्धु सुख, वायु रोग से कष्ट, आय-व्यय बराबर, सम्मान बना रहे । नवं. २०, २१, २९, ३०, दिसं १, ९, १० अशुभ ।	धन लाभ, शत्रु सिर उठाए, अशुभ समाचार, स्त्री सुख, पक्षान्त में पुनः लाभ । दिसं. १८, १९, २६, २७, २८ जन. ५, ६, ७ अशुभ ।
सिंह	निजीजनों से विरोध, पराक्रम प्रबल, धन-लाभ, शरीर में पीड़ा, अचानक व्यय । अक्तू. १८, १९, २६, २७, नवं ४, ५, ६, १४ अशुभ ।	शत्रु भय, निजीजन विरोध, सुखद यात्रा, सन्तति सुख, कारोबार ठीक । नवं० १५, २२, २३, दिसं० २, ३, ११, १२ अशुभ ।	शुभ में व्यय, सम्पत्ति लाभ, उत्साह बना रहे, सन्तान से सन्तोष, शत्रु हतप्रभाव, कार्यान्तर का विचार । दिसं. २०,२१,२९,३०, जन. ८, ९ अशुभ ।
कन्या	नेत्र कष्ट व सिर पीड़ा, बन्धु सुख, लाभार्थ नया कार्यक्रम, स्वजन मिलाप । अक्तू. २०, २१, २८, २९, नवं. ७, ८ अशुभ ।	सेहत बिगड़े, क्रय-विक्रय में हानि, निजीजन सहयोग, शुभ यात्रा, सफल योजना, कारोबार ठीक । नवं, १६, १७, २४, २५, २६, दिसं. ४, ५, ६, १३, १४ अशुभ ।	अकस्मात धनहानि भय, निजीजनों से मनमुटाव, कोई उलझी समस्या हल हो, नई योजना । दिस. १५, २२, २३, ३१ जन. १, २, १०, ११ अशुभ ।
तुला	कार्यान्तर का विचार, चोर भय, उत्साह बना रहे, स्त्री को कष्ट, कारोबार में हानि भय । अक्तू. २२, २३, ३०, ३१, नवं. १, ९, १०, ११ अशुभ ।	उलझनपूर्ण समय है, स्वतन्त्र कारोबार में हानि भय, निजीजन सहयोग, रोग भय । नवं १८, १९, २७, २८, दिसं. ७, ८ अशुभ ।	निजीजनों से विरोध, मानसिक चिन्ता, उलझनें बढ़ें, आय से व्यय अधिक, शनियन्त्र धारण करें । दिस. १६, १७, २४, २५, जन. ३, ४, १२ अशुभ ।
वृश्चिक	राज पीड़ा, अग्नि-चोर-रोग-चोट भय, कारोबार में हानि, सूर्य-राहु-मंगल दान से लाभ । अक्तू. १६, १७, २४, २५, नवं, २, ३, १२, १३ अशुभ ।	कार्यान्तर का विचार, आय अच्छी, उत्साह बढ़े, मन चिन्तित रहे, रुके काम बनें । नवं. २०, २१, २९, ३०, दिसं १, ९, १० अशुभ ।	राज भय, धन लाभ होकर व्यय निजीजनों से सहयोग, शत्रु कम, रोग से कष्ट । दिस. १८, १९, २६, २७, २८, जन. ५, ६, ७ अशुभ ।
धनु	उपद्रवों से सावधान, पैर में चोट भय, आय होकर भी लाभ न हो । अक्तू. १८, १९, २६, २७, नवं. ४, ५, ६, १४ अशुभ ।	असफल योजना, विरोधी प्रबल, धन लाभ होकर हानि भय, नेत्र कष्ट, कारोबार कमज़ोर । नवं. १५, २२, २३, दिसं. २, ३, ११, १२ अशुभ ।	कारोबार कमज़ोर, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, लाभ हो, व्यय विशेष, स्त्रीकार । दिस. २०, २१, २९, ३०, जन. ८, ९ अशुभ ।
मकर	खर्च के अनेक कारण बनें, पित्त-नेत्र पीड़ा, नई योजना बने, वैभव में मन लगे । अक्तू. २०, २१, २८, २९, नवं. ७, ८ अशुभ ।	उत्साह पराक्रम, बढ़े, कोष में कमी, वृथा-यात्रा में कष्ट, कारोबार में लाभ । नवं. १६, १७, २४, २५, २६, दिसं. ४, ५, ६, १३, १४ अशुभ ।	मनोत्साह प्रबल, वैभव में मन लगे, पित्त-कफ-विकार, लाभ अच्छा, वृथा व्यय हो । दिस. १५, २२, २३, ३१, जन. १, २, १०, ११ अशुभ ।
कुम्भ	विजय लाभ, कोष में वृद्धि, समाज में प्रतिष्ठा बढ़े, निजीजनों से अनबन । अक्तू. २२, २३, ३०, ३१, नवं. १, ९, १०, ११ अशुभ ।	विरोधी प्रबल, अल्पलाभ, दूर देश यात्रा के कार्यक्रम, कारोबार में लाभ, सेहत ठीक । नवं. १८, १९, २७, २८ दिसं. ७, ८ अशुभ ।	सम्पत्ति विचार में हानि भय, स्त्री सुख, उत्साह बना रहे, कार्यान्तर की योजना, आय ठीक । दिसं. १६, १७, २४, २५, जन. ३, ४, १२ अशुभ ।
मीन	बन्धुओं से अनबन, शत्रु वृद्धि, उत्साह प्रबल, कार्यान्तर का विचार, लाभ ठीक । अक्तू. १६, १७, २४, २५, नवं० २, ३, १२, १३ अशुभ ।	सेहत ठीक, धन लाभ, बनते कार्य में बाधा, कारोबार में लाभ । नवं. २०, २१, २९, ३०, दिसं. १, २, ९, १० अशुभ ।	पराक्रम बना रहे, आर्थिक लाभ, विरोधी सिर उठायें, कारोबार ठीक आमदन अच्छी । दिस. १८, १९, २६, २७, २८, जन. ५, ६, ७ अशुभ ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४१)

राशि	माघ (१३ जन. सन् १९८५ ई. से ११ फर. तक)	फाल्गुन (१२ फर. से १३ मार्च तक)	चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	स्त्री चिन्ता, शरीर कष्ट, कारोबार ढीला, आय से व्यय अधिक। जन. (१९८५ ई.) १६, १७, २५, २६, २७, फर. ४, ५ अशुभ।	उदर विकार, अकारण क्रोध, ऐशो इशरत में खर्च विशेष, शत्रुओं से सावधान रहें, कारोबार में बाधा। फर. १२, १३, २२, २३, मार्च ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	पाप वृद्धि, वृथा कलह से बचें, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक, नेत्र कष्ट। मार्च २१, २२, ३०, अप्रै. ७, ८, ९ अशुभ।
वृष	उदर विकार, अर्थलाभ, बन्धुसुख, मन चिंतित, कारोबार ठीक। जन. १८, १९, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर, कर्जा चढ़े, शिव पूजन से कल्याण। फर. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ।	सुख-धन लाभ, शरीर कष्ट, कारोबार कुछ ठीक, वाहनादि से चोट भय। मार्च १४, १५, २३, २४, अप्रैल १, २, १०, ११ अशुभ।
मिथुन	सन्तान हेतु व्यय, गुप्तशत्रु से हानि भय, कारोबार में बाधा। जन. (१९८५ ई.) १३, २०, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ८, ९ अशुभ।	मन चिंतित, सुख वित्त लाभ, घरेलु झंझट बढ़े, पाप वृद्धि, कारोबार ठीक। फर. १७, १८, २७, २८, मार्च ८, ९ अशुभ।	नेष्ट समाचार, हानि-लाभ-बराबर, मन चिंतित, सत्पुरुषों से मेल मुलाकात। मार्च १६, १७, २५, २६, २७, अप्रै. ३, ४, १२ अशुभ।
कर्क	मन प्रसन्न, बन्धुसुख, नई-नई योजना में बाधा, रोग भय। जन. १४, १५, २३, २४, फर. २, ३, १०, ११ अशुभ।	वायु पीड़ा, बनते कार्य में बाधा, स्त्री सुख, रोग कष्ट, कारोबार में अपेक्षाकृत लाभ। फर. १९, २०, २१, मार्च १, २, १०, ११ अशुभ।	वात-पित्त-पीड़ा, अर्थ लाभ, सन्तान हेतु विशेष व्यय हो, मशीनरी व कार्यान्तर से लाभ। मार्च १८, १९, २०, २८, २९, अप्रै. ५, ६ अशुभ।
सिंह	द्रव्यलाभ—सुख, निजीजन विरोध, चोट भय, मन चिंतित, कारोबार में रद्दोबदल। जन. १६, १७, २५, २६, २७, फर. ४, ५ अशुभ।	मित्रों से अनबन, शत्रु सिर उठावें, यात्रा में कष्ट, अकस्मात धन हानि, कारोबार ठीक। फर. १२, १३, २२, २३, मार्च ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सुख लाभ, शत्रु सिर उठायें, बनते काम में रुकावट, रोग भय, अचानक खर्च हो। मार्च, २१, २२, ३०, ३१, अप्रै. ७, ८, ९ अशुभ।
कन्या	धनहानि, अदम्य उत्साह, सम्पत्ति लाभ, सम्पत्ति चिन्ता, रोग भय। जन. १८, १९, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	अर्थलाभ, मनचिंतित, शत्रु कमजोर, स्त्री कष्ट, रोग भय। फर. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ।	चोरी व ठगी से बचें, रोग से मुक्ति, धन लाभ, शुभ में व्यय, यात्रा में बाधा। मार्च १४, १५, २३, २४, अप्रै. १, २, १०, ११ अशुभ।
तुला	कफ विकार, विरोधी प्रबल, हानिभय, मित्र कष्ट, शनि-चन्द्र दान से शुभ। जन. १३, २०, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ८, ९ अशुभ।	हानि, रोग भय, स्वतन्त्र कार्य में हानि, वृथा व्यय, सन्तति चिन्ता, शत्रु प्रभाव, कारोबार ठीक। फर. १७, १८, २७, २८, मार्च ८, ९ अशुभ।	उदर विकार, कोष में कमी, निजीजनों से मन मुटाव, शत्रु हानि, लाभ होकर हानि भय हो। मार्च १६, १७, २५, २६, २७, अप्रै. ३, ४, १२ अशुभ।
वृश्चिक	अकस्मात् हानि, कोष में कमी, वैमनस्य बढ़े, घरेलु झंझट, शिव पूजन से कल्याण। जन. १४, १५, २३, २४, फर. २, ३, १०, ११ अशुभ।	गृह-क्लेश-चिन्ता, झगड़े से बचें, अपमान भय, आय से व्यय अधिक, शनि-चन्द्र दान से शुभ। फर. १९, २०, २१, मार्च १, २, १०, ११ अशुभ।	अग्नि-जल से भय, फजूल खर्च बढ़े, वंशवृद्धि-योग, शत्रु हतोत्साह। मार्च १८, १९, २०, २८, २९, अप्रै. ५, ६ अशुभ।
धनु.	आर्थिक समस्या उलझे, व्यापार में हानि भय, उत्साह बना रहे, वायु रोग, वृथा व्यय। जन. १६, १७, २५, २६, २७, फर. ४, ५ अशुभ।	धन लाभ हो, कष्ट शत्रु भय, कमर तोड़ खर्च, कारोबार ढीला, पीले चावल पक्षियों को डालें। फर. १२, १३, २२, २३, मार्च ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, वृथा व्यय, सन्तति चिन्ता, धन लाभ, कारोबार ढीला। मार्च २१, २२, ३०, ३१, अप्रै. ७, ८, ९ अशुभ।
मकर	अरिष्ट भय, वृथा क्लेश से बचें, कारोबार की चिन्ता, असफल योजना, मनोबल प्रबल रहे। जन. १८, १९, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	बन्धन भय, व्यापार में हानि भय, उत्साह बना रहे, मन उचाट, स्त्री सुख। फर. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ।	सेहत ठीक, यात्रा में चोर भय, आय होकर हानि भय, स्त्री पक्ष शुभ, मित्रों से अनबन। मार्च १४, १५, २३, २४, अप्रै. १, २, १०, ११ अशुभ।
कुम्भ	क्रोध बढ़े निजीजन विवाद, शत्रु हत प्रभाव, राज भय, कारोबार सम्बन्धी उलझनें बनें। जन. १३, २०, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ८, ९ अशुभ।	स्थानान्तर का विचार बने, शुभ कार्य में खर्च, निजीजनों से अनबन, कारोबार में हानि। फर. १७, १८, २७, २८, मार्च ८, ९ अशुभ।	व्यापार में हानि, नेत्र कष्ट, उत्साह वृद्धि, शरीर शिथिल। मार्च १६, १७, २५, २६, २७, अप्रै. ३, ४, १२ अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, दुर्घटना भय, आशानुरूप कारोबार में लाभ न हो, सामान्य ठीक। जन. १४, १५, २३, २४, फर. २, ३, १०, ११ अशुभ।	विलासिता में मन लगे, स्त्री सुख, मान-हानि-भय, व्यय अधिक हो, मासान्त में धन लाभ। फर. १९, २०, २१, मार्च १, २, १०, ११ अशुभ।	स्थानान्तरण योजना बने, शत्रु हतप्रभ, बन्धन भय, नेत्र व सिर पीड़ा, स्त्री सुख। मार्च १८, १९, २०, २८, २९, अप्रै. ५, ६ अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल-विचार (सं० २०४१ वि०)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९०८५, सृष्टिसंवत् १९५५८८५०८५, श्री विक्रम संवत् २०४१, शक सं० १९०६, श्री कृष्णजन्म संवत् ५२२०, कलि संवत् ५०८५, श्री महावीर (जैन) निर्वाण संवत् २५०९-२५१०, श्रीबुद्ध संवत् २६०७-२६०८, हिजरी सन् १४०५-१४०६, फसली सन् १३९१-१३९२, ईस्वी सन् १९८४-८५।

वर्षारम्भ में गुरुमान से प्रभवादि संवत्सरों में, "ईश्वर" नामक संवत्सर है; इसका फल इस प्रकार है—

"ईश्वराब्दे ऽखिलान् जन्तून्, धात्री धात्रीव सर्वदा।
पोषयत्यतुलैश्चान्न-फल मासेक्षु-दोहिभिः॥"

अर्थात्—पृथ्वी पर सभी प्राणी सानन्द सन्तुष्ट रहें, धनधान्य फल आदि की फसल उत्तम होगी।

इसवर्ष का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) चन्द्र एवं मन्त्री शुक्र है। इसवर्ष सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) सूर्य, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) शनि, मेघेश (वर्षापानी के स्वामी) गुरु, रसेश (गुड़, खांड, रसकस आदि के स्वामी) मंगल, नीरसेश (सर्वविध धातु तथा व्यापार आदि के स्वामी) सूर्य, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) गुरु, धनेश (खजाने के स्वामी) सूर्य, दुर्गेश (सुरक्षा-प्रतिरक्षा आदि के स्वामी) गुरु हैं।

वर्ष में शान्ति, विग्रह आर्थिक-सामाजिक प्रगति आदि सर्वविध ज्ञान के लिए तो सभी पदाधिकारियों के गुणकर्म-स्वभाव के अनुसार सामूहिक विचार करना पड़ता है। यहां प्रत्येक पदाधिकारी का व्यक्तिगत फल ही अंकित किया गया है—

१. राजाचन्द्र का फल—मांगलिक-कार्य अधिक हों, वर्षा अधिक एवं धान्य की फसल उत्तम हो, प्रजा में परस्पर स्नेह सद्भाव रहे तथा शासकवर्ग का प्रभाव बढ़े; स्वास्थ्य बाबार्थ नई योजनाएं बनें।

२. मन्त्री शुक्र का फल—चूहा-टिड्डी दल, एवं अन्य प्रकार के खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, अनाज तेज हो, कुछ भागों में जल से हानि हो।

३. सस्येश सूर्य का फल—ग्रीष्म धान्य महंगे हों, चोरी, ठगी की घटनाएं अधिक हों, शासकों में परस्पर मतवैमत्य रहे, वर्षा पर्याप्त, अन्नसम्पदा में वृद्धि हो।

४. धान्येश शनि का फल—शासकीय-कोष में कमी, कहीं युद्ध विभीषिका बने, फसल कम, रोग बढ़ें, वर्षा समयोचित न होने से कृषक वर्ग चिन्तित हो।

५. मेघेश गुरु का फल—वर्षा पर्याप्त, प्रजा में विलासिता बढ़े, शासक विवेक से काम लें, प्रजा में धन-धान्य समृद्धि हो।

६. रसेश मंगल का फल—इक्षु एवं दुग्ध आदि महंगे हों, किसी नेता को दुःखद स्थिति में उलझना पड़े, वर्षा किसी क्षेत्र में कम हो।

७. नीरसेश सूर्य का फल—तांबा आदि धातुएं तथा मोती माणिक्य आदि रत्न महंगे होंगे।

८. फलेश गुरु का फल—अन्नसम्पदा में वृद्धि हो, फल-फूल प्रचुरमात्रा में हों, मांगलिक शुभकार्य अधिक, बुद्धिजीवि-वर्ग सत्कर्मरत रहें।

९. धनेश सूर्य का फल—व्यापारीवर्ग लाभान्वित हो, पशुओं के व्यापार से विशेष लाभ मिले।

१०. दुर्गेश गुरु का फल—शासक न्याय परायण हो, सर्वत्र आनन्द मंगल हो, बुद्धिजीवी वर्ग आत्म रक्षार्थ शस्त्रधारण करें।

सूचना—यद्यपि वर्ष के इन दस अधिकारियों का साधारण फल तो सर्वत्र होता ही है, किन्तु विशेषकर राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, बाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में सस्येश का पौंड्र-विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के निकटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य-प्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

नवमेघों में "संवर्त" नामक मेघ का फल—"संवर्तं वायुपीड़नम्"—आंधी तूफान आदि से जन-धन हानि होगी।

द्वादशनागों में "वृष" नामक नाग का फल—"वृषे तु ईतितो भयम्" कहीं अति-वर्षा, कहीं वर्षा का अभाव और कहीं टिड्डी दल, चूहा आदि से फसल को हानि पहुंचेगी।

रोहिणी का वास 'समुद्र' में है; फल—"समुद्रेतु महावृष्टि" वर्षा अत्यधिक होगी। बहुत जल में पैदा होने वाले अन्न चावलादि की उत्पत्ति अधिक होगी। न्यूनवर्षा वाले बागड़ आदि राजस्थानीय भू-भागों में भी आगे पीछे वर्षा से कृषक लोगों को सहारा मिलेगा।

संवत्सर का वास माली के घर है; फल—फलफूल काफी मात्रा में हों। बाग-बानी में तरक्की व प्रगति हेतु शासन नई योजनाएं बनाएगा।

संवत्सर का वाहन—"मृग" है—गतिविधियों में तीव्रता लाने की योजनाएं कार्यान्वित होंगी।

शनि की दृष्टि—वर्षारम्भ से वर्षान्त तक शनि स्वाती विशाखा अनुराधा नक्षत्रों पर ही विचरण करता है; अतः इस संवत् में शनि की दृष्टि पश्चिम में रहेगी। फल—पश्चिमी देशों में एवं पश्चिमी प्रान्तों में कहीं युद्ध, कहीं राजनैतिक अस्थिरता एवं कहीं अकाल की स्थिति किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि होगी।

इसवर्ष माघकृष्ण में (केवल एक ही) सोमवती-अमावस है। भौमवती-अमावस्याएं वैशाख, आश्विन, फाल्गुन में तीन हैं। शनैश्चरी-अमावस श्रावण और पौष में दो ही हैं। बुधाष्टमियां ज्येष्ठकृष्ण एवं कार्तिकशुक्ल में दो ही हैं।

वर्षा आदि के विश्वामान—वर्षाविश्वा १७, धान्य १५, तृण १३, शीत १७, तेज ५, वायु ११, वृद्धि ७, क्षय ७, विग्रह १७, क्षुधा ५, तृषा ७, निद्रा ९, आलस्य १५, उद्यम ९, शांति १३, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फल-निष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता ५, पाप १५, पुण्य १५, व्याधि ९, व्याधिनाश १, आचार १३, अनाचार १५, मृत्यु ९, जन्म १५, देशोपद्रव १, देश-स्वास्थ्य ३, चोर-भय ७, चोरनाश १५, अग्निभय ११, अग्निशान्ति १३, उद्भिज्ज ९, जरायुज ३, अण्डज ११

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४१)

राशि	माघ (१३ जन. सन् १९८५ ई. से ११ फर. तक)	फाल्गुन (१२ फर. से १३ मार्च तक)	चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	स्त्री चिन्ता, शरीर कष्ट, कारोबार ढीला, आय से व्यय अधिक। जन. (१९८५ ई.) १६, १७, २५, २६, २७, फर. ४, ५ अशुभ।	उदर विकार, अकारण क्रोध, ऐशो इशरत में खर्च विशेष, शत्रुओं से सावधान रहें, कारोबार में बाधा। फर. १२, १३, २२, २३, मार्च ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	पाप वृद्धि, वृथा कलह से बचें, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक, नेत्र कष्ट। मार्च २१, २२, ३०, अप्रै. ७, ८, ९ अशुभ।
वृष	उदर विकार, अर्थलाभ, बन्धुसुख, मन चिंतित, कारोबार ठीक। जन. १८, १९, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर, कर्जा पड़े, शिव पूजन से कल्याण। फर. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ।	सुख-धन लाभ, शरीर कष्ट, कारोबार कुछ ठीक, वाहनादि से चोट भय। मार्च १४, १५, २३, २४, अप्रैल १, २, १०, ११ अशुभ।
मिथुन	सन्तान हेतु व्यय, गुप्तशत्रु से हानि भय, कारोबार में बाधा। जन. (१९८५ ई.) १३, २०, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ८, ९ अशुभ।	मन चिंतित, सुख वित्त लाभ, घरेलु झंझट बढ़े, पाप वृद्धि, कारोबार ठीक। फर. १७, १८, २७, २८, मार्च ८, ९ अशुभ।	नेष्ट समाचार, हानि-लाभ-बराबर, मन चिंतित, सत्पुरुषों से मेल मुलाकात। मार्च १६, १७, २५, २६, २७, अप्रै. ३, ४, १२ अशुभ।
कर्क	मन प्रसन्न, बन्धुसुख, नई-नई योजना में बाधा, रोग भय। जन. १४, १५, २३, २४, फर. २, ३, १०, ११ अशुभ।	वायु पीड़ा, बनते कार्य में बाधा, स्त्री सुख, रोग कष्ट, कारोबार में अपेक्षाकृत लाभ। फर. १९, २०, २१, मार्च १, २, १०, ११ अशुभ।	वात-पित्त-पीड़ा, अर्थ लाभ, सन्तान हेतु विशेष व्यय हो, मशीनरी व कार्यान्तर से लाभ। मार्च १८, १९, २०, २८, २९, अप्रै. ५, ६ अशुभ।
सिंह	द्रव्यलाभ—सुख, निजीजन विरोध, चोट भय, मन चिंतित, कारोबार में रद्दोबदल। जन. १६, १७, २५, २६, २७, फर. ४, ५ अशुभ।	मित्रों से अनबन, शत्रु सिर उठावें, यात्रा में कष्ट, अकस्मात धन हानि, कारोबार ठीक। फर. १२, १३, २२, २३, मार्च ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सुख लाभ, शत्रु सिर उठायें, बनते काम में रुकावट, रोग भय, अचानक खर्च हो। मार्च, २१, २२, ३०, ३१, अप्रै. ७, ८, ९ अशुभ।
कन्या	धनहानि, अदम्य उत्साह, सम्पत्ति लाभ, सम्पत्ति चिन्ता, रोग भय। जन. १८, १९, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	अर्थलाभ, मनचिंतित, शत्रु कमजोर, स्त्री कष्ट, रोग भय। फर. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ।	चोरी व ठगी से बचें, रोग से मुक्ति, धन लाभ, शुभ में व्यय, यात्रा में बाधा। मार्च १४, १५, २३, २४, अप्रै. १, २, १०, ११ अशुभ।
तुला	कफ विकार, विरोधी प्रबल, हानिभय, मित्र कष्ट, शनि-चन्द्र दान से शुभ। जन. १३, २०, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ८, ९ अशुभ।	हानि, रोग भय, स्वतन्त्र कार्य में हानि, वृथा व्यय, सन्तति चिन्ता, शत्रु प्रभाव, कारोबार ठीक। फर. १७, १८, २७, २८, मार्च ८, ९ अशुभ।	उदर विकार, कोप में कमी, निजीजनों से मन मुटाव, शत्रु हानि, लाभ होकर हानि भय हो। मार्च १६, १७, २५, २६, २७, अप्रै. ३, ४, १२ अशुभ।
वृश्चिक	अकस्मात् हानि, कोप में कमी, वैमनस्य बढ़े, घरेलु झंझट, शिव पूजन से कल्याण। जन. १४, १५, २३, २४, फर. २, ३, १०, ११ अशुभ।	गृह-क्लेश-चिन्ता, झगड़े से बचें, अपमान भय, आय से व्यय अधिक, शनि-चन्द्र दान से शुभ। फर. १९, २०, २१, मार्च १, २, १०, ११ अशुभ।	अग्नि-जल से भय, फजूल खर्च बढ़े, वंशवृद्धि-योग, शत्रु हतोत्साह। मार्च १८, १९, २०, २८, २९, अप्रै. ५, ६ अशुभ।
धनु.	आर्थिक समस्या उलझे, व्यापार में हानि भय, उत्साह बना रहे, वायु रोग, वृथा व्यय। जन. १६, १७, २५, २६, २७, फर. ४, ५ अशुभ।	धन लाभ हो, कष्ट शत्रु भय, कमर तोड़ खर्च, कारोबार ढीला, पीले चावल पक्षियों को डालें। फर. १२, १३, २२, २३, मार्च ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, वृथा व्यय, सन्तति चिन्ता, यश लाभ, कारोबार ढीला। मार्च २१, २२, ३०, ३१, अप्रै. ७, ८, ९ अशुभ।
मकर	अरिष्ट भय, वृथा क्लेश से बचें, कारोबार की चिन्ता, असफल योजना, मनोबल प्रबल रहे। जन. १८, १९, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	बन्धन भय, व्यापार में हानि भय, उत्साह बना रहे, मन उचाट, स्त्री सुख। फर. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ।	सेहत ठीक, यात्रा में चोर भय, आय होकर हानि भय, स्त्री पक्ष शुभ, मित्रों से अनबन। मार्च १४, १५, २३, २४, अप्रै. १, २, १०, ११ अशुभ।
कुम्भ	क्रोध बढ़े निजीजन विवाद, शत्रु हत प्रभाव, राज भय, कारोबार सम्बन्धी उलझनें बनें। जन. १३, २०, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ८, ९ अशुभ।	स्थानान्तर का विचार बने, शुभ कार्य में खर्च, निजीजनों से अनबन, कारोबार में हानि। फर. १७, १८, २७, २८, मार्च ८, ९ अशुभ।	व्यापार में हानि, नेत्र कष्ट, उत्साह वृद्धि, शरीर शिथिल। मार्च १६, १७, २५, २६, २७, अप्रै. ३, ४, १२ अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, दुर्घटना भय, आशानुरूप कारोबार में लाभ न हो, मासान्त ठीक। जन. १४, १५, २३, २४, फर. २, ३, १०, ११ अशुभ।	विलासिता में मन लगे, स्त्री सुख, मान-हानि-भय, व्यय अधिक हो, मासान्त में धन लाभ। फर. १९, २०, २१, मार्च १, २, १०, ११ अशुभ।	स्थानान्तरण योजना बने, शत्रु हतप्रभ, बन्धन भय, नेत्र व सिर पीड़ा, स्त्री सुख। मार्च १८, १९, २०, २८, २९, अप्रै. ५, ६ अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल-विचार (सं० २०४१ वि०)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९०८५, सृष्टिसंवत् १९५५८८५०८५, श्री विक्रम संवत् २०४१, शक सं० १९०६, श्री कृष्णजन्म संवत् ५२२०, कलि संवत् ५०८५, श्री महावीर (जैन) निर्वाण संवत् २५०९-२५१०, श्रीबुद्ध संवत् २६०७-२६०८, हिजरी सन् १४०५-१४०६, फसली सन् १३९१-१३९२, ईस्वी सन् १९८४-८५ ।

वर्षारम्भ में क्रमान से प्रभवादि संवत्सरों में, "ईश्वर" नामक संवत्सर है; इसका फल इस प्रकार है—

"ईश्वराब्दे अखिलान् जन्तून्, धात्री धात्रीव सर्वदा ।
पोषयत्यतुलैर्धान्य-फल मासैश्च-व्रीहिभिः ॥"

अर्थात्—पृथ्वी पर सभी प्राणी सानन्द सन्तुष्ट रहें, धनधान्य फल आदि की फसल उत्तम होगी ।

इसवर्ष का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) चन्द्र एवं मन्त्री शुक्र है । इसवर्ष सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) सूर्य, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) शनि, मेघेश (वर्षापानी के स्वामी) गुरु, रसेश (गुड़, खांड, रसकस आदि के स्वामी) मंगल, नीरसेश (सर्वविध धातु तथा व्यापार आदि के स्वामी) सूर्य, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) गुरु, धनेश (खजाने के स्वामी) सूर्य, दुर्गेश (सुरक्षा-प्रतिरक्षा आदि के स्वामी) गुरु हैं ।

वर्ष में शान्ति, विग्रह आर्थिक-सामाजिक प्रगति आदि सर्वविध ज्ञान के लिए तो सभी पदाधिकारियों के गुणकर्म-स्वभाव के अनुसार सामूहिक विचार करना पड़ता है। यहां प्रत्येक पदाधिकारी का व्यक्तिगत फल ही अंकित किया गया है—

१. राजाचन्द्र का फल—मांगलिक-कार्य अधिक हों, वर्षा अधिक एवं धान्य की फसल उत्तम हो, प्रजा में परस्पर स्नेह सद्भाव रहे तथा शासकवर्ग का प्रभाव बढ़े; स्वास्थ्य लाभार्थ नई योजनाएं बनें ।

२. मन्त्री शुक्र का फल—चूहा-टिड्डी दल, एवं अन्य प्रकार के खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, अनाज तेज हों, कुछ भागों में जल से हानि हो ।

३. सस्येश सूर्य का फल—ग्रीष्म धान्य महंगे हों, चोरी, ठगी की घटनाएं अधिक हों, शासकों में परस्पर मतवैमत्य रहे, वर्षा पर्याप्त, वन्यसम्पदा में वृद्धि हो ।

४. धान्येश शनि का फल—शासकीय-कोष में कमी, कहीं युद्ध विभीषिका बने, फसल कम, रोग बढ़ें, वर्षा समयोचित न होने से कृषक वर्ग चिन्तित हो ।

५. मेघेश गुरु का फल—वर्षा पर्याप्त, प्रजा में विलासिता बढ़े, शासक विवेक से काम लें, प्रजा में धन-धान्य समृद्धि हो ।

६. रसेश मंगल का फल—इक्षु एवं दुग्ध आदि महंगे हों, किसी नेता को दुःखद स्थिति में उलझना पड़े, वर्षा किसी क्षेत्र में कम हो ।

७. नीरसेश सूर्य का फल—तांबा आदि धातुएं तथा मोती माणिक्य आदि रत्न महंगे होंगे ।

८. फलेश गुरु का फल—वन्यसम्पदा में वृद्धि हो, फल-फूल प्रचुरमात्रा में हों, मांगलिक शुभकार्य अधिक, बुद्धिजीवि-वर्ग सत्कर्मरत रहें ।

९. धनेश सूर्य का फल—व्यापारीवर्ग लाभान्वित हो, पशुओं के व्यापार से विशेष लाभ मिले ।

१०. दुर्गेश गुरु का फल—शासक न्याय परायण हो, सर्वत्र आनन्द मंगल हो, बुद्धिजीवी वर्ग आत्म रक्षार्थ शस्त्रधारण करें ।

सूचना—यद्यपि वर्ष के इन दस अधिकारियों का साधारण फल तो सर्वत्र होता ही है, किन्तु विशेषकर राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में सस्येश का पौंड्र-विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के निकटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य-प्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है ।

नवमेघों में "संवर्त" नामक मेघ का फल—"संवर्ते वायुपीड़नम्"—आंधी तूफान आदि से जन-धन हानि होगी ।

द्वादशनागों में "वृष" नामक नाग का फल—"वृषे तु ईतितो भयम्" कहीं अति-वर्षा, कहीं वर्षा का अभाव और कहीं टिड्डी दल, चूहा आदि से फसल को हानि पहुंचेगी ।

रोहिणी का वास 'समुद्र' में है; फल—"समुद्रेतु महावृष्टि" वर्षा अत्यधिक होगी। बहुत जल में पैदा होने वाले अन्न चावलादि की उत्पत्ति अधिक होगी । न्यूनवर्षा वाले बागड़ आदि राजस्थानीय भू-भागों में भी आगे पीछे वर्षा से कृषक लोगों को सहारा मिलेगा ।

संवत्सर का वास माली के घर है; फल—फलफूल काफी मात्रा में हों । बागवानी में तरक्की व प्रगति हेतु शासन नई योजनाएं बनाएगा ।

संवत्सर का वाहन—"मृग" है—गतिविधियों में तीव्रता लाने की योजनाएं कार्यान्वित होंगी ।

शनि की दृष्टि—वर्षारम्भ से वर्षान्त तक शनि स्वाती विशाखा अनुराधा नक्षत्रों पर ही विचरण करता है; अतः इस संवत् में शनि की दृष्टि पश्चिम में रहेगी । फल—पश्चिमी देशों में एवं पश्चिमी प्रान्तों में कहीं युद्ध, कहीं राजनैतिक अस्थिरता एवं कहीं अकाल की स्थिति किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि होगी ।

इसवर्ष माघकृष्ण में (केवल एक ही) सोमवती-अमावस है । भौमवती-अमावस्याएं वैशाख, आश्विन, फाल्गुन में तीन हैं । शनैश्चरी-अमावस श्रावण और पौष में दो ही हैं । बुधाष्टमियां ज्येष्ठकृष्ण एवं कार्तिकशुक्ल में दो ही हैं ।

वर्षा आदि के विश्वामान—वर्षाविंशवा १७, धान्य १५, तृण १३, शीत १७, तेज ५, वायु ११, वृद्धि ७, क्षय ७, विग्रह १७, क्षुधा ५, तृषा ७, निद्रा ९, आलस्य १५, उद्यम ९, शांति १३, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फलनिष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता ५, पाप १५, पुण्य १५, व्याधि ९, व्याधिनाश १.., आचार १३, अनाचार १५, मृत्यु ९, जन्म १५, देशोपद्रव १, देश-स्वास्थ्य ३, चौरभय ७, चौरनाश १५, अग्निभय ११, अग्निशान्ति १३, उद्भिज्ज ९, जरायुज ३, अण्डज ११

स्वेदज ५, टिड्डी ११, तोता १५, मूषक ३, सोना १९, तांबा ९, स्वचक्र १७, परचक्र १५, वृष्टि १३, वृष्टिनाश १७, संवत् विश्वा १०।

वर्ष के चार स्तम्भ :—

(१) **जलस्तम्भ** (चैत्र शु. १ को रेवती नक्षत्र) ९४ प्रतिशत है।
(२) **वायुस्तम्भ** (ज्येष्ठ शु. १ को मृग. नक्षत्र) ४० प्रतिशत है।
(३) **तृणस्तम्भ** (वैशा. शु. १ को भर. नक्षत्र) ७३ प्रतिशत है।
(४) **अन्नस्तम्भ** (आषा. शु. १ को पुन. नक्षत्र) ५४ प्रतिशत है।

फल—वर्षस्तम्भ विचार से वर्षा अधिक होने से हानि भी होगी, वायुवेग से विशेष हानि का योग नहीं, चारा पर्याप्त मात्रा में होगा, अनाजों की फसल अच्छी हो।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार बुर्ग) :—

(१) **प्रथम आर्ष** (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र ७६ प्रतिशत है। (२) **द्वितीय आर्ष** (सं. २०४० में पौष अमा. को मूल नक्षत्र) ६२ प्रतिशत है। (३) **तृतीय आर्ष** (श्राव. शु. १५ को श्रवण नक्षत्र) ८४ प्रतिशत है। (४) **चतुर्थ आर्ष** (काति. शु. पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) का अभाव है।

फल—आर्षमान विचार से यह वर्ष अच्छा रहेगा। किसी भाग में अकाल की स्थिति भी बने।

"अखै तीज रोहणी नहीं होई पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारो कातिक पुण्यो कृत्तिका टारो॥
महीमांह खलबली प्रकाशै कहै भड्डली साख विनाशै॥

नववर्ष प्रवेश—वि. सं. २०४० में चैत्र कृ. ३० रविवार (१ अप्रै. १९८४ ई.) को २८ घटी ३१ पल (१७ घं. ४० मि., भा. स्टै. टा.) पर कन्या लग्न में नववर्ष होगा। **फल**—पूर्व में राजनैतिक स्थिरता, घी आदि में तेजी बनेगी, मजीठ आदि सस्ते हों। प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी।

वर्षेश (जगत्) लग्न—सं. २०४१ वि. में चैत्र शु. १२ शुक्रवार (१३ अप्रै. १९८४ ई.) को २२ घटी ८ पल (१४ घं. ५१ मि., भा. स्टै. टा.) पर सिंह लग्न में सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे। **फल**—लग्न पर गुरु दृष्टि शुभ है। वर्ष प्रगतिप्रद रहेगा। धनधान्य में वृद्धि होगी। दक्षिण में कहीं खड़ी फसल को हानि होगी।

आर्द्रा प्रवेश लग्न—आषाढ़ कृष्ण अष्टमी गुरुवार (२१ जून १९८४ ई.) को ३१ घटी ५३ पल (१८ घं. ९ मि., भा. स्टै. टा.) पर सूर्य आर्द्रा में प्रविष्ट होगा।

फल—अनाज एवं जनजीवनोपयोगी चीजों के भाव उठेंगे। जनता में पुनरपि अशान्ति न रहे। कहीं अत्यधिक वर्षा किंवा कहीं वर्षा की कमी से हानि होगी।

नव वर्षलग्न कुंडली

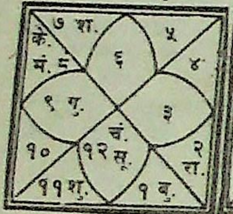

वर्षेश (जगत्) लग्न कु.

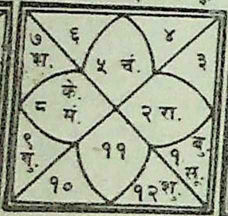

आर्द्रा प्रवेश कुं.

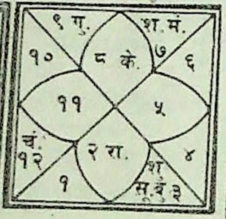

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्म-लग्न से, चन्द्र बलवान् हो तो जन्मराशि से, जगल्लग्न जिस स्थान में आए, वह भाव शुभ या स्वामी ग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान् हो तो वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उसभाव की हानि कहे। जन्म-लग्न, जन्म-राशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से वर्षेश लग्न (जगल्लग्न) आठवें-बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता। इसी प्रकार देश और ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए देश ग्राम या नगर की जो राशि हो, उससे जगल्लग्न आठवें या बारहवें हो तो उस देश, ग्राम व नगर के लिए वह वर्ष हानिप्रद समझना चाहिए।

जन्म-लग्न से जः ल्लग्न का फल—१ देहसुख, २ धनलाभ, ३ कुटुम्बवृद्धि, ४ मित्रसौख्य, ५ पुत्र सौख्य, ६ शत्रुजय, ७ स्त्री सुख, ८ रोगभय, ९ धर्मलाभ, १० धनलाभ, ११ लाभसुख, १२ व्यय दुःख।

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली के अनुसार फसल उत्तम होने पर भी हानि उठानी पड़ेगी। कुछ स्थानों पर बुवाई पुनः करनी पड़ेगी। अतिशय वर्षा किंवा वर्षा के अभाव से हानि होगी।

शरत्सस्यजातक कुण्डली के अनुसार रबी की फसल उत्त' होगी, लेकिन प्राकृतिक प्रकोप से कृषक वर्ग फसल से आशानुरूप फल न उठा सकेगा। प्रजा में बीमारी से कष्ट रहे।

गुर्रा फल—गत सं. २०४० वि. में आश्विन शु. २ शनिवार (८ अक्तूबर १९८३ ई.) को हिजरी सन् १४०४ शुरू हुआ था। फल—यौवन देशों में आन्तरिक असन्तोष किंवा परस्पर युद्ध से जन-धन हानि होगी।

सं. २०४१ वि. में आश्वि. शु. ३ गुरुवार (२७ सित. १९८४ ई.) को हिजरी सन् १४०५ शुरू होगा। फल—फसलअच्छी होगी, भयरोग, उपद्रवों में कमी आए, स्त्रियों में कुच सम्बन्धी रोग से कष्ट हो। बच्चों में विशेषविध रोग से कहीं परेशानी खड़ी हो।

लाभव्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ →	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय →	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

लाभ व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।

संदिग्ध–व्रतपर्वनिर्णय (सं. २०४१ वि.)

लेखक प्रियव्रत शर्मा

अनंग त्रयोदशी—पूर्वविद्धा चैत्रशुक्ल त्रयोदशी के दिन अनंग त्रयोदशी मनाई जाती है। ("कृष्णाष्टमी बृहत्तपा: सावित्री वटपैतृकी। कामत्रयोदशी रम्भा उपोष्या: पूर्वसंयुता: ॥") इस वर्ष १३ अप्रैल को यह पूर्वविद्धा होने से अनंग त्रयोदशी इसी दिन लिखी गई है।

श्री परशुराम जयन्ती—श्री परशुराम के जन्म के विषय में दो मत है। एक मत के अनुसार वैशाखशुक्ल तृतीयां में मध्याह्न के समय श्री परशुराम का जन्म हुआ। दूसरे मत के अनुसार इनका जन्म वैशाखशुक्ल तृतीया में प्रदोष (या रात्रि के प्रथम प्रहर) के समय सिद्ध होता है। अधिकतर पौराणिक एवं अन्य शास्त्रीय वचन दूसरे (रात्रि प्रथम प्रहर वाले) पक्ष का ही समर्थन करते हैं। भविष्यपुराण का वाक्य है—"शुक्ला तृतीया वैशाखे शुद्धोपोष्या दिनद्वये। निशाया: पूर्वयामे चेदुत्तराऽन्यत्र पूर्विका ॥" 'भार्गवार्चनचन्द्रिका' में उद्धृत स्कन्द-भविष्य पुराण का यह वाक्य भी इसी का समर्थक है—"वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयायां पुनर्वसौ। निशाया: प्रथमे यामे रामाख्य: समये हरि:। स्वोच्चगै: षड्ग्रहैर्युक्ते मिथुने राहुसंस्थिते। रेणुकायास्तु यो गर्भाद् अवतीर्ण: हरि: स्वयम् ॥" निर्णयसिन्धुकार लिखते हैं—"इयम् (वैशाखशुक्लतृतीया) एव परशुरामजयन्ती, सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या।" धर्मसिन्धु में भी लिखा है—"इयं (परशुराम–जयन्ती) रात्रिप्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या।" इसप्रकार रात्रिप्रथमयाम-(प्रहर) व्यापिनी वैशाखशुक्ल तृतीया के दिन ही परशुराम जयन्ती मनाना युक्तियुक्त है। मध्याह्न-व्यापिनी वाला पक्ष बहुत विरल है। इसवर्ष तो इसपर्व में कोई विवाद नहीं है। ३ मई १९८४ ई० को वैशाख शु० तृतीया मध्याह्न और प्रदोष दोनों को व्याप्त करती है। अत: दोनों के मतों अनुसार इसवर्ष परशुराम जयन्ती ३ मई १९८४ ई० को ही है।

गतवर्ष (सं० २०४० वि० में) वैशाखशुक्ल तृतीया १४ मई १९८३ ई० को ही रात्रिप्रथमयामव्यापिनी थी, अत: शास्त्रानुसार हमने १४ मई को ही यहपर्व लगाया था। महाराष्ट्र के धर्मशास्त्रविशेषज्ञ श्रीढुंढिराज दाते आदि पंचांगकारों ने भी १४ मई १९८३ ई को ही श्रीपरशुरामजयन्ती लगाई थी। (रात्रि के घट्यादिमान को चार से विभाजित करने पर रात्रि के एक याम (प्रहर) का मान प्राप्त होता है।)

गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा)—गुरुपूजा (गुरुपूर्णिमा) और श्री व्यासपूजा के लिए सूर्योदय के अनन्तर त्रिमुहूर्तव्यापिनी आषाढ़ पूर्णिमा होना आवश्यक है। आषाढ़ पूर्णिमा यदि तीन मुहूर्त से कम हो तो ये दोनों पर्व पहले दिन मनाए जाते हैं—"अस्यां पौर्णमास्यां सन्यासिनो चातुर्मास्यावासंकल्पानन्तरेण क्षौरव्यास-पूजादिकं विहितम्। अत्र कर्मणि औदयिकी त्रिमुहूर्ता पौर्णमासी ग्राह्या—"धर्मसिन्धु:। अत्रैव (आषाढ़ शुक्ल पौर्णमास्यां) व्यासपूजोक्ता। तत्र त्रिमुहूर्ता चेत्परैवेति संन्यासपद्धतौ"—निर्णय सिन्धु:।

इसवर्ष १३ जुलाई १९८४ ई० को आषाढ़ पूर्णिमा तीन मुहूर्त से कम है, अत: इसवर्ष गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा पहले दिन (१२ जुलाई को) ही लिखी गई है। ध्यान रहे—व्यासपूजा के दिन ही गुरुपूजा की जाती है।

[दिनमान को ५ से भाग देने पर तीन मुहूर्तों का मान प्राप्त होता है।].

अमावस्यातुर्दशी श्राद्ध, सर्वपितृश्राद्ध—आश्विन कृष्णपक्ष में किए जाने वाले लगभग सभी श्राद्ध 'पार्वणश्राद्ध' कहलाते हैं। किसी भी तिथि का पार्वणश्राद्ध अपराह्णव्यापिनी तिथि में ही किया जाता है (पार्वण त्वपराह्णके)। इसवर्ष आश्विन कृष्ण १४ चन्द्रवार के दिन (२४ सितं० को) ही अमावस अपराह्णव्यापिनी है, इसलिए अमावस्या का श्राद्ध इसीदिन चन्द्रवार (२४ सितम्बर) को ही किया जाएगा। सर्वपितृ श्राद्ध भी अमावस्या श्राद्ध के दिन ही होता है, अत: 'सर्वपितृश्राद्ध' भी इसीदिन लिखा गया है।

शारद-नवरात्र प्रारम्भ—नवरात्र का प्रारम्भ (घटस्थापन) अमावस्यायुक्त आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में निषिद्ध है—"अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।" —देवीपुराण। परन्तु प्रतिपदा का क्षय हो जाने की स्थिति में (अर्थात् जब अमावस के दूसरे दिन सूर्योदय के अनन्तर प्रतिपदा बिल्कुल न हो तब) अथवा प्रतिपदा सूर्योदयानन्तर एकमुहूर्त से कम हो तब आश्विनकृष्ण अमावस के दिन ही नवरात्रारम्भ (घटस्थापन) करना चाहिए, ऐसी शास्त्राज्ञा है।—"परदिने प्रतिपदोऽत्यन्तासत्त्वे तु दर्शयुतापि पूर्वैव ग्राह्या।"—निर्णय सिन्धु। "मुहूर्तन्यून-व्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुतापि ग्राह्या"—धर्मसिन्धु:। इसवर्ष आश्विनशुक्ल प्रतिपदा का क्षय है अत: इस वर्ष नवरात्रारम्भ-कलश स्थापन २५ सितम्बर १९८४ ई० को ही होगा।

नरक चतुर्दशी—चन्द्रोदय व्यापिनी कार्तिककृष्ण चतुर्दशी में ही नरक चतुर्दशी मनाई जाती है।—"कार्तिकस्यासिते पक्षे चतुर्दश्यां विधूदये। अवश्यमेव कर्त्तव्यं स्नानं नरकभीरुभि:।"—भविष्यपुराण। इसवर्ष कार्तिककृष्ण त्रयोदशी (चन्द्रवार) के दिन ही चतुर्दशी चन्द्रोदय-व्यापिनी है अत. इसी दिन नरक चतुर्दशी मनाई जाएगी।

दीपावली—प्रदोष (सूर्यास्तोत्तर त्रिमुहूर्त) व्यापिनी कार्तिकअमावस्या के दिन ही दीपावली (महालक्ष्मीपूजन) मनाने की शास्त्राज्ञा है। इसवर्ष २३ और २४ अक्तूबर (१९८४ ई०) को दोनों दिन अमावस्या प्रदोष को स्पर्श नहीं करती। इस स्थिति में दूसरे दिन २४ अक्तूबर को ही दीपावली मनाई जाए—ऐसा अधिकतर निबन्धकारों का मत है। धर्मसिन्धुकार तो दोनों दिन प्रदोष में अमा के अभाव की स्थिति में पहले दिन ही लक्ष्मी पूजन का समर्थन करते हैं—"पूर्वत्रैव प्रदोषव्याप्तौ लक्ष्मीपूजादौ" पूर्वा, अभ्यङ्गस्नानादौ परा, एवमुभयत्र प्रदोषव्याप्त्यभावेऽपि।" जयसिंह कल्पद्रुमकार भी इसी मत का समर्थन करते हैं—"उभयदिने प्रदोषव्याप्त्यभावेऽर्धरात्र-व्यापिनी (पूर्वदिवसीया) ग्राह्या, तस्यां लक्ष्म्यागमन-कालत्वाभिधानात्।"

लेकिन पुरुषार्थचिन्तामणि, तिथिनिर्णय (भट्टोजिदीक्षितकृत) आदि का मत है कि दोनों दिन अमा प्रदोष का स्पर्श न करे तो दूसरे दिन ही लक्ष्मी पूजन करना चाहिए। "इयं प्रदोष-व्यापिनी ग्राह्या। दिनद्वये सत्त्वासत्त्वे परा"—तिथि निर्णय:।

किन्तु—दीपावली के दिन निशीथकाल में लक्ष्मी का आगमन शास्त्रों में अवश्य वर्णित है लेकिन कर्मकाल (लक्ष्मीपूजन, दीपदान आदि का काल) तो प्रदोष ही माना जाता है। लक्ष्मीपूजन, दीपदान के लिए प्रदोषकाल ही शास्त्र प्रतिपादित है—

"प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा यथाक्रमम्।
दीपवृक्षास्तथा कार्या: शक्त्या देव-गृहेषु च ॥"

२४ अक्तूबर को यद्यपि गणितागत अमावस्या प्रदोष से पूर्व ही समाप्त हो जाती है, लेकिन "यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्कर:। सा तिथि: सकला ज्ञेया

व्याप्त्यव्यवकर्षत्तु ॥" इस वचनानुसार इसदिन प्रदोषकाल में सांकल्यापादित अमावस विद्यमान है, अतः इसवर्ष २४ अक्तूबर को ही प्रदोष में महालक्ष्मीपूजन होगा। यही निर्णय अधिकतर पञ्चाङ्गकारों को मान्य है। परम्परा भी इसी मत को मान्यता देती है।

ध्यान रहे—पूर्वीभारत (आसाम, बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तरप्रदेश, बनारस, प्रयाग आदि) में तो २४ अक्तू. १९८४ ई० को कातिक अमा प्रदोषव्यापिनी है, अतः वहां तो प्रत्येक शास्त्र वाक्यानुसार दीपावली २४ अक्तूबर को ही होगी।

गोवर्धन पूजा—गोक्रीड़ा, बलिपूजा गोवर्धन-पूजा एवं अन्नकूट—ये सभी पर्व कातिक शुक्ल प्रतिपदा को ही मनाए जाते हैं। यदि कातिकशुक्ल प्रतिपदा को साथ चन्द्रदर्शन हो तो उस स्थिति में ये पर्व पहले दिन कातिकअमा को ही मनाए जाते हैं। "सोमो राजा पशून् हन्ति—इति देवल वचनात् परविद्धायाः चन्द्रदर्शनवत्या निषिद्धत्वात् दर्शविद्धैव ग्राह्या।" प्रतिपद्दर्श-संयोगे क्रीडनं तु गवां मतमिति तेनैवोक्तत्वाच्च द्वितीयदिने चन्द्रदर्शनाभावे गोक्रीडनादावुत्तरैव,"—तिथिनिर्णयः।

कुछ निबन्धकार कहते हैं, कि यदि प्रतिपदा दूसरे दिन दशमुहूर्तव्यापिनी हो तो उसदिन चन्द्रदर्शन की सम्भावना नहीं होती, अतः गोवर्धनपूजादि उसी दिन करनी चाहिए। "तत्र यदि उदयं व्याप्य दशमुहूर्ता प्रतिपत् तदा चन्द्रदर्शनाभावात् चन्द्रदर्शन-प्रयुक्त-द्वितीया वेध-निषेधाप्रवृत्तेः सर्वकार्याणि (गोवर्धनपूजादीनि) परप्रतिपद्येव भवन्ति।" —धर्मसिन्धु। इसवर्ष २५ अक्तूबर १९८४ ई० को कातिकशुक्ल प्रतिपदा के दिन चन्द्रदर्शन नहीं होगा—यह गणित से सिद्ध है। अपिच इसदिन प्रतिपदा तिथि दस मुहूर्त से अधिक भी है, अतः उपरोक्त दोनों मतों के अनुसार गोवर्धनपूजा, अन्नकूट, गोक्रीडा एवं बलिपूजा २५ अक्तूबर को ही मनाए जाएंगे।

यम द्वितीया, भाईदूज—कातिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमुना ने अपने भाई यम को अपने घर भोजन खिलाया था, अतः यह तिथि भ्रातृद्वितीया (भाई दूज) या यमद्वितीया नाम से प्रसिद्ध है। शास्त्रानुसार अपराह्णव्यापिनी कातिकशुक्ल द्वितीया के दिन ही भाई दूज (यमद्वितीया) मनाई जाती है। इसदिन अपराह्ण में यमपूजन भी होता है। "ऊर्जे शुक्लद्वितीयायामपराह्णेऽर्चयेद्यमम्;"—स्कन्दपुराण। तिथिनिर्णय में भट्टोजिदीक्षित ने लिखा है, "कार्तिकशुक्ल द्वितीया, यम द्वितीया, सा पूर्वविद्धा अपराह्ण-व्यापिनी ग्राह्या। इयं (यम द्वितीया) पूर्वद्युरेवापराह्णव्याप्तौ पूर्वा, उभयत्र व्याप्त्यव्याप्त्यादि-पक्षान्तरेषु परैव—धर्मसिन्धु।" हेमाद्रि का मत है कि यहां प्रतिपदा मध्याह्न-व्यापिनी लेनी चाहिए। पुरुषार्थचिन्तामणिकार का कहना है कि—भाईदूज के लिए मध्याह्न-व्यापिनी प्रतिपदा लेनी चाहिए; क्योंकि भोजनकाल मध्याह्न ही है और यमपूजन के लिए अपराह्ण व्यापिनी ठीक है। लेकिन यम द्वितीया के लिए अपराह्ण व्यापिनी प्रतिपदा के ही समर्थक पुराणवाक्य उपलब्ध हैं, मध्याह्न व्यापिनी प्रतिपदा के समर्थक पुराणवाक्य नहीं मिलते। भाईदूज और यमद्वितीया दोनों भिन्न-भिन्न त्योहार नहीं हैं—यह भी स्कन्द, ब्रह्माण्ड, भविष्योत्तर आदि पुराण वाक्यों से स्पष्ट है। देखिए भविष्योत्तर का यह वचन यमद्वितीया और भ्रातृद्वितीया दोनों पर्वों को अभिन्न बतलाता है—

"कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वितीयायां युधिष्ठिर।
यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहे स्वयम्॥
अतो यमद्वितीया सा प्रोक्ता लोके युधिष्ठिर।
तस्यां निजगृहे पार्थ न भोक्तव्यमतो बुधैः॥
यत्नेन भगिनी हस्ताद् भोक्तव्यं पुष्टिवर्धनम्।
दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विशेषतः।"

इसलिए स्पष्ट है, शास्त्रानुसार भाईदूज (जो यमद्वितीया से अलग नहीं है) भी अपराह्णव्यापिनी द्वितीया में ही मनाई जानी चाहिए।

इसवर्ष कातिकशुक्ल प्रतिपदा (२५ अक्तूबर १९८४ ई०) के दिन ही द्वितीया अपराह्ण व्यापिनी है। अतः इसीदिन यमद्वितीया और भाईदूज दोनों त्योहार मनाना शास्त्रसम्मत है।

ध्यान दें—२५ अक्तूबर को अपराह्णकाल, दिन के १ बजकर १३ मिनट से लेकर दिन के ३ बजकर २५ मिनट (१६ घ०.३३ पल से २२ घ० ४ पल तक) रहेगा। इसदिन द्वितीया दिन के २ बजकर १५ मिनट (१९ घ० ८ पल) पर ही प्रारम्भ हो जाती है। २६ अक्तूबर को द्वितीया दिन के ११ बजकर १४ मिनट (११ घ० ३३ पल) पर ही समाप्त हो जाती है। जबकि इसदिन अपराह्णकाल दिन के १ बजकर १३ मिनट (१६ घ० ३० पल) पर प्रारम्भ होता है।

उपरोक्त शास्त्रीय विवेचन से स्पष्ट है, कि शास्त्र के अनुसार तो इसवर्ष २५ अक्तूबर को यमद्वितीया और भाईदूज मनाई जाएं, लेकिन हमने पञ्चाङ्ग में यमद्वितीया और भाईदूज २६ अक्तूबर को ही लिखी है; इसका कारण यह है, कि स्कन्दपुराणादि के अनुसार यमद्वितीया और भाईदूज यद्यपि अपराह्णव्यापिनी द्वितीया में ही मनाई जानी चाहिए, फिरभी उत्तरभारत में उदयव्यापिनी द्वितीया के दिन ही भाईदूज, यमद्वितीया मनाने की परम्परा चली आ रही है. इस परम्परा के अनुसार ही २६ अक्तूबर को सूर्योदयव्यापिनी द्वितीया के दिन, यमद्वितीया, भाईदूज इस पंचाङ्ग में लिखी गई है। केवल उदयव्यापिनी कातिक शुक्ल द्वितीया के दिन भाईदूज मनाने की यह परम्परा किसी भी शास्त्रवाक्य से अनुमोदित नहीं है।

वैकुण्ठ चतुर्दशी—कातिकशुक्ल चतुर्दशी जिस दिन अरुणोदयव्यापिनी हो उस दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी होती है। इसवर्ष कातिकशुक्ल १३ मंगलवार के दिन (६ नवं० को) ही (बुधवार के सूर्योदय से पहले) चतुर्दशी अरुणोदयकाल में व्याप्त है। अतः इसी दिन (मंगलवार को ही) वैकुण्ठ चतुर्दशी लिखी गई है। सूर्योदय से पहले की चार घड़ियां अरुणोदयकाल कहलाता है।

होलिका दहन

फाल्गुन पूर्णिमा में भद्राकाल को छोड़कर प्रदोष के समय होलिका-दहन किया जाए—यह सामान्य नियम है। यदि प्रदोषकाल में भद्रा हो और भद्रा अर्धरात्रि से पूर्व ही समाप्त हो रही हो तो भद्रा की समाप्ति के बाद ही होलिका दहन किया जाता है—इसनिर्णय पर सभी धर्मशास्त्रकार सहमत हैं।

"यदि निशीथात् प्राक् भद्रासमाप्तिः तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिकादीपनम्" —धर्मसिन्धु।

"यदा पूर्वदिने निशीथात् प्राक् भद्रावसानोत्तरकाललाभस्तदा तत्रैव होलिका दीपनीया"—पुरुषार्थचिन्तामणिः।

इसवर्ष ६ मार्च (१९८५ ई०) को फाल्गुन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी तो है, लेकिन यहां पूरे प्रदोषकाल में भद्रा है। यह भद्रा इसदिन निशीथ से पूर्व ही रात्रि में ९ बजकर २२ मिनट पर समाप्त हो जाती है। अतः उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार इसदिन रात्रि के ९ बजकर २२ मिनट के बाद ही होलिका दहन होगा।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, चैत्र शुक्ल पक्ष १															तारीखें				ग्रन्थ.	स्टैं. टा.				उदय-कालिक				(२ से १५ अप्रै. तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., उ. गो., वसन्त ऋतु)
ति. मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	शा.	मु.	संचार	चण्डीगढ़				स्पष्टसूर्य				ग्रह-दर्शन—प्रातः शनि-मंगल को पश्चिम में, गुरु को याम्योत्तर-वृत्त से पश्चिम की ओर काफी नत एवं प्रातः शुक्र पूर्व कपाल में होगा। बुध १३ अप्रैल को पश्चिम में अस्त होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.					घ. प.	सू. घं.	उ. मि.	सू. घं.	अ. मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५५	१	चं.	३३	२५	रे.	२६	३४	ऐं.	१४	३९	किं.	०	५८	२१	२	१३	२९	मे.२६।३४	६	१४	६	३७	११	१८	५०	१०	पंचक स. २६।३४, शुक्र मीन में ३८।७, नवरात्रं प्रा., A
३१	०	२	मं.	३७	३३	अ.	३२	९	वै.	१५	२८	बा.	५	२९	२२	३	१४	३०	मेष	६	१३	६	३८	११	१९	४९	१७	चन्द्र दर्शन मु. ३०, नेपच्यून वक्री, चन्द्रव्रत, दमनकेन गौरी B
३१	५	३	बु.	४०	४९	भ.	३६	५५	वि.	१५	४०	तै.	९	११	२३	४	१५	र.१	वृ.५२।५२	६	११	६	३९	११	२०	४८	२२	रजब मु. प्रा., श्री मत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गणगौर), C
३१	१०	४	गु.	४३	६	कृ.	४०	४४	प्री.	१५	१०	व.	११	५८	२४	५	१६	२	वृष	६	१०	६	३९	११	२१	४७	२५	भ. ११।५८ उ., ४३।६ या., शुक्र उ. भा. में २०।२७, D
३१	१३	५	शु.	४४	९	रो.	४३	२३	आ.	१३	४९	व.	१३	३७	२५	६	१७	३	वृष	६	९	६	४०	११	२२	४६	२५	श्री लक्ष्मी पंचमी,
३१	१८	६	श.	४३	५३	मृ.	४४	४५	सौ.	११	२७	कौ.	१४	१	२६	७	१८	४	मि.१४।४	६	८	६	४१	११	२३	४५	२४	श्री स्कन्द षष्ठी,
३१	२२	७	र.	४२	८	आ.	४४	४०	शो.	८	१	ग.	१३	०	२७	८	१९	५	मिथुन	६	७	६	४१	११	२४	४४	१९	भ. ४२।८ उ.,
३१	२७	८	चं.	३९	४९	पुन.	४३	३	अ.	३ ५७।२५	२२	वि.	१०	२९	२८	९	२०	६	क.२८।२७	६	६	६	४२	११	२५	४३	१२	भ. १०।२९ या., श्री दुर्गाष्टमी, मेला मनसादेवी (चण्डीगढ़)
३१	३१	९	मं.	३४	०	पु.	३९	५७	धृ.	५०	२२	बा.	६	२५	२९	१०	२१	७	कर्क	६	४	६	४२	११	२६	४२	४	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त,
३१	३६	१०	बु.	२७	५१	आश्ले.	३५	३२	शू.	४२	१४	तै.	०	५६	३०	११	२२	८	सि.३५।३२	६	३	६	४३	११	२७	४०	५२	भ. ५४।११ उ., बुधवक्री ३९।२२,
३१	४०	११	गु.	२०	३१	म.	२९	५९	गं.	३३	१३	वि.	२०	३१	३१	१२	२३	९	सिंह	६	२	६	४४	११	२८	३९	३९	भ. २०।३१ या., कामदा एकादशी व्र. स.,
३१	४४	१२	शु.	१२	२१	पू.फा.	२३	४०	वृ.	२३	३४	बा.	१२	२१	वै.१	१३	२४	१०	क.३७।०	६	१	६	४४	११	२९	३८	२३	सं. सूर्य अश्वि. मेष में २२।८ मु. ३०, पुण्य ६।८ उ., बुध E
३१	४९	१३	श.	३	४५	उ.फा.	१७	०	ध्रु.	१३	३८	तै.	३	४५	२	१४	२५	११	कन्या	६	०	६	४५	०	०	३७	५	भ. ५४।५२ उ., श्री जैन महावीर जयन्ती, दमनक चतुर्दशी, F
अवम		१४	श.	५४	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३१	५४	१५	र.	४६	४४	ह.	१०	२१	व्या.	३ ५४।१७	४३	वि.	२०	४८	३	१५	२६	१२	तु.३७।१८	५	५९	६	४६	०	१	३५	४६	भ. २०।४८ या., वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्री सत्य व्र., G

वर्षारम्भ में बार्हस्पत्यमान से "ईश्वर" नामक संवत्सर है ; अतः वर्ष के अन्त तक इसे ही संकल्प में प्रयुक्त करें।

A घट-स्थापन, चान्द्रसंवत्सर प्रा., वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यङ्ग, प्रपादान, B शिव पूजनम्, C आन्दोलन व्रत प्रारम्भ, श्रीराम दोलोत्सव प्रारम्भ, D मंगलवक्री ५३।०, E पश्चिम में अस्त १७।५८ अनङ्ग त्रयोदशी (देखें पृ. ५९-६०), प्रदोष व्र. मेला वैशाखी, F (वि.मु.-उ.फा.), G (वि.मु.-चित्रा)

चैत्र शु. ८ चन्द्र, इष्ट ५८।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	०	८	११	६	१	७
२६	४	१२	१८	९	२१	१५	१५
४०	३०	५२	४३	२	८	३६	३६
४०	३९	५	२९	३५	१४	१९	१९
५८	३	८	३	७३	३	३	३
५०	४४	४४	३३	५५	५६	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	द.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

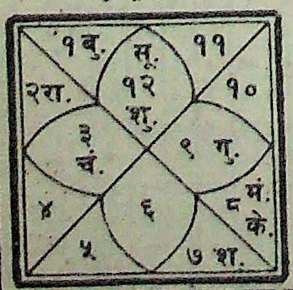

लोक भविष्य—इस संवत् का राजा चन्द्र एवं मन्त्री शुक्र है। वर्ष का सामूहिक फल भारत के लिए सन्तोष-जनक रहेगा। लेकिन इस मास में पांच रविवार होने से किसी रोग विशेष से जनता को कष्ट हो। पक्षारंभ से ही श. मं. वक्री हैं, मंगल अतिमसल वक्र अवस्था मेंवक्री हुआ है अतः बंगला देश चीन, पाकिस्तान एवं अन्य यावन- देशों में जुलाई तक ऐतिहासिक घटनाएं घटेंगी, कहीं शासक के विरुद्ध विद्रोह, कहीं रक्तपात से हानि होगी। **ग्रहचाल और बाजार का रुख**—५-६ अप्रैल को वायदा बाजार तथा जौ, ज्वार, बाजरा, चना, अलसी, गुड़, खाण्ड शक्कर, घी एवं तेलों में अच्छी तेजी रहेगी। ११ अप्रैल को तेजी विशेष रहे। इस दिन रुई और चान्दी में काफी मन्दी व तेजी आने का योग है, बाजार का रुख देखकर काम करें, लाभ मिलेगा। १३ अप्रै. से अलसी, एरण्ड, तिल, तेल आदि में तेजी बनेगी।

कु. सूर्योदये

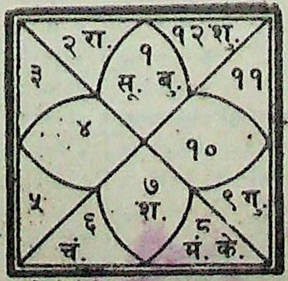

चैत्र शु. १५ रवि, इष्ट ५८।४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	७	०	८	११	६	१	७
२	३	१२	१९	१६	२०	१५	१५
३३	५६	१२	२	२६	४३	१७	१७
१७	५१	२९	५	६	५७	१४	१४
५८	८	२६	२	७३	४	३	३
३८	२०	८	२८	५३	१२	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में ७ अप्रै. तक तापमान में वृद्धि होगी, १२ से १५ अप्रै. तक लंका के पश्चिमी छोर भूटान, सिक्किम, आसाम, बंगला देश, भारत में हि. प्र., पू. आसाम, पू. बिहार, बंगाल एवं पंजाब में कहीं-कहीं वर्षा होगी।

शकुन विचार—यदि चैत्र शुक्ला नवमी को आकाश मेघाच्छन्न रहे तो आगे वर्षा ऋतु में वायु का प्रकोप व आकाश निर्मल रहता है। इस समय गेहूं के स्टाक से श्रावण में लगभग त्रिगुणित लाभ की आशा रखें।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, वैशाख कृष्ण पक्ष २ | तारीखें | चन्द्र–संचार | भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ | उदय-कालिक स्पष्टसूर्य | (१६ अप्रै. से १ मई तक, सन् '८४ ई.), उ. अ.-गो., बसन्त-ग्रीष्मर्तु)

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श	मु.	संचार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन–बुध ३० अप्रै. को पूर्व में उदित होगा। प्रातः मं. को पश्चिम-कपाल में, गु. को पश्चिम की ओर झुका, शुक्र को पूर्व में देखें, सूर्यास्त समय उदित शनि को सारी रात देखें।
३१	५८	१	चं.	३९	१५	चि.	४	१५	व.	४५	२०	बा.	१३	०	४	१६	२७	१३	तुला	५	५८	६	४६	०	२	३४	२५	शुक्र रेव. में १०।७, [थि. मु.-स्वा.]
३२	२	२	मं.	३२	५६	चि.	५५	१२	सि.	३७	३१	तै.	६	०५	५	१७	२८	१४	वृ४१।१०	५	५७	६	४७	०	३	३३	०	
३२	६	३	बु.	२८	१०	अनु.	५३	१	व्य.	३०	५९	व.	०	३३	६	१८	२९	१५	वृश्चिक	५	५५	६	४८	०	४	३१	३६	भ. ०।३३ उ., २८।१० या., श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३२	११	४	गु.	२५	१५	ज्ये.	५२	४४	व.	२५	५८	बा.	२५	१५	७	१९	३०	१६	ध ५२।४४	५	५४	६	४८	०	५	३०	९	सूर्य सायन वृष में ५३।७, ग्रीष्म ऋतु प्र व. मंगल विशा. में ५३।२
३२	१५	५	शु.	२४	१७	मू.	५४	२३	प.	२२	३१	तै.	२४	१७	८	२०	३१	१७	धनु	५	५३	६	४९	०	६	२८	४०	अगस्त्य अस्त, [थि. मु.-मूल]
३२	२०	६	श.	२५	१९	पू.षा.	५७	५७	शि.	२०	३७	व.	२५	१९	९	२१	मै.१	१८	धनु	५	५२	६	५०	०	७	२७	१०	भ. २५।१९ उ., ५६।४६ या., शक वैशाख प्रारम्भ, A
३२	२५	७	र.	२८	१३	उ.षा.	६०	०	सि.	२०	१२	ब.	२८	१३	१०	२२	२	१९	म.१४।१६	५	५१	६	५०	०	८	२५	३९	[थि. मु.-उ. षा.]
३२	२९	८	चं.	३२	३६	उ.षा.	३	१२	सा.	२०	५९	बा.	०	२५	११	२३	३	२०	मकर	५	५०	६	५१	०	९	२४	५	[थि. मु.-श्र.]
३२	३३	९	मं.	३८	५	श्र.	९	३८	शु.	२२	३९	तै.	५	२०	१२	२४	४	२१	कु.४३।१५	५	४९	६	५२	०	१०	२२	३१	पंचक प्र. ४३।१५, [थि. मु.-धनि.]
३२	३७	१०	बु.	४४	१२	ध.	१६	५३	शु.	२४	५२	व.	११	८	१३	२५	५	२२	कुम्भ	५	४८	६	५२	०	११	२०	५५	भ. ११।८ उ. ४४।१२ या., [थि. मु.-धनि.]
३२	४१	११	गु.	५०	२०	श.	२४	२३	ब्र.	२७	१६	ब.	१७	१६	१४	२६	६	२३	कुम्भ	५	४७	६	५३	०	१२	१९	१७	व. शनि स्वाती ४ में ५।५३, वरूथिनी एकादशी व्र.स., B
३२	४५	१२	शु.	५६	१०	पू.भा.	३१	४२	ऐं.	२९	३०	कौ.	२३	१५	१५	२७	७	२४	मी.१४।५२	५	४६	६	५४	०	१३	१७	३७	सूर्य भर. में २।२६, शुक्र अश्वि. मेष में १।४५,
३२	४९	१३	श.	६०	०	उ.भा.	३८	३१	वै.	३१	२०	ग.	२८	४६	१६	२८	८	२५	मीन	५	४५	६	५४	०	१४	१५	५६	शनि प्रदोष व्र.,
३२	५५	१३	र.	१	२३	रे.	४४	३०	वि.	३२	३३	व.	१	२३	१७	२९	९	२६	मे.४४।३०	५	४४	६	५५	०	१५	१४	१४	भ. १।२३ उ., ३३।३० या., पचंक स. ४४।३०, गुरु वक्री ३२।७
३२	४९	१४	चं.	५	३७	अ.	४९	३४	प्री.	३३	२	श.	५	३७	१८	३०	१०	२७	मेष	५	४३	६	५६	०	१६	१२	३०	बुध पूर्व में उदित २९।१०,
३३	३	३०	मं.	८	५२	भ.	५३	३८	आ.	३२	४५	ना.	८	५२	१९	मई.१	११	२८	मेष	५	४३	६	५६	०	१७	१०	४३	मेला पिंजौर (हरियाणा), मई प्रारम्भ,

A [थि. मु.-उ.षा] B श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती

वैशा. कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५९।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	७	०	८	११	६	१	७
१०	२	७	१९	२६	२०	१४	१४
२१	२९	२२	१६	१७	९	५१	५१
४४	८	१०	४१	१०	२४	४८	४८
५८	१४	४०	१	७३	४	३	३
२७	१४	३५	०	५३	२७	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ४	विशा. ४	अश्वि. ३	पू.षा. २	रेव. ३	विशा. १	रोहि. २	अनु. ४

कु. सूर्योदये

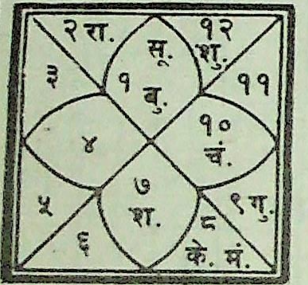

लोक भविष्य–इस मास में पांच मंगलवार एवं पांच सोमवार हैं। अमावस भी मंगलवारी है। अतः यह मास शासक वर्ग के लिए कष्ट चिन्ताप्रद है। मध्य एशिया एवं ईरान आदि में प्रधान वर्ग को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। विशाखा नक्षत्र का मंगल राजनैतिक क्षेत्रों में स्थिति के सुधार की सूचना देता है। लेकिन शनि-मंगल, बुध-शुक्र वक्री हैं अतः स्थायी सुधार संभव नहीं।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में रुई, कपास, चान्दी चावल में मन्दी आए। २० अप्रैल से बाजार का रुख बदलेगा। रुई, सोना, चान्दी, अलसी, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी एवं अनाज में काफी तेजी की आशा है। २६ अप्रैल को रुई, कपास, तिलहन में झटके से तेजी आए। २९ अप्रैल को बाजार का रुख देखकर काम करें। इस समय रुई के व्यापारी भारी तेजी से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

कु. सूर्योदये

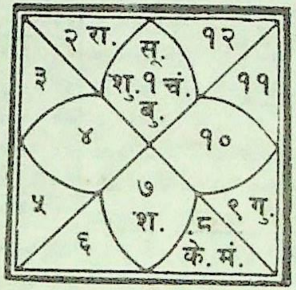

वैशा. कृ. ३० मं. इष्ट ५९।२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	७	०	८	०	६	१	७
१८	०	३	१९	६	१९	१४	१४
८	१७	१०	१९	७	३३	२६	२६
२७	३७	४३	१८	५८	२५	२२	२२
५८	१८	१४	०	७३	४	३	३
१२	५३	२९	३१	५०	३३	११	११
	व.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	विशा. ४	अश्वि. १	पू.षा. २	अश्वि. २	स्वा. ४	रोहि. २	अनु. ४

आकाश लक्षण–इस पक्ष में गर्मी का प्रभाव बढ़ेगा। ता. १६, १७, २६ से ३० अप्रै. तक पश्चिमी लंका, सिक्किम, आसाम आदि में हवा का ज़ोर रहे, कहीं-कहीं वर्षा भी हो।

शकुन विचार–"वैशाखवदी आठ दिना बिजली गर्जन होय। संवतु अच्छा जानिए संशय करो न कोय।।"

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, वैशाख शुक्ल पक्ष ३															तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक				(२ से १५ मई तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., उ. गो., ग्रीष्म ऋतु,
दि. मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श	मु.	संचार	चन्द्रोदय				स्पष्टसूर्य				ग्रह-दर्शन–१३ मई को शुक्र पूर्व में अस्त होगा। प्रातः गुरु को पश्चिम कपाल में तथा बुध को पूर्व में देख सकेंगे। सायं शनि पूर्व में होगा। सर्यास्त समय मंगल उदित होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.					घ. प.	सू. उ. घं.	मि	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	८	१	बु.	११	४	कृ.	५६	३७	सौ.	३१	३६	ब.	११	४	२०	२	१२	२९	वृ.९।२३	५	४२	६	५७	०	१८	८	५६	चन्द्रदर्शन मु. ३०, ब. मंगल तुला में ५५।२०,
३३	१२	२	गु.	१२	९	रो.	५८	३५	शो.	२९	३७	कौ.	१२	९	२१	३	१३	श.१	वृष	५	४१	६	५८	०	१९	७	६	श्री परशुराम जयन्ती (देखें पृष्ठ ५९-६०), शिवाजी जयन्ती, A
३३	१६	३	शु.	१२	११	मृ.	५९	३१	अ.	२६	४९	ग.	१२	११	२२	४	१४	२	मि.२९। ३	५	४०	६	५८	०	२०	५	१४	भ. ४१।४० उ., अक्षय तृतीया, [वि. मु.-मृग.]
३३	१९	४	श.	११	९	आ.	५९	२१	सु.	२३	१०	वि.	११	९	२३	५	१५	३	मिथुन	५	३९	६	५९	०	२१	३	२१	भ. ११।९ या., बुध मार्गी ९।४२
३३	२२	५	र.	९	१	पुन.	५८	१२	धृ.	१८	३९	बा.	९	१	२४	६	१६	४	क.४३।३०	५	३८	७	०	०	२२	१	२५	आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती,
३३	२६	६	चं.	५	५३	पु.	५६	०३	शू.	१३	२०	तै.	५	५३	२५	७	१७	५	कर्क	५	३८	७	०	०	२२	५९	२७	शुक्र भर. में ५०।५५, व. वेंकटेश (प्लूटो) चित्रा ४ में, श्री गंगा B
३३	३०	७	मं.	१	४५	आश्ले.	५२	५६	गं.	०७	१३	व.	१	४५	२६	८	१८	६	सि.५२।५६	५	३७	७	१	०	२३	५७	२८	भ. १।४५ उ., २९।१४ या., [वि. मु.-मघा]
क्षय		८	मं.	५६	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षयः,
३३	३४	९	बु.	५०	४५	म.	४९	०३	वृ.	० / ५२	१९ / ५३	बा.	२३	४३	२७	९	१९	७	सिंह	५	३६	७	२	०	२४	५५	२६	श्री जानकी जयन्ती, [वि..मु.-मघा] शुक्र अस्त (१३ मई)
३३	३८	१०	गु.	४४	१६	पू.फा.	४४	३२	व्या.	४४	४६	तै.	१७	३०	२८	१०	२०	८	क.५८।१७	५	३५	७	२	०	२५	५३	२३	सूर्य कृत्ति. में ४८।१८, शुक्र वार्धक्य प्रा १८।०,
३३	४२	११	शु.	३७	१९	उ.फा.	३९	३४	ह.	३६	२३	व.	१०	४७	२९	११	२१	९	कन्या	५	३५	७	३	०	२६	५१	१८	भ. १०।४७ उ., ३७।१९ या., मोहिनी एकादशी व्र.स.,
३३	४५	१२	श.	३०	१४	ह.	३४	२८	व.	२७	५२	ब.	३	४६	३०	१२	२२	१०	कन्या	५	३४	७	४	०	२७	४९	११	शनि प्रदोष व्र.,
३३	४८	१३	र.	२३	१९	चि.	२९	३४	सि.	१९	३०	तै.	२३	१९	३१	१३	२३	११	तु.२१	५	३३	७	४	०	२८	४७	३	शुक्र पूर्व में अस्त १८।०, श्रीनृसिंह जयन्ती
३३	५१	१४	चं.	१६	५०	स्वा.	२५	८	व्य.	११	२८	व.	१६	५०	ज्ये.१	१४	२४	१२	तुला	५	३३	७	५	०	२९	४४	५३	भ. १६।५० उ., ४३।५९ या., सं. सूर्य वृष में १५।४०, C
३३	५४	१५	मं.	११	७	वि.	२१	३१	व.	५ / ४०	२ / ३३	ब.	११	७	२	१५	२५	१३	वृ.७।२५	५	३२	७	६	१	०	४२	४२	श्री बुद्धजयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त,

A शाबान मु. प्रा., B जन्म, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, C मु. १५, पण्य ३१।४० तक, श्रीकूर्म जयन्ती, सत्यव्र.

वैशा. शु. ७ मं., इष्ट ५९।४३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० २४ ५५ १२	६ २७ ५६ ५५	० ३ ७ ५०	८ १९ ११ ४३	० १४ ४४ ३३	६ १९ १ ४३	१ १४ ४ ६	७ १४ ४ ६
५७ ५८	२१ १५	१८ १०	१ ४९	७३ ४६	३ २९	३ ११	३ ११
	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

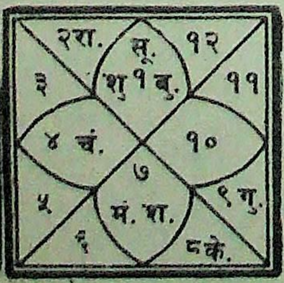

लोक [illegible]–इस पक्ष में मंगल वक्री होकर तुला राशि में स्थित शनि के साथ योग करने जा रहा है, "पृथवी शनि-माहेयौ"। मुस्लिम देशों में अशान्ति, संघर्ष एवं कहीं प्रधान शासक के विरुद्ध आवाज उठे। पश्चिमी प्रान्त एवं पश्चिमी देशों में कहीं अग्नि एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। इस पक्ष में यान-दुर्घटना आदि से जनधन हानि के भी समाचार मिलेंगे। इस पक्ष में शुक्रास्त भारत के लिए नई योजनाओं एवं राजनैतिक-दृष्टि से प्रगतिप्रद है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में मूंग, मोठ, उड़द, सरसों, तोरिया, तिल, तेल, घी, रुई, कपास, मूंगफली, गुड़, खाण्ड में विशेष तेजी का योग है। ५ और १३ मई को बाजार का रुख देखकर काम करें।

कु. सूर्योदये

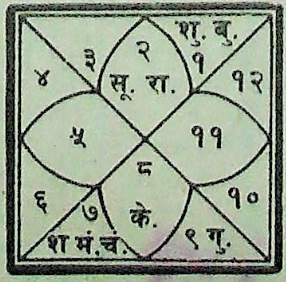

आकाश लक्षण–६ से १४ मई तक भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, आसाम, बंगाल और बिहार में साधारण वर्षा के योग हैं। पश्चात् में महाराष्ट्र के समुद्री भागों के समीप वर्षा प्रारम्भ हो जाएगी।

शकुन विचार–वैशाख शुक्ल पंचमी के दिन सन्ध्या के समय यदि पूर्व की वायु चले एवं आकाश में बादल गरजें तो भाद्रपद में धान्य तेज हो।

वैशा. शु. १५ मं., इष्ट ५९।५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ १ ४० २६	६ २५ २६ १	० ६ ४३ १९	८ १८ ५५ ६	० २३ २० ४४	६ १८ ३० ४२	१ १३ ४१ ५१	७ १३ ४१ ५१
५७ ४८	२१ ३४	४६ २३	३ ५	७३ ४४	४ २०	३ ११	३ ११
	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. २	विशा. २	अश्वि. ३	पू.षा. २	भर. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. वैशा.	मु. शाबा.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	५७	१	बु.	६	३१	अनु.	१९	६	शि.	५२	२	कौ.	६	३१	३	१६	२६	१४	वृश्चिक	५	३१	७	६	१	१	४०	२९
३४	०	२	गु.	३	१८	ज्ये.	१८	४	सि.	४७	४९	ग.	३	१८	४	१७	२७	१५	ध.१८।४	५	३१	७	७	१	२	३८	१५
३४	३	३	शु.	१	३८	मू.	१८	३९	सा.	४४	५९	वि.	१	३८	५	१८	२८	१६	धनु	५	३०	७	८	१	३	३५	५९
३४	६	४	श.	१	४५	पूषा.	२०	५९	शु.	४३	३३	बा.	१	४५	६	१९	२९	१७	म.३६।५९	५	३०	७	८	१	४	३३	४३
३४	९	५	र.	३	३७	उ.षा.	२४	५८	शु.	४३	२२	तै.	३	३७	७	२०	३०	१८	मकर	५	२९	७	९	१	५	३१	२७
३४	१२	६	चं.	७	२	श्र.	३०	२५	ब्र.	४४	२०	व.	७	२	८	२१	३१	१९	मकर	५	२९	७	१०	१	६	२९	८
३४	१५	७	मं.	११	४७	ध.	३७	०	ऐं.	४६	७	ब.	११	४७	९	२२	ज्ये.१	२०	कुं.३।४३	५	२८	७	१०	१	७	२६	४८
३४	१८	८	बु.	१७	२३	श.	४४	१२	वै.	४८	२०	कौ.	१७	२३	१०	२३	२	२१	कुम्भ	५	२८	७	११	१	८	२४	२९
३४	२१	९	गु.	२३	१९	पू.भा.	५१	३२	वि.	५०	३८	ग.	२३	१९	११	२४	३	२२	मी.३४।४२	५	२७	७	११	१	९	२२	८
३४	२४	१०	शु.	२९	६	उ.भा.	५८	३०	प्री.	५२	३९	वि.	२९	६	१२	२५	४	२३	मीन	५	२७	७	१२	१	१०	१९	४५
३४	२६	११	श.	३४	११	रे.	६०	०	आ.	५४	०	ब.	१	३८	१३	२६	५	२४	मीन	५	२६	७	१३	१	११	१७	२३
३४	२८	१२	र.	३८	१२	रे.	४	३७	सौ.	५४	३०	कौ.	६	१२	१४	२७	६	२५	मे ४।३७	५	२६	७	१३	१	१२	१४	५८
३४	३०	१३	च.	४०	५८	अ.	९	३७	सौ.	५३	५९	ग.	९	३५	१५	२८	७	२६	मेष	५	२६	७	१४	१	१३	१२	३२
३४	३३	१४	मं.	४२	१८	भ.	१३	१७	अ.	५२	२०	वि.	११	३८	१६	२९	८	२७	वृ.२८।५१	५	२५	७	१४	१	१४	१०	८
३४	३५	३०	बु.	४२	१६	कृ.	१५	३४	सु.	४९	३७	च.	१२	१७	१७	३०	९	२८	वृष	५	२५	७	१५	१	१५	७	४०

उदय-कालिक · भा. स्टैं. टा.

(१६ से ३० मई तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., उ. गो., ग्रीष्म ऋतु,

ग्रह-दर्शन:–शुक्र अस्त है। प्रातः गुरु को पश्चिम कपाल में तथा बुध को पूर्व में देखा जा सकेगा। सायं शनि एवं मंगल पूर्व में होंगे।

- भ. २३:२८ उ.,
- भ. ११३८ या., शुक्र कृत्ति. में ४२।१०, श्री गणेश ४ व्र.,
- सूर्य सायन मिथुन में ५२।३०,
- भ. ७।२ उ., ३९।२५ या. शुक्र वृष में २५।०
- पंचक प्रा. ३।४३, राहू रोहि. १ में केतु अनु. ३ में ५२।२५, A
- बुध भर. में ११४५, A शाक ज्येष्ठ प्रा.,
- घ. ५६।१२ उ., सूर्य रोहि. में ३९।२५,
- भ. २९।६ या.,
- अपरा एकादशी व्र.स., श्री भद्रकाली एकादशी (पंजाब)
- पंचक स ४।३७
- भ. ४०।५८ उ., सोमप्रदोष व्र.,
- भ. ११।३८ या., शुक्ररोहि में ३३।३०,
- भावुका अमावस, वटसावित्री व्र.,

ज्येष्ठ कृ. ८ बुध, इष्ट ०।६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	०	८	१	६	१	७
८	२२	१३	१८	१	१८	१३	१३
२८	५९	१८	३९	५६	१	१९	१९
३२	३४	४	५०	४७	६	३६	३६
५७	१९	६८	४	७३	४	३	३
३९	६०	५०	१७	४३	४	११	११
	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ४	विशा. १	अश्वि. ४	पू.षा. २	कृत्ति. २	स्वा. ४	रोहि. १	अनु. ३

कु. सूर्योदये

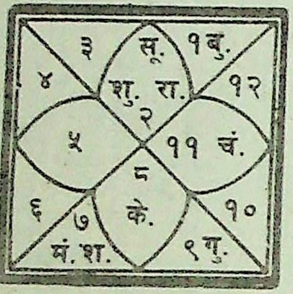

लोक भविष्य–दक्षिण-पूर्व में अशान्ति एवं दुर्भिक्ष का भय बने। स्वाती नक्षत्र का शनि विदेशस्थ भारतीय-राजदूतों के समक्ष समस्याएं उपस्थित करेंगे। भारत को सरहदी प्रान्तों पर सतर्क रहना होगा। चीन-पाक की कुनीति कहीं शान्ति भंग का कारण बनेगी। २८ मई को सू. राहु-युति है। अतः शीघ्र ही कहीं राजनैतिक-विरलव से प्रधान नेता को कठिन स्थिति का सामना करना पड़ेगा, या पद रिक्त होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२१ मई को व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहेगा। विशेषतः रुई, कपास, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहती है। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, चावल आदि में तेजी रहेगी।

कु. सूर्योदये

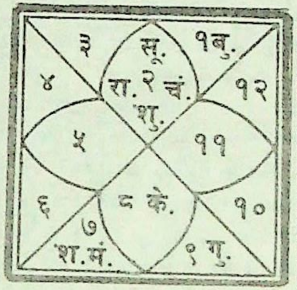

ज्येष्ठ कृ. ३० बुध, इष्ट ०।१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	०	८	१	६	१	७
१५	२०	२२	१७	१०	१७	१२	१२
७	५२	१८	५६	३२	३३	५७	५७
५२	९	८	३२	४९	३८	२०	२०
५७	१५	८५	५	७३	३	३	३
३२	५४	५०	२२	४१	४३	११	११
	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	विशा. १	भर. ३	पू.षा. २	रोहि. १	स्वा. ४	रोहि. १	अनु. ३

आकाश लक्षण–इस पक्ष में बम्बई के समीपवर्ती क्षेत्रों में अच्छी वर्षा के योग हैं। वर्मा, मद्रास, मैसूर तथा हिमाचल प्रदेश के भी कुछ भागों में वर्षा हो। पंजाब, उ. प्र. के अधिक भागों में तापमान बढ़ेगा एवं कुछ क्षेत्रों में खण्डवृष्टि हो।

शकुन विचार–ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को यदि दक्षिण की वायु चले तो घी, तिल, तेल खरीदें, आगे आश्विन में लाभ होगा। यदि दक्षिण दिशा में ज्येष्ठ में मेघ गरजें तो तेलबीया के स्टाक से चार मास में लाभ हो।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५													तारीखें				चन्द्र	मा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक			
दि. मा.		तिथि				नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श	मु.	संचार	चण्डीगढ				स्पष्टसूर्य			
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.					घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३४	३७	१	गु.	४०	४५	रो.	१६	३३	धृ.	४५	५३	कि	११	३५	१८	३१	१०	२९	मि.४६।२६	५	२५	७	१५	१	१६	५	१२
३४	४०	२	शु.	३८	२६	मृ.	१६	१९	शू.	४१	१५	बा.	९	४०	१९	जू.१	११	३०	मिथुन	५	२५	७	१६	१	१७	२	४३
३४	४२	३	श.	३५	०	आ.	१५	६	गं.	३५	५१	तै.	६	४३	२०	२	१२	र.१	क.५८।३२	५	२४	७	१७	१	१८	०	१२
३४	४३	४	र.	३०	४४	पुन.	१३	०	वृ.	२९	४७	व.	२	५२	२१	३	१३	२	कर्क	५	२४	७	१७	१	१८	५७	४०
३४	४५	५	चं.	२५	५१	पु.	१०	१३	ध्रु.	२३	१२	बा.	२५	५१	२२	४	१४	३	कर्क	५	२४	७	१८	१	१९	५५	८
३४	४७	६	मं.	२०	३२	आश्ले.	६	५७	व्या.	१६	१६	तै.	२०	३२	२३	५	१५	४	सि.६।५७	५	२४	७	१८	१	२०	५२	२३
३४	४९	७	बु.	१४	५४	म.	३ / ४५	२१ / ३७	ह.	९	५	व.	१४	५४	२४	६	१६	५	सिंह	५	२४	७	१९	१	२१	४९	५८
३४	५०	८	गु.	९	६	उ.फा.	५५	४४	व.	१ / ५४	४३ / २४	ब.	९	६	२५	७	१७	६	क.१३।३९	५	२४	७	१९	१	२२	४७	२१
३४	५२	९	शु.	३	१९	ह.	५२	२	व्य.	४७	७	कौ.	३	१९	२६	८	१८	७	कन्या	५	२३	७	१९	१	२३	४४	४४
अवम		१०	शु.	५७	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५३	११	श.	५२	१७	चि.	४८	३५	व.	४०	३	व.	२५	०	२७	९	१९	८	तु.२०।१९	५	२३	७	२०	९	२४	४२	५
३४	५४	१२	र.	४७	२२	स्वा.	४५	३५	प.	३३	२०	ब.	१९	४९	२८	१०	२०	९	तुला	५	२३	७	२०	१	२५	३९	२९
३४	५५	१३	चं.	४३	४	वि.	४३	१३	शि.	२७	७	कौ	१५	१३	२९	११	२१	१०	वृ.२८।४८	५	२३	७	२१	१	२६	३६	४६
३६	५६	१४	मं.	३९	३३	अनु.	४१	३८	सि.	२१	२९	ग.	११	१८	३०	१२	२२	११	वृश्चिक	५	२३	७	२१	१	२७	३४	५
३४	५७	१५	बु.	३७	३	ज्ये.	४१	३	सा.	१६	३६	वि.	८	१८	३१	१३	२३	१२	ध.४१।३	५	२३	७	२२	१	२८	३१	२२

(३१ मई से १३ जून तक, सन् '८४ ई.), उ. अ., उ. गो., ग्रीष्म ऋतु,

ग्रह-दर्शनः—शुक्र अस्त है। बुध १२ जून को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः गुरु को पश्चिम-कपाल में एवं सायं शनि-मंगल को पूर्व में देखा जा सकेगा।

करवीर व्रत,
चन्द्रदर्शन मु. १५, बुध कृत्तिका में ५४।१०, जून प्र.,
रमजान मु. प्रा., व. मंगल स्वाती ४ में २८।१५, रम्भाव्रत, A
भ. २।५२ उ., ३०।४४ या., बुध वृष में ५८।२५, उमापूजन B
भ.१४।५४ उ. ४२।० या.
सूर्य मृग. में ३४।७,
श्रीगंगा दशहरा,
दशमीतिथिक्षय,
भ. २५।० उ., ५२।१७ या., बुध रोहि में ३६।५८, शुक्र मृग. C
निर्जला एकादशी व्र. वै.,
बुध पूर्व में अस्त ५८।१७, व. गुरु पू. षा. १ में ३४।०, D
भ. ३९।३३ उ., व. नेपच्यून मूल २ में,
भ. ८।१८ या., श्री सत्य व्र.,

A प्रताप जयंती (राजस्थान), B बलिदान दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, C में २४।५५, निर्जला एकादशी व्र. स्मा., D सोम प्रदोष व्रत,

ज्येष्ठ शु. ८ गुरु, इष्ट ०।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २२ ४७ ३६	६ १९ ४ ५३	१ ५ १२ १८	८ १७ ९ ५७	१ २० २२ २४	६ १७ ५ ४४	१ १२ ३१ ५४	७ १२ ३१ ५४
५६ २४	१० ०	१०७ ७	९ २२	७३ ४२	३ ११	३ ११	३ ११
	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

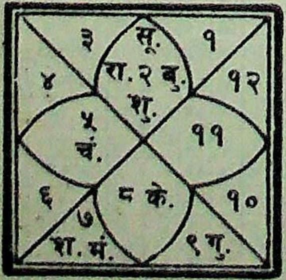

लोक भविष्य—३१ मई को शुक्र-राहु एवं ११ जून को बुध-राहु की युति हो रही है, तथा बुध अतिचारी है। "महां शुभ ग्रहः कश्चिदतिचारं करोति । तदानृपाः क्षायंयान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ।।" शासकों में अशान्ति बढ़े, सीमा प्रान्तों पर हलचल रहे, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। कहीं विशेष राजनीतिज्ञ का पद रिक्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—इस पक्ष में अनाजों, तिल, तेल आदि में तेजी रहेगी। ११ जून के लगभग रुई, धातुओं में मन्दा बने, अनाजों, अलसी, घी में मन्दी आए। कपास और घी के स्टाक से मार्गशीर्ष में दो गुणा लाभ हो।

कु. सूर्योदये

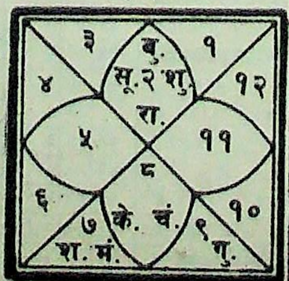

ज्येष्ठ शु. १५ बुध, इष्ट ०।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २८ ३१ ३८	६ १८ १७ १२	१ १६ ३६ ३५	८ १६ ३० ९	१ २७ ४४ ३१	६ १६ ४७ ४५	१ १२ १२ ४९	७ १२ १२ ४९
५७ १८	५ ६	१२१ ५४	६ ५८	७३ ४२	२ ४४	३ ११	३ ११
	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में २ से १० जून तक सिक्किम, शिलांग, भूटान, बम्बई, पंजाब, म. प्र. में वर्षा के योग हैं। लेकिन कुछ स्थानों पर गर्मी का प्रकोप रहे, तथा कुछ क्षेत्रों में वर्षा से हानि किंवा कुछ प्रान्तों में सूखा से हानि भी हो।

शकुन विचार—यदि ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को बादल गरजें, दक्षिण की वायु चले तो तिल तेल का स्टाक करने से कार्तिक में लाभ हो।

श्री वि. स. २०४१, शाक १९०६, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६															तारीखें				चन्द्र	मा. स्टैं. टां.				उदय-कालिक				(१४ से २९ जून तक, सन् ८४ ई.) उ. द. अ., उ. गो., ग्रीष्म-वर्षर्तु,)
दि. मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श	मु.	संचार	चण्डीयन्त्र				स्पष्टसूर्य				ग्रह दर्शनः—बुध-शुक्र अस्त हैं। प्रातः गुरु को पश्चिम में तथा सायं शनि-मंगल को पूर्वकपाल में देख सकेंगे।
घ.	प.			घं.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषा.	जून	ज्येष्ठ	जून	घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५९	१	गु.	३५	४६	मू.	४१	४०	शु.	१२	३९	बा.	६	२५	१	१४	२४	१३	धनु	५	२३	७	२२	१	२९	२८	४१	सं. सूर्य मिथुन में ३२।५०, मु. ३०, पुण्य १६।५० उ., शुक्र A
३५	०	२	शु.	३५	४७	पू.षा.	४३	३५	शु.	९	४४	तै.	५	४७	२	१५	२५	१४	म.५९।२५	५	२३	७	२२	२	०	२५	५८	वं. शनि स्वाती ३ में ५५।३५,
३५	१	३	श.	३७	१४	उ.षा.	४६	५६	ब्र.	७	५४	व.	६	३०	३	१६	२६	१५	मकर	५	२४	७	२३	२	१	२३	१४	भ. ६।३० उ., ३७।१४ या., बुध मृग. में १५।२५, श्रीगणेश B
३५	१	४	र.	४०	९	श्र.	५१	४०	ऐं.	७	१४	ब.	८	४१	४	१७	२७	१६	मकर	५	२४	७	२३	२	२	२०	३१	
३५	१	५	चं.	४४	१८	ध.	५७	३४	वै.	७	३७	कौ.	१२	१३	५	१८	२८	१७	कुं.२४।३७	५	२४	७	२३	२	३	१७	४८	पंचक प्रा. २४।३७,
३५	१	६	मं.	४९	३०	श.	६०	०	वि.	८	५५	ग.	१६	५४	६	१९	२९	१८	कुम्भ	५	२४	७	२३	२	४	१५	२	भ. ४९।३० उ., मंगल मार्गी २०।१५, बुध मिथुन में २१।४०,
३५	१	७	बु.	५५	१७	श.	४	२४	प्री.	१०	५४	विं.	२२	२४	७	२०	३०	१९	मी.५४।५२	५	२४	७	२४	२	५	१२	१९	भ. २२।२४ या., शुक्र आर्द्रा में १६।१२,
३५	१	८	गु.	६०	०	पू.भा.	११	४१	आ.	१३	११	बा.	२८	११	८	२१	३१	२०	मीन	५	२४	७	२४	२	६	९	३५	सूर्य आर्द्रा में ३१।५३, सूर्य सायन-कर्क में १२।५७, दक्षिणायन C
३५	१	८	शु.	१	५	उ.भा.	१८	५२	सौ.	१५	२४	कौ.	१	५	९	२२	आ१	२१	मीन	५	२५	७	२४	२	७	६	४९	बुध आर्द्रा में २४।३०, शक आषाढ़ प्रा.
३५	१	९	श.	६	२६	रे.	२५	२८	शो.	१७	१०	ग.	६	२६	१०	२३	२	२२	मे.२५।२८	५	२५	७	२४	२	८	४	५	भ. ३८।३५ उ., पंचक स. २५।२८,
३५	१	१०	र.	१०	४५	अ.	३०	५६	अति.	१८	४	वि.	१०	४५	११	२४	३	२३	मेष	५	२५	७	२५	२	९	१	२०	भ. १०।४५ या.,
३५	०	११	चं.	१३	३८	भ.	३४	५६	सु.	१७	५०	बा.	१३	३८	१२	२५	४	२४	वृ.५०।३१	५	२५	७	२५	२	९	५८	३५	योगिनी एकादशी व्र.स.,
३५	०	१२	मं.	१४	५३	कृ.	३७	१७	धृ.	१६	१९	तै.	१४	५३	१३	२६	५	२५	वृष	५	२६	७	२५	२	१०	५५	५१	भौम प्रदोष व्र.,
३५	०	१३	बु.	१४	२२	रो.	३७	५४	शू.	१३	२५	व.	१४	२२	१४	२७	६	२६	वृष	५	२६	७	२५	२	११	५३	५	भ. १४।२२ उ., ४३।१६ या,
३५	०	१४	गु.	१२	९	मृ.	३६	५६	गं.	९	८	श.	१२	९	१५	२८	७	२७	मि.७।२५	५	२६	७	२५	२	१२	५०	१९	बुध पुन. में ३४।२३
३४	५९	३०	शु.	८	३०	आ.	३४	३७	वृ.	३ ५०।१७	४१	ना.	८	३०	१६	२९	८	२८	मिथुन	५	२७	७	२५	२	१३	४७	३५	

A मिथुन में ५०।३५, B चतुर्थी व्र., C वर्षाऋतु प्रा.

आषा. कृ. ८ गुरु, इष्ट ०।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ ६ ९ ४८	६ १७ ५९ ४३	२ ३ ३५ १२	८ १५ ३२ २०	२ ७ ३४ ८	६ १६ २८ १३	१ ११ ४७ २३	७ ११ ४७ २३
५७ १४	१ ३०	१२३१ २९	७ ३०	७३ ४२	२ ४	३ ११	३ ११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मू. ४	श्ले. ४	मृग. ४	पू.भा. १	आर्द्रा १	स्वा. ३	रोहि. १	अनु. ३

कु. सूर्योदये

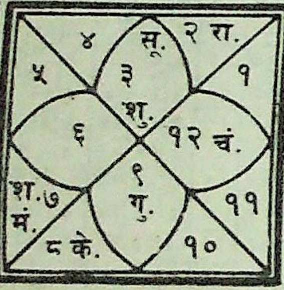

लोक भविष्य–इस पक्ष में बुध अतिचारी है, मंगल अश्रुमुख अवस्था में मार्गी हुआ है। संक्रामक रोगों में वृद्धि हो, कहीं अनावृष्टि किंवा अन्य प्राकृतिक प्रकोप से जनता को कष्ट हो, प्रधान शासकों को राजनैतिक-समस्याओं में उलझना पड़ेगा। पश्चिमी देशों में अशान्त वातावरण रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१५ जून तक रेशम, सूत, कपास, रुई एवं तेल, घी, तिलहन में तेजी के बाद अचानक मन्दी आएगी। गेहूं, चना, जौ, चावलों में तेजी हो। १७ जून के लगभग रुई, कपास तिलहन में झटके के साथ भारी तेजी का योग है।

आकाश लक्षण–ता. १५ से २० जून तथा विशेष रूप से २१ से २७ जून तक महाराष्ट्र, हि. प्र., पंजाब आदि प्रान्तों में वर्षा के योग हैं शनि एवं मंगल का तुला राशि में होना कुछ स्थानों पर वर्षा की भारी कमी एवं कहीं अतिवृष्टि से हानि का सूचक है।

कु. सूर्योदये

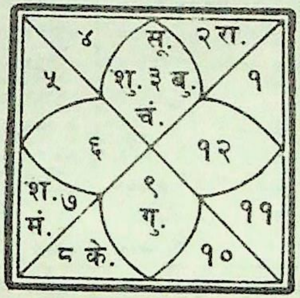

आषा. कृ. ३० शुक्र, इष्ट ०।८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ १३ ४७ ४३	६ १८ ३३ ३१	२ २० ५४ २७	८ १४ ३१ २४	२ १७ २४ १	६ १६ १४ १५	१ ११ २१ ५७	७ ११ २१ ५७
५७ १३	७ ३९	१२५ १२	७ ४१	७३ ४५	१ १९	३ ११	३ ११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	श्ले. ४	पुन. १	पू.भा. १	आर्द्रा ४	स्वा. ३	रोहि. १	अनु. ३

शाकुन विचार–आषाढ़ मास में पश्चिम की हवा चले तो वर्षा अच्छी हो। वायव्य कोण की हवा चले तो हवा आँधी के साथ वर्षा हो। उत्तर की वायु भी वर्षा करती है। ईशान कोण की वायु भी सुभिक्ष प्रद होती

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७															तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक				(३० जून से १३ जु. तक, सन् १९८४ ई.), द अ., उ. गो., वर्षा ऋतु
वि. मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श.	मु.	संचार	चण्डीगढ़				स्पष्टसूर्य				ग्रह दर्शनः—शुक्र अस्त है, बुध ४ जुलाई को पश्चिम में उदित होगा। सायं गुरु पूर्व में एवं मंगल, शनि पूर्वक कपाल में होंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जून	आषाढ़	रम.	घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	श.	३	३६	पुन.	३१	११	व्या.	४९	५५	बा.	३	३६	१७	३०	९	२९	क.१७।२	५	२७	७	२५	२	१४	४४	४९	चन्द्रदर्शन मु. ३०, श्री जगदीश रथोत्सव,
अवम		२	श.	५७	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	५७	३	र.	५१	२१	पु.	२७	०	ह.	४२	७	तै.	२४	३४	१८	जु.१	१०	श१	कर्क	५	२७	७	२५	२	१५	४२	२	शुक्र पुन. में ७।०, शवाल मु. प्रा. जुलाई प्र.,
३४	५६	४	चं.	४४	४०	आश्ले.	२२	२४	व.	३४	३	व.	१८	०	१९	२	११	२	सि.२२।२४	५	२८	७	२५	२	१६	३९	१६	भ. १८।० उ.,४४।४० या.,
३४	५५	५	मं.	३७	५७	मं.	१७	४१	सि.	२५	५४	ब.	११	१८	२०	३	१२	३	सिंह	५	२८	७	२५	२	१७	३६	३०	बुध कर्क में २७।५५,
३४	५४	६	बु.	३१	३०	पू.फा.	१३	७	व्य.	१७	५६	कौ.	४	४३	२१	४	१३	४	क.२७।५	५	२९	७	२५	२	१८	३३	४३	बुध पश्चिम में उदित ३०।२,
३४	५३	७	गु.	२५	३२	उ.फा.	८	५९	व.	१०	२०	व.	२५	३२	२२	५	१४	५	कन्या	५	२९	७	२५	२	१९	३०	५६	भ. २५।३२ उ., ५२।५१ या. सूर्य पुनः में ३०।३० बुध पुष्य A
३४	५२	८	शु.	२०	१०	ह.	५	२६	प.	३ / ५६	१३ / ४१	व.	२०	१०	२३	६	१५	६	तु.३३।५९		२९	७	२५	२	२०	२८	८	
३४	५०	९	श.	१५	३१	चि.	२	३२	सि.	५०	४४	कौ.	१५	३१	२४	७	१६	७	तुला	५	३०	७	२४	२	२१	२५	२१	मंगल विशा. में २४।२३,
३४	४८	१०	र.	११	४१	स्वा.	० / ५९	२८ / ११	सा.	४५	३०	ग.	११	४१	२५	८	१७	८	वृ ४४।३२	५	३०	७	२४	२	२२	२२	३३	भ. ४०।११ उ., व. गुरु मूल ४ में २१।६,
३४	४६	११	चं.	८	४१	अनु.	५८	४७	शु.	४०	५५	वि.	८	४१	२६	९	१८	९	वृश्चिक	५	३१	७	२४	२	२३	१९	४५	भ. ८।४१ या. शुक्र कर्क में १४।५५, हरिशयनी एकादशी व्र. B
३४	४४	१२	मं.	६	३१	ज्ये.	५९	१७	शु.	३७	४	बा.	६	३१	२७	१०	१९	१०	ध.५९।१७	५	३१	७	२४	२	२४	१६	५८	वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी, भौम प्रदोष व्रत,
[illegible]	४२	१३	बु.	५	१८	मू.	६०	०	ब्र.	३३	५९	तै.	५	१८	२८	११	२०	११	धनु.	५	३२	७	२४	२	२५	१४	११	शुक्र पुष्य में ५७।३२
३४	४०	१४	गु.	५	३	मू.	०	४२	ऐं.	३१	३९	व.	५	३	२९	१२	२१	१२	धनु	५	३२	७	२३	२	२६	११	२३	भ. ५।३ उ.,३५।२५ या., बुध आश्ले में ३६।२५, सत्य C
३४	३८	१५	शु.	५	४६	पू.षा.	३	५	वै.	३०	१०	ब.	५	४६	३०	१३	२२	१३	म.१९।०	५	३३	७	२३	२	२७	८	३६	शनि मार्गी ३९।५२, सन्यासियों का चातुर्मास्य व्रत D

A में १०।४२, B चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा., C व्र., गुरु पूर्णिमा (देखें पृष्ठ ५९-६०), गुरुव्यास पूजा, शिवशयनोत्सव कोकिला व्रत, सायं वायु परीक्षा, D नियम प्रारम्भ

आषा. शु. ८ शुक्र, इष्ट ०।२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	६	३	८	२	६	१	७
२०	१९	४	१३	२६	१६	१०	१०
२८	४२	५४	३७	०	६	५९	५९
१०	६	३	४५	२०	५७	४१	४१
५७	१२	११२	७	७३	०	३	३
२	३३	२५	३४	४६	४०	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क. सूर्योदये

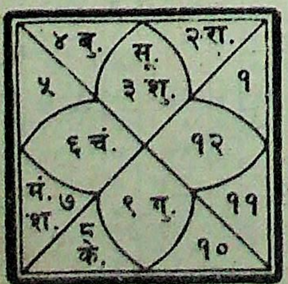

लोक भविष्य—पुनर्वसु का शुक्र अफ्रीका, ईरान-ईराक, भारत के बंगाल एवं पश्चिमी प्रान्तों में अशान्ति का सूचक है। परन्तु मंगल का विशाखा में होना शान्ति एवं सन्धि वार्ताओं की ओर प्रेरित करता है। बार्हस्पत्य वर्ष आषाढ़ है। गुरु मूल में चल रहा है। अतः कहीं खड़ी फसल को हानि व कहीं वर्षा का अभाव रहे। आन्तरिक राजनैतिक उलझनों से प्रधान शासक चिन्तित रहें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख— ३ जुला. को रुई में मन्दी एवं चान्दी में तेजी का रुख रहेगा। ९ जुलाई से अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, शक्कर में तेजी आएगी। १३ जुलाई को बाजारों में विशेष उतार-चढ़ाव आएंगे, बाजार का रुख देखकर ही काम करने का सुझाव है।

आकाश लक्षण— ६ से.१० जुलाई तक तथा १३, १४ जुलाई को पंजाब, हि. प्र., महाराष्ट्र, उ. प्र. में वर्षा के योग हैं। कहीं जल प्लाव से हानि हो, तो कहीं सूखा पड़े।

शकुन विचार—आषाढ़ में पूर्व की वायु चले तो वर्षा से सुख हो। अग्निकोण की वायु हो तो, अग्नि भय व गर्मी का प्रकोप हो। नैर्ऋत्यकोण की वायु अन्न का नाश करती है। आषा. शु. १५ को वायु-परीक्षा करे।

क. सूर्योदये

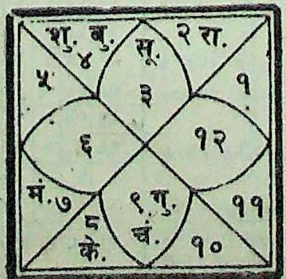

आषा. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५९।५३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
२	६	३	८	३	६	१	७
२८	२१	१८	१२	५	१६	१०	१०
५	४०	५७	३८	५०	४	३४	३४
४१	८	५४	३३	२९	२३	१५	१५
५७	१७	९९	७	७३	०	३	३
१२	२८	३४	७	५६	८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	विशा. १	आश्ले. १	पुष्य ४	पुष्य १	[illegible]	रोहि. १	[illegible]

श्री वि. स. २०४१, शाक १९०६, **श्रावण कृष्ण पक्ष ८**

(१४ से २८ जु. तक, सन् १९८४ ई.), द. अ., उ. गो., **वर्षा ऋतु,**

दि. मा. ध.	दि. मा. प.	तिथि	वार	ध.	प.	नक्षत्र	ध.	प.	योग	ध.	प.	करण	ध.	प.	तारीखें प्र. (आषा.)	अं. (जुलाई)	श. (आषा.)	मु. (शाबा.)	चन्द्र संचार ध. प.	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	३६	१	श.	७	३८	उ.षा.	६	३५	वि.	२९	३४	कौ.	७	३८	३१	१४	२३	१४	मकर.	५	३३	७	२३	२	२८	५	४९
३४	३४	२	र.	१०	३६	श्र.	११	११	प्री.	२९	५०	त.	१०	३८	श्रा.१	१५	२४	१५	कुं.४४।०	५	३४	७	२२	२	२९	३	३
३४	३२	३	चं.	१४	४१	ध.	१६	४९	आ.	३०	५५	वि.	१४	४१	२	१६	२५	१६	कुम्भ	५	३५	७	२२	३	०	०	१७
३४	३०	४	मं.	१९	४४	श.	२३	२३	सौ.	३२	४२	बा.	१९	४४	३	१७	२६	१७	कुम्भ	५	३५	७	२२	३	०	५७	३१
३४	२७	५	बु.	२५	२६	पू.भा.	३०	३४	शो.	३४	५७	तै.	२५	२६	४	१८	२७	१८	मी.१३।४६	५	३६	७	२१	३	१	५४	४७
३४	२५	६	गु.	३१	२६	उ.भा.	३८	१	अति	३७	२२	व.	३१	२७	५	१९	२८	१९	मीन	५	३६	७	२१	३	२	५२	४
३४	२२	७	शु.	३७	१२	रे.	४५	९	सु.	२९	३३	वि.	४	२०	६	२०	२९	२०	मे.४५।९	५	३७	७	२१	३	३	४९	१९
३४	२०	८	श.	४२	१०	अ.	५१	२९	धृ.	४१	७	बा.	९	४१	७	२१	३०	२१	मेष	५	३७	७	२०	३	४	४६	३८
३४	१७	९	र.	४५	५०	भ.	५६	२९	शू.	४१	४१	तै.	१४	०	८	२२	३१	२२	मेष	५	३८	७	२०	३	५	४२	५७
३४	१४	१०	चं.	४७	४४	कृ.	५९	४२	गं.	४०	५४	व.	१६	४७	९	२३	श्रा.१	२३	वृ.१२।१७	५	३९	७	१९	३	६	४०	१५
३४	११	११	मं.	४७	४२	रो.	६०	०	वृ.	३८	३५	ब.	१७	४३	१०	२४	२	२४	वृष	५	३९	७	१८	३	७	३८	३५
३४	८	१२	बु.	४५	३९	रो.	०	५९	ध्रु.	३४	४१	कौ.	१६	४०	११	२५	३	२५	मि.३०।३९	५	४०	७	१८	३	८	३५	५७
३४	६	१३	गु.	४१	४०	मृ.	० / ५८	१९ / ४०	व्या.	२९	११	ग.	१३	४०	१२	२६	४	२६	मिथुन	५	४०	७	१७	३	९	३३	१७
३४	३	१४	शु.	३६	५	पुन.	५३	४६	ह.	२२	१८	वि.	८	५३	१३	२७	५	२७	क.३९।४८	५	४१	७	१७	३	१०	३०	४०
३४	०	३०	श.	२९	१०	पु.	४८	३१	व.	१४	१६	च.	२	३७	१४	२८	६	२८	कर्क	५	४१	७	१६	३	११	२८	३

ग्रह-दर्शनः–शुक्र २२ जुलाई को पश्चिम में उदित होगा। सायं शनि-मंगल याम्योत्तरासन्न, गुरु पूर्व में तथा बुध पश्चिम में दीखेगा।

अशून्य शयन व्रत,
भ. ४२।४० उ., पञ्चक प्रा. ४४।०, सं सूर्य कर्क में A
भ. १४।४१ या. श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
नगपंचमी (बंगाल)
भ. ३१।२७ उ., सूर्य पुष्य में २९।१७,
भ. ४।२० या., पंचक स. ४५।९
बुध मघा सिंह में २०।१५,
सूर्य सायन-सिंह में ३९।३७, शुक्र आश्ले. में ४७।४० B
भ. १६।४७ उ., ४७।४४ या., शाक श्रावण प्रा.,
राहू कृत्तिका ४ में ; केतु अनु. २ में ४५।५५, C
शुक्र बाल्य समाप्त ६।५,
भ. ४१।४० उ., प्रदोष व्रत,
भ. ८।५३ या.,
शनैश्चरी अमावस, हरयाली अमावस, नक्त व्रत प्रारम्भ,

शुक्र उदय (२२ जुलाई)

A ५९।४७, मु., ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, व. यूरेनस अनु. ४ में, B शुक्र पश्चिम में उदित ६।५, C कामदा एकादशी व्र.स.,

श्राव. कृ. ८ शनि, इष्ट ५९।४३

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	३	६	४	८	३	६	१	७
	५	२४	०	११	१५	१६	१०	१०
	४३	१४	५४	४४	४०	८	८	८
	३८	५४	१२	५	५३	६	४९	४९
	५७	२१	८०	६	७३	०	३	३
	१६	३९	१४	२२	४९	५५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

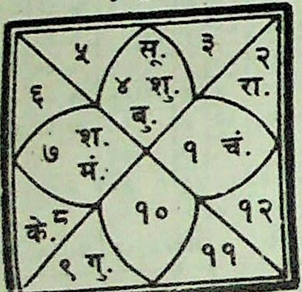

लोक भविष्य–इस मास में पांच शनिवार हैं, यहां कर्क संक्रान्ति भी रविवारी है, तथा अमावस शनिवार को है।–**"यदा कर्कस्य संक्रान्तिरथवा मकरस्य वा। भवत्यर्कार्कि-भौमानां वारे दुःखप्रदा मता।"** जनता में कष्ट अशान्ति व्याप्त हो। शुक्रोदय कालिक नक्षत्र-वीथि मंडल के विचार से धान्योत्पत्ति अच्छी होगी, कहीं अतिवृष्टि से हानि हो। बुद्धिजीवी वर्ग परेशान रहे। अन्तर्देशीय समस्याएं उलझें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–जुलाई के तीसरे सप्ताह में बाजारों में साधारण तेजी मन्दी रहेगी। २२ जुलाई से खाण्ड में मन्दी, रुई, कपास, सूत, सण सोना, चाँदी, तिल, चावल में तेजी बनेगी। इस समय वायदा के व्यापारी विचारपूर्वक काम करके अच्छा लाभ ले सकते हैं।

कु. सूर्योदये

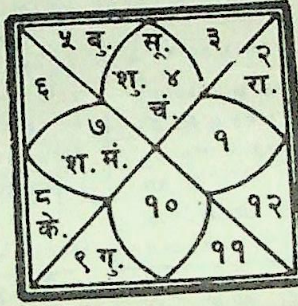

श्राव. कृ. ३० शनि. इष्ट ५९।३०

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	३	६	४	८	३	६	१	७
	१२	२६	९	११	२४	१६	९	९
	२४	५६	२८	२	१७	१६	४६	४६
	५७	१८	२६	७	४३	२८	३३	३३
	५७	२४	६३	५	७३	१	३	३
	२३	५१	४५	२८	४९	३५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पुष्य ३	विशा. २	मघा ३	मूल ४	आश्ले. ३	स्वा. ३	कृत्ति. ४	अनु. २

आकाश लक्षण–इस पक्ष में व्यापक वर्षा के योग हैं। विशेषतः जुला. १८ से २२ तक बंगाल, आसाम, उड़ीसा, मध्य प्र., उ. प्र. एवं हि. प्र. में वर्षा होगी। कहीं जलप्लाव से हानि एवं कुछ क्षेत्रों में सूखा भी रहेगा।

शकुन विचार–श्रावण कृष्ण चतुर्थी एवं पंचमी को बादल गरजें, बिजली चमके किंवा वर्षा हो तो सुभिक्ष रहे।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, श्रावण शुक्ल पक्ष ९															तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक				(२९ जु. से ११ अग. तक, सन् ८४ ई.), द. अ., उ. गो., वर्षा ऋतु,
वि. मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श	मु.	संचार	चण्डीगढ़				स्पष्टसूर्य				ग्रह-दर्शनः–प्रातः गुरु को पश्चिम-कपाल में देखें। सायं गुरु शनि-मंगल, बुध तथा शुक्र को पश्चिम में देख सकेंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.					घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५७	१	र.	२१	२२	आश्ले	४२	३२	सि.	५/५६	२३/८	ब.	२१	२२	१५	२९	७	२९	सि. ४२।३२	५	४२	७	१५	३	१२	२५	२७	चन्द्रदर्शन मु. १५
३३	५४	२	चं.	१३	७	म.	३६	१६	व.	४६	३१	कौ.	१३	७	१६	३०	८	त्रि१	सिंह	५	४३	७	१५	३	१३	२२	५१	बिल्वाव मु. प्रा.,
३३	५०	३	मं.	४	४८	पू.फा.	३०	५	प.	३७	८	ग.	४	४८	१७	३१	९	२	क. ४३।४०	५	४४	७	१४	३	१४	२०	१६	भ. ३०।५१ उ., ५६।५५ या., सन्धारा तीज, हरयाली A
अवम		४	मं.	५६	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३३	४७	५	बु.	४९	२९	उ.फा	२४	२४	शि.	२८	१२	ब.	२३	१२	१८	अ.१	१०	३	कन्या	५	४४	७	१३	३	१५	१७	४२	अगस्त प्रारम्भ, बुध पू. फा. में ५१।३७, नाग पञ्चमी,
३३	४४	६	गु.	४३	७	ह.	१९	३६	सि.	२०	०	कौ.	१६	१८	१९	२	११	४	तु. ४७।४४	५	४५	७	१३	३	१६	१५	८	सूर्य आश्ले. में २६।०, शुक्र मघा सिंह में ३७।३२, B
३३	४१	७	शु.	३७	५३	चि.	१५	५१	सा.	१२	४०	ग.	१०	३०	२०	३	१२	५	तुला	५	४५	७	१२	३	१७	१२	३४	भ. ३७।५३ उ., गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
३३	३७	८	श.	३६	५५	स्वा	१३	१८	शु.	६	२०	वि.	५	५४	२१	४	१३	६	वृ. ५७।२३	५	४६	७	११	३	१८	१०	२	भ. ५।५४ या, श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी C
३३	३३	९	र	३१	१६	वि.	१२	५	शु.	१/५८	४/५	बा.	२	३५	२२	५	१४	७	वृश्चिक	५	४७	७	१०	३	१९	७	३०	मंगल वृश्चिक में १।५०,
३३	३०	१०	चं.	२९	५१	अनु.	१२	६	ऐं.	५३	२३	तै.	०	३३	२३	६	१५	८	वृश्चिक	५	४७	७	१०	३	२०	४	५९	भ. ५९।४३ उ.,
३३	२६	११	मं.	२९	३५	ज्ये.	१३	१६	वै.	५१	११	वि.	२९	३५	२४	७	१६	९	धनु. १३।१६	५	४८	७	९	३	२१	२	३०	भ. २९।३५ या., पवित्रा एकादशी व्रत स.,
३३	२३	१२	बु.	३०	२३	मू.	१५	३२	वि.	४९	३५	बा.	३०	२३	२५	८	१७	१०	धनु	५	४९	७	८	३	२२	०	०	प्रदोष व्रत,
३३	२०	१३	गु.	३२	१०	पू.षा	१८	४४	प्री.	४८	४६	कौ.	१	१६	२६	९	१८	११	म. ३४।४६	५	४९	७	७	३	२२	५७	३१	शनि स्वाति. ४ में २१।२८,
३३	१५	१४	शु.	३४	५४	उ.षा.	२२	५४	आ.	४८	४०	ग	३	३२	२७	१०	१९	१२	मकर	५	५०	७	६	३	२३	५५	५	भ. ३४।५४ उ.,
३३	११	१५	श.	३८	२९	श्र.	२७	५३	सौ.	४९	१२	वि.	६	४२	२८	११	२०	१३	मकर	५	५०	७	५	३	२४	५२	३८	भ. ६।४२ या., व. गुरु मूल ३ में ५१।५, मंगल अनु १ D

A तीज, मधुश्रवा तृतीया, B श्री कल्कि जयन्ती, C व चिन्तपूरणी (हि. प्र.), D में ५९।३५ सत्य व्र., रक्षाबन्धन [प्रातः ८ घं. ३१ मि. बाद], ऋक-यजु उपाकर्म, मेला- श्री अमरनाथ (काश्मीर)

श्रावण शुक्ल ८ श., इष्ट ५६।२०

सू.	चं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	८	४	६	१	७
१९	२९	१५	१०	२	१६	९	९
६	५८	५३	२६	५४	२९	२४	२४
५०	५०	५२	५५	३३	३२	१८	१८
५७	२७	४२	४	७३	२	३	३
३८	३८	१०	२४	४९	१४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

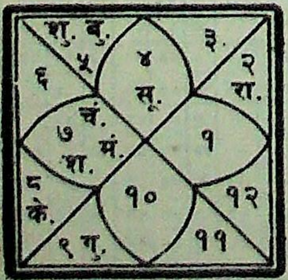

लोक भविष्य–यहां मघा नक्षत्र का शुक्र धान्यनाश, चौरभय, अनैतिक घटनाओं को बढ़ावा देगा। मंगल वृश्चिक में आकर शनि से मुक्त होता है, अतः उलझी हुई राजनैतिक समस्याओं के समाधानार्थ सक्रिय पग उठाए जाएंगे, सीमा प्रान्तों पर सुरक्षा व्यवस्था को दृढ़ रखना पड़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२ अग. से अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना व धातुओं के भाव तेज रहेंगे। ४ अग. के बाद बाजार के रुख को देखकर काम करें बाजारों में झटके की तेजी या मन्दी आए। ९ अगस्त के लगभग रुई, कपास, तिलहन एवं गुड़, खाण्ड में तेजी बने।

आकाश लक्षण–पक्ष के पूर्वार्ध में अधिकांश भागों में वर्षा होगी, विशेषतः ५ से ११ अगस्त के मध्य कहीं. वर्षा से खड़ी फसल की हानि हो। कुछ क्षेत्रों में सिंहस्थ शुक्र वर्षा में प्रतिरोध का सूचक है।

कु. सूर्योदये

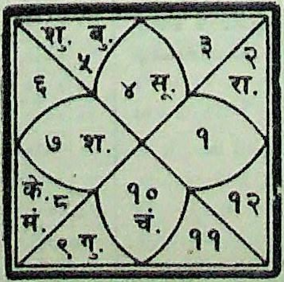

श्राव. शु. १५ शनि., इष्ट ५९।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	४	८	४	६	१	७
२५	३	१९	९	११	१६	९	९
४९	१९	२४	५९	३१	४७	२	२
२२	४८	३६	३३	१५	७	२	२
५७	३०	१२	३	७३	२	३	३
३६	२४	७	१४	४९	५२	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन विचार–श्रावण शु. पंचमी से यदि दो दिन लगातार वर्षा हो और दक्षिण-पश्चिम की वायु चले तो अन्न तेज और दुर्भिक्ष की स्थिति बने। आकाश निर्मल रहे तो गेहूं, जौ, चना के स्टाक से आगे अच्छा लाभ निश्चित होगा।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(१४ से २८ जु. तक, सन् १९८४ ई.), द. अ. उ. गो., **वर्षा ऋतु,**

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. आषा.	अं. जुला.	श आषा.	मु. शव्वा.	चन्द्र संचार घ. प.	सा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शनः—शुक्र २२ जुलाई को पश्चिम में उदित होगा। सायं शनि-मंगल याम्योत्तरासन्न, गुरु पूर्व में तथा बुध पश्चिम में दीखेगा।
३४	३६	१	श.	७	३८	उ.षा.	६	३५	वि.	२९	३४	कौ.	७	३८	३१	१४	२३	१४	मकर.	५	३३	७	२३	२	२८	५	४९	अशून्य शयन व्रत,
३४	३४	२	र:	१०	३८	श्र.	११	११	प्री.	२९	५०	ग.	१०	३८	श्रा.१	१५	२४	१५	कुं.४४।०	५	३४	७	२	२	२९	३	३	भ. ४२।४० उ., पञ्चक प्रा. ४४।०, सं सूर्य कर्क में A
३४	३२	३	चं.	१४	४१	ध.	१६	४९	आ.	३०	५५	वि.	१४	४१	२	१६	२५	१६	कुम्भ	५	३५	७	२२	३	०	०	१७	भ. १४।४१ या. श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३४	३०	४	मं.	१९	४४	श.	२३	२३	सौ.	३२	४२	बा.	१९	४४	३	१७	२६	१७	कुम्भ	५	३५	७	२२	३	०	५७	३१	
३४	२७	५	बु.	२५	२६	पू.भा.	३०	३४	शो.	३४	५७	तै.	२५	२६	४	१८	२७	१८	मी.१३।४६	५	३६	७	२१	३	१	५४	४७	नगपंचमी (बंगाल)
३४	२५	६	गु.	३१	२६	उ.भा.	३८	१	अति	३७	२२	ब.	३१	२७	५	१९	२८	१९	मीन	५	३६	७	२१	३	२	५२	४	भ. ३१।२७ उ., सूर्य पुष्य में २९।१७,
३४	२२	७	शु.	३७	१२	रे.	४५	९	सु.	२९	३३	वि.	४	२०	६	२०	२९	२०	मे.४५।९	५	३७	७	२१	३	३	४९	१९	भ. ४।२० या., पंचक स. ४५।९
३४	२०	८	श.	४२	१०	अ.	५१	२९	धृ.	४१	७	बा.	९	४१	७	२१	३०	२१	मेष	५	३७	७	२०	३	४	४६	३८	**बुध मघा सिंह में २०।१५,**
३४	१७	९	र.	४५	५०	भ.	५६	२९	शू.	४१	४१	तै.	१४	०	८	२२	३१	२२	मेष	५	३८	७	२०	३	५	४२	५७	सूर्य सायन-सिंह में ३९।३७, शुक्र आश्ले. में ४७।४० B
३४	१४	१०	चं.	४७	४४	कृ.	५९	४२	गं.	४०	५४	व.	१६	४७	९	२३	श्रा.१	२३	वृ.१२।१७	५	३९	७	१९	३	६	४०	१५	भ. १६।४७ उ., ४७।४४ या., शाक श्रावण प्रा.,
३४	११	११	मं.	४७	४२	रो.	६०	०	वृ.	३८	३५	ब.	१७	४३	१०	२४	२	२४	वृष	५	३९	७	१८	३	७	३८	३५	राहू कृत्तिका ४ में ; केतु अनु. २ में ४५।५५, C
३४	८	१२	बु.	४५	३९	रो.	०	५९	ध्रु.	३४	४१	कौ.	१६	४०	११	२५	३	२५	मि.३०।३९	५	४०	७	१८	३	८	३५	५७	**शुक्र बाल्य समाप्त ६।५,**
३४	६	१३	गु.	४१	४०	मृ.	० ५८	१९ ४०	व्या.	२९	११	ग.	१३	४०	१२	२६	४	२६	मिथुन	५	४०	७	१७	३	९	३३	१७	भ. ४१।४० उ., प्रदोष व्रत,
३४	३	१४	शु.	३६	५	पुन.	५३	४६	ह.	२२	१८	वि.	८	५३	१३	२७	५	२७	क.३९।४८	५	४१	७	१७	३	१०	३०	४०	भ. ८।५३ या.,
३४	०	३०	श.	२९	१०	पु.	४८	३१	व.	१४	१६	च.	२	३७	१४	२८	६	२८	कर्क	५	४१	७	१६	३	११	२८	३	**शनैश्चरी अमावस, हरयाली अमावस, नक्त व्रत प्रारम्भ,**

शुक्र उदय (२२ जुलाई)

A ५९।४७, मु., ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, व. यूरेनस अनु. ४ में, B शुक्र पश्चिम में उदित ६।५, C कामदा एकादशी व्र.स.,

श्राव. कृ. ८ शनि, इष्ट ५९।४३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	८	३	६	१	७
५	२४	०	११	१५	१६	१०	१०
४३	१४	५४	४४	४०	८	८	८
३८	५४	१२	५	५३	६	४९	४९
५७	२१	८०	६	७३	०	३	३
१६	३९	१४	२२	४९	५५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य १	विशा. ४	मघा १	पू.फा. ४	पुष्य ४	ज्ये. ३	कृत्ति. १	अनु. ३

कु. सूर्योदये

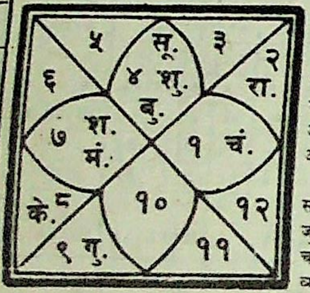

लोक भविष्य—इस मास में पांच शनिवार हैं, यहां कर्क संक्रान्ति भी रविवारी है, तथा अमावस शनिवार को है।—"यदा कर्कस्य संक्रान्तिरथवा मकरस्य वा। भवत्यर्कार्कि-भौमानां वारे दुःखप्रदा मता।" जनता में कष्ट अशान्ति व्याप्त हो। शुक्रोदय कालिक नक्षत्र-वीथि मंडल के विचार से धान्योत्पत्ति अच्छी होगी, कहीं अतिवृष्टि से हानि हो। बुद्धिजीवी वर्ग परेशान रहे। अन्तर्देशीय समस्याएं उलझें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—जुलाई के तीसरे सप्ताह में बाजारों में साधारण तेजी मन्दी रहेगी। २२ जुलाई से खाण्ड में मन्दी, रुई, कपास, सूत, सण सोना, चाँदी, तिल, चावल में तेजी बनेगी। इस समय वायदा के व्यापारी विचारपूर्वक काम करके अच्छा लाभ ले सकते हैं।

कु. सूर्योदये

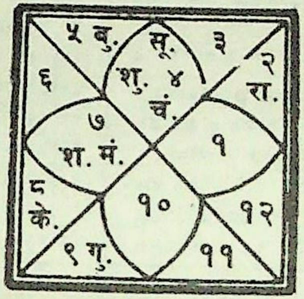

श्राव. कृ. ३० शनि. इष्ट ५९।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	८	३	६	१	७
१२	२६	९	११	२४	१६	९	९
२४	५६	२८	२	१७	१६	४६	४६
५७	१८	२६	७	४३	२८	३३	३३
५७	२४	६३	५	७३	१	३	३
२३	५१	४५	२८	४९	३५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ३	विशा. ३	मघा ३	पू.फा. ४	आश्ले. ३	ज्ये. ३	कृत्ति. ४	अनु. २

आकाश लक्षण—इस पक्ष में व्यापक वर्षा के योग हैं। विशेषतः जुला. १८ से २२ तक बंगाल, आसाम, उड़ीसा, मध्य प्र., उ. प्र. एवं हि. प्र. में वर्षा होगी। कहीं जलप्लाव से हानि एवं कुछ क्षेत्रों में सूखा भी रहेगा।

शकुन विचार—श्रावण कृष्ण चतुर्थी एवं पंचमी को बादल गरजें, बिजली चमके किंवा वर्षा हो तो सुभिक्ष रहे।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, श्रावण शुक्ल पक्ष ९

(२९ जु. से ११ अग. तक, सन् ८४ ई.), द. अ., उ. गो., वर्षा ऋतु,

ति. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	धा. स्टैं. टा. चण्डीयन्त्र सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शनः—प्रातः गुरु को पश्चिम-कपाल में देखें। सायं गुरु शनि-मंगल, बुध तथा शुक्र को पश्चिम में देख सकेंगे।
३३	५७	१	र.	२१	२२	आश्ले	४२	३२	सि.	५/५६	२३/८	ब.	२१	२२	१५	२९	७	२९	सि.४२।३२	५	४२	७	१५	३	१२	२५	२७	चन्द्रदर्शन मु. १५
३३	५४	२	चं.	१३	७	म.	३६	१६	व.	४६	३१	कौ.	१३	७	१६	३०	८	जि१	सिंह	५	४३	७	१५	३	१३	२२	५१	जिल्कद मु. प्रा.,
३३	५०	३	मं.	४	४८	पू.फा.	३०	५	ध.	३७	८	ग.	४	४८	१७	३१	९	२	क.४३।४०	५	४४	७	१४	३	१४	२०	१६	भ. ३०।५१ उ., ५६।५५ या.,सन्धारा तीज, हरयाली A
अवम		४	मं.	५६	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३३	४७	५	बु.	४९	२९	उ.फा	२४	२४	शि.	२८	१२	ब.	२३	१२	१८	अ.१	१०	३	कन्या	५	४४	७	१३	३	१५	१७	४२	अगस्त प्रारम्भ, बुध पू. फा. में ५१।३७, नाग पञ्चमी,
३३	४४	६	गु.	४३	७	ह.	१९	३६	सि.	२०	०	कौ.	१६	१८	१९	२	११	४	तु.४७।४४	५	४५	७	१३	३	१६	१५	८	सूर्य आश्ले. में २६।०, शुक्र मघा सिंह में ३७।३२, B
३३	४१	७	शु.	३७	५३	चि.	१५	५१	सा.	१२	४०	ग.	१०	३०	२०	३	१२	५	तुला	५	४५	७	१२	३	१७	१२	३४	भ. ३७।५३ उ., गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
३३	३७	८	श.	३३	५५	स्वा	१३	१८	शु.	६	२०	वि.	५	५४	२१	४	१३	६	वृ.५७।२३	५	४६	७	११	३	१८	१०	२	भ. ५।५४ या, श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी C
३३	३३	९	र	३१	१६	वि.	१२	५	शु.	१/४८	४/५	बा.	२	३५	२२	५	१४	७	वृश्चिक	५	४७	७	१०	३	१९	७	३०	मंगल वृश्चिक में १।५०,
३३	३०	१०	चं.	२९	५१	अनु.	१२	६	ऐं.	५३	२३	तै.	०	३३	२३	६	१५	८	वृश्चिक	५	४७	७	१०	३	२०	४	५९	भ. ५९।४३ उ.,
३३	२६	११	मं.	२९	३५	ज्ये.	१३	१६	वै.	५१	११	वि.	२९	३५	२४	७	१६	९	धनु.१३।१६	५	४८	७	९	३	२१	२	३०	भ. २९।३५ या., पवित्रा एकादशी व्रत स.,
३३	२३	१२	बु.	३०	२३	मू.	१५	३२	वि.	४९	३५	बा.	३०	२३	२५	८	१७	१०	धनु	५	४९	७	८	३	२२	०	०	प्रदोष व्रत,
३३	२०	१३	गु.	३२	१०	पू.षा	१८	४४	प्री.	४८	४६	कौ.	१	१६	२६	९	१८	११	म.३४।४६	५	४९	७	७	३	२२	५७	३१	शनि स्वाती. ४ में २१।२८,
३३	१५	१४	शु.	३४	५४	उ.षा.	२२	५४	आ.	४८	४०	ग	३	३२	२७	१०	१९	१२	मकर	५	५०	७	६	३	२३	५५	५	भ. ३४।५४ उ.,
३३	११	१५	श.	३८	२९	श्र.	२७	५३	सौ.	४९	१२	वि.	६	४२	२८	११	२०	१३	मकर	५	५०	७	५	३	२४	५२	३८	भ. ६।४२ या., ब. गुरु मूल ३ में ५१।५, मंगल अनु १ D

A तीज, मधुश्रवा तृतीया, B श्री कल्कि जयन्ती, C ब छिन्तपूर्णी (हि. प्र.), D में ५९।३५ सत्य व्र., रक्षाबन्धन [प्रातः ८ घं. ३१ मि. बाद], ऋक-यजु उपाकर्म, मेला- श्री अमरनाथ (काश्मीर)

श्रावण शुक्ल ८ श., इष्ट ५६।२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	८	४	६	१	७
१९	२९	१५	१०	२	१६	९	९
६	५८	५३	२६	५४	२९	२४	२४
५०	५०	५२	५५	३३	३२	१८	१८
५७	२७	४२	४	७३	२	३	३
३८	३८	१०	२४	४९	१४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क. सूर्योदये

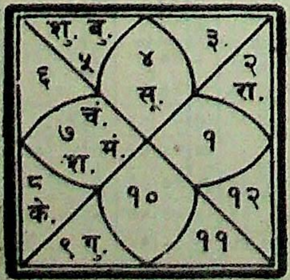

लोक भविष्य—यहां मघा नक्षत्र का शुक्र धान्यनाश, चौरभय, अनैतिक घटनाओं को बढ़ावा देगा। मंगल वृश्चिक में आकर शनि से मुक्त होता है, अतः उलझी हुई राजनैतिक समस्याओं के समाधानार्थ सक्रिय पग उठाए जाएंगे, सीमा प्रान्तों पर सुरक्षा व्यवस्था को दृढ़ रखना पड़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२ अग. से अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना व धातुओं के भाव तेज रहेंगे। ४ अग. के बाद बाजार के रुख को देखकर काम करें बाजारों में झटके की तेजी या मन्दी आए। ९ अगस्त के लगभग रुई, कपास, तिलहन एवं गुड़, खाण्ड में तेजी बने।

आकाश लक्षण—पक्ष के पूर्वार्ध में अधिकांश भागों में वर्षा होगी, विशेषतः ५ से ११ अगस्त के मध्य कहीं. वर्षा से खड़ी फसल को हानि हो। कुछ क्षेत्रों में सिंहस्थ शुक्र वर्षा में प्रतिरोध का सूचक है।

क. सूर्योदये

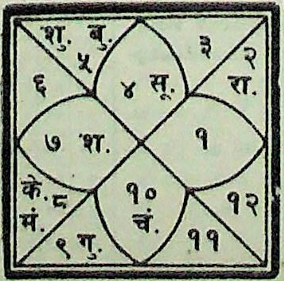

श्राव. शु. १५ शनि., इष्ट ५९।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	४	८	४	६	१	७
२५	३	१९	९	११	१६	९	९
४९	१९	२४	५९	३१	४७	२	२
२२	४८	३६	३३	१५	७	२	२
५७	३०	१२	३	७३	२	३	३
३६	२४	७	१४	४९	५२	११	११
	मा.	मा.	व	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन विचार—श्रावण शु. पंचमी से यदि दो दिन लगातार वर्षा हो और दक्षिण-पश्चिम की वायु चले तो अन्न तेज और दुर्भिक्ष की स्थिति बने। आकाश निर्मल रहे तो गेहूं, जौ, चना के स्टाक से आगे अच्छा लाभ निश्चित होगा।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०															तारीखें				चन्द्र संचार	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़				उदय-कालिक स्पष्टसूर्य				(१२ से २६ अग. तक, सन् '84 ई.), द. अ., उ. गो., वर्षा—शरदृऋतु
तिथि मान घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. श्राव.	अं. अग.	श. श्राव.	मु. जिल्काद	घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शनः—बुध २१ अगस्त को पश्चिम में अस्त होगा। सायं गुरु पूर्वकपाल में, शनि पश्चिम कपाल में तथा मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न एवं शुक्र पश्चिम में दीखेगा।
३३	७	१	र.	४२	५५	ध.	३३	४१	शो.	५०	२३	बा.	१०	४२	२९	१२	२१	१४	कु.०।४७	५	५१	७	४	३	२५	५०	१३	पंचक प्रा. ०।४७
३३	३	२	च.	४८	८	श.	४०	१५	अ.	५२	९	तै.	१५	३१	३०	१३	२२	१५	कुम्भ	५	५२	७	३	३	२६	४७	५०	शुक्र पू. फा. में २७।३०
३२	५९	३	मं.	५३	५५	पू.भा.	४७	२४	सु.	५४	२१	व.	२१	१	३१	१४	२३	१६	मी.३०।३७	५	५२	७	२	३	२७	४५	२७	भ. २१।१ उ., ५३।५५ या., **बुध वक्री ३०।५०,**
३२	५५	४	बु.	६०	०	उ.भा.	५४	५६	धृ.	५६	५०	ब.	२७	०	३२	१५	२४	१७	मीन	५	५३	७	१	३	२८	४३	०	श्री गणेश चतुर्थी, बहुला चतुर्थी व्रत, **भारत स्वातन्त्र्य दिवस,**
३२	४९	४	गु.	०	४	रे.	६०	०	शू.	५९	१८	बा.	०	४	भा.१	१६	२५	१८	मीन	५	५४	७	०	३	२९	४०	४७	**सं. सूर्य मघा सिंह में** २०।० मु. ३०, पुण्यकाल ४।० उ.,
३२	४५	५	शु.	६	१२	रे.	२	२८	ग.	६०	०	तै.	६	१२	२	१७	२६	१९	मे.२।२८	५	५४	६	५९	४	०	३८	२८	पंचक स. २।२८,
३२	४१	६	श.	११	४८	अ.	९	३०	वृ.	१	२२	व.	११	४८	३	१८	२७	२०	मेष	५	५५	६	५८	४	१	३६	११	भ. ११।४८ उ., ४४।६ या., **यूरेनस मार्गी,**
३२	३७	७	र.	१६	२३	भ.	१५	३५	वृ.	२	४५	ब.	१६	२३	४	१९	२८	२१	वृ.३१।४४	५	५५	६	५७	४	२	३३	५७	**श्रीकृष्णजन्माष्टमी (स्मार्त), [चन्द्रोदय ११ घं. १८ मि.]**
३२	३४	८	च.	१९	२५	कृ.	२०	११	धु.	३	०	कौ	१९	२५	५	२०	२९	२२	वृष	५	५६	६	५६	४	३	३१	४४	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.) [चन्द्रोदय रात्रि ११ घं. ५६ मि.]**A
३२	३०	९	मं.	२०	३४	रो.	२२	५६	व्या.	१ २९	५२ ६	ग.	२०	३४	६	२१	३०	२३	मि.५३।१५	५	५७	६	५५	४	४	२९	३१	भ. ५०।४ उ., **बुध पश्चिम में अस्त १८।२२, गुग्गा नवमी,**
३२	२५	१०	बु.	१९	३५	मृ.	२३	३५	व.	५४	३७	वि.	१९	३५	७	२२	३१	२४	मिथुन	५	५७	६	५४	४	५	२७	२१	भ. १९।३५ या., सूर्य सा. कन्या में ५६।२५, शरद् ऋतु प्रा.,
३२	२२	११	गु.	१६	२६	आ.	२२	७	सि.	४८	२५	बा.	१६	२६	८	२३	भा.१	२५	मिथुन	५	५८	६	५३	४	६	२५	१२	अजा एकादशी व.स., शाक भाद्रपद प्रा.,
३२	१७	१२	शु.	११	१९	पुन.	१८	४३	व्य.	४०	४३	तै.	११	१९	९	२४	२	२६	क.४।३४	५	५८	६	५२	४	७	२३	४	प्रदोष व्रत, शुक्र उ.फा. में १७।४०,
३२	१३	१३	श.	४	२९	पु.	१३	३८	व.	३१	४५	व.	४	२९	१०	२५	३	२७	कर्क	५	५९	६	५१	४	८	२०	५९	भ. ४।२९ उ., ३०।२६ या.,
अवम		१४	श.	५६	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	**चतुर्दशी तिथिक्षय,**
३२	८	३०	र.	४७	१८	आश्ले.	७	१६	प.	२१	५२	च.	१ २१	५० ५०	११	२६	४	२८	सि.७।१६	६	०	६	५०	४	९	१८	५५	व. बुध मघा में ५६।०, पिठोरी अमा, **कुशोत्पाटिनी अमावस,** B

A गोकुलाष्टमी, B ('ॐ हूं फट स्वाहा' इति मन्त्रेण),

भाद्र कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५८।५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ४ २८ २९	७ ८ १ ३२	४ १७ ५८ ३४	८ ९ ३६ ५६	४ २२ ३५ २८	६ १७ १६ ४	१ ८ ३३ २६	७ ८ ३३ २६
५७ ४९	३२ ४७	३६ ५४	१ ३५	७३ ४८	३ ३८	३ ११	३ ११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा. २	अनु. २	पू.फा. २	मू. ३	पू.फा. ३	स्वा. ४	कृत्ति. ४	अनु. २

कु. सूर्योदये

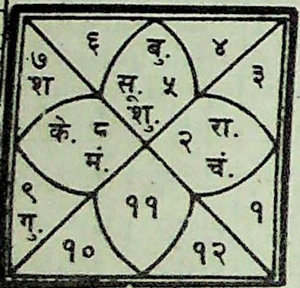

लोक भविष्य—यहां कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि एवं शुक्ल पक्ष में तिथिक्षय अशुभ फलप्रद है। शासक वर्ग में उलझनें बढ़ें, कहीं मन्त्रिमण्डल का विस्तार भी करना पड़े। यहां १८ अग. को बुध-शुक्र एवं २२ अग. को मंगल-केतु की युति पश्चिम में अशान्ति, उपद्रव एवं दुर्भिक्ष, अतिवर्षा किंवा अनावृष्टि आदि प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट की सूचना देते हैं।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में छोटे अनाजों एवं रुई में कुछ मन्दी रहे, लेकिन १४ अग. से रुई में तेजी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं शेयरों में तेजी आएगी। १८ अगस्त को बाजार में झटके से तेजी आए, २२ अगस्त को भी वायदा के व्यापारी तेजी से उत्तम लाभ ले सकते हैं।

कु. सूर्योदये

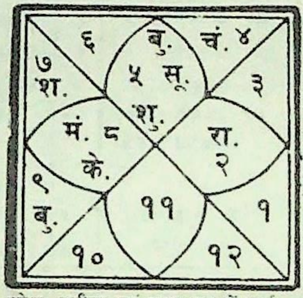

भाद्रपद कृ. ३० रवि., इष्ट ५८।४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १० १५ ३९	७ ११ २२ ८	४ १३ १७ ३०	८ ९ ३० ११	४ २९ ५८ ९	६ १७ ३९ ७	१ ८ १४ २१	७ ८ १४ २१
५७ ५८	३४ १९	५५ १७	० २९	७३ ४५	४ ७	३ ११	३ ११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा. ४	अनु. ३	मघा. ४	मूल ३	उ.फा. १	स्वाती ४	कृत्ति. ४	अनु. २

आकाश लक्षण—इस पक्ष में अगस्त के तीसरे सप्ताह तक उ.प्र. पंजाब, म.प्र., आसाम, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा एवं राजस्थान में वर्षा के योग हैं, लेकिन सू. बु. शु. एक राशि में होने से कई प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी रहेगी।

शकुन विचार—भाद्रकृष्ण तृतीया को यदि बादल चाल हो तो अनाज के स्टाक से छठे मास लाभ हो।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११															तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक				(२७ अग. से १० सि. तक, सन् '८४ ई. द. अ., गो., शरद् ऋतु,)
दि. मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श	मु.	संचार	चण्डीगढ़				स्पष्टसूर्य				ग्रह दर्शनः—बुध ६ सित. को पू. में उदित होगा। सायं गुरु पूर्व कपाल में, मंगल याम्योत्तर वृत्तासन्न तथा शनि पश्चिम कपाल में एवं शुक्र पश्चिम में दीखेगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.					घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	४	१	चं.	३७	५१	म.	०/५२	९/३१	शि.	११	२८	कि	१२	३५	१२	२७	५	२९	सिंह	६	०	६	४९	४	१०	१६	५२	शुक्र कन्या में ०।१५, नक्तव्रत समाप्त,
३१	५९	२	मं.	२८	२६	उ.फा.	४५	२८	सि.	०/५०	५३/३८	बा.	३	८	१३	२८	६	३०	क.५।४७	६	१	६	४८	४	११	१४	५१	चन्द्रदर्शन मु. ४५, मेला बाबा गुसांईआणां (कुराली,पंजाब)
३१	५५	३	बु.	१९	३०	ह.	३८	५२	शु.	४०	४४	ग.	१९	३०	१४	२९	७	ज़ि.१	कन्या	६	१	६	४६	४	१२	१२	५१	भ.४५।३० उ., गुरु मार्गी ५३।४०, साम उपाकर्म, A
३१	५०	४	गु.	११	३१	चि.	३३	१९	शु.	३१	५०	वि.	११	३१	१५	३०	८	२	तु.६।६	६	२	६	४५	४	१३	१०	५३	११।३१ या., सूर्य पू.फा. में ९।२५, ऋषि पंचमी,
३१	४६	५	शु.	४	४६	स्वा.	२९	८	ब्र.	२४	२	बा.	४	४६	१६	३१	९	३	तुला	६	३	६	४४	४	१४	८	५६	सूर्यषष्ठी व्रत,
अव	म	६	शु.	५९	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३१	४२	७	श.	७	५६	वि.	२६	३२	ऐ.	१७	३१	ग.	२७	५०	१७	सि.१	१०	४	वृ.१२।११	६	३	६	४३	४	१५	७	१	भ. ५६।० उ., सितम्बर प्रा.,
३१	३८	८	र.	५४	४	अनु.	२५	३७	वै.	१२	२३	वि.	२५	२	१८	२	११	५	वृश्चिक	६	४	६	४२	४	१६	५	६	भ २५।२ या., श्री राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत, B
३१	३४	९	चं.	५३	५०	ज्ये.	२६	२०	वि.	८	३५	बा.	२३	५७	१९	३	१२	६	ध.२६।२०	६	४	६	४१	४	१७	३	१४	अगस्त्य उदित, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३१	३०	१०	मं.	५५	३	मू.	२८	३६	प्री.	६	४	तै.	२४	२७	२०	४	१३	७	धनु.	६	५	६	३९	४	१८	१	२३	मंगल ज्येष्ठा में ५९।१३, शुक्र हस्त में ८।१७,
३१	२५	११	बु.	५७	२९	पू.षा.	३२	८	आ.	४	४०	ब.	२६	१६	२१	५	१४	८	म.४८।१८	६	५	६	३८	४	१८	५९	३३	भ. २६।१६ उ., ५७।२९ या. पद्मा एकादशी व्र. स्मा.
३१	२०	१२	गु.	६०	०	उ.षा.	३६	४६	सौ.	४	१०	ब.	२९	१४	२२	६	१५	९	मकर	६	६	६	३७	४	१९	५७	४६	बुध पूर्व में उदित २६।३५ श्रीवामन जयन्ती, पद्मा एकादशी C
३१	१६	१२	शु.	०	५९	श्रव.	४२	१८	शो.	४	२९	बा.	०	५९	२३	७	१६	१०	मकर	६	७	६	३६	४	२०	५५	५९	बुध मार्गी १७।३२, प्रदोष व्र.,
३१	११	१३	श.	५	२०	धनि.	४८	३०	अ.	५	२६	तै.	५	२०	२४	८	१७	११	कु.१५।२४	६	७	६	३४	४	२१	५४	१४	पंचक प्रा. १५।२४,
३१	६	१४	र.	१०	२०	श.	५५	१७	सु.	६	५१	व.	१०	२०	२५	९	१८	१२	कुम्भ	६	८	६	३३	४	२२	५२	३२	भ. १०।२० उ., ४३।८ या., सत्य व्र., अनन्त चतुर्दशी, D
३१	१	१५	चं.	१५	५६	पू.भा.	६०	०	धृ.	८	४४	ब.	१५	५६	२६	१०	१८	१३	मी.४५।४१	६	८	६	३२	४	२३	५०	५०	नेपच्यून मार्गी, मेला गोइन्दवाल (पंजाब)

A श्री वराह जयन्ती, कलंक चतुर्थी [चन्द्रास्त रात्रि ८ घं. ४९ मि.], हरितालिका व्रत, जिल्हिज मु. प्रा., B श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, C व्र. वै., श्रवण द्वादशी, D प्रोष्ठपदी पूर्णिमा,

भाद्र शु. ८ रवि, इष्ट ५८।३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	४	८	५	६	१	७
१७	१५	७	९	८	१८	७	७
१	२७	३६	३०	३४	९	५२	५२
५१	२७	१२	५५	१९	३१	५	५
५८	४५	२९	०	७३	४	३	३
७	५८	५३	५३	४१	३८	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

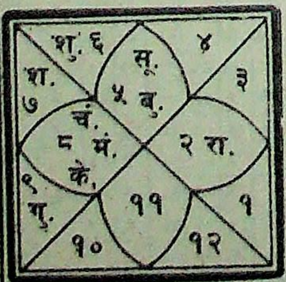

लोक भविष्य—पक्षारम्भ में ही सूर्य-बुध की युति एवं पक्षमध्य में मंगल-यूरेनस-युति हो रही है। आगजनी की घटना से कहीं हानि होगी। यान-दुर्घटना किंवा रोग विशेष से कष्ट हो। हस्त नक्षत्र कर शुक्र दक्षिणी-प्रान्तों में राजनैतिक-गतिरोध का कारण बनेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२७ अगस्त के लगभग गेहूं, जौ, चना, चावल में अच्छी तेजी का योग है। २९ अग. के बाद बाजार का रुख बदलेगा। ४ नवं. को गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, घी, तिल, सरसों, रुई में तेजी के योग हैं, लेकिन फिर भी बाजार का रुख देख कर ही आगे बढ़ें।

आकाश लक्षण—इस पक्ष के उत्तरार्ध में आसाम, बंगाल, बंगला देश, भूटान आदि में वर्षा हो, अन्यत्र प्रायः वर्षा का उपराम रहे।

कु. सूर्योदये

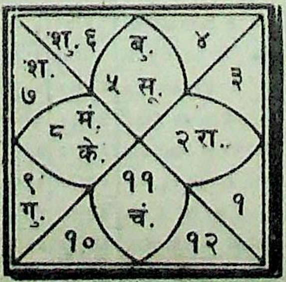

भाद्र शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५८।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	४	८	५	६	१	७
२४	२०	७	९	१८	१८	७	७
४७	२१	२९	४३	२३	४८	२६	२६
३७	१	३०	७	३६	३३	३९	३९
५८	३७	३८	२	७३	५	३	३
१९	३५	२४	२२	३५	१०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन विचार—यदि भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा के दिन आकाश निर्मल रहे तो गेहूं, जौ, चना, चावल के स्टाक से लाभ रहे। यदि इस दिन बादल चाल रहे तो आगे मन्दा होगा।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, आश्विन कृष्ण पक्ष १२															तारीखें				चन्द्र संचार	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़				उदय-कालिक स्पष्टसूर्य				११ से २५ सित. तक, सन् '८४ ई.), द अ., उ. द. गो.. शरद् ऋतु,
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. भाद्र.	अं. सितं.	श भाद्र.	मु. जिल्हिज	घ. प.	सू. उ. घं.	मि	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—बुध २४ सितं को पूर्व में अस्त होगा। साय गुरु-मंगल याम्योत्तर वृत्तासन्न, शनि पश्चिम कपाल में तथा शुक्र पश्चिम में दीखेगा।
३०	५६	१	मं.	२१	५४	पू.भा.	२	२९	शू.	१०	५५	कौ.	२१	५४	२७	११	२०	१४	मीन	६	९	६	३१	४	२४	४९	११	श्राद्ध प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध
३०	५२	२	बु.	२८	५	उ.भा.	९	५६	गं.	१३	१७	ग.	२८	५	२८	१२	२१	१५	मीन	६	९	६	२९	४	२५	४७	३२	सूर्य उ. फा. में ५३।५२, द्वितीया का श्राद्ध,
३०	४८	३	गु.	३४	१८	रे.	१७	३०	वृ.	१५	४२	व.	१	११	२९	१३	२२	१६	मे.१७।३०	६	१०	६	२८	४	२६	४५	५७	भ. १।११ उ., ३४।१८ या., पंचक स. १७।३०, A
३०	४४	४	शु.	४०	८	अ.	२४	४७	ध्रु.	१७	५५	ब.	७	१३	३०	१४	२३	१७	मेष	६	११	६	२७	४	२७	४४	२४	शुक्र चित्रा में ५९।५८, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध,
३०	४०	५	श.	४५	१४	भ.	३१	२६	व्या.	१९	४०	कौ.	१२	४१	३१	१५	२४	१८	वृ.४७।५१	६	५१	६	११	४	२८	४२	५१	पंचमी का श्राद्ध
३०	३५	६	र.	४९	११	कृ.	३७	५	ह.	२०	४०	ग.	१७	१३	आ.१	१६	२५	१९	वृष	६	१२	६	२४	४	२९	४१	२३	भ. ४९।११ उ., स. सूर्य कन्या में १९।५, मु. ३०, B
३०	३०	७	चं.	५१	३०	री.	४१	१४	व.	२०	३४	वि.	२०	२१	२	१७	२६	२०	वृष	६	१२	६	२३	५	०	३९	५६	भ. २०।२१ या., बुध पू. फा. में १।२५, सप्तमी का श्राद्ध,
३०	२५	८	मं.	५१	५८	मृ.	४३	३५	सि.	१९	५	बा.	२१	४४	३	१८	२७	२१	मि.१२।२५	६	१३	६	२२	५	१	३८	२९	श्री महालक्ष्मी व्र. समाप्त, अष्टमी का श्राद्ध,
३०	२०	९	बु.	५०	२१	आ.	४३	५७	व्य.	१६	४	तै.	२१	१०	४	१९	२८	२२	मिथुन	६	१३	६	२१	५	२	३७	७	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
३०	१५	१०	गु.	४६	३७	पुन.	४२	१४	व.	११	२३	व.	१८	२९	५	२०	२९	२३	क.२७।४०	६	१४	६	१९	५	३	३५	४६	भ. १८।२९ उ., ४६।३७ या., शुक्र तुला में २६।५, C
३०	१०	११	शु.	४०	५९	पु.	३८	३५	प.	५ / ५७	१ / १५	ब.	१३	४८	६	२१	३०	२४	कर्क	६	१५	६	१८	५	४	३४	२६	इन्दिरा एकादशी व्र. स., एकादशी का श्राद्ध,
३०	५	१२	श.	३३	४३	आश्ले.	३३	१८	सि.	४८	६	कौ.	७	२१	७	२२	३१	२५	सि.३३।१८	६	१५	६	१७	५	५	३३	१०	सूर्य सायन-तुला में ४९।२८, दक्षिणगोल प्रा., विषुवदिन D
३०	०	१३	र.	२५	९	म.	२६	४२	सा.	३७	५९	व.	२५	९	८	२३	आ.१	२६	सिंह	६	१६	६	१५	५	६	३१	५६	भ. २५।९ उ., ५०।२७ या., शनि विशा. १ में ५२।३०, E
२९	५६	१४	चं.	१५	४४	पू.फा.	१९	१६	शु.	२७	१७	श.	१५	४४	९	२४	२	२७	क.३२।२०	६	१६	६	१४	५	७	३०	४२	बुध पूर्व में अस्त २१।४७, सर्वपितृ श्राद्ध, अमावस F
२९	५१	३०	मं.	५	५८	उ.फा.	११	३०	शु.	१६	२२	ना.	५	५८	१०	२५	३	२८	कन्या	६	१७	६	१३	५	८	२९	३२	मंगल मूल धुन में ५२।५०, बुध उ. फा. में २३।४०, G

A तृतीया का श्राद्ध, B पुष्य ३।५ उ., गुरु मूल ४ में ५७।३५, षष्ठी का श्राद्ध, C यूरेनस ज्येष्ठा १ में, दशमी का श्राद्ध, D शनि प्रदोष व्र., द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध, E त्रयोदशी श्राद्ध, मघा श्राद्ध, शक आश्विन प्र., F एवं चतुर्दशी श्राद्ध (देखें पृष्ठ ५९-६०), शस्त्र विषादि से मरे हुओं का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, G शुक्र स्वाती में ५२।३२, राहु कृत्ति. ३ में केतु अनु. १ में ३८।२२, मातामह (नाना) का श्राद्ध, शारद नवरात्र प्र., (देखें पृष्ठ ५९-६०),

आश्विन कृ. ८ मं., इष्ट ५८।१२							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	४	८	५	६	१	७
२	२५	१६	१०	२८	१९	७	७
३५	२६	२	७	१२	३१	१	१
२१	५४	५७	७	१४	४२	१३	१३
५८	३९	९०	३	७३	५	३	३
३८	२	४१	४९	३३	२९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. २	ज्येष्ठा ४	पू.फा. १	मूल ४	चित्रा २	स्वाती ४	कृत्ति. ४	अनु. २

कृ. सूर्योदये

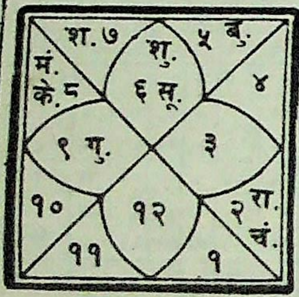

लोक भविष्य—इस मास में पांच मंगलवार हैं। अमावस भी मंगलवारी है, वरिष्ठ शासकों को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी से जनता में असन्तोष व्याप्त हो। कहीं खड़ी फसल को हानि पहुंचे। चोरी ठगी की घटनाएं अधिक हों, चोर बाजारी आदि अनैतिक कार्यों को बढ़ावा मिले। लेकिन शासक स्थिति पर नियन्त्रण पाने में सफल रहेंगे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षा- रम्भ में रेशम, रुई, कपास, सूत, अनाज, धातु, तेल, तिलहन में तेजी रहेगी। २० सितम्बर के लगभग सोना, चान्दी में घटा बढ़ी एवं गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी का वातावरण बनेगा।

कृ. सूर्योदये

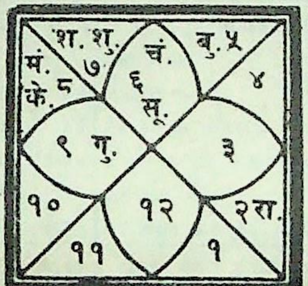

आश्विन कृ. ३० मं., इष्ट ५८।२							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	४	८	६	६	१	७
९	००	२७	१०	६	२०	६	६
२६	३	४०	३७	४६	१२	३८	३८
२७	२८	५२	२५	४५	२८	५७	५७
५८	४०	४७	५	७३	६	३	३
५१	७	१६	१	२६	१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	मूल १	उ.फा. १	मूल ४	स्वाती १	विशा. १	कृत्ति. ३	अनु. १

आकाश लक्षण—इस पक्ष में सिक्किम, भूटान, शिलांग, कोंकण, गोआ में वर्षा के योग हैं।
शकुन विचार—आश्वि. कृ. एकादशी-द्वादशी को यदि मेघ गरजें बिजली चमके तो आगे अनाज में तेजी आएगी।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, आश्विन शुक्ल पक्ष १३ — (२६ सित. से ९ अक्तू. सन् १९८४ ई.), द. अ., गो., शरद् ऋतु,

ग्रह-दर्शनः–बुध अस्त है। सायं गु. मं. याम्योत्तर वृत्तासन्न, शनि एवं शुक्र पश्चिम में परस्पर आसन्न दीखेंगे।

वि. मा. घ.	वि. मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. आश्विन	अं. सित.	श. आश्विन	मु. जिलहिज	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५६	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय
२९	४६	२	बु.	४७	१०	ह.	३ (४६)	५२ (५९)	ब्र.	५ (५४)	३५ (२७)	बा.	२१	४८	११	२६	४	२९	तु.३०।२५	६	१७	६	१२	५	९	२८	२४	चन्द्रदर्शन मु. ३०, सूर्य हस्त में ३२।१५
२९	४२	३	गु.	३९	०	स्वा	५०	५४	वै.	४५	५८	तै.	१३	५	१२	२७	५	मु.१	तुला	६	१८	६	१०	५	१०	२७	१६	बुध कन्या में.१५।४२, मुहर्रम (१४०५ हिजरी) मु. प्र.
२९	३८	४	शु.	३२	१३	वि.	४६	२४	वि.	३७	४५	ब.	५	३६	१३	२८	६	२	वृ.३२।३१	६	१९	६	९	५	११	२६	१२	भ. ५।३६ उ. ३२।१३ या.,
२९	३३	५	श.	२७	४	अनु.	४३	३५	प्री.	३०	५३	बा.	२७	४	१४	२९	७	३	वृश्चिक	६	१९	६	८	५	१२	२५	८	उपाङ्ग ललिता व्र.,
२९	२९	६	र.	२३	४८	ज्ये.	४२	३९	आ.	२५	३१	तै.	२३	४८	१५	३०	८	४	ध.४२।३९	६	२०	६	७	५	१३	२४	७	
२९	२४	७	चं.	२२	२९	मू.	४३	३९	सौ.	२१	४४	ब.	२२	२९	१६	अ.१	९	५	धनु.	६	२०	६	५	५	१४	२३	८	भ. २२।२९ उ., ५२।४६ या., सरस्वती आवाहन, अक्तूबर प्र.,
२९	१९	८	मं.	२३	३	पू.षा.	४६	२३	शो.	१९	२५	ब.	२३	३	१७	२	१०	६	धनु.	६	२१	६	४	५	१५	२२	११	बुध हस्त में ४७।२५, श्रीदुर्गाष्टमी महानवमी, A B
२९	१५	९	बु.	२५	१७	उ.षा.	५०	४२	धृति	१८	२४	कौ.	२५	१७	१८	३	११	७	म.२।२८	६	२२	६	३	५	१६	२१	१५	सरस्वती के लिए बलिदान, नवरात्र समाप्त,
२९	११	१०	गु.	२८	५९	श्र.	५६	१५	सु.	१८	३२	ग.	२८	५९	१९	४	१२	८	मकर	६	२२	६	२	५	१७	२०	२२	विजयादशमी (दशहरा), अपराजितापूजन, सीमोल्लंघन, B
२९	७	११	शु.	३३	४४	धनि.	६०	०	धृ.	१९	३०	ब.	१	२१	२०	५	१३	९	कुं.२९।२७	६	२३	६	०	५	१८	१९	३०	भ. १।२१ उ., ३३।४४ या., पंचक प्रा. २९।२७, पापांकुशा C
२९	२	१२	श.	३९	१५	धनि.	२	३८	शू.	२१	५	ब.	६	३०	२१	६	१४	१०	कुम्भ	६	२३	५	५९	५	१९	१८	४१	शुक्र विशा. में ४६।३०,
२८	५७	१३	र.	४५	१५	शत.	९	४१	गं.	२३	५	कौ.	१२	१५	२२	७	१५	११	कुम्भ	६	२४	५	५८	५	२०	१७	५२	प्रदोष व्र.,
२८	५३	१४	चं.	५१	२५	पू.भा.	१७	२	वृ.	२५	१७	ग.	१८	२०	२३	८	१६	१२	मी.०।१२	६	२५	५	५७	५	२१	१७	६	भ. ५१।२५ उ.,
२८	४८	१५	मं.	५७	३५	उ.भा.	२४	२७	ध्रु.	२७	३१	वि.	२४	३०	२४	९	१७	१३	मीन	६	२५	५	५५	५	२२	१६	२३	भ. २४।३० या., सत्यव्र. कोजागरी व्र. शरत्पूर्णिमा, महर्षि D

A महाष्टमी, सरस्वतीपूजन, जन्मदिन म. गांधी, मेला श्री ज्वालामुखी व तारादेवी (हि.प्र.), B सरस्वती विसर्जन, C एकादशी व्र.स., भरतमिलाप, D श्रीवाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक-स्नान प्रारम्भ,

आश्विन शु. ८ मंगल, इष्ट ५७।५२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	८	६	६	१	७
१६	४	१०	११	१५	२०	६	६
१९	४७	१८	१५	२०	५५	१६	१६
८	१९	५४	५८	३३	४०	४२	४२
५९	४१	४७	६	७२	६	३	३
५	६	५५	९	२१	२१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

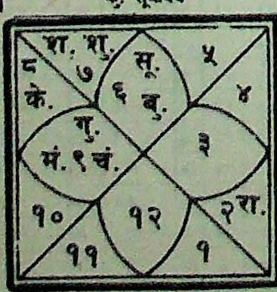

लोक भविष्य–इस पक्ष में शुक्र वेंकटेश युति, मंगल-नेपच्यून-युति एवं विशाखा के शनि का प्रभाव चीन, पाकिस्तान एवं ईराक-ईरान आदि यावन देशों के लिए नेष्ट है। प्रजा पीड़ा, अग्निभय, उपद्रवादि से हानि हो। मंहगाई से निर्धन वर्ग में विशेष असन्तोष दिखाई देगा। यान दुर्घटना से जन-धन हानि का समाचार मिलेगा। इस मास में पांच मंगलवार भी शासक वर्ग के समक्ष विषम समस्याओं को जन्म देंगे। **ग्रहचाल और बाजार का रुख**–पक्षा रम्भ में गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, कपास, रुई में मन्दे के बाद तेजी बने। २७ सित. को गेहूं, जौ, चना, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी आएगी। पक्षान्त में प्रायः सभी व्यापारिक-वस्तुओं में मन्दे का प्रभाव रहेगा।

कु. सूर्योदये

आश्विन शु. १५ मंगल, इष्ट ५७।४३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	८	६	६	१	७
२३	९	२२	१२	२३	२१	५	५
१३	३७	४२	२	५३	४०	५४	५४
२२	३८	३	१६	३२	५८	२७	२७
५९	४१	१०३	७	७३	६	३	३
१८	५७	३०	१३	१३	३७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण--यहां मंगल एवं गुरु दोनों का एक राशि में आ जाना वर्षा में कमी लाएगा। हि. प्र., शिलांग, आसाम में कहीं बूंदाबांदी के योग बनते हैं।

शकुन विचार–यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के दिन बादल हों तो धान्य का स्टाक करने से आगे चैत्र में अच्छा लाभ मिलेगा।

२०४१, शाक १९०६, कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १४ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टा. उदय-कालिक | (१० से २४ अक्तू तक, सन् '८४ ई.), द. अ., गो., शरद्–हेमन्तऋतु,

मा घ.	मा प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. आश्विन	अं. अक्टू.	श. आश्विन	मु. मुहर्रम	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गृह-दर्शनः–बुध अस्त है। माय गुरु, मंगल पश्चिम कपाल में गव शुक्र, शनि पश्चिम में होंगे।
२८	४४	१	बु.	६०	०	रे.	३१	४७	व्या.	२९	४१	बा.	३०	३३	२५	१०	१८	१४	मे.३१।४७	६	२६	५	५४	५	२३	१५	४०	पचक स. ३१।४७, सूर्यचित्रा में ४।२२, बुधचित्रा में १९।४०,
२८	४०	१	गु.	३	३२	अ.	३८	४७	ह.	३	३५	कौ.	३	३२	२६	११	१९	१५	मेष	६	२७	५	५३	५	२४	१५	०	
२८	३५	२	शु.	९	२	भ.	४५	१६	व.	३३	०५	ग.	९	२	२७	१२	२०	१६	मेष	६	२७	५	५२	५	२५	१४	२३	भ. ४१।२८ उ.,
२८	३०	३	श.	१३	५५	कृ.	५०	५९	सि.	३४	०२	वि.	१३	५५	२८	१३	२१	१७	वृ.१।४२	६	२८	५	५१	५	२६	१३	४७	भ. १३।५५ या. करक चतुर्थी व्रत (करवा चौथ) A
२८	२५	४	र.	१७	५१	रो.	५५	३७	व्य.	३४	१०	बा.	१७	५१	२९	१४	२२	१८	वृष.	६	२८	५	४९	५	२७	१३	१३	बुध तुला में १४।२०, शुक्र वृश्चिक में ५८।२,
२८	२०	५	चं.	२०	३४	मृ.	५८	५८	व.	३३	२०	तै.	२०	३४	३०	१५	२३	१९	मि.२७।१७	६	२९	५	४८	५	२८	१२	४३	मंगल पू.षा. में १३।४२,
२८	१५	६	मं.	२१	४९	आ.	६०	०	प.	३१	१९	व.	२१	४९	का.१	१६	२४	२०	मिथुन	६	३०	५	४७	५	२९	१२	१३	भ. २१।४९ उ., ५१।३७ या., सं. सूर्य तुला में ४८।१०, B
२८	१०	७	बु.	२१	२४	आ.	०	४१	शि.	२७	५९	ब.	२१	२४	२	१७	२५	२१	क.४५।४५	६	३०	५	४६	६	०	११	४६	शुक्र अनु. में ४२।५, अहोई अष्टमी (पंजाब),
२८	६	८	गु.	१९	१४	पुन.	०/५९	४६/१	सि.	२३	१६	कौ.	१९	१४	३	१८	२६	२२	कर्क	६	३१	५	४५	६	१	११	२२	बुध स्वाती में १५।३८,
२८	२	९	शु.	१५	१७	आश्ले.	५५	५७	सा.	१७	७	ग.	१५	१७	४	१९	२७	२३	सि.५५।५७	६	३२	५	४४	६	२	१०	०	भ. ४२।२९ उ., गुरु पू.षा. १ में ५१।५८,
२७	५८	१०	श.	९	४१	म.	५०	५७	शु.	९	२८	वि.	९	४१	५	२०	२८	२४	सिंह	६	३३	५	४३	६	३	१०	३९	भ. ९।४१ या., रमा एकादशी व्र. स्मा.,
२७	५४	११	र.	२	४२	पू.फा.	४४	५८	शु.	१/५१	२/४०	बा.	२	४२	६	२१	२९	२५	क.५८।१६	६	३३	५	४२	६	४	१०	२२	रमा एकादशी व्र. वै., गोवत्स द्वादशी
अवम		१२	र.	५४	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२७	५०	१३	चं.	४५	४९	उ.फा.	३८	१०	ऐ.	४१	२३	ग.	२०	१३	७	२२	३०	२६	कन्या	६	३४	५	४१	६	५	१०	५	भ. ४५।४९ उ., सोमप्रदोष व्र., **धनत्रयोदशी**, C
२७	४५	१४	मं.	३६	४१	ह.	३०	५८	वै.	३०	५५	वि.	११	१५	८	२३	का.१	२७	तु.५७।२५	६	३५	५	४०	६	६	९	५२	भ. ११।१५ या., सूर्यस्वाती में ३०।१२, सूर्य सायन D
२७	४०	३०	बु.	२७	३९	चि.	२३	५१	वि.	२०	३२	च.	२	१०	९	२४	२	२८	तुला	६	३५	५	३९	६	७	९	४१	**दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन** (देखें पृ. ५९-६०), E

A (चन्द्रोदय रात्रि ७ घं. ५३ मि.), श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, B मु. १५, पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पहिले, C यम के लिए दीपदान, **नरक चतुर्दशी** (देखें पृ. ५९-६०) D वृश्चिक में ११।४२, हेमन्त ऋतु प्र., श्री हनुमान जयन्ती, शाक कार्तिक प्र., E श्री महावीर निर्वाण दिन (जैन),

कार्ति. कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ५७।२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	८	६	८	७	६	१	७
२	१५	७	१३	४	२२	५	५
८	५९	४८	१२	५१	४१	२५	२५
२६	११	१७	१८	४९	४२	५०	५०
५९	४२	९७	८	७३	६	३	३
३८	५५	२०	२८	३	५३	११	११
	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
चित्रा ३	पू.षा. १	स्वा. १	मूल ४	अनु. १	विशा. १	कृत्ति. ३	अनु. १

कृ. सूर्योदये

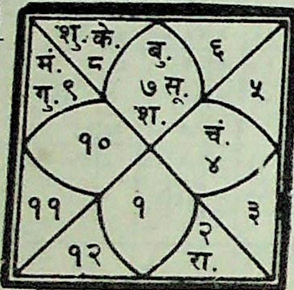

लोक भविष्य–पीछे शुक्र, शनि एवं १४ अक्तू. को गुरु मंगल की युति है। व्यापारी वर्ग, बुद्धि जीवी वर्ग एवं मज़दूर वर्ग में असन्तोष बढ़ेगा। कहीं हड़ताल, घेराव आदि घटनाएं होंगी। शनि की मंगल पर दृष्टि है यावन देश में कहीं तानाशाही के विरुद्ध आन्दोलन को गति मिलेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१० से १३ अक्तूबर तक रुई, सूत, सोना, चान्दी, गुड़, घी, अलसी, खाण्ड तिल, गेहूं, चना, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा में सामान्यतः तेजी का रुख रहेगा, १४ अक्तू. के बाद जोरदार तेजी आएगी, लाभ ले सकते हैं।

ध्यान रहे–यह पक्ष विशेष तेजी या विशेष मन्दी प्रधान रहेगा, फिर भी बाजार का रुख देखकर ही काम करें परन्तु अधिकांश वस्तुओं में तेजी के योग हैं।

कृ. सूर्योदये

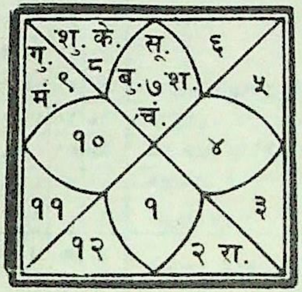

कार्त्ति. कृष्ण ३० बुध, इष्ट ५७।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	८	६	८	७	६	१	७
८	२०	१७	१४	१२	२३	५	५
६	१८	२३	५	९	२३	६	६
४५	०५	२६	३	५०	२४	४५	४५
५९	४२	९३	९	७२	७	३	३
५२	२८	५६	१४	५५	२	११	११
	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
स्वा. १	पू.षा. ३	स्वा. ४	पू.षा. १	अनु. ३	विशा. २	कृत्ति. ३	अनु. १

आकाश लक्षण–गुरु एवं मंगल एक राशि में हैं अतः बहुत स्थानों पर सूखा रहे गर्मी में कमी न आए। ऋतु परिवर्तन सा प्रतीत होगा।
शुकन विचार–कार्तिक कृ. एकादशी द्वादशी को यदि मेघ गरजें अथवा बिजली चमके तो आगे अनाजों में तेजी आती है।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष १५

दि. मा. घ.	दि. मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. कार्ति.	तारीखें अं. अक्टू.	तारीखें श. कार्ति.	तारीखें मु. मुह.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	(२५ अक्तू. से ८ नव. तक सन् ८४ ई.), द. अ., गो., हेमन्त ऋतु, ग्रह दर्शन–बुध ३१ अक्तूबर को पश्चिम में उदित होगा। शनि १५ अक्तू. को अस्त होगा। सायं गुरु, शुक्र, मंगल पश्चिम कपाल में दीखेंगे।
२७	३५	१	बु.	१९	८	स्वा.	१७	१३	प्री.	१०	३०	ब.	१९	८	१०	२५	३	२९	वृ.५७।५५	६	३६	५	३८	६	८	९	३०	**शनि अस्त १६।०, अन्नकूट, गोबर्धन पूजा,** A
२७	३०	२	शु.	११	३३	वि.	११	२९	आ.	१ / ५२	१० / ५०	कौ	११	३३	११	२६	५	३०	वृश्चिक	६	३७	५	३७	६	९	९	२३	चन्द्रदर्शन मु. ३०, बुध विशा. में ३७।२८, यमद्वितीया **भाईदूज**, B
२७	२६	३	श.	५	१९	अनु.	७	६	शो	४५	५६	ग.	५	१९	१२	२७	५	स.१	वृश्चिक	६	३८	५	३६	६	१०	९	१८	भ. ३३।१ उ., सफर मु. प्रा.,
२७	२२	४	र.	०	४३	ज्ये.	४	२१	अ.	४०	२२	वि.	०	४३	१३	२८	६	२	ध.४।२१	६	३८	५	३५	६	११	९	१४	भ. ०।४३ या., शुक्र ज्येष्ठा में ३९।३५,
अवम		५	र.	५८	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
२७	१८	६	चं.	५७	१६	मू.	३	२६	सु.	३६	२३	कौ	२७	४०	१४	२९	७	३	धनु	६	३९	५	३४	६	१२	९	१२	
२७	१४	७	मं.	५८	३२	पू.षा.	४	३१	धृ.	३३	५८	ग.	२७	५४	१५	३०	८	४	म.२०।१६	६	४०	५	३३	६	१३	९	१३	भ. ५८।३२ उ.,
२७	१०	८	बु.	६०	०	उ.षा.	७	२९	शू.	३२	५९	वि.	३०	३	१६	३१	९	५	मकर	६	४१	५	३२	६	१४	९	१४	भ. ३०।३ या., **बुध पश्चिम में उदित १५।२, गोपाष्टमी,**
२७	६	८	गु.	१	३४	श्रव.	१२	७	गं	३३	१५	ब.	१	३४	१७	न.१	१०	६	कुं.४५।८	६	४१	५	३१	६	१५	९	१७	पंचक प्रा. ४५।८, नवम्बर प्रा.,
२७	२	९	शु.	६	८	ध.	१८	९	वृ.	३४	२९	कौ.	६	८	१८	२	११	७	कुम्भ	६	४२	५	३०	६	१६	९	२३	मंगल उ. षा में ४०।२५, **बुध वृश्चिक में ९।५३,** C
२६	५८	१०	श.	११	४४	श.	२५	५	ध्रु.	३६	२१	ग.	११	४४	१९	३	१२	८	कुम्भ	६	४३	५	२९	६	१७	९	२९	भ. ४४।५० उ.,
२६	५४	११	र.	१७	५६	पू.भा.	३२	२९	व्या.	३८	३३	वि.	१७	५६	२०	४	१३	९	मी.१५।३८	६	४४	५	२८	६	१८	९	३८	भ. १७।५६ या., प्रबोधिनी एकादशी व्र. स., चातुर्मास्य व्रत. D
२६	५०	१२	चं.	२४	२०	उ.भा.	४०	१	ह.	४०	४८	बा.	२४	२०	२१	५	१४	१०	मीन	६	४४	५	२८	६	१९	९	४८	सूर्य विशा. में ५०।५, प्रबोधोत्सव, **तुलसीविवाह,**
२६	४५	१३	मं.	३०	३०	रे.	४७	१३	व.	४२	४७	तै.	३०	३०	२२	६	१५	११	मे.४७।१३	६	४५	५	२७	६	२०	१०	०	पंचक स. ४७।१३, भौमप्रदोष व्र., वैकुण्ठ चतुर्दशी, E
२६	४०	१४	बु.	३६	९	अ.	५३	५४	सि.	४४	२२	ग.	३	२०	२३	७	१६	१२	मेष	६	४६	५	२६	६	२१	१०	१३	भ. ३६।९ उ., **मंगल मकर में ११।२५,**
२६	३६	१५	गु.	४१	६	भ.	५९	५०	व्य.	४५	२३	वि	८	३८	२४	८	१७	१३	मेष	६	४७	५	२५	६	२२	१०	२८	भ. ८।३८ या., शुक्र मूल धनु ३९।४२, भीष्म पंचक F

A (देखें पृष्ठ ५९-६०) बलि पूजा, गोक्रीडा. B (देखें पृ. ५९।६०), विश्वकर्मा पूजा, C **अक्षय नवमी**, कूष्माण्डनवमी. D नियमादि समाप्त, बुध अनु. में २३।४५, **भीष्मपंचक प्र.**, E (देखें पृष्ठ ५९-६०).
F समाप्त, **कार्तिक स्नान समाप्त**, सत्य व्र. **श्री गुरु नानक जयन्ती**, मेला पुष्कर (राज.), रामतीर्थ (पं.), कपालमोचन (हर.)

कार्त्ति. शुक्ल ८ बुध, इष्ट ५७।३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १५ ६ १९	८ २५ २४ ४	६ २८ १० १४	८ १५ १२ ९	७ २० ३५ ४४	६ २४ १२ ५६	१ ४ ४४ २९	७ ४ ४४ २९
६० ४	४४ २	९० २८	१० ३	७२ ४४	७ ८	३ ११	३ ११
	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
[illegible]	पू.षा.	विशा.	पू.षा.	[illegible]	विशा.	कृत्ति.	अनु.

क. सूर्योदये

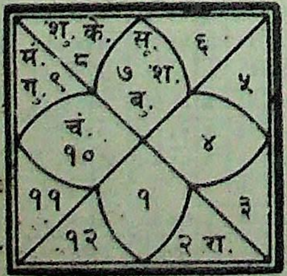

लोक भविष्य–इस पक्ष में सूर्य- वेंकटेश, बुध-शनि, शुक्र-यूरेनस एवं बुध- केतु की युति का प्रभाव विश्व के प्रमुख-राष्ट्रों की राजनीति पर स्पष्ट-रूप से दिखाई देगा, जिससे विश्व का व्यापारी वर्ग एवं राजनीतिज्ञ वर्ग प्रभावित होगा। कहीं प्रधान नेता के विरुद्ध आवाज उठेगी। कहीं सैनिक शासक को विवश होकर पदत्याग के लिए बाधित होना पड़े, या कहीं विशिष्ट सेनाधिकारी व नेता का पद रिक्त हो। सीमाप्रान्तों पर सैनिक हलचल रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षा–रम्भ के तीन दिनों में रुई, चान्दी, अनाजों, तेल, तेलबीयां आदि में मन्दे का वातावरण रहेगा। २८ अक्तु. से कुछ तेजी का ट्रेण्ड बनेगा। २ नव. एवं ६ नव. को विचारपूर्वक काम करें, धान्य, घी, तेल, सरसों, रुई, उड़द, चान्दी एवं सोना, गुड़, खाण्ड में झटके से तेजी या मन्दी बनेगी, हमारे विचार में तेजी रहे।

आकाश-लक्षण–उ.षा. में मंगल आ रहा है–अतः हवा से मेघ उड़े–वर्षा में रुकावट हो। कुछ भागों में साधारण वर्षा हो।

शकुन विचार–कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन यदि सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो तिल तेल तेज होंगे, स्टाक करने पर आगे अच्छा लाभ मिले।

क. सूर्योदये

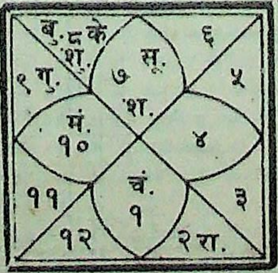

कार्त्ति. शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ५६।४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २३ ७ ३१	९ १ १८ १०	७ १० ० २०	८ १६ ३५ २९	८ ० २० ३८	६ २५ १० १२	० [illegible] १९ ३	७ ४ १९ ३
६० १६	४४ ३३	८६ २४	१० ५३	७२ २६	७ १०	३ ११	३ ११
	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
विशा. १	उ.षा. २	अनु. ३	पू.षा. १	मूल. १	विशा. २	कृत्ति. ३	अनु. १

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(९ से २२ नवम्बर तक सन् ८४ ई.), द. अ., गो., हेमन्त ऋतु,

ग्रह दर्शन:–शनि अस्त है। साय बुध पश्चिम में एव गुरु-शुक्र पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न होंगे। इनसे काफी ऊपर मंगल दीखेगा।

वि. मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			तारीखें				चन्द्र संचार	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़				उदय-कालिक स्पष्टसूर्य				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३३	१	शु.	४५	७	कृ.	६०	०	व.	४५	४२	बा.	१३	७	२५	९	१८	१४	वृ.१६।५	६	४८	५	२५	६	२३	१०	४६	गुरु पू. षा. २ में २१।४०
२६	२९	२	श.	४८	१०	कृ.	४	५०	प.	४५	१७	तै.	१६	३८	२६	१०	१९	१५	वृष	६	४९	५	२४	६	२४	११	४	
२६	२५	३	र.	५०	९	रो.	८	५४	शि.	४४	३	व.	१९	९	२७	११	२०	१६	मि.४०।२४	६	४९	५	२३	६	२५	११	२४	भ. १९।९ उ., ५०।९ या.,
२६	२२	४	चं.	५०	५६	मृ.	११	५४	सि.	४१	५४	ब.	२०	३३	२८	१२	२१	१७	मिथुन	६	५०	५	२३	६	२६	११	४७	श्रीगणेश चतुर्थी व्र.
२६	१९	५	मं.	५०	३२	आ.	१३	४४	सा.	३८	५०	कौ.	२०	४४	२९	१३	२२	१८	क.५९।१५	६	५१	५	२२	६	२७	१२	११	बुध ज्येष्ठा में ३८।१५,
२६	१६	६	बु.	४८	५४	पुन.	१४	२५	शु.	३५	४८	ग.	१९	४३	३०	१४	२३	१९	कर्क	६	५२	५	२२	६	२८	१२	३७	भ. ४८।५४ उ., **जन्मदिन श्री जवाहर लाल नेहरु**, बालमेला,
२६	१३	७	गु.	४५	५७	पु.	१३	५०	श	२९	४४	वि.	१७	२६	मा.१	१५	२४	२०	कर्क	६	५३	५	२१	६	२९	१३	५	भ. १७।२६ या., **सं. सूर्य वृश्चिक में** ४६।३२, मु. १५ A
२६	१०	८	शु.	४१	४२	आश्ले	१२	०	ब्र.	२३	४२	बा.	१३	५३	२	१६	२५	२१	सि.१२।०	६	५४	५	२१	७	०	१३	३५	**श्री महाकाल भैरवाष्टमी** (कालाष्टमी) [वि. मु.-मघा]
२६	६	९	श.	३६	३४	म.	९	३	ऐं	१६	४५	तै	९	११	३	१७	२६	२२	सिंह	६	५४	५	२०	७	१	१४	६	शहीदी दिन लाला लाजपतराय,
२६	३	१०	र.	३०	१९	पू.फा.	५	३	वै.	८	५७	व.	३	२६	४	१८	२७	२३	क.१८।५०	६	५५	५	२०	७	२	१४	४०	भ. ३।२६ उ., ३०।१९ या.,
२५	५९	११	चं.	२३	३०	उ.फा.	० / ५४	१० / ४०	वि.	० / ५९	२७ / १४	बा.	२३	३०	५	१९	२८	२४	कन्या.	६	५६	५	१९	७	३	१५	१५	सूर्य अनु में ४।४२, शुक्र पू. षा में ४३।३५, उत्पन्ना B
२५	५६	१२	मं.	१५	५३	चि.	४८	५८	आ.	४२	१७	तै.	१५	५३	६	२०	२९	२५	तु.२१।५३	६	५७	५	१९	७	४	१५	५०	**मंगल श्रवण में** ३४।३०, **भौम प्रदोष व्र.**,
२५	५४	१३	बु.	८	१३	स्वा.	४३	११	सौ.	३३	०	व	८	१३	७	२१	३०	२६	तुला	६	५८	५	१८	७	५	१६	२९	भ. ८।१३ उ., ३४।२७ या., शनि विशा. ३ में २८।८,
२५	५२	१४	गु.	०	४१	विशा	३७	४७	शो.	२३	५८	श.	०	४१	८	२२	मा.१	२७	वृ.२४।८	६	५९	५	१८	७	६	१७	१०	सूर्य सायन धनुमें ४।१५, **शाकमार्गशीर्ष प्रा., मेला पुरमण्डल**, C
अब	मा	३०	गु.	५३	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

A पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, B एकादशी व्र. स. [वि. मु.-हस्त] C देविका स्नान (जम्मू)

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५६।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १ १० ३३	९ ७ १६ ११	७ २१ १० ४९	८ १८ ५ ७	८ ९ ५९ ९	६ २६ ७ ३७	१ ३ ५३ ३७	७ ३ ५३ ३७
६० ३१	४५ ०	१९ ३०	११ ३६	७२ ९	७ १०	३ ११	३ ११
	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
विशा. ४	उ.षा. ४	ज्ये. २	पू.षा. २	मूल ३	विशा. २	कृति. ३	मघा १

क. सूर्योदये

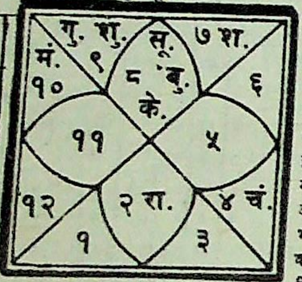

लोक भविष्य–सूर्य-शनि, सूर्य-केतु, शुक्र नेपच्यून एवं बुध यूरेनस की युति इस पक्ष में हो रही है, गुरुवारी अमावस एवं संक्रान्ति होने से खप्पर योग बनता है, अतः शासक एवं शासित में, धनिक एवं गरीब में मतभेद बढ़ेगा। कहीं राजविग्रह-अराजकता से प्रजा में भय व्याप्त हो। उत्पात, रोगभय आदि अशुभफल विशेषतः फ्रांस, यूरोप, अफ्रीका एवं अरब राष्ट्रों में होंगे। मंगल श्रवण में आकर बेहद मंहगाई करेगा जिससे दलित-निर्धन वर्ग में भयंकर आक्रोश बढ़ेगा। **"श्रवणर्क्षे यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित् समाश्रित।" अन्नं समर्घता याति गोधूमश्च विशेषतः।**

क. सूर्योदये

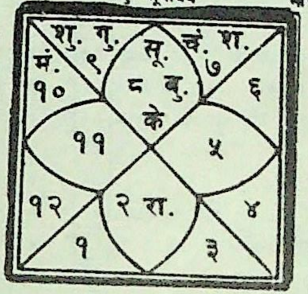

मार्गशीर्ष कृष्ण १४ गुरु, इष्ट ५६।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
७ ७ १४ ३	९ ११ ४६ ५१	७ २८ ४३ ३४	८ १९ १५ ५९	८ १७ ११ १२	६ २६ ५० २८	१ ३ ३४ ३२	७ ३ ३४ ३२
६० ४२	४५ १६	६८ ८	१२ ६	७१ १०	७ ६	३ ११	३ ११
मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.	अ.
अनु. २	श्रव. १	ज्ये. ४	पू.षा. २	पू.षा. २	विशा. ३	कृति. ३	मघा १

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में रुई एवं सोना चान्दी आदि धातुओं व अनाजों में मन्दे का वातावरण रहे। १३ नवं. से रुई, तांबा, चांदी, सोना व ऊनी वस्त्रों में क्षुद्रधान्यों में तेजी का रुख रहेगा। १९ नवं के लगभग मूंग, मोठ, तिल, तेल, सरसों में कुछ मन्दी बने। २० नवं. को अनाजों में अच्छी तेजी के योग हैं।

आकाश लक्षण–हवा से बादल छिन्न-भिन्न हो जाएं। म. प्र., हि. प्र. आसाम में कहीं बूंदाबांदी हो।

शकुन विचार–यदि मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी एवं अमावस को सूर्य बादलों से ढका रहे तो अनाजों में शीघ्र ही अच्छी तेजी आती है।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७ तारीखें

(२३ नव. से ८ दिस. तक सन् ८४ ई.), द. अ., गो., हेमन्त ऋतु,

ग्रह-दर्शन:—शनि २८ नवम्बर को उदित होगा। बुध ८ दिसम्बर को पश्चिम में अस्त होगा। सायं पश्चिम कपाल में मंगल, शुक्र गुरु दीखेंगे।

वि. भा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४९	१	शु.	४७	३४	अनु.	३३	९	अ.	१५	२९	किं.	२०	४१	९	२३	२	२८	वृश्चिक	७	०	५	१८	७	७	१७	५०	
२५	४६	२	श.	४२	३५	ज्ये.	२९	३५	सु.	७	४८	बा.	१५	५	१०	२४	३	२९	ध.२९।३५	७	०	५	१७	७	८	१८	३३	चन्द्रदर्शन मु. १५, बुध मूलधनु में ३।२८, [वि. मु.-मूल]
२५	४३	३	र.	३९	८	मू.	२७	२६	धृ.	१ ५५	९ ५२	तै.	१०	५१	११	२५	४	र.१	धनु	७	१	५	१७	७	९	१९	१८	रबी उल-अव्वल मु. प्रा., [वि. मु.-मूल]
२५	४०	४	चं.	३७	२७	पू.षा.	२७	०	गं.	५१	५४	व.	८	१७	१२	२६	५	२	म.४२।२८	७	२	५	१७	७	१०	२०	३	भ. ८।१७ उ., ३७।२७ या., गुरु पू.षा. ३ में ३२।४७, A
२५	३८	५	मं.	३७	३९	उ.षा.	२८	५२	वृ.	४९	२६	ब.	७	३३	१३	२७	६	३	मकर	७	३	५	१७	७	११	२०	५०	राहु कृत्ति २ मे केतु विशा. ४ में ३०/२८, B
२५	३५	६	बु.	३९	४६	श्रव	३१	३५	ध्रु.	४८	२६	कौ.	८	४२	१४	२८	७	४	मकर	७	४	५	१७	७	१२	२१	३८	शनि उदित ६।१७, चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी. [वि. मु.-धनि.]
२५	३३	७	गु.	४३	३९	धनि	३६	३१	व्या.	४८	४३	ग.	११	४३	१५	२९	८	५	कु.४।३	७	५	५	१६	७	१३	२२	२७	भ. ४३।३९ उ., पंचक प्रा. ४।३, मित्र सप्तमी, C
२५	३०	८	शु.	४८	५३	श.	४२	४८	ह.	४९	५९	वि.	१६	१६	१६	३०	९	६	कुम्भ	७	५	५	१६	७	१४	२३	१७	भ. १६।१६ या., शुक्र उ.षा. में ५२।४०, नेपच्यून D
२५	२८	९	श.	५५	३	पू.भा.	५०	०	व.	५१	५७	बा.	२१	५८	१७	दि.१	१०	७	मी.३३।१२	७	६	५	१६	७	१५	२४	८	दिसम्बर प्रारम्भ, [वि. मु.-उ. भा.]
२५	२६	१०	र.	६०	०	उ.भा.	५७	३२	सि.	५४	९	तै.	२८	१६	१८	२	११	८	मीन	७	७	५	१६	७	१६	२५	०	सूर्य ज्येष्ठा में १४।४८, [वि. मु.-उ. भा.]
२५	२४	१०	चं.	१	३०	रेव.	६०	०	व्य.	५६	१६	ग.	१	३०	१९	३	१२	९	मीन	७	८	५	१६	७	१७	२५	५४	भ. ३४।३९ उ., शुक्र मकर में ४१।२, सूर्य ज्येष्ठा २ में,
२५	२२	११	मं.	७	४८	रेव.	४	५३	वरी	५७	४५	वि.	७	४८	२०	४	१३	१०	मे.४।५३	७	९	५	१६	७	१८	२६	४७	भ. ७।४८ या., पंचक स. ४।५३, बुध वक्री ४२।४८, E
२५	२०	१२	बु.	१३	२३	अ.	११	३७	प.	५८	४५	बा.	१३	२३	२१	५	१४	११	मेष	७	१०	५	१६	७	१९	२७	४२	प्रदोष व्र.,
२५	१८	१३	गु.	१७	५३	भ.	१७	२०	शि.	५८	४६	तै.	१७	५३	२२	६	१५	१२	वृ.३३।२८	७	१०	५	१६	७	२०	२८	३८	
२५	१६	१४	शु.	२१	९	कृ.	२१	५२	सि.	५७	४५	व.	२१	९	२३	७	१६	१३	वृष	७	११	५	१६	७	२१	२९	३४	भ. २१।९ उ., ५२।६ या., सत्य व्र., श्री दत्त जयन्ती, F
२५	१४	१५	श.	२३	३	रो.	२५	५	सा.	५५	३५	ब.	२३	३	२४	८	१७	१४	मि.५६।४	७	१२	५	१७	७	२२	३०	३१	मंगल शनि में १०।२, बुध पश्चिम में अस्त ३७।१२, G

A [वि. मु.-उ. षा.], B नागपूजा, शहीदी दिन श्री गुरु तेग बहादुर जी, [वि. मु.-उ. षा.], C [वि. मु.-धनि.], D मूल ३ में वेंकटेश (ज्यूटी) स्वाती १ में, F श्रीगीता जयन्ती, मोक्षदा एकादशी व्र. स., [वि. मु.-अश्वि.], F पिशाचमोचन श्राद्ध, G [वि. मु.-रोहि.],

मार्गशीर्ष शु. ८ शुक्र, इष्ट ५६।२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	८	८	८	६	१	७
१५	१७	६	२०	२६	२७	३	३
२०	४९	०	५४	४४	४६	९	९
४	५५	१६	४३	१	४८	६	६
६०	४५	३०	१२	७१	६	३	३
५०	३२	६	३९	१६	५७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

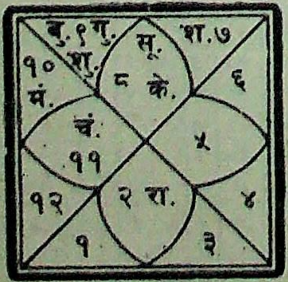

लोक भविष्य—२५ नव. को गुरु-शुक्र- युद्ध में शुक्र पराजित होता है।—"शुक्रे बृहस्पति जिते यायी श्रेष्ठो विनाशमुपयाति। ब्रह्म-क्षत्र विरोधः सलिलं च न वासवस्त्यजति।।" प्रधान नेता, वरिष्ठ व्यक्ति के निधन व उपदस्थ होने का योग है। बंगाल, बिहार उड़ीसा, महाराष्ट्र आदि मे प्राकृतिक प्रकोप किंवा किसी समस्या विशेष को लेकर उपद्रव हानि होगी। किसी देश मे शासक के विरुद्ध विद्रोह खड़ा हो एवं शासक को पद त्याग करना पड़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षा- रम्भ में चान्दी, सोना, रुई, कपास में थोड़ी मन्दी आकर तेजी आएगी। सरसों, तेल, मूंगफली में अच्छी तेजी बने। ३ दिस. से शेयर गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि सब अनाजों में तेजी आएगी। ४ दिस. के लगभग रुई, चान्दी, सूखा मेवा में अच्छी तेजी का योग है। पक्षान्त में चान्दी, में झटके से मन्दा बनेगा।

कु. सूर्योदये

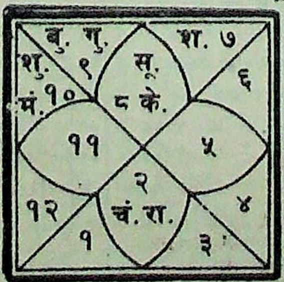

मार्गशीर्ष शु. १५ शनि, इष्ट ५५।४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	८	८	९	६	१	७
२३	२३	५	२२	६	२८	२	२
२७	५४	३८	३७	११	४१	४३	४३
१०	४९	२९	३३	५५	४०	४०	४०
६०	४५	५०	१३	७०	६	३	३
५७	४३	५३	७	३४	४३	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	अस्त	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में वर्षा में कमी रहेगी। हवा का जोर रहे, धूलि की वर्षा हो।

शकुन विचार—यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र में बादल गरजें तो जनता में रोग से हानि हो। आधे आकाश में इन्द्रधनुष दीखे तो वर्षा अच्छी होगी, अनाज का स्टाक न करें।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, **पौष कृष्ण पक्ष १८**

(९ से २२ दिस. तक सन् ८४ ई.), द. उ. अ. द. गो., है. शि. ऋतु,

ग्रह-दर्शनः—बुध २० दिस. को पूर्व में उदित होगा। प्रातः शनि को पूर्व में देखें। सायं मंगल, गुरु, शुक्र को पश्चिम कपाल में देखें।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१२	१	र.	२३	३८	मृ.	२७	३	शु.	५२	४०	कौ.	२३	३८	२५	९	१८	१५	मिथुन	७	१३	५	१७	७	२३	३१	३०	[वि. मु.-मृग.],
२५	१०	२	चं.	२३	१	आ.	२७	५२	शु.	४८	४५	ग.	२३	१	२६	१०	१९	१६	मिथुन	७	१३	५	१७	७	२४	३२	२९	भ. ५२।१० उ.,
२५	८	३	मं.	२१	१९	पुन.	२७	३७	ब्र.	४४	१	वि.	२१	१९	२७	११	२०	१७	क.१२।४१	७	१४	५	१७	७	२५	३३	२९	भ. २१।१९ या., श्री गणेश चतुर्थी व्र.
२५	७	४	बु.	१८	४१	पु.	२६	२९	ऐं.	३८	३७	बा.	१८	४१	२८	१२	२१	१८	कर्क	७	१५	५	१७	७	२६	३४	३१	गुरु पू. षा. ४ में ९।८, शुक्र श्रवण में ९।२५,
२५	६	५	गु.	१५	१७	आश्ले	२४	३७	वै.	३२	३९	तै.	१५	१७	२९	१३	२२	१९	सि.२४।३७	७	१५	५	१८	७	२७	३५	३२	व. बुध ज्येष्ठ वृश्चिक में ५४।४०,
२५	५	६	शु.	११	१३	म.	२२	६	वि.	२६	१०	व.	११	१३	३०	१४	२३	२०	सिंह	७	१६	५	१८	७	२८	३६	३६	भ ११।१३ उ., ३८।५४ या.,
२५	४	७	श.	६	३५	पू.फा.	१९	४	प्री.	१९	१६	ब.	६	३५	पौ.१	१५	२४	२१	क.३३।१३	७	१७	५	१८	७	२९	३७	३९	सं. सूर्य मूल धनु में २१।५८, मु. ४५, पुण्य ५।५८ उ.,
२५	३	८	र.	१	३३	उ.फा.	१५	३९	आ.	१२	३	कौ.	१	३३	२	१६	२५	२२	कन्या	७	१७	५	१९	८	०	३८	४३	मंगल कुम्भ में ५४।२०,
अवम		९	र.	५६	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
२५	२	१०	चं.	५०	३६	ह.	११	५४	सौ.	४ ५७	३५ ६	व.	२३	२३	३	१७	२६	२३	तु.३९।५६	७	१८	५	१९	८	१	३९	४९	भ. २३।२३ उ., ५०।३६ या.,
२५	१	११	मं.	४४	५०	चि.	७	५७	अ.	४९	१५	ब.	१७	४३	४	१८	२७	२४	तुला	७	१९	५	१९	८	२	४०	५४	सफला एकादशी व्र. स.,
२५	०	१२	बु.	३९	१२	स्वा.	३	५८	सु.	४१	३४	कौ	१२	१	५	१९	२८	२५	वृ.४६।४३	७	१९	५	२०	८	३	४२	२	
२४	५९	१३	गु.	३३	४९	वि.	० ५६	७ ३०	धृ.	३४	८	ग.	६	३०	६	२०	२९	२६	वृश्चिक	७	२०	५	२०	८	४	४३	१०	भ. ३३।४९ उ., बुध पूर्व में उदित ३२।५५, शनि विशा. A
२४	५९	१४	शु.	२८	५७	ज्ये.	५३	४१	शू.	२७	७	वि.	१	२३	७	२१	३०	२७	ध.५३।४१	७	२०	५	२०	८	५	४४	१७	भ. १।२३ या., सूर्य सायन मकर में ३६।२७, उत्तरायण, B
२५	[illegible]	३०	श.	२४	५३	मू.	५१	४८	ग.	२०	४४	ना.	२४	५३	८	२२	पौ.१	२८	धनु	७	२१	५	२१	८	६	४५	२७	**शनैश्चरी अमावस, शक पौष प्रारम्भ,**

A ४ वृश्चिक में ५५।५५ प्रबोध व्र., B शिशर-ऋतु प्र.,

पौष कृ. ८ रवि, इष्ट ५५।३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	७	८	९	६	१	७
१	०	२५	२४	१५	२९	२	२
३५	०	५५	२३	३३	३४	१८	१८
१४	५९	२३	४५	३४	२९	१४	१४
६१ ४	४५ ४९	७२ ५	१३ २९	६९ ४१	७ २६	३ ११	३ ११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल. १	धनि. २	ज्ये. २	पू.भा. ४	श्रव. २	विशा. ३	कृति. २	विशा. ४

कु. सूर्योदये

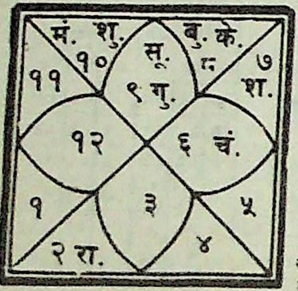

लोक भविष्य—इस मास में शनिवारी अमा. एवं संक्रान्ति है, माघ-फाल्गुन संक्रान्तियां क्रमशः रवि-मंगल को थीं, इस खप्पर योग का प्रभाव समूचे विश्व पर देखा जाएगा। कहीं युद्ध की ज्वाला भड़केगी। कहीं मानचित्र में परिवर्तन होंगे। मन्त्रिमण्डलों में इस मास में विशेष उलटफेर होंगे। पाकिस्तान, ईरान आदि में कहीं क्रान्ति के आसार बनकर विषम परिस्थिति बनेगी। खड़ी फसलों को भारी नुक्सान पहुंचेगा, प्राणियों को महाकष्ट एवं खाद्य वस्तुओं खूब तेजी बनेगी। आगे जनवरी (१९८५) के अन्त तक खप्पर योग का प्रभाव होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१३ दिस. के लगभग घी, तेल, गुड़, खाण्ड, चावल, सरसों, रुई, चान्दी तेज होंगे। बाद में कुछ मन्दा बनेगा। १६ दिस. को रुई, चान्दी में काफी घटा बढ़ी आएगी, गेहूं आदि अनाजों एवं गुड़, खाण्ड, सोना, रुई में तेजी बनेगी। २० दिस. को गेहूं, चना, मसरी, तिल, तेल, सरसों, तोरिया, घी, आजवायन, मेथी, रुई में खास तेजी आएगी, बाजार का रुख देखकर काम करें, बाजार के विरुद्ध न चलें। लम्बी लाईन तेजी या मन्दे की

कु. सूर्योदये

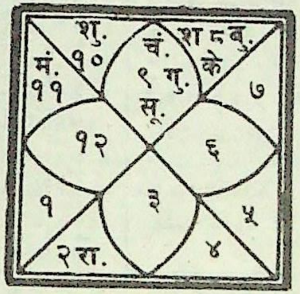

पौष कृ. ३० शनि, इष्ट ५५।२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	१०	७	८	९	७	१	७
७	४	२१	२५	२२	०	१	१
४१	३५	५	४५	२९	१२	५९	५९
५३	०	३९	११	४३	२५	९	९
६१ ७	४६ ५१	११ ४०	१३ ४२	६८ ५४	६ ९	३ ११	३ ११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल. ३	धनि. ४	ज्ये. २	पू.भा. ४	श्रव. ४	विशा. ४	कृति.	विशा. ४

आकाश लक्षण—१५ से १६ दिस. तक तथा २०, २१ दिस. को हि. प्र. पंजाब, आसाम, शिलांग, लंका, मद्रास तथा मैसूर के कुछ भागों में वर्षा के योग बनते हैं।

शकुन विचार—यदि पौष कृ. ५ को वर्षा हो तो आगे फसल अच्छी होगी। यदि इस अष्टमी को बादल चाल व वर्षा हो तो फरवरी में अनाज तेज हो।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, पौष शुक्ल पक्ष १९														तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक				(२३ दिस. ८४ ई. से ७ जन. ८५ ई. तक, उ.अ., द.गो., शिशिरऋतु,
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ. प.	प्र.	अं.	श	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	**ग्रह-दर्शन**–गुरु ५ जन. को अस्त होगा। प्रातः शनि पूर्व कपाल में एवं बुध पूर्व में दीखेगा। सायं म. शु. पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न दीखेंगे।
२५	१	१	र.	२१	५२	पू.षा.	५०	५८	वृ.	१५	९	ब.	२१ ५२	९	२३	२	२९	धनु.	७	२१	५	२२	८	७	४६	३७	शुक्र धनि. में ३९।१२,
२५	२	२	सं.	२०	११	उ.षा.	५१	३४	ध्रु.	१०	३५	कौ	२० ११	१०	२४	३	३०	म.६।७	७	२२	५	२२	८	८	४७	४५	चन्द्रदर्शन मु. ४५, **बुधमार्गी २१।८,**
२५	३	३.	मं.	२०	५.	श्र.	५३	४७	व्या	७	१४	व.	२० ५	११	२५	४	र.१	मकर	७	२२	५	२३	८	९	४८	५६	भ. ५०।५२ उ., मंगल शत. में ३७।३५, **रबी उस्सानी मु. प्रा.,**
२५	४	४	बु.	२१	४०	ध.	५७	३५	ह.	५	११	वि.	२१ ४०	१२	२६	५	२	कुं.२५।४१	७	२३	५	२४	८	१०	५०	०७	भ. २१।४० या., पंचक प्रा. २५।४१, गुरु उ.षा. १ में ५४।३८,
२५	५	५	गु.	२४	५७	श.	६०	०	व.	४	२४	बा.	२४ ५७	१३	२७	६	३	कुम्भ	७	२३	५	२४	८	११	५१	१६	
२५	६	६	शु.	२९	४६	श.	३	०	सि.	४	५२	तै.	२९ ४६	१४	२८	७	४	मी.५३।१०	७	२३	५	२५	८	१२	५२	२८	सूर्य पू. षा. में २७।२,
२५	७	७	श.	३५	४३	पू.भा.	९	३९	व्य.	६	१७	ग.	२ ४५	१५	२९	८	५	मीन	७	२४	५	२५	८	१३	५३	३९	भ. ३५।४३ उ., **शुक्र कुम्भ में ३०।२२, अवतार दिन** A
२५	८	८	र.	४२	१६	उ.भा.	१७	६	व.	८	२०	वि.	९ ०	१६	३०	९	६	मीन	७	२४	५	२६	८	१४	५४	४८	भ. ९।० या., A **श्री गुरु गोविन्द सिंह जी,**
२५	९	९	सं.	४८	४७	रे.	२४	४२	प.	१०	३७	बा.	१५ ३१	१७	३१	१०	७	मे.२४।४२	७	२४	५	२७	८	१५	५५	५९	पंचक स. २४।४२, **सन् १९८४ ई. पूर्ण,**
२५	११	१०	मं.	५४	३५	अ.	३१	५३	शि.	१२	३९	तै.	२१ ४१	१८	ज.१	११	८	मेष.	७	२५	५	२८	८	१६	५७	१०	**जनवरी सन् १९८५ ई. प्रारम्भ, इंगिलश नववर्ष दिन,**
२५	१२	११	बु.	५९	१२	भ.	३८	४	सि.	१४	०	व.	२६ ५३	१९	२	१२	९	वृ.५४।१६	७	२५	५	२८	८	१७	५८	१९	भ. २६।५३ उ., ५९।१२ या., पुत्रदा एकादशी व्र. स., B
२५	१३	१२	गु.	६०	०	कृ.	४२	५२	सा.	१४	२२	ब.	३० ४२	२०	३	१३	१०	वृष	७	२५	५	२९	८	१८	५९	२९	B **गुरुवाधर्क्य प्रा. १८।१०,**
२५	१४	१२	शु.	२	१२	रो.	४५	५८	शु.	१३	३०	बा.	२ १२	२१	४	१४	११	वृष	७	२५	५	३०	८	२०	०	३८	शुक्रशत. में २७।३५, प्रदोष व्र.
२५	१५	१३	श.	३	२६	मृ.	४७	२५	शु.	११	१५	तै.	३ २६	२२	५	१५	१२	मि.१६।४१	७	२५	५	३१	८	२१	०१	४८	गुरु अस्त १८।१०
२५	१६	१४	र.	३	५८	आ.	४७	१८	ब्र.	७	४४	व.	२ ५८	२३	६	१६	१३	मिथुन	७	२६	५	३१	८	२२	२	५६	भ. २।५८ उ., ३१।५७ या., बुध मूल धनु में ३०।४५, सत्य व्र.,
२५	१७	१५	सं.	०	५६	पुन.	४५	४८	ऐ.	२· ५७	५७ ७	ब.	० ५६	२४	७	१७	१४	क.३१।११	७	२६	५	३२	८	२३	४	५	माघ स्नान प्रारम्भ

गुरु अस्त
५ जन., ८५

पौष शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५५।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १५ ५१ ८	१० १० ४२ ५१	७ २३ ३२ ७	८ २७ ३५ ३३	१० १ ३५ ४४	७ १ ० १५	१ १ ३३ ४३	७ १ ३३ ४३
६१ १०	४५ ५१	४८ ११	१३ ५४	६७ २६	५ ४४	३ ११	३ ११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	शत. २	[illegible]	उ.षा. १	कृत्ति. ३	चित्रा ४	कृत्ति. २	चित्रा ४

कु. सूर्योदये

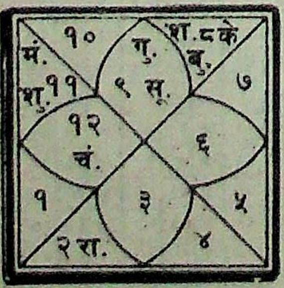

लोक भविष्य–काला बाजारी, चोरी, ठगी एवं अन्य अनैतिक-कार्यों के विरुद्ध शासन कठोर कदम उठाए। शुक्र, मंगल से आक्रान्त हो रहा है, अफगानिस्तान, रूस, पाक एवं अन्य पश्चिमी देशों एवं मध्य प्रदेश में जनता को कष्ट एवं उपद्रवों से अशान्ति का वातावरण बने। ४ जन. को शनि-केतु युति होगी, कहीं अग्निकाण्ड दुर्घटना से हानि हो। **ग्रहचाल और बाजार का रुख**–पक्षा- रम्भ में दालें एवं रुई, कपास, चांदी में तेजी रहे। २५ दिस. को बाजार का रुख देखकर काम करें। अनाजों में झटके की तेजी या मन्दी आएगी। २६ दिस. को गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी का योग है। पक्षान्त तक तिलहन, तेल, रुई, कपास, वस्त्र, सूत, चान्दी एवं गुड़ खाण्ड आदि तेज रहेंगे।

कु. सूर्योदये

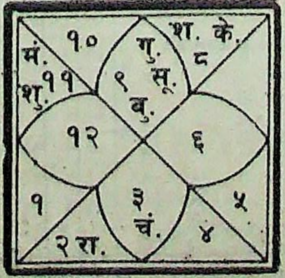

पौष शुक्ल १५ चन्द्र, इष्ट ५५।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २४ ० १९	१० १६ ४९ २०	८ १ ३८ ४७	८ २९ २७ १६	१० १० २८ ४९	७ १ ४४ २४	१ १ ८ १६	७ १ ८ १६
६१ ८	४५ ४६	७२ ५२	१४ ९	६५ ३२	५ १४	३ ११	३ ११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	शत. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चित्रा ४	कृत्ति. ३	चित्रा ४

आकाश लक्षण–जन. ५, ६, एवं ७ को शिलांग, बर्मा, लंका, हि. प्र. पंजाब, उ. प्र. आसाम तथा बिहार में वर्षा के योग हैं।
शकुन विचार–यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाच्छन्न रहे तो आगे अनाज की फसल अच्छी होती है।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, माघ कृष्ण पक्ष २०

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	शा	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	आ.स्टैं.टा. दण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
अब	मा	१	चं.	५७	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	१९	२	मं.	५३	१७	पु.	४३	१६	वि.	५०	१०	तै.	२५	२५	२५	८	१८	१५	कर्क	७	२६	५	३३	८	२४	५	१४
२५	२१	३	बु.	४८	९	आश्ले.	४०	०	प्री.	४३	२९	व	२०	४३	२६	९	१९	१६	सि.४०।०	७	२६	५	३४	८	२५	६	२१
२५	२४	४	गु.	४२	४०	म.	३६	१७	आ.	३६	०	ब.	१५	२५	२७	१०	२०	१७	सिंह	७	२६	५	३५	८	२६	७	२९
२५	२६	५	शु.	३७	५	पू.फा.	३२	२६	सौ.	२८	२३	कौ.	९	५२	२८	११	२१	१८	क.४६।२९	७	२६	५	३५	८	२७	८	३७
२५	२८	६	श.	३१	३७	उ.फा.	२८	३९	शो.	२०	५१	ग.	४	२१	२९	१२	२२	१९	कन्या	७	२६	५	३६	८	२८	९	४४
२५	३०	७	र.	२६	२०	ह.	२५	५	अ	१३	२८	ब.	२६	२०	मा.१	१३	२३	२०	तु.५३।२८	७	२६	५	३७	८	२९	१०	५१
२५	३३	८	चं.	२१	२५	चि.	२१	५२	सु.	६ ४९	२७ ३०	कौ.	२१	२५	२	१४	२४	२१	तुला	७	२६	५	३८	९	०	११	५८
२५	३६	९	मं.	१६	५४	स्वा.	१९	२	शू.	५२	२०	ग.	१६	५४	३	१५	२५	२२	तुला	७	२५	५	३९	९	१	१३	४
२५	३९	१०	बु.	१२	४८	वि.	१६	३७	गं.	४६	५५	वि.	१२	४८	४	१६	२६	२३	वृ.२।१३	७	२५	५	४०	९	२	१४	११
२५	४२	११	गु.	९	१४	अनु.	१४	४३	वृ.	४१	१३	बा.	९	१४	५	१७	२७	२४	वृश्चिक	७	२५	५	४१	९	३	१५	१७
२५	४४	१२	शु.	६	१०	ज्ये.	१३	२०	ध्रु.	३५	५९	तै.	६	१०	६	१८	२८	२५	ध.१३।२०	७	२५	५	४२	९	४	१६	२२
२५	४६	१३	श.	३	४४	मू.	१२	३५	व्या.	३१	१८	व.	३	४४	७	१९	२९	२६	धनु	७	२५	५	४२	९	५	१७	२७
२५	४८	१४	र.	२	८	पू.षा.	१२	३९	ह.	२७	२०	श.	२	८	८	२०	३०	२७	म.२७।५५	७	२४	५	४३	९	६	१८	३२
२५	५१	३०	चं.	१	३०	उ.षा.	१३	४२	व.	२४	१०	ना.	१	३०	९	२१	मा.१	२८	मकर	७	२४	५	४४	९	७	१९	३६

(८ से २१ जन. तक, सन् '८५ ई.), उ. अ. द. गो., शिशिर ऋतु,

ग्रह-दर्शन:—गुरू अस्त है। प्रातः शनि पूर्व कपाल में तथा बुध पूर्व में दीखेगा। सायं म. शु. पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न दीखेंगे।

प्रतिपदा तिथिक्षय

भ. २०।४३ उ., ४८।९ या.,

सूर्य उ.षा. में ३१।५८, गुरु उ. षा. २ मकर में १५।१०, A

भ. ३१।३७ उ. ५८।५९ या., मंगल पू. भा. में ५।१७, B

सं. सूर्य मकर में ४८।१२, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन C

भ. ४४।५१ उ.,

भ. १२।४८ या., बुध पू. षा. में ५०।०, शुक्र पू. भा. में D

षटतिला एकादशी व्र. स.,

प्रदोष व्र.,

भ. ३।४४ उ., ३२।५६ या.,

सूर्य सायन कुम्भ में २।४५, सूर्य अभिजित् में २१।५,

सोमवती अमावस, मौनी अमावस, शक माघ प्रारम्भ,

A संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय रात्रि में ९ घ. ११ मि.), श्री गणेश चतुर्थी व्र., B लोहड़ी (पंजाब), C जन्म दिन स्वामी विवेकानन्द जी, D ४७।१५,

माघ कृष्ण ८ चन्द्र, इष्ट ५५।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	८	९	१०	७	१	७
१	२२	१०	१	१८	२	०	०
८	९	४१	५	१	१९	४६	४६
११	२१	१६	३६	४३	३५	१	१
६१	४५	८२	१४	६३	४	३	३
६	३९	३१	४	२९	४४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

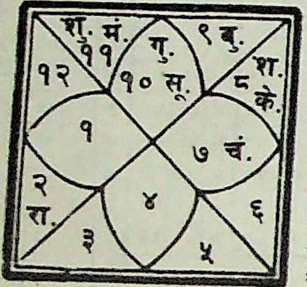

लोक भविष्य—सूर्य-शुक्र-मंगल ये तीनों शनि की राशि में हैं, प्राकृतिक-प्रकोप से खड़ी फसल को हानि होगी, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी,—"**भानुर्भौमो भृगुश्चैव शनि क्षेत्रे समाश्रिताः। यदा निशापतिस्तत्र तदा दुर्भिक्षतो भयम्।।**" यहां मकर संक्रान्ति रविवारी है पीछे कर्क संक्रान्ति भी रविवार को थी, जनता में असन्तोष भय रोग उपद्रव से परेशानी बने।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ में गुड़, खाण्ड में भारी तेजी आने का योग है। रुई में एक तरफा लम्बी लाईन बन सकती है। अगले वर्ष मई के बाद रुई में भयंकर तेजी व मन्दी से भारी लाभ आप उठा सकेंगे। इस पक्ष में गेहूं, जौ, चना, रुई में अचानक तेजी से लाभ होगा। कपूर, चन्दन, मूंगफली, तांबा, सोना, चान्दी एवं सरसों में भी तेजी बनेगी, बांजार का रुख देखकर ८ दिन के अन्दर ही लाभ ले लें।

कु. सूर्योदये

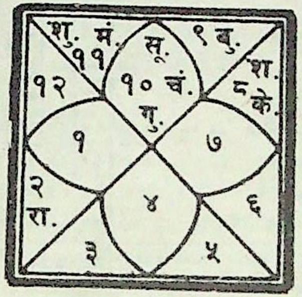

माघ कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५५।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	८	९	१०	७	१	७
८	२७	२०	२	२५	२	०	०
१५	२८	३७	४४	१८	५१	२३	२३
५०	३२	२७	१	४१	११	४५	४५
६१	४५	८८	१४	६०	४	३	३
५	३१	२२	३	५४	१२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—जनवरी के दूसरे सप्ताह में विशेषतः ९, १० तथा ११ जन. को लंका के पूर्वी छोर हि. प्र., पंजाब, उ. प्र., बिहार दक्षिणी मद्रास में अच्छी वर्षा के योग बनते हैं।

शकुन विचार—यदि माघ कृष्ण तृतीया को मेघ गर्जें परन्तु वर्षा न हो तो गेहूं जौ चना का स्टाक करने से आगे लाभ मिलेगा। यदि माघ कृ. ६ को आकाश एवं दिशाएं निर्मल रहें तो कपास के संग्रह से आगे अच्छा लाभ मिले।

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, माघ शुक्ल पक्ष २१																तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक			
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	५४	१	मं.	१	५९	श्र.	१५	५३	सि.	२१	५६	ब.	१	५९	१०	२२	२	२९	क.४७।३९	७	२४	५	४५	९	८	२०	३९
२५	५८	२	बु.	३	५१	ध.	१९	२४	व्य.	२०	४७	कौ.	३	५१	११	२३	३	ज.१	कुम्भ	७	२३	५	४६	९	९	२१	४३
२६	१	३	गु.	७	७	श.	२४	१६	व.	२०	४१	ग.	७	७	१२	२४	४	२	कुम्भ	७	२३	५	४७	९	१०	२२	४३
२६	४	४	शु.	११	४५	पू.भा.	३०	२४	प.	२१	३६	वि.	११	४५	१३	२५	५	३	मी.१३।५२	७	२२	५	४८	९	११	२३	४५
२६	७	५	श.	१७	३४	उ.भा.	३७	३५	शि.	२३	२२	बा.	१७	३४	१४	२६	६	४	मीन	७	२२	५	४९	९	१२	२४	४५
२६	९	६	र.	२४	८	रे.	४५	१७	सि.	२५	३९	तै.	२४	८	१५	२७	७	५	मे.४५।१७	७	२१	५	५०	९	१३	२५	४३
२६	१२	७	चं.	३०	५२	अ.	५३	००	सा.	२८	४	व.	३०	५२	१६	२८	८	६	मेष	७	२१	५	५०	९	१४	२६	४२
२६	१५	८	मं.	३७	१०	भ.	६०	०	शु.	३०	१०	वि.	४	१	१७	२९	९	७	मेष	७	२०	५	५१	९	१५	२७	३९
२६	१८	९	बु.	४२	१६	भ.	०	५	शु.	३१	२६	बा.	९	४३	१८	३०	१०	८	वृ.१६।३१	७	२०	५	५२	९	१६	२८	३४
२६	२२	१०	गु.	४५	४४	कृ.	५	४९	ब्र.	३१	३२	तै.	१४	०	१९	३१	११	९	वृष	७	१९	५	५३	९	१७	२९	२७
२६	२५	११	शु.	४७	१३	रो.	९	५३	ऐं.	३०	११	व.	१६	२८	२०	फ.१	१२	१०	मि.४०।५५	७	१९	५	५४	९	१८	३०	२१
२६	२८	१२	श.	४६	३४	मृ.	११	५६	वै.	२७	१३	ब.	१६	५४	२१	२	१३	११	मिथुन	७	१८	५	५५	९	१९	३१	११
२६	३२	१३	र.	४३	५७	आ.	११	५९	वि.	२२	३९	कौ.	१५	१५	२२	३	१४	१२	क.५५।३९	७	१७	५	५६	९	२०	३२	१
२६	३५	१४	चं.	३९	३७	पुन.	१०	१२	प्री.	१६	४०	ग.	११	४७	२३	४	१५	१३	कर्क	७	१७	५	५७	९	२१	३२	५०
२६	३९	१५	मं.	३३	५३	पु.	६	५२	आ.	९	२६	वि.	६	४५	२४	५	१६	१४	कर्क	७	१६	५	५७	९	२२	३३	३७

(२२ जन. से ५ फर. सन् '८५ ई. तक उ. अ., द. गो., शिशिर ऋतु,

ग्रह-दर्शन:—गुरु १ फर. को उदित होगा। ३१ जन को बुध पूर्व में अस्त होगा। प्रातः शनि को पूर्वकपाल में, सायं मंगल-शुक्र को पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न देख सकेंगे।

चन्द्र दर्शन मु. ३०, पंचक प्रारम्भ ४७।३९,
सूर्य श्रवण में ३७।४०, जमद उल अव्वल मु. प्रा.
भ. ३९।२६ उ., सूर्य अभिजित् से निवृत्त ३०।५, गुरु उ. षा. A
भ. ११।४५ या., बुध उ.षा. में ५८।३८, मंगल मीन में B
शुक्र मीन में ३६।२२, वसन्त पंचमी, श्री पंचमी, C
पंचक स. ४५।१७, रथसप्तमी,
भ. ३०।५२ उ., बुध मकर में ९।४८,
भ. ४।१ या., मंगल उ. भा. में ३३।३८, शनि अनु. १ में D
शुक्र उ. भा. में ३।२, निर्वाण दिन श्री म. गांधी,
बुध पूर्व में अस्त ८।१०,
भ. १६।२८ उ., ४७।१३ या., जया एकादशी व्र. स. E
यरेनस ज्येष्ठा ३ में, भीष्म द्वादशी,
बुध श्रवण में ३१।५, प्रदोष व्रत
भ. ३९।३७ उ., गुरु बाल्य समाप्त ३०।५
भ. ६।४५ या., सूर्य धनि. में ४५।४७, सत्य व्र. F

गुरु उदित (१ फरवरी)

A ३ में २९।७, तिल चतुर्थी, वरद चतुर्थी, B १६।२२, C भारत गणतन्त्र दिवस, D १४।४३, राहु कृत्ति.१ मेष में केतु विशा.३ तुला में २३।५२, भीष्माष्टमी, E गुरु उदित ३०।५, फरवरी प्रा., F माघ स्नान समाप्त जन्म दिन श्री गुरु रविदास जी

माघ शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५५।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	९	८	११	७	०	६
१६	३	२	४	३	३	२९	२९
२३	३१	४३	३५	१२	२२	५८	५८
५५	५५	२७	००	५१	२७	१९	१९
६०	४५	९३	१४	५६	३	३	३
४५	१७	४७	५५	५८	३१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क. सूर्योदये

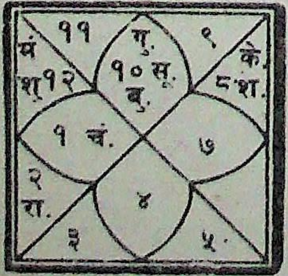

लोक भविष्य—उ. षा. नक्षत्र में गुरु के उदय होने से यह 'श्रावण वर्ष' है क्षुद्रा ये पाखण्डा पीडयन्ते ये च तद्भक्ताः।" शासक वर्ग अपने कर्तव्य पथ पर चले, विशेष आचार संहिता का निर्माण होगा। कुछ देशों में चली आ रही तानाशाही को खतरा बनेगा एवं तानाशाह तथा उनके समर्थक परेशानी में पड़े। आयरलैण्ड, ईरान मध्य एशिया के देशों के लिए उलझनपूर्ण समय है। कहीं भूकम्प व अन्य प्राकृतिक-प्रकोप से हानि हो। खड़ी फसल को हानि व दैनिक उपयोग में आने वाली चीजों में विशेष महंगाई से असन्तोष बढ़े। लंका, नेपाल, काश्मीर के शासक वर्ग के लिए समय नष्ट है। मित्र राष्ट्रों में भी परस्पर वैमनस्यपूर्ण वातावरण बने।

क. सूर्योदये

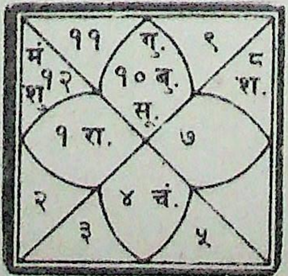

माघ शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ५५।३५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	९	९	११	७	०	६
२३	८	१३	६	९	३	२९	२९
२९	४८	५४	१२	३८	४५	३६	३६
५६	१८	४८	५९	५२	१४	४	४
६०	४५	९८	१३	५२	२	३	३
४७	५	५१	४५	३०	५३	११	११
	मा	मा	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२३ से २८ जन. तक

गुड़, खाण्ड, अनाज, सरसों, अलसी, एरण्डी आदि तिलहन, गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में अच्छी तेजी बनेगी। इन दिनों चान्दी में भी धमाके की तेजी आने का योग है। विचारपूर्वक काम करने पर उत्तम लाभ मिले।

आकाश लक्षण—फरवरी प्रारम्भ में ही पंजाब, हि. प्र., बिहार, आसाम, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश में वर्षा हो।

शकुन विचार—यदि माघी पूर्णिमा के दिन बादल हों तो अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०४१ शाक १९०६ फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

दि. मा. घ.	दि. मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. माघ	अं. फर.	श. फाल्गुन	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	४३	१	बु.	२७	१०	आश्ले.	२ / ५७	२१ / ७	सौ.	१ / ५२	१६ / ३६	बा.	०	३२	२५	६	१७	१५	मि २।२१	७	१५	५	५८	९	२३	३४	२२
२६	४७	२	बृ.	१९	५७	पू.फा.	५२	१	अ.	४३	२७	ग.	१९	५७	२६	७	१८	१६	सिंह	७	१४	५	५९	९	२४	३५	८
२६	५२	३	शु.	१२	३३	उ.फा.	४६	२	सु.	३४	२४	वि.	१२	३३	२७	८	१९	१७	क.५।३१	७	१४	६	०	९	२५	३५	५०
२६	५६	४	श.	५	२१	ह.	४०	५९	धृ.	२५	३९	बा.	५	२१	२८	९	२०	१८	कन्या	७	१३	६	१	६	२६	३६	३२
अवम		५	श.	५८	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	०	६	र.	५२	५२	चि.	३६	३७	शू.	१७	२५	ग.	२५	४६	२९	१०	२१	१९	तु.४।५२	७	१२	६	१	९	२७	३७	१३
२७	५	७	चं.	४७	४८	स्वा	३३	६	गं.	९	५१	वि.	२०	२०	३०	११	२२	२०	तुला	७	११	६	२	९	२८	३७	५३
२७	९	८	मं.	४३	४९	वि.	३०	३३	वृ.	३ / ५६	२ / १९	बा.	१५	४८	फर.१	१२	२३	२१	वृ.१६।११	७	१०	६	३	९	२९	३८	३१
२७	१३	९	बु.	४०	५२	अनु.	२९	२	ध्रु.	४९	४२	तै.	१२	२०	२	१३	२४	२२	वृश्चिक	७	९	६	४	१०	०	३९	८
२७	१८	१०	बृ.	३८	५१	ज्ये.	२८	२७	ह.	४७	२२	व.	९	५१	३	१४	२५	२३	ध.२८।२७	७	९	६	५	१०	१	३९	४४
२७	२२	११	शु.	३७	४८	मू.	२८	४७	व.	४३	४१	ब.	८	२०	४	१५	२६	२४	धनु	७	८	६	६	१०	२	४०	१८
२७	२७	१२	श.	३७	४१	पू.षा.	३०	३	सि	४०	४२	कौ.	७	४५	५	१६	२७	२५	म.४५।३४	७	७	६	७	१०	३	४०	५२
२७	३१	१३	र.	३८	२६	उ.षा	३२	९	व्य.	३८	२४	ग.	८	४	६	१७	२८	२६	मकर	७	६	६	७	१०	४	४१	२५
२७	३५	१४	चं.	४०	९	श्र	३५	१२	व.	३६	५१	वि.	९	१८	७	१८	२९	२७	मकर	७	५	६	८	१०	५	४१	५५
२७	४०	३०	मं.	४२	५६	ध	३९	१५	प.	३६	७	च.	११	३३	८	१९	३०	२८	कु.७।१४	७	४	६	९	१०	६	४२	२४

(६ से १९ फर. तक, ८५६), उ अ द गो. शिशिर–वसन्तऋतु,

ग्रह-दर्शन – बुध अस्त है। प्रातः गुरु पूर्व में तथा शनि याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। सायं मंगल-शुक्र को पश्चिम-कपाल में परस्पर आसन्न देख सकेंगे।

(वि.मु.मघा)

भ. ४६।१५ उ., गुरु उ. षा. ४ में ५३।४२

भ. १२।३३ या., श्री गणेश चतुर्थी व्र.. (वि. मु. उ. फा.)

पञ्चमी तिथिक्षय.

भ. ५२।५२।उ.

भ. २०।२० या., बुध धनिष्ठा में ३२।३८.

सं. सूर्य कुम्भ में २१।१८, मु. ४५, पुण्य ५।१८ उ.,

B (व.मु.मूल.)

भ. ९।५१ उ., ३८।५१ या., शुक्र रेव. में २६।२०, B

बुध कुम्भ में २२।१५, विजया एकादशी व्र. स.

मंगल रेवती में २६।८ A ३९।० बसन्त ऋतु प्रा.

भ. ३८।२६ उ., प्रदोष व्र., श्री महाशिवरात्रि व्रत,

भ. ९।१८ या., सूर्यशत दि. ४७।३९ सूर्य सायन मीन में A

पचक प्रा. ९।१४, बुध शत. में ८।५८

फाल्गुन कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५५।५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० ०० ३४ ५६	११ १४ ३ ६	९ २५ ४३ २५	९ ७ ४८ ३४	११ १५ २९ ५२	७ ४ ३ २८	० २९ १३ ४८	६ २९ १३ ४८
६० ३९	४४ ५०	१०४ ३४	१३ ३१	४६ ४०	२ १४	३ ११	३ ११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ३	उ.भा. ४	धनि. १	उ.षा. ४	उ.भा. ४	अनु. १	मूल. १	चित्रा ३

क. सूर्योदये

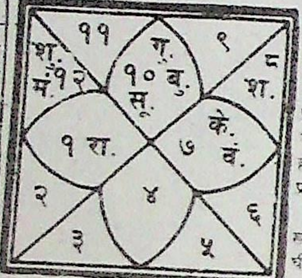

लोक भविष्य–राहु मेष राशि में प्रवेश कर चुका है. भारत का व्यापार प्रगति की ओर अग्रसर रहेगा। उद्योग-धन्धों में वृद्धि होगी. लेकिन विद्युत संकट का प्रभाव व्यापार क्षेत्र पर पड़ेगा। चीन, तिब्बत, मिश्र जापान एवं भारत में काश्मीर आदि में प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। शान्त्यर्थ नई योजनाएं बनेंगी, लेकिन सीमा प्रान्तों पर फौजी हलचल रहेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षा- रम्भ में खाण्ड, गुड़ में भारी तेजी आएगी। ११ फर. से चावल घी, तेल, सरसों, मूंगफली तेज होंगे। नेलवीया, रस एवं अनाजों में कुछ मन्दा रहे। १५ फर. के लगभग अलसी रुई में मन्दी, घी, तेल, गुड़, खाण्ड तथा अनाजों में तेजी आएगी।

आकाश लक्षण–फरवरी के दूसरे सप्ताह में विशेषतः ८, ९, १२, १३, १९, फर. को मध्य प्रदेश, उड़ीसा, हि. प्र., पंजाब में वर्षा के योग है।

शकुन विचार–फाल्गुन में यदि बादल हो, परन्तु वर्षा न हो, तो आगे वर्षाकाल में अच्छी वर्षा हो।

क. सूर्योदये

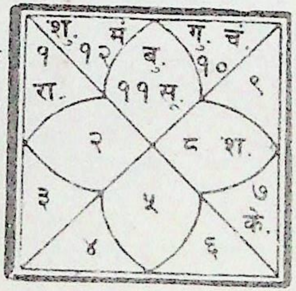

फाल्गुन कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५६। ५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० ७ ३८ ५९	११ १९ १६ १३	१० ८ १३ २८	९ ९ २२ १९	११ २० ३५ ३२	७ ४ १६ ५७	० २८ ५१ ३३	६ २८ ५१ ३३
६० ३०	४४ ३५	११० ३२	१३ १३	३९ १२	१ ३२	३ ११	३ ११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. १	रेव. १	शत. १	उ.षा. ४	रेव. २	अनु. १	मूल. १	चित्रा ३

श्री वि. सं. २०४१, शाक १९०६, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३																तारीखें				चन्द्र	सा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक			
दि. मा.																प्र.	अं.	श	मु.	संचार	चण्डीगढ़				स्पष्टसूर्य			
घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	फाल्गु.	फ.	फाल्गु.	फं./ज.	घ. प.	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
२७	४५	१	बु.	४६	४४	श.	४४	१७	शि.	३६	९	किं.	१४	५०	९	२०	१	२९	कुम्भ	७	३	६	१०	१०	७	४२	५३
२७	५०	२	गु.	५१	३८	पू.भा.	५०	२२	सि.	३७	१	बा.	१९	११	१०	२१	२	३०	मी.३३।५१	७	२	६	१०	१०	८	४३	२०
२७	५४	३	शु.	५७	३४	उ.भा.	५७	२३	सा.	३८	३९	तै.	२४	३६	११	२२	३	ज.१	मीन	७	१	६	११	१०	९	४३	४४
२७	५९	४	श.	६०	०	रे.	६०	०	शु.	४०	५२	व.	३०	५०	१२	२३	४	२	मीन	७	०	६	१२	१०	१०	४४	८
२८	३	४	र.	४	६	रे.	५	४	शु.	४३	२५	वि.	४	६	१३	२४	५	३	मे.५।४	६	५९	६	१३	१०	११	४४	२९
२८	७	५	चं.	१०	५९	अ.	१३	२	ब्र.	४६	०	बा.	१०	५९	१४	२५	६	४	मेष	६	५८	६	१३	१०	१२	४४	४८
२८	११	६	मं.	१७	३६	भ.	२०	४४	ऐं.	४८	७	तै.	१७	३६	१५	२६	७	५	वृ.३७।२६	६	५६	६	१४	१०	१३	४५	६
२८	१६	७	बु.	२३	१९	कृ.	२७	३३	वै.	४९	२४	व.	२३	१९	१६	२७	८	६	वृष	६	५५	६	१५	१०	१४	४५	२२
२८	२१	८	गु.	२७	३६	रो.	३२	५९	वि.	४९	२६	ब.	२७	३६	१७	२८	९	७	वृष	६	५४	६	१६	१०	१५	४५	३५
२८	२६	९	शु.	२९	५७	मृ.	३६	३१	प्री.	४७	५४	कौ.	२९	५७	१८	मा.१	१०	८	मि.४।४५	६	५३	६	१६	१०	१६	४५	४७
२८	३०	१०	श.	३०	६	आ.	३७	५७	आ.	४४	४०	तै.	०	२	१९	२	११	९	मिथुन	६	५२	६	१७	१०	१७	४५	५७
२८	३५	११	र.	२८	२	पुन.	३७	९	सौ.	३९	४१	वि.	२८	२	२०	३	१२	१०	क.२२।२३	६	५१	६	१८	१०	१८	४६	३
२८	३९	१२	चं.	२३	५२	पु.	३४	२७	शो.	३३	६	बा.	२३	५२	२१	४	१३	११	कर्क	६	५०	६	१८	१०	१९	४६	८
२८	४३	१३	मं.	१७	५७	आश्ले.	३०	२	अ.	२५	८	तै.	१७	५७	२२	५	१४	१२	सिं.३०।२	६	४८	६	१९	१०	२०	४६	११
२८	४८	१४	बु.	१०	३८	म.	२४	१८	सु.	१६	४	व.	१०	३८	२३	६	१५	१३	सिंह	६	४७	६	२०	१०	२१	४६	१२
२८	५२	१५	गु.	२	२०	पू.फा.	१७	४३	धृ.	६ ५९	१५ ११	ब.	२	२०	२४	७	१६	१४	क.३०।५९	६	४६	६	२०	१०	२२	४६	१२

(२० फर. से ७ मार्च तक मन ८५ डिं.), उ. अ. द. गो. वसन्त ऋतु,

ग्रह-दर्शन–बुध ६ मार्च को पश्चिम में उदित होगा। प्रातः गुरु पूर्वकपाल में, शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर झुका हुआ होगा। सायं मं. शु. को पश्चिम-कपाल में परस्पर आसन्न देखा जा सकेगा।

शक फाल्गुन प्रारम्भ

चन्द्रदर्शन मु. ३०, (वि. मु. उ. भा.)

गुरु श्रवण १ में ४७।५५, इमद उस्मानी मु. पा.,

भ ३०।५० उ.

भ. ४।६ या., पंचक स. ५।०, (वि मु उ.अश्वि.)

बुध पू. भा. में १३।४५,

भ २३।१९ उ., ५५।२८ या., (वि मु उ. रोहि)

होलाष्टक प्रारम्भ,

मार्च प्रारम्भ,

भ. ४९।४ उ.

भ २८।२ या. बुध मीन में २९।४८, आमलकी एकादशी व्र.स

सूर्य पू. भा. में १३।३० सोमप्रदोष व्र. गोविन्द द्वादशी,

बुध उ. भा. में १०।५

भ १०।३८ उ. ३८।११ या. मंगल अश्वि. मेष में २८।४५ A

शनि वक्री २९।४० होलाष्टक समाप्त होली पर्वदा. B

A बुध पश्चिम में उदित ८।५०, होलिका दहन (रात्रि के ९ घ. २२ मि. बाद) (देखें पृ. ५९/६०), मत्स्य ज., B होला मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब) जन्म दिन श्री चैतन्य महाप्रभु

फाल्गु. शु. ८ बुध, इष्ट २६।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	१०	९	११	७	०	६
१६	२५	२५	११	२५	४	२८	२८
४२	५६	९	१९	३८	२७	२२	२२
१८	१	४६	२१	२७	३	५६	५६
६०	४४	११४	१२	२५	०	३	३
१३	१३	९	४४	५४	३६	११	११
	भा.	भा.	पू.भा.	भा.	भा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ३	रेव. ३	पू.भा. २	[illegible] १	रेव. ३	[illegible] १	[illegible] १	[illegible] ३

क. सूर्योदये

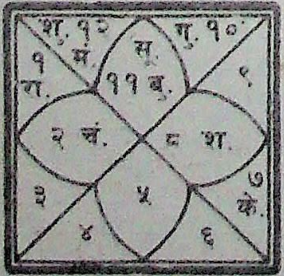

लोक भविष्य–बुध अतिचारी है, शनि भी फाल्गुन में वक्र हो गया है "यदा क्रूरग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः। तदा भवति दुर्भिक्षं राजा युद्धं परस्परम्"। अतः कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। कहीं राष्ट्रों में परस्पर तनावपूर्ण स्थिति बनती। कारक बन चिन्तित रहें, महंगाई प्रतिदिन बढ़ेगी। फाल्गुन में दक्षिण में जब जनहानि होगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा।

वस्तुभाव और बाजार का रुख–प्रारम्भ में मूंग, मसरी, अरहर, उड़द आदि दालों में तेजी आएगी। फर. में लगभग साधारणतया मन्दे का प्रभाव आएगा। मार्च में बाजार का रुख देखकर काम करें, गेहूं, खाण्ड, शक्कर एवं तिलहन तथा चान्दी में अच्छी मन्दी या तेजी को बढ़ावा मिलेगा। ७ मार्च को बाजार का रुख बदलेगा।

क. सूर्योदये

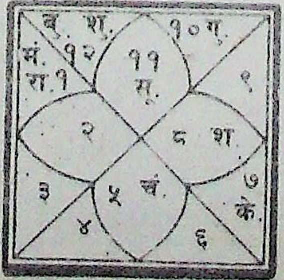

फाल्गु. शु. १५ गुरु, इष्ट २६।५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	११	९	११	७	०	६
२३	१	८	१२	२८	४	२८	२८
४३	४	८	४७	००	२९	०	०
१	३५	६	१	१२	१०	४०	४०
५९	४३	१०३	१२	१३	०	३	३
५८	५४	४०	१५	८	६	११	११
	मा.	मा.	भा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ३	अश्वि. १	उ.भा. २	श्रव. १	रेव. ४	[illegible] १	[illegible] १	[illegible] ३

आकाश-लक्षण–फर. के अन्तिम सप्ताह में वर्षा की खींच रहे। मार्च के प्रथम सप्ताह में बंगलादेश, भूटान, सिक्किम, पंजाब, हि.प्र. में वर्षा होने के योग हैं।

शकुन विचार–यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को वर्षा हो तो अनाजों का स्टाक करने से आगे सातवें मास लाभ होगा।

श्री वि. स. २०४१. शाक १९०६, चैत्र कृष्ण पक्ष २४ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टा | उदय-कालिक | (८ से २१ मार्च तक, सन् ई.) द अ द उ गा वसन्त ऋतु

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. फाल्गुन	अ. मार्च	श फाल्गुन	म.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
अंयम		१	बृ.	५३	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	५७	२	शु.	४४	४३	उ.फा.	१०	४९	वृ.	४५	५२	तै.	१९	६	२५	८	१७	१५	कन्या	६	४५	६	२१	१०	२३	४६	९
२९	२	३	सो.	३६	१५	ह.	३७ (४)	४० (०)	शु.	३५	५८	व.	१०	२९	२६	९	१८	१६	तु.३०।५०	६	४४	६	२२	१०	२४	४६	३
२९	६	४	र.	२८	३१	स्वा.	५२	१२	ध्रु.	२६	४१	ब.	२	२३	२७	१०	१९	१७	तुला	६	४३	६	२२	१०	२५	४५	५७
२९	१०	५	चं.	२१	५२	वि.	४७	५७	व्या.	१८	१६	तै.	२१	५२	२८	११	२०	१८	वृ.३४।२	६	४१	६	२३	१०	२६	४५	४८
२९	१५	६	मं.	१६	२९	अनु.	४५	१	ह.	१०	५३	व.	१६	२९	२९	१२	२१	१९	वृश्चिक	६	४०	६	२४	१०	२७	४५	३८
२९	२०	७	बु.	१२	३०	ज्ये.	४३	३३	व.	४९ (४)	४७ (३८)	ब.	१२	३०	३०	१३	२२	२०	ध.४३।३३	६	३९	६	२४	१०	२८	४५	२६
२९	२५	८	गु.	१०	२	मू.	४३	३३	व्य.	५६	२०	कौ.	१०	२	चै.१	१४	२३	२१	धनु	६	३८	६	२५	१०	२९	४५	१२
२९	३०	९	शु.	९	२	पू.षा.	४४	५३	व.	५२	५०	ग.	९	२	२	१५	२४	२२	धनु	६	३६	६	२६	११	०	४४	५८
२९	३५	१०	श.	९	२१	उ.षा.	४७	३१	प.	५१	२	वि.	९	२१	३	१६	२५	२३	म.०।३२	६	३५	६	२६	११	१	४४	४०
२९	४०	११	र.	१०	५९	श्र.	५१	१८	शि.	५०	९	बा.	१०	५९	४	१७	२६	२४	मकर	६	३४	६	२७	११	२	४४	२१
२९	४६	१२	चं.	१३	४२	ध.	५६	३	सि.	५०	३	तै.	१३	४२	५	१८	२७	२५	कु.२३।४१	६	३३	६	२८	११	३	४४	१
२९	५१	१३	मं.	१७	२५	श.	६०	०	सा.	५०	४१	व.	१७	२५	६	१९	२८	२६	कुम्भ	६	३१	६	२८	११	४	४३	३९
२९	५७	१४	बु.	२२	५	श.	१	४४	शु.	५२	०	श.	२२	५	७	२०	२९	२७	मी.५१।४६	६	३०	६	२९	११	५	४३	१६
३०	२	३०	गु.	२७	३०	पू.भा.	८	१७	शु.	५३	४८	ना.	२७	३०	८	२१	३०	२८	मीन	६	२९	६	३०	११	६	४२	५१

ग्रह-दर्शन - प्रात: गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिम कपाल में दीखेगा। सूर्यास्तानन्तर पश्चिम में बुध उससे कुछ ऊपर शुक्र और उससे काफी ऊपर मंगल को देखा जा सकेगा।

प्रतिपदा तिथिक्षय.
(वि.मु.हस्त)

भ १०।२९, उ. ३२।१५ या (वि. मु. हस्त)
गुरु श्रवण ? म ३९।१८ श्री गणेश चतुर्थी व्रत (वि. मु. स्वा)

भ १६।२९, उ ४४।३० या.
बुध रेव. मे १९।३८.
सं. सूर्य मीन में १४।५०, मु. ३०, पुण्य सारा दिन, शुक्र वक्री A
भ. ३९।११ उ.
भ ९।२१ या.
गुरु उ. भा में ३५।४७, पाप मोचनी एकादशी व्र. म.
पचक प्रा. २३।४१, सोमप्रदोष व्र.
भ १७।२५ उ. ४९।४५ या, वारुणी पर्व (दिन के B
सायन मेष में ३८।१२, उ. गोल प्रा. महाविषुव दिन, C
चान्द्रसंवत्सर पूर्ण।

A १५।४०, मेला श्री शीतला माता (कुराली), B १ घं. ३० मि. तक), C मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)

चैत्र कृ. ८ गुरु, इष्ट ५७।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	९	११	७	०	६
०	६	१८	१४	२८	४	२७	२७
४२	११	४८	११	३७	२६	३८	३८
१२	४	१०	१४	१५	१८	२५	२५
५९	४३	७०	११	४	०	३	३
४६	३६	२३	४३	१३	४९	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	अश्वि. ३	रेव. १	भर. ३	रेव. ४	अनु. १	कृत्ति. १	विशा. ३

कृ. सूर्योदये

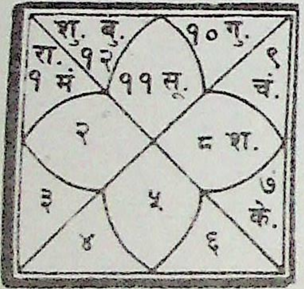

लोक भविष्य—राहु मंगल दोनों मेष राशि में हैं, अन्तर्राष्ट्रीय-स्थिति में तनाव बनेगा, पडोसी देशों की अनैतिकता से सभी देशों की स्थिति बिगड़ेगी। कहीं अग्निकाण्ड, यान दुर्घटना व प्राकृतिक प्रकोप से हानि का समाचार मिलेगा। मीन संक्रान्ति एव चैत्र अमावस दोनों गुरुवारी हैं, अन्न तेज, खड़ी फसल को हानि एवं प्राणियों को कष्ट हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१४ मार्च के लगभग घी, तेल, गुड, खाण्ड, शक्कर, गेहू, जौ, चना आदि तेज होगे लेकिन शीघ्र ही तेलबीया, रस एवं अनाजो में मन्दे का रुख बनेगा। पश्चात्त में चावल, चान्दी, गुड, खाण्ड, शक्कर, गेहू, तेल तेज होंगे।

आकाश लक्षण—संक्रान्ति एव अमा. गुरुवारी है। अत: खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। मार्च ८ से १० तक तथा मार्च १८, १९ को हि. प्र., जम्मू, मैसूर स्टेट, बम्बई, मद्रास में वर्षा के योग है।

कृ. सूर्योदये

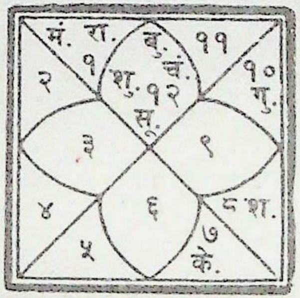

चैत्र कृ. ३० गुरु, इष्ट ५७।३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	००	११	९	११	७	०	६
७	११	२४	१५	२७	४	२७	२७
३८	१५	३०	३१	१५	१८	१६	१६
५८	२७	२१	२९	३९	३१	९	९
५८	४३	१८	११	२१	१	३	३
३३	१५	३	७	२६	३०	११	११
	मा	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. २	अश्वि. ४	रेव. ३	भर. २	रेव. ४	अनु. १	कृत्ति. १	विशा. ३

शाकुन विचार—यदि चैत्र कृ. सप्तमी को आकाश मेघाच्छन्न रहे तो गुड, खाण्ड, गेहू, मसूरी एवं सोना में आगे तेजी आती है। "चन्द्रमौलि-शंकर चरण बार बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो फिरा गणेश मनाय।।"

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिएगए तिथि-नक्षत्र आदि को समझने के लिए आवश्यक निर्देश

क्योंकि पत्री-पत्रों में दिएगए तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं। अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाए तो वे भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जा सकते हैं। इसीबात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टै. टा. में तिथि-नक्षत्रों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेशकाल, ग्रहों के नक्षत्रराशि प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक है, इसे पढ़ लेना चाहिए।

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) का क्रमशः १३ से २४ तक के अंकों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात् दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किन्तु रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अंकों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात् इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान--रहे, सूर्योदय के बाद ६, ७ घण्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा :—

(१) १ मई, १९८४ ई० को वैशाख कृष्ण अमावस मंगलवार के सामने ९ घण्टे १६ मिनट लिखा है। इसका अर्थ है, कि—अमावस तिथि १ मई को ९ बज कर १६ मिनट पर समाप्त होगी।

(२) २७ अप्रैल, १९८४ ई० को पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के आगे १८ घण्टे २७ मिनट लिखा है। इसका अर्थ है: कि—मघा नक्षत्र इसदिन शाम को ६ बज कर २७ मिनट पर समाप्त होगा।

(३) ४ अप्रैल, सन् १९८४ ई० बुधवार के आगे चन्द्रसञ्चार वाले कालम में वृ० २७।२० लिखा है। इसका अर्थ है कि चन्द्रमा ४ अप्रैल की समाप्ति के बाद ५ अप्रैल को ३ बजकर २० मिनट पर (४ एवं ५ अप्रैल की रात्रि में) वृष राशि में प्रविष्ट होगा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार इस समय बुधवार ही होगा। क्योंकि भारतीय ज्योतिष के अनुसार वार सूर्योदय के समय ही बदलता है। पाश्चात्य (अंग्रेजी) पद्धति के अनुसार चन्द्रमा के वृष राशि में प्रवेश के समय सोमवार ही होगा; क्योंकि इस मत के अनुसार तारीख के साथ रात के १२ बजे ही वार बदल जाता है।

ऐसा ही एक और उदाहरण लीजिए

(४) ११ अप्रैल, सन् १९८४ ई० बुधवार 'भद्रा आदि' वाले कालम में 'भ० २७।४२' लिखा है। इसका अर्थ है कि १२ अप्रैल को सूर्योदय से पहले ३ बजकर ४२ मिनट पर भद्रा शुरू होगी। इससमय भारतीय ज्योतिष के अनुसार बुधवार होगा और अंग्रेजी पद्धति के अनुसार गुरुवार माना जाएगा। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, कि किसी तारीख के आगे लिखे टाईम में यदि घण्टे २४ से ज्यादा हो तो वहां घण्टों में से २४ घटा दीजिए और शेष घण्टा मिनटों को अगली तारीख का (सूर्योदय से पहले का) टाईम समझिए।

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि नक्षत्र चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४१)

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
चैत्र शुक्ल पक्ष	अप्रैल २	१	चं.	१९।२६	रे.	१६।५२	मे. १६।५२	पंचक स. १६।५२ (A)
	३	२	मं.	२१।१४	अ.	१९।१४	मेष	नेपच्यून वक्री, (B)
	४	३	बु.	२२।३१	भ.	२०।५७	वृ. २७।२०	
	५	४	गु.	२३।२५	कृ.	२२।२८	वृष	भ. १०।५८ उ., (C)
	६	५	शु.	२३।४९	रो.	२३।३०	वृष	
	७	६	श.	२३।४१	मृ.	२४।२	मि. ११।४६	
	८	७	र.	२२।५८	आ.	२३।५९	मिथुन	भ. २२।५८ उ.,
	९	८	चं.	२१।३७	पुन.	१३।१९	क. १७।२९	भ. १०।१७ पा.,
	१०	९	मं.	१९।४१	पु.	२२।३	कर्क	
	११	१०	बु.	१७।११	आश्ले.	२०।१६	सि. २०।१६	भ. २७।४२ उ., बुध वक्री २१।४९
	१२	११	गु.	१४।१४	म.	१८।२	सिंह	भ. १४।१४ पा.,
	१३	१२	शु.	१०।५७	पू. फा.	१५।२९	क. २०।४९	सं. सूर्य अश्वि. मेष में १४।५२ (D)
	१४	१३	श.	७।३० २७।५९	उ. फा.	१२।४८	कन्या	भ. २७।५९ उ.,
	१५	१५	र.	२४।४०	ह.	१०।७	तु. २०।५४	भ. १४।२० पा,
वैशाख कृष्ण पक्ष	१६	१	चं.	२१।४०	चि.	७।४० २९।३५	तुला	शुक्र रेव. में १०।१
	१७	२	मं.	१९।७	वि.	२८।०२	वृ. २२।२५	
	१८	३	बु.	१७।११	अनु.	२७।८	वृश्चिक	भ. ६।९ उ., १७।११ पा,
	१९	४	गु.	१६।०	ज्ये.	२७।००	ध. २७।०	सूर्य सा. वृष में २७।९ (E)
	२०	५	शु.	१५।३६	मू.	२७।३८	धनु	
	२१	६	श.	१६।००	पू.षा	२९।३	धनु	भ. १६।० उ., २८।३४ पा,
	२२	७	र	१७।८	उ.षा	———	म. ११।३४	
	२३	८	चं	१८।५३	उ षा	७।७	मकर	
	२४	९	मं.	२१।३	ध.	९।४०	कु. २३।६	पंचक प्रा. २३।६,
	२५	१०	बु.	२३।२९	श.	१२।३३	कुम्भ	भ. १०।१६ उ., २३।२९पा.,
	२६	११	गु.	२५।५५	श.	१५।३२	कुम्भ	श. शनि स्वाती ४ में ८।८
	२७	१२	शु.	२८।१४	पू भा.	१८।२७	मी. ११।४३	सूर्य भर. में ६।४५ (F)
	२८	१३	श.	———	उ.भा.	२१।१०	मीन	
	२९	१३	र.	६।१८	रे.	२३।३२	मे. २३।३२	भ. ६।१८ उ., १९।८ पा, (G)
	३०	१४	चं.	७।५८	अ.	२५।३३	मेष	बुध पूर्व में उदित १७।२४,
	मई १	३०	मं.	९।१६	भ.	२७।१०	मेष	

(A) शुक्र मीन में २१।२९, (B) चन्द्र दर्शन मु ३०, (C) भ. २३।२५ पा. शुक्र उ, पा. में १४।२१, मंगल वक्री २७।२२, (D) बुध पश्चिम में अस्त १३।१२, (E) वक्री मंगल विशा. में २७।७, (F) शुक्र अश्वि. मेष में ६।२८, (G) पंचक स. २३।३२, गुरु वक्री १८।३५,

भारतीय स्टंण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं. २०४१

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
वैशाख शुक्ल पक्ष	मई २	१	बु.	१०।७	कृ.	२८।२०	वृ. ९।२७	व. मंगल तुला में २०।५०(A)
	३	२	गु.	१०।३२	रो.	२९।७	वृष	
	४	३	शु.	१०।३२	मृ.	२९।२८	मि. १३।१७	भ. २२।१९ उ.
	५	४	श.	१०।७	आ.	२९।२४	मिथुन	भ. १०।७ या., B
	६	५	र.	९।१५	पुन.	२८।५५	क. २।३२	
	७	६	च.	७।४९	पु.	२८।३	कर्क	शुक्र भर. में २६।०, (C)
	८	७	मं.	{६।१९ / २८।१७}	आश्ले.	२६।४७	सिं. २६।४७	भ. ६।१९ उ., १७।१८ या.
	९	९	बु.	२४।५४	म.	२५।१३	सिंह	
	१०	१०	गु.	२२।१८	पू. फा.	२३।२४	क. २८।५४	सूर्य कृति में २४।५४ (D)
	११	११	शु.	२०।२०	उ. फा.	२१।२४	कन्या	भ. ९।५४ उ., २०।३० या.
	१२	१२	श.	१७।४०	ह.	१९।२१	कन्या	
	१३	१३	र.	१५।२३	चि.	१७।२२	तु. ६।२२	शुक्र पूर्व में अस्त १२।४५
	१४	१४	च.	१२।३७	स्वा.	१५।३६	तुला	भ. १२।१७ उ. (E)
	१५	१५	मं.	९।५९	वि.	१३।१८	वृ. ८।३०	
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१६	१	बु.	८।८	अनु.	१३।१०	वृश्चिक	
	१७	२	गु.	६।५०	ज्ये.	१२।४४	ध. १२।४४	भ. १८।२९ उ.,
	१८	३	शु.	६।१९	मू.	१२।५८	धनु	भ. ५।१९ या., (F)
	१९	४	श.	६।१२	पू. षा.	१३।५३	म. २०।१७	
	२०	५	र.	६।५६	उ. षा.	१५।२८	मकर	मिथुन में ६।२९
	२१	६	च.	८।१०	श्र.	१७।३९	मकर	भ. ८।१० उ. २१।१४ या. (G)
	२२	७	मं.	१०।११	ध.	२०।१६	कु. ६।५८	पंचक प्रा. ६।५८ (H)
	२३	८	बु.	१२।१५	श.	२२।८	कुम्भ	बुध भर. में ६।१०
	२४	९	गु.	१४।४७	पू. भा.	२६।४	मी. १९।२०	भ. ३।२६ उ., (I)
	२५	१०	शु.	१७।५	उ. भा.	२८।४१	मीन	भ. १७।५ या.
	२६	११	श.	१९।७	रे.	———	मीन	
	२७	१२	र.	२०।४३	रे.	७।१७	मे. ७।१७	पंचक स. ७।१७
	२८	१३	च.	२१।४९	अ.	९।१६	मेष	भ. २१।४९ उ.
	२९	१४	मं.	२२।२१	भ.	१०।४४	वृ. १६।५८	भ. १०।५ या. (J)
	३०	३०	बु.	२२।१०	कृ.	११।३६	वृष	

(A) चन्द्र दर्शन मृ. ३०, (B) बुध मार्गी ९।३२, (C) वक्री वेंकटेश चित्रा ४ में, (D) शुक्र वार्धक्य प्रा. १८।४७. (E) भ. २३।१८ या., सं. सूर्य वृष में ११।४९, (F) शुक्र कृति में २२।२२, (G) शुक्र वृष में १५।२९, (H) राहु रोहि १ में केतु अनु. ३ में २६।२६. (I) सूर्य रोहि. में २१।१३. (J) शुक्र रोहि. में १८।४९.

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	मई ३१	१	गु.	२१।४७	रो.	१२।२	मि. २३।५२	
	जून १	२	शु.	२०।४७	मृ.	११।५६	मिथुन	बुध कृति. में २०।५, (A)
	२	३	श.	१९।२४	आ.	११।२७	क. २८।४९	व. मंगल स्वाती ४ में ×
	३	४	र.	१७।४२	पुन.	१०।३६	कर्क	भ. ६।३३ उ. (B)
	४	५	च.	१५।४४	पु.	९।२९	कर्क	× १६।४२
	५	६	मं.	१३।२७	आश्ले.	८।११	सिं. ८।११	
	६	७	बु.	११।२१	म.	{६।४४ / २९।१४}	सिंह	भ. ११।२१ उ. २२।१२ या.
	७	८	गु.	९।२	उ. फा.	२७।४१	क. १०।४४	सूर्य मृग में १९।३
	८	९	शु.	{६।४३ / २८।२८}	ह.	२६।१२	कन्या	
	९	११	श.	२६।१८	चि.	२४।४९	तु. १३।३०	भ. १५।२३ उ. (C)
	१०	१२	र.	२४।२०	स्वा.	२३।३८	तुला	
	११	१३	च.	२२।३७	वि.	२२।४१	वृ. १६।५५	व गुरु पू. षा. १ में १८।५९(D)
	१२	१४	मं.	२१।१३	अनु.	२२।२	वृश्चिक	भ. २१।१३ उ. (E)
	१३	१५	बु.	२०।१३	ज्ये.	२१।४९	ध. २१।४९	भ. ८।४३ या.
आषाढ कृष्ण पक्ष	१४	१	गु.	१९।४२	मू.	२२।४	धनु.	म. सूर्य मिथुन में १८।३१ ※
	१५	२	शु.	१९।४२	पू.षा.	२२।५०	म. २९।१०	ब. शनि स्वाती ३ में २७।३७
	१६	३	श.	२०।१७	उ.षा.	२४।१०	मकर	भ. ८।० उ., २०।१७ या.(F)
	१७	४	र.	२१।२७	श्र.	२६।४	मकर	
	१८	५	च.	२३।१७	ध.	२८।२५	कु. १५।१४	पंचक प्रा. १५।१४
	१९	६	मं.	२५।१२	श.	———	कुम्भ	भ. २५।१२ उ., (G)
	२०	७	बु.	२७।३१	श.	७।१०	मी. २७।२१	भ. १४।२२ या., (H)
	२१	८	गु.	———	पू.भा.	१०।५	मीन	सूर्य आर्द्रा में १८।१०(I)
	२२	८	शु.	५।५१	उ.भा.	१२।५०	मीन	बुध आर्द्रा में १५।१३.
	२३	९	श.	७।५९	रे.	१५।२६	मे. १५।२६	भ. २०।५१ उ. पंचक स. [symbol]
	२४	१०	र.	९।४३	अ.	१७।४८	मेष	भ. ९।४३ या.,
	२५	११	च.	१०।५२	भ.	१९।२४	वृ. २५।३८	[symbol] १५।३६
	२६	१२	मं.	११।२३	कृ.	२०।२०	वृष	
	२७	१३	बु.	११।११	रो.	२०।३६	वृष	भ. ११।११ उ. २३।४४ या.
	२८	१४	गु.	१०।१८	मृ.	२०।१३	मि. ८।२५	बुध पुन. में १९।११
	२९	३०	शु.	८।५०	आ.	१९।१७	मिथुन	

(A) चन्द्रदर्शन मृ. १५, (B) भ. १७।४२ या., बुध वृष में २८।४६, (C) भ २६।१८ या., बुध रोहि. में २०।१०, शुक्र मृग. में १५।२१. (D) बुध पूर्व में अस्त २८।४२. (E) व. नेप. मूल २ में, ※ शुक्र मिथुन में २५।३७, (F) बुध मृग. में ११।३४, (G) बुध मिथुन में १४।१४, मंगल मार्गी १३।३० (H) शुक्र आर्द्रा में ११।५३. (I) सूर्य सा. कर्क में १०।३५,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४१)

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	जून ३०	१	श.	६।५३ / २०।३३	पुन.	१२।५५	क. १९।१६	चन्द्र दर्शन मु. ३०,
	जुलाई १	३	र.	२६।०	पु.	१६।१५	कर्क	शुक्र पुन. में ८।१५,
	२	४	चं.	२३।२०	आश्ले.	१४।०६	सि. १४।२६	भ. १२।४० उ. २३।२०या.,
	३	५	मं.	२०।३९	म.	१२।३३	सिंह	बुध कर्क में १६।३८
	४	६	बु.	१८।१४	पू. फा.	१०।४३	क. १६।१९	बुध पश्चिम में उदित १०।३०
	५	७	गु.	१५।४७	उ. फा.	९।१५	कन्या	भ. १५।४७ उ. (A)
	६	८	शु.	१३।३३	ह.	७।४०	तु. १९।१६	
	७	९	श.	११।४२	चि.	६।३१	तुला	मंगल विशा. में १५।१५
	८	१०	र.	१०।११	स्वा.	६।४१ / २९।१०	वृ. २३।१८	भ. २२।५२ उ. (B)
	९	११	चं.	८।५९	अनु	२९।००	वृश्चिक	भ. ८।५९ या. (C)
	१०	१२	मं.	८।१५	ज्ये.	२९।१४	ध. २९।२४	प्लूटो मार्गी,
	११	१३	बु.	७।३९	मू.	——	धन	शुक्र पुष्य में २८।३३
	१२	१४	गु.	७।३३	मू.	५।४९	धन	भ. ७।३३ उ. (D)
	१३	१५	शु.	७।५१	पू.षा	६।४७	म. १३।१८	शनि मार्गी २२।३०
श्रावण कृष्ण पक्ष	१४	१	श.	८।३७	उ. षा	८।१२	मकर	
	१५	२	र.	९।४९	श्र.	१०।१२	कु. २३।१७	भ. २२।३८ उ. (E)
	१६	३	चं	११।३७	ध.	१२।१८	कुम्भ	भ. ११।२७ या.,
	१७	४	मं.	१३।२९	श.	१४।४६	कुम्भ	
	१८	५	बु	१५।४६	पू. भा	१७।४९	मी. १२।१६	§ २३।४९
	१९	६	गु	१८।११	उ. भा	२०।४९	मीन	भ. १८।११ उ., (F)
	२०	७	शु.	२०।३०	रे.	२३।४१	मे. २३।४१	भ. ७।२१ या., पंचक स.§
	२१	८	श.	२२।३०	अ.	२६।१३	मेष	बुध मघा सिंह में १३।४३
	२२	९	र.	२३।५८	भ.	२८।१३	मेष	शुक्र आश्ले. में २४।४२ (G)
	२३	१०	चं.	२४।४४	कृ.	२९।३१	वृ. १०।३३	भ. १२।२१ उ. २४।४४ या.,
	२४	११	मं.	२४।४४	रो.	——	वृष	राहु कृति. ४ में केतु अनु. ?*
	२५	१२	बु.	२३।५५	रो.	६।३	मि. १९।५६	शुक्र बाल्य स. ८।६
	२६	१३	गु.	२२।२१	मृ.	५।४८ / २०।४७	मिथुन	भ. २२।२१ उ., *मी २८।१
	२७	१४	शु.	२०।७	पुन	२३।११	क. २१।३६	भ. ९।१४ या.,
	२८	३०	श.	१७।२२	पु.	२५।१६	कर्क	

(A) भ. २६।३८ या., सूर्य पुन में १३।४१, बुध पुष्य में ९।४६, (B) वक्री गुरु मूल ४ में १३।५८, (C) शुक्र कर्क में ११।२९, (D) भ. १९।४२ या. बुध आश्ले. में २०।६, (E) पंचक प्रा. २२।१० स. सूर्य कर्क में २१।२०, (F) सूर्य पुष्य में १७।१९, (G) शुक्र पश्चिम में उदित, ८।५, सूर्य मा. सिंह में २१।०८,

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र संचार घं. मि.	भद्रा आदि
श्रावण शुक्ल पक्ष	जुलाई २९	१	र.	१४।१५	आश्ले.	२८।४३	सि. २८।४३	चन्द्रदर्शन मु. १५.
	३०	२	चं.	१०।५८	मघा	२०।१३	सिंह	
	३१	३	मं.	७।३९ / २८।३०	पू.फा.	१७।४६	क. २३।१२	भ. १८।४ उ. २८।३० या.,
	अगस्त १	५	बु.	२५।३३	उ.फा.	१५।३०	कन्या	बुध पू.फा. १ में २६।२२
	२	६	गु.	२२।१०	ह.	१२।१५	तु. २४।५१	सूर्य आश्ले. में १८।१९, (A)
	३	७	शु.	२०।५५	चि.	९।१६	तुला	भ. २०।५५ उ.
	४	८	श.	१९।२०	स्वा.	११।५	वृ. २८।४४	भ. ८।८ या.,
	५	९	र.	१८।१३	वि.	१०।३७	वृश्चिक	मंगल वृश्चि. में ६।३१.
	६	१०	चं.	१७।४८	अनु.	१०।३८	वृश्चिक	भ. २१।४१ उ.,
	७	११	मं.	१७।०८	ज्ये.	११।६	ध. ११।६	भ. १७।३८ या.,
	८	१२	बु.	१७।२८	मू	१२।१	धनु	
	९	१३	गु.	१८।४१	पू.षा.	१३।१९	म. १९।४४	शनि स्वाती ४ में १४।२४
	१०	१४	श.	१९।४८	उ.षा.	१४।५५	मकर	भ. १९।४८ उ.
	११	१५	श.	२१।१४	श्र.	१७।०	मकर	भ. ८।३१ या., (B)
भाद्रपद कृष्णपक्ष	१२	१	र.	२२।१५	ध.	१९।१२	कुं. ६।१०	पंचक प्रा. ६।१०
	१३	२	चं.	२५।१०	श	२१।५८	कुम्भ	शुक्र पू. फा. में १६।५२
	१४	३	मं.	२३।२६	पू.भा	२४।२०	मी. १८।७	भ. १६।१६ उ., (C)
	१५	४	बु.	——	उ.भा.	२६।५७	मीन	
	१६	४	गु.	२।५५	रे.	——	मीन	स. सूर्य मघा सिंह में १३।५४
	१७	५	शु	८।२३	रे.	६।५३	मे. ६।५३	पंचक स. ६।५३,
	१८	६	श.	१०।३८	अ.	९।४२	मेष	भ. १०।३८ उ., (D)
	१९	७	र.	१२।२८	भ.	१२।१७	वृ. १८।३७	
	२०	८	चं.	१३।४२	क.	१४।७	वृष	
	२१	९	मं.	१४।१०	रो.	१५।७	मि. २०।१६	भ. २५।५८ उ., (E)
	२२	१०	बु.	१३।४७	म.	१५।२३	मिथुन	भ. १३।४७ या., (F)
	२३	११	गु.	१२।३९	आ.	१४।४९	मिथुन	
	२४	१२	शु.	१०।३०	पुन.	१३।२८	क. ७।४८	शुक्र उ.फा. में १३।२
	२५	१३	श.	७।४७ / २८।३२	पु	११।२६	कर्क	भ. ७।४७ उ. १८।१९ या.,
	२६	३०	र.	२४।५५	आश्ले.	८।५४	सि. ८।५४	व. बुध मघा में २८।२४

(A) शुक्र मघा सिंह में २०।४६, (B) वक्री गुरु मूल ३ में २६।१६, मंगल अनु. में २९।४०, (C) भ. २३।२६ या., बुध वक्री १८।१२, (D) भ. २३।३३ या., यूरेनस मार्गी, (E) बुध पश्चिम में अस्त १३।१८, (F) सूर्य मा. कन्या में २८।३१.

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (सं २०४१)

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	अग. २७	१	चं.	२११९	म.	{ ६।४ २७।१९	सिंह	शुक्र कन्या मे ८।१९
	२८	२	म.	१७।३२	उ. फा.	२४।१२	क. ८.२५	चन्द्र दर्शन मु. ४५
	२९	३	बु.	१३।४२	ह.	२१।३४	कन्या	भ. २४।१४ उ., (A)
	३०	४	गु.	१७।२८	चि.	१९।२२	तु. ८।२८	भ. १०।३८ या., (B)
	३१	५	शु.	{ ७।५७ २९।५५ }	स्वा	१७।४२	तुला	
	सित. १	७	श.	२८।४६	वि.	१६।४०	वृ. १०।५५	भ. २८।२७ उ.,
	२	८	र.	२७।४१	अनु.	१६।१८	वृश्चिक	भ. १६।४ या.,
	३	९	च.	२७।३६	ज्ये.	१६।३६	ध. १६।३६	अगस्त्य उदित
	४	१०	म.	२८।६	मू.	१७।३१	धनु	मंगल ज्येष्ठा (C)
	५	११	बु.	२९।५	पू. षा.	१८।५७	म. २५।२५	भ. १६।३६ उ. २९।५ या.,
	६	१२	गु.	——	उ. षा.	२०।४८	मकर	बुध पूर्वोदित १६।४५,
	७	१२	शु.	६।३०	श्र.	२३।२	मकर	बुध मार्गी १३।८
	८	१३	श.	८।१५	ध.	२५।३१	कु. १२।१७	पंचक प्रा. १२।१७
	९	१४	र.	१०।१६	श.	२८।१५	कुम्भ	भ. १०।१६ उ., २३।२४ या
	१०	१५	चं.	१२।३१	पू. भा.	——	मी. २४।२५	नेपच्यून मार्गी,
आश्विन कृष्ण पक्ष	११	१	म.	१४।२५	पू. भा.	७।८	मीन	
	१२	२	बु.	१७।२४	उ. भा.	१०।८	मीन	सूर्य. उ. फा. में २७।४३
	१३	३	गु.	१९।५३	रे.	१३।१०	मे. १३।१०	भ. ६।३८ उ., (D)
	१४	४	शु.	२२।१४	अ.	१६।५	मेष	शुक्र. चित्रा में ३०।१०
	१५	५	श.	२४।१७	भ.	१८।४६	वृ. २५।२०	
	१६	६	र.	२५।५२	कृ.	२१।२	वृष	भ. २५।५२ उ. (E)
	१७	७	चं.	२६।४८	रो.	२२।४२	वृष	भ. १४।२० या., (F)
	१८	८	म.	२७।०	मृ.	२३।३९	मि. ११।११	
	१९	९	बु.	२६।२२	आ.	२३।४८	मिथुन	
	२०	१०	गु.	२४।५२	पुन.	२३।८	क. १७।१८	भ. १३।३८ उ., (G)
	२१	११	शु.	२२।३८	पु.	२१।४१	कर्क	
	२२	१२	श.	१९।४४	आश्ले.	१९।३४	सि. १९।३४	सूर्य सा. तुला में
	२३	१३	र.	१६।१९	म.	१६।५७	सिंह	भ. १६।१९ उ., (H)
	२४	१४	चं.	१२।३४	पू. फा.	१६।५९	क. १९।१२	बुध पूर्वास्त १४।५९,
	२५	३०	मं.	{ ८।४० २८।५२ }	उ. फा.	१०।५३	कन्या	मंगल मूलधनु में २७।२५ (I)

(A) गुरु मार्गी २७।२९, (B) सूर्य पू. फा. में ९।४८, (C) मे २९।४६, शुक्र हस्त में ९।२४, (D) भ. १९।५३ या., पंचक स. १३।१०, (E) सं. सूर्य कन्या में १३।५०, गुरु मूल ४ में २९।१४, (F) बुध पू. फा. में ६।४६, (G) भ. २४।५३ या., शुक्र तुला में १६।४०, यूरेनस ज्येष्ठा १ मे, (H) भ. २६।२७ या., शनि विशा. १ में २७।१६, (I) बुध उ. फा. में १५।४५, शुक्र स्वाती में २७।१८, राहु कृत्ति. ३ में केतु अनु. १ मे २१।३८,

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	सित. २६	२	बु.	२५।१९	ह.	{ ७।५० २९।१५	तु. १८।२८	चन्द्र दर्शन मु. ३० (A)
	२७	३	गु.	२१।५४	स्वा.	२६।४०	तुला	बुध कन्या में १२।३५,
	२८	४	शु.	१९।१२	वि.	२४।५२	वृ. १९।१९	भ. ८।३३ उ. १९।१२ या.,
	२९	५	श.	१७।९	अनु.	२३।४५	वृश्चिक	
	३०	६	र.	१५।५१	ज्ये.	२३।२४	ध. २३।२४	
	अक्तू. १	७	चं.	१५।२०	मू.	२३।४८	धनु	भ. १५।२० उ. २७।२७ या.,
	२	८	म.	१५।३४	पू. षा.	२४।५४	धनु	बुध हस्त में २५।१९.
	३	९	बु.	१६।२९	उ. षा.	२६।३८	म. ७।२०	
	४	१०	गु.	१७।५८	श्र.	२८।५२	मकर	
	५	११	शु.	१९।५२	ध.	——	कु. १८।१०	भ. ६।५५ उ. (B)
	६	१२	श.	२२।५	ध.	७।२७	कुंभ	शुक्र विशा. में २४।५९,
	७	१३	र.	२४।३०	श.	१०।१६	कुम्भ	
	८	१४	चं.	२६।५८	पू. भा.	१३।१३	मी. ६।२९	भ. २६।५८ उ.,
	९	१५	म.	२९।२७	उ. भा.	१६।१२	मीन	भ. १६।१३ या.,
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१०	१	बु.	——	रे.	१९।१९	मे. १९।१९	पंचक स. १९।१९ (C)
	११	१	गु.	७।५१	अ.	२१।५७	मेष	
	१२	२	शु.	१०।४	भ.	२४।३३	मेष	भ. २३।३ उ.,
	१३	३	श.	१२।२	कृ.	२६।५१	वृ. ७।८	भ. १२।२ या.,
	१४	४	र.	१३।३७	रो.	२८।४३	वृष	शुक्र वृश्चिक में २९।४१, (D)
	१५	५	च.	१४।४३	मृ.	३०।४	मि. १७।२४	मंगल पू. षा. मे ११।५८,
	१६	६	म.	१५।१३	आ.	——	मिथुन	भ. १५।१३ उ., (E)
	१७	७	बु.	१५।४	आ.	६।४७	क. २४।४९	शुक्र अनु में २३।२०,
	१८	८	गु.	१४।१३	पुन.	{ ६।५० ३०।१३	कर्क	बुध स्वाती में १२।४६,
	१९	९	शु.	१२।३९	आश्ले.	२८।५५	सि. २८।५५	भ. २३।३२ उ., (F)
	२०	१०	श.	१०।२५	म.	२६।५५	सिंह	भ. १०।२५ या.,
	२१	११	र.	{ ७।३८ २८।२४ }	पू. फा.	२४।३३	क. २९।५२	
	२२	१३	च.	२४।५३	उ. फा.	२१।५०	कन्या	भ. २४।५३ उ.
	२३	१४	म.	२१।१५	ह.	१८।५८	तु. २९।३३	भ. ११।४ या., (G)
	२४	३०	बु.	१७।३९	चि.	१६।८	तुला	

(A) सूर्य हस्त में १९।११, (B) भ. १९।५२ या., पंचक प्रा. १८।१०, (C) सूर्य चित्रा में ८।११, बुध चित्रा मे १४।१८, (D) बुध तुला में १२।१२, (E) भ. २७।९ या., म० सूर्य तुला मे २५।४६, (F) गुरु पू. षा १ में २७।१३, (G) सूर्य स्वाती में १८।४०, सूर्य सा. वृश्चिक में ११।१६,

भारतीय स्टॅण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं २०४१

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
कार्तिक शुक्ल पक्ष	अक्तू.२५	१	गु.	१४।१५	स्वा	१३।२९	वृ. २९।४६	शनि अस्त १३।१
	२६	२	शु.	११।१४	वि.	११।१२	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. ३०, (A)
	२७	३	श.	८।४५	अनु.	९।२८	वृश्चिक	भ. ११।५० उ.
	२८	४	र.	{६।५६ / २९।५७}	ज्ये	८।२३	ध. ८।२३	भ. ६।५६ या., (B)
	२९	६	चं.	२९।३४	मू	८।१	धनु	
	३०	७	मं.	३०।१६	पू. षा.	८।२८	म. १४।४६	भ. ३०।१६ उ.,
	३१	८	बु.	———	उ. षा.	९।४०	मकर	भ. १८।४३ या., (C)
	नवं. १	८	गु.	७।१९	श्र.	११।३२	कुं. २४।४५	पंचक प्रा. २४।४५
	२	९	शु.	९।१९	ध.	१३।५८	कुम्भ	मंगल उ.षा. में २२।५२,(D)
	३	१०	श.	११।२५	श.	१६।४५	कुम्भ	भ. २४।४० उ.,
	४	११	र.	१३।५४	पू. भा.	१९।४३	मी. १२।५८	भ. १३।५४ या., (E)
	५	१२	चं.	१६।२९	उ. भा.	२२।४५	मीन	सूर्य विशा. में २६।४६
	६	१३	मं.	१८।५७	रे.	२५।३८	मे. २५।३८	पंचक स. २५।३८,
	७	१४	बु.	२१।१४	अ.	२८।१९	मेष	भ. २१।१४ उ. (F)
	८	१५	गु.	२३।१३	भ.	३०।४३	मेष	भ. १०।१४ या. (G)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	९	१	शु.	२४।५१	कृ.	———	वृ. १३।१३	गुरु पू.षा. २ में १५।२५
	१०	२	श.	२६।५	कृ.	८।४४	वृष	
	११	३	र.	२६।५३	रो.	१०।२३	मि. २२।५९	भ. १४।२९ उ. २६।५३ या.,
	१२	४	चं.	२७।१३	मृ.	११।३६	मिथुन	
	१३	५	मं.	२७।४	आ.	१२।२१	क. ३०।३५	बुध ज्येष्ठा में २२।९,
	१४	६	बु.	२६।२५	पुन.	१२।३८	कर्क	भ. २६।२५ उ.
	१५	७	गु.	२५।१५	पु.	१२।२५	कर्क	भ. १३।५० या., (H)
	१६	८	शु.	२३।२७	आश्ले.	११।४२	सि. ११।४२	
	१७	९	श.	२१।३२	म.	१०।३२	सिंह	
	१८	१०	र.	१९।३	पू. फा.	८।५६	क. १४।२७	भ. ८।१८ उ. १९।३ या.,
	१९	११	चं.	१६।१६	उ. फा.	{७।० / २८।४८}	कन्या	सूर्य अनु. में. ८।४९ (I)
	२०	१२	मं.	१३।१८	चि.	२६।३२	तु. १५।४५	मंगल श्रव. में २०।४५
	२१	१३	बु.	१०।१५	स्वा.	२४।१४	तुला	भ. १०।१५ उ. (J)
	२२	१४	गु.	{७।१५ / २८।३०}	वि.	२२।६	वृ. १६।३८	सूर्य सा. धनु में ८।४१,

(A) बुध विशा. में २१।३६, (B) शुक्र ज्येष्ठा में २९।२८, (C) बुध पश्चिम में उदित १२।४२, (D) बुध वृश्चिक में १०।३९, (E) बुध अनु. में १६।१४, (F) मंगल मकर में ११।१९, (G) शुक्र मूल धनु में २२।४०, (H) सं. सूर्य वृश्चिक में २५।३०, (I) शुक्र पू. षा. में. २४।२२, (J) भ. २०।४५ या, शनि विशा. ३ में १८।१३

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	नवं.२३	१	शु.	२६।१	अनु.	२०।१५	वृश्चिक	
	२४	२	श.	२४।३	ज्ये.	१८।५०	ध. १८।५०	चन्द्रदर्शन मु. १५, (A)
	२५	३	र.	२२।४०	मू	१८।०	धनु	
	२६	४	चं.	२२।१	पू. षा.	१७।५०	म. २३।५९	भ. १०।२० उ., (B)
	२७	५	मं.	२२।७	उ. षा.	१८।२४	मकर	राहु कृत्ति २ में केतु विशा.,§
	२८	६	बु.	२२।५८	श्र.	१९।४२	मकर	शनि उदित ९।३५
	२९	७	गु.	२४।३२	ध	२१।४१	कु. ८।४२	भ. २४।३२ उ., (C)
	३०	८	शु.	२६।२९	श.	२४।१३	कुम्भ	भ. १३।३६ या., (D)
	दिस. १	९	श.	२९।८	पू. भा.	२७।६	मी. २०।२३	§४ में १९।१४
	२	१०	र.	———	उ. भा.	३०।८	मीन	सूर्य ज्येष्ठा में १३।२
	३	१०	चं.	७।४४	रे.	———	मीन	भ. २१।७ उ. (E)
	४	११	मं.	१०।१६	रे.	९।६	मे. ९।६	भ. १०।१६ या. (F)
	५	१२	बु.	१२।२१	अ.	११।४८	मेष	
	६	१३	गु.	१४।१९	भ.	१४।६	वृ. २०।३३	
	७	१४	शु.	१५।३९	कृ.	१५।५९	वृष	भ. १५।३९ उ., २८।२ या.,
	८	१५	श.	१६।२५	रो.	१७।१४	मि. २९।३८	मंगल श्रव. में ११।१३ (G)
पौष कृष्ण पक्ष	९	१	र.	१६।४०	मृ.	१८।२	मिथुन	
	१०	२	चं.	१६।२६	आ.	१८।२२	मिथुन	भ. २८।६ उ.,
	११	३	मं.	१५।४६	पुन.	१८।१७	क. १२।१८	भ. १५।४६ या.,
	१२	४	बु.	१४।४३	पुष्य	१७।५०	कर्क	गुरु पू. षा. ४ में १०।५४(H)
	१३	५	गु.	१३।२२	आश्ले.	१७।६	सि. १७।६	व. बुध ज्येष्ठा वृश्चिक में [S]
	१४	६	शु.	११।४५	म.	१६।७	सिंह	भ. ११।४५ उ. २२।५० या.,
	१५	७	श.	९।५५	पू. फा.	१४।५४	क. २०।३४	सं. सूर्य मूल धनु में १६।४,
	१६	८	र.	{७।५५ / २९।४६}	उ. फा.	१३।३३	कन्या	मंगल कुम्भ में २९।१, [S]२९।७
	१७	१०	चं.	२७।३१	ह.	१२।४	तु. २३।१७	भ. १६।३९ उ., २७।३१ या.
	१८	११	मं.	२५।१५	चि.	१०।२९	तुला	
	१९	१२	बु.	२३।०	स्वा.	८।५५	वृ. २५।४६	
	२०	१३	गु.	२०।५१	वि.	{७।२३ / ३०।५९}	वृश्चिक	भ. २०।५१ उ. (I)
	२१	१४	शु.	१८।५५	ज्ये.	२८।४९	ध. २८।४९	भ. ७।५३ या., (J)
	२२	३०	श.	१६।१८	मू.	२७।४	धनु	

(A) बुध मूल धनु में ८।२३, (B) भ. २२।१ या., गुरु पू. षा. ३ में २०।९, (C) पंचक प्रा. ८।४२, (D) शुक्र उ.षा. में २८।९, नेपच्यून मूल ३ में प्लूटो स्वाती १ में, (E) शुक्र मकर में २३।२३, यूरेनस ज्येष्ठा २ में, (F) पंचक स. ९।६, बुध वक्री २४।१६, (G) बुध पश्चिमास्त २२।५, (H) शुक्र श्रवण में ११।१, (I) शनि विशा. ४ वृश्चिक में २९।४२, बुध पूर्वोदित २०।३०, (J) सूर्य सा. मकर में २१।५५,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (सं २०४१)

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	अग. २७	१	चं.	२१।१९	म.	६।१४ २०।१९	सिंह	शुक्र कन्या में ८।१९
	२८	२	म.	१७।३२	उ. फा	२०।१२	क. ८।२५	चन्द्र दर्शन मु. ४५
	२९	३	बु.	१३।४९	ह.	२१।३४	कन्या	भ. २४।१४ उ., (A)
	३०	४	गु.	१०।३८	चि.	१९।२२	तु. ८।२८	भ. १०।३८ या., (B)
	३१	५	शु.	७।५७ २९।५५	स्वा	१७।४२	तुला	
	सित. १	७	श.	२८।४६	वि	१६।४०	वृ. १०।५५	भ. २८।२७ उ.,
	२	८	र.	२७।४१	अनु	१६।१८	वृश्चिक	भ. १६।०४ या.,
	३	९	चं.	२७।३६	ज्ये	१६।३६	ध. १६।३६	अगस्त्य उदित
	४	१०	म.	२८।६	मू.	१७।३१	धनु	मंगल ज्येष्ठा (C)
	५	११	बु.	२९।५	पू. षा	१८।५७	म. २४।३५	भ. १६।३६ उ. २९।५ या.,
	६	१२	गु.	——	उ. षा	२०।४८	मकर	बुध पूर्वोदित १६।४५.
	७	१२	शु.	६।३०	श्र	२३।२	मकर	बुध मार्गी १३।८
	८	१३	श.	८।१५	ध.	२५।३१	कु. १२।१७	पंचक प्रा. १२।१७
	९	१४	र.	१०।१६	श.	२८।१५	कुम्भ	भ. १०।१६ उ., २३।२४ या
	१०	१५	चं.	१२।३१.	पू. भा.	——	मी. २४।२५	नेपच्यून मार्गी,
आश्विन कृष्ण पक्ष	११	१	म.	१४।२५	पू. भा	७।८	मीन	
	१२	२	बु.	१७।२४	उ. भा	१०।८	मीन	सूर्य. उ. फा. में २७।४३
	१३	३	गु.	१९।५३	रे.	१३।१०	मे. १३।१०	भ. ६।३८ उ., (D)
	१४	४	शु.	२२।१४	अ.	१६।१५	मेष	शुक्र. चित्रा में २०।१०
	१५	५	श.	२४।१७	भ	१८।४६	वृ. २५।२०	
	१६	६	र	२५।५७	कृ.	२१।२	वृष	भ. २५।५२ उ. (E)
	१७	७	चं	२६।४८	रो	२२।४२	वृष	भ. १४।२० या., (F)
	१८	८	म.	२७।०	मृ	२३।३९	मि. ११।११	
	१९	९	बु.	२६।२२	आ.	२३।४८	मिथुन	
	२०	१०	गु.	२४।५३	पुन.	२३।८	क. १७।१८	भ. १३।३८ उ., (G)
	२१	११	शु.	२२।३८	पु.	२१।४१	कर्क	
	२२	१२	श.	१९।४४	आश्ले.	१९।३४	सि. १९।३४	सूर्य सा. तुला में
	२३	१३	र.	१६।१९	म	१६।५७	सिंह	भ. १६।१९ उ., (H)
	२४	१४	चं.	१२।३४	पू. फा.	१६।५९	क. १९।१२	बुध पूर्वास्त १४।५९.
	२५	३०	म.	८।४० २८।५२	उ. फा	१०।५३	कन्या	मंगल मूलधनु में २७।२५ (I)

(A) गुरु मार्गी २७।२९, (B) सूर्य पू. फा. में ९।४८, (C) में २९।४६, शुक्र हस्त में ९।२४, (D) भ. १९।५३ या., पंचक स. १३।१०, (E) स. सूर्य कन्या में १३।५०, गुरु मूल ४ में २९।१४, (F) बुध पू. फा. में ६।४६, (G) भ. २४।५३ या., शुक्र तुला में १६।४०, यूरेनस ज्येष्ठा १ में. (H) भ. २६।२७ या., शनि विशा. १ में २७।१६, (I) बुध उ. फा. में १५।४५, शुक्र स्वाती में २७।१८, राहु कृत्ति. ३ में केतु अनु. १ में २१।३८,

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	सित. २६	२	बु.	२५।१९	ह.	७।५० २९।५	तु. १८।२८	चन्द्र दर्शन मु. ३० (A)
	२७	३	गु.	२१।५४	स्वा.	२६।४०	तुला	बुध कन्या में १२।३५,
	२८	४	शु.	१९।१२	वि.	२४।५२	वृ. १२।१९	भ. ८।३३ उ. १९।१२ या.,
	२९	५	श.	१७।१९	अनु.	२३।४५	वृश्चिक	
	३०	६	र.	१५।५९	ज्ये.	२३।२४	ध. २३।२४	
	अक्तू. १	७	चं.	१५।२०	मू.	२३।४८	धनु	भ. १५।२० उ. २७।२७ या.,
	२	८	म.	१५।३४	पू. षा.	२४।५४	धनु	बुध हस्त में २५।१९.
	३	९	बु.	१६।२९	उ. षा.	२६।३८	म. ७।२०	
	४	१०	गु.	१७।५८	श्र.	२८।५२	मकर	
	५	११	शु.	१९।५२	ध.	——	क. १८।१०	भ. ६।५५ उ. (B)
	६	१२	श.	२२।५	ध.	७।२७	कुम्भ	शुक्र विशा. में २४।५९,
	७	१३	र.	२४।३०	श.	१०।१६	कुम्भ	
	८	१४	चं.	२६।५८	पू. भा.	१३।१३	मी. ६।२९	भ. २६।५८ उ.,
	९	१५	म.	२९।२७	उ. भा.	१६।१२	मीन	भ. १६।१३ या.,
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१०	१	बु.	——	रे.	११।१९	मे. ११।१९	पंचक स. ११।१९ (C)
	११	१	गु.	७।५१	अ.	२१।५७	मेष	
	१२	२	शु.	१०।४	भ.	२४।३३	मेष	भ. २३।३ उ.,
	१३	३	श.	१२।२	कृ.	२६।५१	वृ. ७।८	भ. १२।२ या.,
	१४	४	र.	१३।३७	रो.	२८।४३	वृष	शुक्र वृश्चिक में २९।४१, (D)
	१५	५	चं.	१४।४३	मृ.	३०।४	मि. १७।२४	मंगल पू. षा. में ११।५८,
	१६	६	म.	१५।१३	आ.	——	मिथुन	भ. १५।१३ उ., (E)
	१७	७	बु.	१५।४	आ.	६।४७	क. २४।४९	शुक्र अनु में २३।२०,
	१८	८	गु.	१४।१३	पुन.	६।५० ३०।१३	कर्क	बुध स्वाती में १२।४६,
	१९	९	शु.	१२।३९	आश्ले.	२८।५५	सि. २८।५५	भ. २३।३२ उ., (F)
	२०	१०	श.	१०।२५	म.	२६।५५	सिंह	भ. १०।२५ या.,
	२१	११	र.	७।३८ २८।२४	पू. फा.	२४।३३	क. २९।५२	
	२२	१३	चं.	२४।५३	उ. फा.	२१।५०	कन्या	भ. २४।५३ उ.
	२३	१४	म.	२१।१५	ह.	१८।५८	तु. २९।३३	भ. ११।१४ या., (G)
	२४	३०	बु.	१७।२९	चि.	१६।८	तुला	

(A) सूर्य हस्त में १९।११, (B) भ. १९।५२ या., पंचक प्रा. १८।१०, (C) सूर्य चित्रा में ८।११, बुध चित्रा में १४।१८, (D) बु. । तुला में १२।१२, (E) भ. २७।१९ या., म० सूर्य तुला में २५।४६, (F) गुरु पू. षा. १ में २७।१९, (G) सूर्य स्वाती में १८।४०, सूर्य सा. वृश्चिक में ११।१६,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं २०४१

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
कार्तिक शुक्ल पक्ष	अक्तू.२५	१	गु.	१८।१५	स्वा	१३।२९	वृ. २९।४६	शनि अस्त १३।१
	२६	२	शु.	११।१४	वि.	११।१२	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. ३०, (A)
	२७	३	श.	८।४५	अनु.	९।२८	वृश्चिक	भ. १९।५० उ.
	२८	४	र.	{६।५६ २९।५२}	ज्ये.	८।२३	ध. ८।२३	भ. ६।५६ या., (B)
	२९	६	चं.	२९।३४	मू.	८।१	धनु	
	३०	७	मं.	३०।६	पू. षा.	८।२८	म. १८।४६	भ. ३०।६ उ.,
	३१	८	बु.	———	उ. षा.	९।४०	मकर	भ. १८।४३ या., (C)
	नव. १	८	गु.	७।१९	श्र.	११।३२	कु. २८।४५	पंचक प्रा. २८।४५
	२	९	शु.	९।१९	ध.	१३।५८	कुम्भ	मंगल उ.षा. में २२।५२,(D)
	३	१०	श.	११।२५	श.	१६।४५	कुम्भ	भ. २४।४० उ.,
	४	११	र.	१३।५४	पू. भा.	१९।४३	मी. १२।५८	भ. १३।५४ या., (E)
	५	१२	चं.	१६।२९	उ. भा.	२२।४५	मीन	सूर्य विशा. में २६।४६
	६	१३	मं	१८।५७	रे.	२५।३८	मे. २५।३८	पंचक स. २५।३८,
	७	१४	बु.	२१।१४	अ.	२८।१९	मेष	भ. २१।१४ उ. (F)
	८	१५	गु.	२३।१३	भ.	३०।४३	मेष	भ. १०।१४ या. (G)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	९	१	शु.	२४।५१	कृ.	———	वृ. १३।१३	गुरु पू.षा. २ में १५।२५
	१०	२	श.	२६।५	कृ.	८।४४	वृष	
	११	३	र.	२६।५३	रो.	१०।२३	मि. २२।५९	भ. १४।२९ उ. २६।५३ या.,
	१२	४	चं.	२७।१३	मृ.	११।३६	मिथुन	
	१३	५	मं	२७।४	आ.	१२।२१	क. ३०।३५	बुध ज्येष्ठा में २२।९,
	१४	६	बु.	२६।२५	पुन.	१२।३८	कर्क	भ. २६।२५ उ.
	१५	७	गु.	२५।१५	पु.	१२।२५	कर्क	भ. १३।५० या., (H)
	१६	८	शु.	२३।३७	आश्ले.	११।४२	सि. ११।४२	
	१७	९	श	२१।३२	म.	१०।३२	सिंह	
	१८	१०	र.	१९।३	पू. फा.	८।५६	क. १४।२७	भ. ८।१८ उ. १९।३ या.,
	१९	११	चं.	१६।१६	उ. फा.	{७।० २८।४८}	कन्या	सूर्य अनु. में. ८।४९ (I)
	२०	१२	मं.	१३।१८	चि.	२६।३२	तु. १५।४५	मंगल श्रव. में २०।४५
	२१	१३	बु.	१०।१५	स्वा.	२४।१४	तुला	भ. १०।१५ उ. (J)
	२२	१४	गु.	{७।१५ २८।३०}	वि.	२२।६	वृ. १६।३८	सूर्य सा. धनु में ८।४१,

(A) बुध विशा में २१।३६, (B) शुक्र ज्येष्ठा में २२।२८, (C) बुध पश्चिम में उदित १२।४२, (D) बुध वृश्चिक में १०।३९, (E) बुध अनु. में १६।१४, (F) मंगल मकर में १३।१९, (G) शुक्र मूल धनु में २२।४०, (H) सं. सूर्य वृश्चिक में २५।३०, (I) शुक्र पू. षा. में. २८।२२, (J) भ. २०।४५ या, शनि विशा ३ में १८।१३

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	नव.२३	१	शु.	२६।१	अनु.	२०।१५	वृश्चिक	
	२४	२	श.	२४।३	ज्ये.	१८।५०	ध. १८।५०	चन्द्रदर्शन मु. १५, (A)
	२५	३	र.	२२।४०	मू.	१८।७	धनु	
	२६	४	चं.	२२।१	पू. षा.	१७।५०	म. २३।५९	भ. १०।२० उ., (B)
	२७	५	मं.	२२।७	उ. षा.	१८।२४	मकर	राहु कृत्ति २ में केतु विशा, ☋
	२८	६	बु.	२२।५८	श्र.	१९।४२	मकर	शनि उदित ९।३५
	२९	७	गु.	२४।२२	ध.	२१।४१	कु. ८।४२	भ. २४।३२ उ., (C)
	३०	८	शु.	२६।२९	श.	२४।१३	कुम्भ	भ. १३।२६ या., (D)
	दिस. १	९	श.	२९।८	पू. भा.	२७।६	मी. २०।२३	☋४ में १९।१४
	२	१०	र.	———	उ. भा.	३०।८	मीन	सूर्य ज्येष्ठा में १३।२
	३	१०	चं.	७।४४	रे.	———	मीन	भ. २१।० उ. (E)
	४	११	मं.	१०।१६	रे.	९।६	मे. ९।६	भ. १०।१६ या. (F)
	५	१२	बु.	१२।३१	अ.	११।४८	मेष	
	६	१३	गु.	१४।१९	भ.	१४।६	वृ. २०।३३	
	७	१४	शु.	१५।३९	कृ.	१५।५६	वृष	भ. १५।३९ उ., २८।२ या.,
	८	१५	श.	१६।२५	रो.	१७।१४	मि. २९।३८	मंगल श्रव. में ११।१३ (G)
पौष कृष्ण पक्ष	९	१	र.	१६।४०	मृ.	१८।२	मिथुन	
	१०	२	चं.	१६।२६	आ.	१८।२२	मिथुन	भ. २८।६ उ.,
	११	३	मं.	१५।४९	पुन.	१८।१७	क. १२।१८	भ. १५।४९ या.,
	१२	४	बु.	१४।४३	पुष्य	१७।५०	कर्क	गुरु पू. षा. ४ में १०।५४(H)
	१३	५	गु.	१३।२२	आश्ले.	१७।६	सि. १७।६	व. बुध ज्येष्ठा वृश्चिक में ☋
	१४	६	शु.	११।५५	म.	१६।७	सिंह	भ. ११।५५ उ. २२।५० या.,
	१५	७	श.	९।५५	पू. फा.	१४।५४	क. २०।३४	सं. सूर्य मूल धनु में १६।४,
	१६	८	र.	{७।५५ २९।४५}	उ. फा.	१३।३३	कन्या	मंगल कुम्भ में २९।१, ☋२९।७
	१७	१०	चं.	२७।३१	ह.	१२।४	तु. २३।१७	भ. १६।३९ उ., २७।३१ या.
	१८	११	मं.	२५।१५	चि.	१०।२९	तुला	
	१९	१२	बु.	२३।०	स्वा.	८।५५	वृ. २५।४६	
	२०	१३	गु.	२०।५१	वि.	{७।२३ २३।५९}	वृश्चिक	भ. २०।५१ उ. (I)
	२१	१४	शु.	१८।५५	ज्ये.	२४।४९	ध. २४।४९	भ. ७।५३ या., (J)
	२२	१०	श.	१३।१८	मू.	२४।४	धनु	

(A) बुध मूल धनु में ८।२३, (B) भ. २२।१ या.,,गुरु पू. षा. ३ में २०।९, (C) पंचक प्रा. ८।४२, (D) शुक्र उ.षा. में २८।९, नेपच्यून मूल ३ में प्लूटो स्वाती १ में, (E) शुक्र मकर में २३।०३, यूरेनस ज्येष्ठा २ में, (F) पंचक स. ९।६, बुध वक्री २४।१६, (G) बुध पश्चिमास्त २२।५, (H) शुक्र श्रवण में ११।१, (I) शनि विशा. ४ वृश्चिक में २९।४२, बुध पूर्वोदित २०।३०, (J) सूर्य सा. मकर में २१।५५,

भारतीय स्टंण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (सं २०४१)

मास पक्ष	ता.१९८४	तिथि	वार	घ. मि	नक्ष.	घं मि.	चन्द्र-संचार घ. मि	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	अग. २७	१	चं.	२१।१९	म.	६।४ / २७।१९	सिंह	शुक्र कन्या मे ६।६
	२८	२	मं.	१७।३२	उ. फा.	२४।१२	क. ८।२४	चन्द्र दर्शन मु. ४५
	२९	३	बु.	१२।४२	ह.	२१।२४	कन्या	भ. २४।१४ उ., (A)
	३०	४	गु.	१०।३८	चि.	१९।२२	तु. ८।२८	भ. १०।३८ या., (B)
	३१	५	शु.	७।५७ / २९।५५	स्वा	१७।४२	तुला	
	सित. १	७	श.	२८।४६	वि	१६।४०	वृ. १०।५५	भ. २८।२७ उ.,
	२	८	र.	२७।०१	अनु.	१६।१८	वृश्चिक	भ. १६।७ या.,
	३	९	च.	२७।३६	ज्ये	१६।३६	ध. १६।३६	अगस्त्य उदित
	४	१०	मं.	२८।६	मू	१७।३१	धनु	मंगल ज्येष्ठा (C)
	५	११	बु.	२९।५	पू. षा.	१८।५७	म. २५।३५	भ. १६।३६ उ. २९।५ या.,
	६	१२	गु.	——	उ. षा.	२०।४८	मकर	बुध पूर्वोदित १६।४५,
	७	१२	शु.	६।३०	श्र	२३।२	मकर	बुध मार्गी १३।८
	८	१३	श.	८।१५	ध.	२५।३१	कु. १२।१७	पंचक प्रा. १२।१७
	९	१४	र.	१०।१६	श	२८।१५	कुम्भ	भ. १०।१६ उ., २३।२४ या
	१०	१५	चं.	१२।३१	पू. भा.	——	मी. २४।३५	नेपच्यून मार्गी,
आश्विन कृष्ण पक्ष	११	१	मं.	१४।५५	पू. भा	७।८	मीन	
	१२	२	बु.	१७।२४	उ. भा	१०।८	मीन	सूर्य. उ. फा. में २०।४३
	१३	३	गु.	१९।५३	रे.	१३।१०	मे. १३।१०	भ. ६।३८ उ., (D)
	१४	४	शु.	२२।१४	अ	१६।५	मेष	शुक्र. चित्रा में ३०।१०
	१५	५	श.	२४।१७	भ	१८।४६	वृ. २५।२०	
	१६	६	र	२५।५२	कृ	२१।२	वृष	भ. २५।५२ उ. (E)
	१७	७	च	२६।४८	रो.	२२।४२	वृष	भ. १४।२० या., (F)
	१८	८	मं	२७।०	मृ	२३।३९	मि. ११।११	
	१९	९	बु	२६।२२	आ	२३।४८	मिथुन	
	२०	१०	गु.	२४।५३	पुन.	२३।८	क. १७।१८	भ. १३।३८ उ., (G)
	२१	११	शु.	२२।३८	पु.	२१।४१	कर्क	
	२२	१२	श.	१९।४४	आश्ले.	१९।३४	सि. १९।३४	सूर्य सा. तुला मे
	२३	१३	र.	१६।१९	म	१६।५७	सिंह	भ. १६।१९ उ., (H)
	२४	१४	च.	१२।३४	पू. फा.	१३।५९	क. १९।१२	बुध पूर्वास्त १४।५९,
	२५	३०	मं.	८।४० / २८।५२	उ. फा.	१०।५३	कन्या	मंगल मूलधनु में २७।२५ (I)

(A) गुरु मार्गी २७।२९, (B) सूर्य पू. फा. में ९।४८, (C) में २९।४६, शुक्र हस्त में ९।२४, (D) भ. १९।५३ या., पंचक स. १३।१०, (E) भ. सूर्य कन्या में १३।५०, गुरु मूल ४ में २९।१४, (F) बुध पू. फा. मे ६।४६, (G) भ. २४।५३ या., शुक्र तुला में १६।४०, यूरेनस ज्येष्ठा १ मे, (H) भ. २६।२७ या., शनि विशा. १ में २७।१६, (I) बुध उ. फा. में १५।४५, शुक्र स्वाती में २७।१८, राहु कृत्ति. ३ मे केतु अनु. १ में २१।३८,

मास पक्ष	ता.१९८४	तिथि	वार	घ मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	सित २६	२	बु.	२५।१९	ह.	७।५० / २९।५	तु. १८।२८	चन्द्र दर्शन मु ३० (A)
	२७	३	गु.	२२।५४	स्वा.	२८।४०	तुला	बुध कन्या में १२।३५,
	२८	४	शु.	१९।१२	वि.	२४।५२	वृ. १९।१९	भ. ८।३३ उ. १९।१२ या.,
	२९	५	श.	१७।१९	अनु.	२३।४५	वृश्चिक	
	३०	६	र.	१५।५१	ज्ये.	२३।२४	ध. २३।२४	
	अक्तू. १	७	चं.	१५।२०	मू.	२३।४८	धनु	भ. १५।२० उ. २७।२७ या.,
	२	८	मं	१५।३४	पू. षा.	२४।५४	धनु	बुध हस्त में २५।१९.
	३	९	बु.	१६।२९	उ. षा.	२६।३८	म ७।२०	
	४	१०	गु.	१७।५८	श्र.	२८।५२	मकर	
	५	११	शु.	१९।५२	ध.	——	कुं. १८।१०	भ. ६।५५ उ. (B)
	६	१२	श.	२२।५	ध.	७।२७	कुम्भ	शुक्र विशा. में २४।५९,
	७	१३	र.	२४।३०	श.	१०।१९	कुम्भ	
	८	१४	चं.	२६।५८	पू. भा.	१३।१३	मी. ६।२९	भ. २६।५८ उ.,
	९	१५	मं.	२९।२७	उ. भा.	१६।१२	मीन	भ. १६।१३ या.,
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१०	१	बु.	——	रे.	१९।१९	मे. १९।१९	पंचक स. १९।१९ (C)
	११	१	गु.	७।५१	अ.	२१।५७	मेष	
	१२	२	शु.	१०।४	भ.	२४।३३	मेष	भ. २३।३ उ.,
	१३	३	श.	१२।१२	कृ.	२६।५१	वृ. ७।८	भ. १२।२ या.,
	१४	४	र.	१३।३७	रो.	२८।४३	वृष	शुक्र वृश्चिक मे २९।४१, (D)
	१५	५	च.	१४।४३	मृ.	३०।४	मि. १३।२४	मंगल पू. षा. मे ११।५८,
	१६	६	मं.	१५।१३	आ.	——	मिथुन	भ. १५।१३ उ., (E)
	१७	७	बु.	१५।४	आ.	६।४७	क. २४।४९	शुक्र अनु में २३।२०,
	१८	८	गु.	१४।१३	पुन.	६।५० / ३०।१३	कर्क	बुध स्वाती में १२।४६,
	१९	९	शु.	१२।३९	आश्ले.	२८।५५	सि. २८।५५	भ. २३।३२ उ., (F)
	२०	१०	श.	१०।२५	म.	२६।५५	सिंह	भ. १०।२५ या.,
	२१	११	र.	७।३८ / २८।२४	पू. फा.	२४।३३	क. २९।५२	
	२२	१३	च.	२४।५३	उ. फा.	२१।५०	कन्या	भ. २४।५३ उ.
	२३	१४	मं.	२१।१५	ह.	१८।५८	तु. २९।३३	भ. ११।४ या., (G)
	२४	३०	बु.	१७।३९	चि.	१६।१८	तुला	

(A) सूर्य हस्त में १९।११, (B) भ. १९।५२ या., पंचक प्रा. १८।१०, (C) सूर्य चित्रा में ८।११, बुध चित्रा में १४।१८, (D) बुध तुला में १२।१२, (E) भ. २७।९ या., म० सूर्य तुला मे २५।४६, (F) गुरु पू. षा. १ मे २७।१९, (G) सूर्य स्वाती में १८।४०, सूर्य सा. वृश्चिक में ११।१६,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं २०४१

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
कार्तिक शुक्ल पक्ष	अक्टू.२५	१	गु.	१८।१५	स्वा	१३।२९	वृ. २९।४६	शनि अस्त १३।१
	२६	२	शु.	११।१४	वि.	११।१२	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. ३०, (A)
	२७	३	श.	८।४५	अनु.	९।२८	वृश्चिक	भ. १९।५० उ.
	२८	४	र.	{६।५६ / २९।५०}	ज्ये.	८।२३	ध. ८।२३	भ. ६।५६ या., (B)
	२९	६	चं.	२९।३४	मू.	८।१	धनु	
	३०	७	मं.	३०।६	पू. षा.	८।२८	म. १८।४६	भ. ३०।६ उ.,
	३१	८	बु.	———	उ. षा.	९।४०	मकर	भ. १८।४३ या., (C)
	नव. १	८	गु.	७।१९	श्र.	११।३२	कुं. २४।४५	पंचक प्रा. २४।४५
	२	९	शु.	९।९	ध.	१३।५८	कुम्भ	मंगल उ.षा. में २२।५२,(D)
	३	१०	श.	११।२५	श.	१६।४५	कुम्भ	भ. २४।४० उ.,
	४	११	र.	१३।५४	पू. भा.	१९।४३	मी. १२।५८	भ. १३।५४ या., (E)
	५	१२	चं.	१६।२९	उ. भा.	२२।४५	मीन	सूर्य विशा. में २६।४६
	६	१३	मं.	१८।५७	रे.	२५।३८	मे. २५।३८	पंचक स. २५।३८,
	७	१४	बु.	२१।१४	अ.	२८।१९	मेष	भ. २१।१४ उ. (F)
	८	१५	गु.	२३।१३	भ.	३०।४३	मेष	भ. १०।१४ या. (G)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	९	१	शु.	२४।५१	कृ.	———	वृ. १३।१३	गुरु पू.षा. २ में १५।२५
	१०	२	श.	२६।५	कृ.	८।४४	वृष	
	११	३	र.	२६।५३	रो.	१०।२३	मि. २२।५९	भ. १४।२९ उ. २६।५३ या.,
	१२	४	चं.	२७।१३	मृ.	११।३६	मिथुन	
	१३	५	मं.	२७।४	आ.	१२।२१	क. ३०।२५	बुध ज्येष्ठा में २२।९,
	१४	६	बु.	२६।२५	पुन.	१२।३८	कर्क	भ. २६।२५ उ.
	१५	७	गु.	२५।१५	पु.	१२।२५	कर्क	भ. १३।५० या., (H)
	१६	८	शु.	२३।३७	आश्ले.	११।४२	सि. ११।४२	
	१७	९	श.	२१।३२	म.	१०।३२	सिंह	
	१८	१०	र.	१९।३	पू. फा.	८।५६	क. १४।२७	भ. ८।१८ उ. १९।३ या.,
	१९	११	चं.	१६।१६	उ. फा.	{७।० / २८।४८}	कन्या	सूर्य अनु. में. ८।४९ (I)
	२०	१२	मं.	१३।१८	चि.	२६।३२	तु. १५।४५	मंगल श्रव. में २०।४५
	२१	१३	बु.	१०।१५	स्वा.	२४।१४	तुला	भ. १०।१५ उ. (J)
	२२	१४	गु.	{७।१५ / २८।३०}	वि.	२२।६	वृ. १६।३८	सूर्य सा. धनु में ८।४१,

(A) बुध विशा में २१।३६, (B) शुक्र ज्येष्ठा में २२।२८, (C) बुध पश्चिम में उदित १२।४२, (D) बुध वृश्चिक में १०।३९, (E) बुध अनु. में १६।१४, (F) मंगल मकर में ११।१९, (G) शुक्र मूल धनु में २२।४०, (H) सं. सूर्य वृश्चिक में २५।३०, (I) शुक्र पू. षा. में. २४।२२, (J) भ. २०।४५ या, शनि विशा. ३ में १८।१३

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	नव.२३	१	शु.	२६।१	अनु.	२०।१५	वृश्चिक	
	२४	२	श.	२४।३	ज्ये.	१८।५०	ध. १८।५०	चन्द्रदर्शन मु. १५, (A)
	२५	३	र.	२२।४०	मू.	१८।७	धनु	
	२६	४	चं.	२२।१	पू. षा.	१७।५०	म. २३।५९	भ. १०।२० उ., (B)
	२७	५	मं.	२२।७	उ. षा.	१८।२४	मकर	राहु कुलि २ में केतु विशा, §
	२८	६	बु.	२२।५८	श्र.	१९।४२	मकर	शनि उदित ९।३५
	२९	७	गु.	२४।३२	ध.	२१।४१	कुं. ८।४२	भ. २४।३२ उ., (C)
	३०	८	शु.	२६।३९	श.	२४।१३	कुम्भ	भ. १३।३६ या., (D)
	दिस. १	९	श.	२९।८	पू. भा.	२७।६	मी. २०।२३	§४ में १९।१४
	२	१०	र.	———	उ. भा.	३०।८	मीन	सूर्य ज्येष्ठा में १३।२
	३	१०	चं.	७।४४	रे.	———	मीन	भ. २१।७ उ. (E)
	४	११	मं.	१०।१६	रे.	९।६	मे. ९।६	भ. १०।१६ या. (F)
	५	१२	बु.	१२।३१	अ.	११।४८	मेष	
	६	१३	गु.	१४।१९	भ.	१४।६	वृ. २०।३३	
	७	१४	शु.	१५।३९	कृ.	१५।५६	वृष	भ. १५।३९ उ., २८।२ या.,
	८	१५	श.	१६।२५	रो.	१७।१४	मि. २९।३८	मंगल श्रव. में ११।१३ (G)
पौष कृष्ण पक्ष	९	१	र.	१६।४०	मृ.	१८।२	मिथुन	
	१०	२	चं.	१६।२६	आ.	१८।२२	मिथुन	भ. २८।६ उ.,
	११	३	मं.	१५।४६	पुन.	१८।१७	क. १२।१८	भ. १५।४६ या.,
	१२	४	बु.	१४।४३	पुष्य	१७।५०	कर्क	गुरु पू. षा. ४ में १०।५४(H)
	१३	५	गु.	१३।२२	आश्ले.	१७।६	सि. १७।६	व. बुध ज्येष्ठा वृश्चिक में
	१४	६	शु.	११।४५	म.	१६।७	सिंह	भ. ११।४५ उ. २२।५० या.,
	१५	७	श.	९।५५	पू.फा.	१४।५४	क. २०।३४	सं. सूर्य मूल धनु में १६।४,
	१६	८	र.	{७।५५ / २९।४६}	उ. फा.	१३।३३	कन्या	मंगल कुम्भ में २२।१, २९।७
	१७	१०	चं.	२७।३१	ह.	१२।४	तु. २२।१७	भ. १६।३९ उ., २७।३१ या.
	१८	११	मं.	२५।१५	चि.	१०।२९	तुला	
	१९	१२	बु.	२३।०	स्वा.	८।५५	वृ. २५।४६	
	२०	१३	गु.	२०।५१	वि.	{७।२३ / ३०।५९}	वृश्चिक	भ. २०।५१ उ. (I)
	२१	१४	शु.	१८।५५	ज्ये.	२८।४९	ध. २८।४९	भ. ७।५३ या., (J)
	२२	३०	श.	१३।१८	मू.	२८।४	धनु	

(A) बुध मूल धनु में ८।२३, (B) भ २२।१ या.,,गुरु पू षा. ३ में २०।९, (C) पंचक प्रा. ८।४२, (D) शुक्र उ.षा. में २८।९, नेप्च्यून मूल ३ में प्लूटो स्वाती १ में, (E) शुक्र मकर में २३।३३, यूरेनस ज्येष्ठा २ में, (F) पंचक स. ९।६, बुध वक्री २८।१६, (G) बुध पश्चिमास्त २२।५, (H) शुक्र श्रवण में ११।१, (I) शनि विशा. ४ वृश्चिक में २९।४२, बुध पूर्वोदित २०।३०, (J) सूर्य सा. मकर में २१।५५,

भारतीय स्टेंण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं २०४१)

मास पक्ष	ता. १९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
पौष शुक्ल पक्ष	दिसं. २३	१	र.	१६।६	पू.षा	२७।४४	धनु	शुक्र धनि. में २३।२
	२४	२	चं.	१५।२६	उ. षा.	२७।५९	म. ३।४८	चन्द्रदर्शन मु. ४५ (A)
	२५	३	म	१५।२४	श्र	२८।५३	मकर	भ. २७।४४ उ. (B)
	२६	४	बु.	१६।३	ध.	३०।२५	कुं १७।२९	भ. १६।३ या., (C)
	२७	५	गु.	१७।२२	श.	——	कुम्भ	
	२८	६	शु.	१९।१८	श	८।३५	मी. २८।३५	सूर्य पू. षा. में १८।१२
	२९	७	श.	२१।४१	पू. भा.	११।१५	मीन	भ. २२।४१ उ., (D)
	३०	८	र.	२४।१८	उ. भा.	१४।१४	मीन	भ. ११।० या.,
	३१	९	चं.	२६।५५	रे.	१७।१७	मे. १७।१७	पंचक म. १७।१७,
	जन. १ १९८५ ई.	१०	म.	२९।१५	अ.	२०।१०	मेष	
	२	११	बु.	३१।६	भ.	२२।३८	वृ. २९।७	भ. १८।१० उ., (E)
	३	१२	गु.	——	कृ.	२४।३४	वृष	
	४	१२	शु.	८।१८	रो.	२५।४९	वृष	शुक्र शत. में १८।२७
	५	१३	श.	८।४८	मृ.	२६।२३	मि. १४।६	गुरु अस्त १४।४१
	६	१४	र.	८।३७	आ.	२६।२१	मिथुन	भ ८।३७ उ., (F)
	७	१५	चं.	{७।४८ ३०।२७}	पुन.	२५।४५	क. १९।५४	
माघ कृष्ण पक्ष	८	२	म.	२८।४४	पु.	२४।४४	कर्क	
	९	३	बु	२६।४१	आश्ले	२३।२६	सि २३।२६	भ १५।४२ उ. २६।४१ या.
	१०	४	गु.	२४।३०	म	२१।५७	सिंह	सूर्य उ.षा. में२०।१२. (G)
	११	५	शु.	२२।१६	पू. फा.	२०।२४	क. २६।१	
	१२	६	श.	२०।४	उ. फा.	१८।५३	कन्या	
	१३	७	र	१७।५८	ह.	१७।२८	तु. २८।४९	भ. २०।४ उ., (H)
	१४	८	चं.	१६।०	चि.	१६।१०	तुला	स. सूर्य मकर में२६।४३
	१५	९	म.	१४।११	स्वा	१५।२	तुला	
	१६	१०	बु.	१२।३३	वि.	१४।४	वृ. ८।१८	भ. २५।२२ उ.
	१७	११	गु.	११।६	अनु.	१३।१८	वृश्चिक	भ. १२।३३ या., (I)
	१८	१२	शु.	९।५३	ज्ये	१२।४५	ध १२।४५	
	१९	१३	श.	८।५४	म	१२।२६	धनु.	
	२०	१४	र.	८।१५	पू. षा.	१२।२८	म. १८।३४	भ. ८।५४ उ. २०।३५ या.,
	२१	३०	चं.	८।०	उ. षा.	१२।५३	मकर	सूर्य सा. कुम्भ में ८।३० (J)

(A) बुध मार्गी १५।४९. (B) मंगल शत. में २२।२४. (C) पंचक प्रा. १७।३९ गुरु उ. षा. १ में २९।१४. (D) शुक्र कुम्भ में १९।३३. (E) भ. ३१।६ या., गुरु वार्धक्य प्रा. १४।४१, (F) भ. २०।१३ या, बुध मूल धनु में १९।४४, (G) गुरु उ.षा. २ मकर में १३।३०. (H) भ. ३१।१ या, मंगल पू. भा. में ९।३३. (I) बुध पू. षा. में २७।२५ शुक्र पू. भा. में २६ १९. (J) सूर्य अभिजित में १५।५०.

मास पक्ष	ता. १९८५	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
माघ शुक्ल पक्ष	जन. २२	१	म.	८।११	श्र.	१३।४५	कु. २६।२७	चन्द्रदर्शन म. ३० (A)
	२३	२	बु.	८।५६	ध.	१४।१९	कुम्भ	सूर्य श्रवण में २२।२७,
	२४	३	गु.	१०।१४	श.	१७।५	कुम्भ	भ. २२।१९ उ., (B)
	२५	४	शु.	१२।१४	पू. भा.	१९।३२	मी. १२।५५	भ. १२।१४ या., (C)
	२६	५	श.	१४।२४	उ. भा.	२२।२४	मीन	शुक्र मीन में २१।५५,
	२७	६	र.	१७।१	रे.	२५।२८	मे. २५।२८	पंचक म. २५।२८
	२८	७	चं.	१९।४२	अ.	२८।३३	मेष	भ. १९।४२ उ. (D)
	२९	८	म.	२२।१२	भ.	——	मेष	भ. ८।५७ या., (E)
	३०	९	बु.	२४।१४	भ.	७।२२	वृ. १२।५६	शुक्र उ. भा. में ८।३१
	३१	१०	गु.	२५।२७	कृ.	९।३९	वृष	बुध पूर्व में अस्त १०।३५
	फर. १	११	शु.	२६।१२	रो.	११।१६	मि. २३।४१	भ. १३।५४ उ., (F)
	२	१२	श.	२५।५६	मृ.	१२।५	मिथुन	यूरेनस ज्येष्ठा ३ में,
	३	१३	र.	२४।५२	आ.	१२।५	क. २९।३३	बुध श्रवण में १९।४३
	४	१४	चं.	२३।८	पुन.	११।२२	कर्क	भ. २३।८उ., गुरुवाल्त्वसमाप्त
	५	१५	मं.	२०।४९	पु.	१०।१	कर्क	भ. ९।५९ या., (G)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	६	१	बु.	१८।७	आश्ले.	[८।११ ३०।५]	मि. ८।११	
	७	२	गु	१५।१३	पू. फा.	२७।५२	सिंह	
	८	३	शु.	१२।१५	उ. फा	२५।३९	क. ९।११	भ. २५।४४ उ., (H)
	९	४	श.	[९।२१ ३०।४१]	ह.	२३।३६	कन्या	भ, १२।१५ या.,
	१०	६	र.	२८।२०	चि.	२१।५१	तु. १०।४४	
	११	७	चं.	२६।१८	स्वा.	२०।२६	तुला	भ. २८।२० उ.,
	१२	८	मं.	२४।४२	वि.	१९।२४	वृ. १३।४०	भ. १५।१९ या., बुध धनि
	१३	९	बु.	२३।३०	अनु	१८।४६	वृश्चिक	स. सूर्य कुम्भ में १५।४१,
	१४	१०	गु.	२२।४१	ज्ये	१८।३१	ध. १८।३१	में २०।१४
	१५	११	शु.	२२।१५	मू	१८।३९	धनु	भ. ११।६ उ., (I)
	१६	१२	श.	२२।११	पू. षा	१९।८	म. २५।१८	बुध कुम्भ में १६।२;
	१७	१३	र.	२२।२८	उ. षा	१९।५८	मकर	मंगल रेव. में १७।३४
	१८	१४	चं.	२३।९	श्र	२१।१०	मकर	भ. २२।२८ उ.,
	१९	३०	मं.	२४।१४	ध.	२२।४६	कु. ९।५८	भ. १०।४९ या., (J) पंचक प्रा ९।५८. बुध शत में ९।३,

(A) पंचक प्रा. २६।२७. (B) गुरु उ. षा. ३ में १९।२. सूर्य अभिजित से निवृत्त १९।२५, (C) बुध उ. षा. में ३०।४९, मंगल मीन में १३।५५. (D) बुध मकर में ११।१५. (E) मंगल उ. भा. में २३।१२, शनि अनु. १ में १३।१३, राहु कृत्ति १ मेष में केतु विशा. ३ तुला में १६।४९. (F) भ. २६।१२ या., गुरु उदित १९।२१. (G) सूर्य धनि. में २५।२५, (H) गुरु उ. षा ४ में २८।४३. (I) भ. २२।४१ या., शुक्र रेव. में १७।४६, (J) सूर्य शत. में ३०।७, सूर्य सा. मीन में २२।४१,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४१)

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घ. मि	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्र संचार घ. मि.	भद्रा आदि
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	फर. २०	१	बु.	२५।४४	श	२४।४४	कुम्भ	
	२१	२	गु.	२३।४१	पू भा.	२३।१०	मी. २०।३४	चन्द्र दर्शन मु. ३०
	२२	३	शु.	२०।१	उ.भा	२१।५८	मीन	गुरु श्रव. १ में २६।११
	२३	४	श	——	रे.	——	मीन	भ. १९।१९ उ.
	२४	४	र	८।३७	रे.	९।०	मे. ९।०	भ. ८।३७ या. (A)
	२५	५	च.	११।२१	अ	१२।१०	मेष	
	२६	६	म	१३।५९	भ	१५।१४	वृ. २१।५५	बुध पू.भा. में १२।२६,
	२७	७	बु.	१६।१५	कृ.	१७।५७	वृष	भ. १६।१५ उ. (B)
	२८	८	गु	१७।५७	रो.	२०।६	वृष	
	मार्च १	९	शु.	१८।५२	मृ.	२१।३०	मि ८।४८	
	२	१०	श	१८।५४	आ	२२।२	मिथुन	भ. ३०।२८ उ.
	३	११	र.	१८।३	पुन.	२१।४४	क. १५।४९	भ. १८।३ या. (C)
	४	१२	चं	१६।२२	पु	२०।३७	कर्क	सूर्य पू.भा. में १२।२२,
	५	१३	म	१३।५९	आश्ले	१८।४९	सि. १८।४९	बुध उ.भा में १३।३९,
	६	१४	बु	११।२	म	१६।३०	सिंह	भ. ११।२ उ. २१।२२ या (D)
	७	१५	गु.	{७।४२ / २८।१०}	पू. फा.	१३।५१	क. १९।१०	शनि वक्री १७।३०,
चैत्र कृष्ण पक्ष	८	२	शु.	२४।३८	उ. फा	११।५	कन्या	
	९	३	श	२१।१४	ह.	{८।२० / २९।४८}	तु. १९।४	भ. १०।५६ उ. २१।१४ या.,
	१०	४	र.	१८।७	स्वा.	२७।३६	तुला	गुरु श्रवण २ में २२।२६
	११	५	च.	१५।२६	वि.	२५।५२	वृ. २०।३१	
	१२	६	म.	१३।१६	अनु	२४।४०	वृश्चिक	भ. १३।१६ उ. २४।२८ या.,
	१३	७	बु	११।३९	ज्ये	२४।४	ध. २४।४	बुध रेव. में १४।३०,
	१४	८	गु.	१०।३९	मू	२४।३	धनु	स. सूर्य मीन में १२।३४ (E)
	१५	९	शु	१०।१३	पू. षा	२४।३४	धनु	भ. २२।१६ उ.
	१६	१०	श	१०।२०	उ. षा	२५।३६	म. ६।४८	भ. १०।२० या.
	१७	११	र.	१०।५७	श्र	२७।५	मकर	सूर्य उ.भा में २०।२३,
	१८	१२	च	१२।२	ध.	२८।५८	कु. १५।२	पंचक प्रा. १५।२
	१९	१३	म.	१३।३०	श	——	कुम्भ	भ. १३।३० उ. २६।२५,
	२०	१४	बु	१५।४०	श	७।१२	मी. २०।१९	सूर्य सायन मेष में २३।४०
	२१	३०	गु.	१८।१९	पू. भा	९।४८	मीन	

(A) पंचक स. ९।०, (B) २०।६ या., (C) बुध मीन में १८।४६, (D) मंगल अश्वि. मेष में १८।१७, बुध पश्चिम में उदित १८।१८, (E) शुक्र वक्री १८।५४,

घन्टा मिनटात्मक-नक्षत्र से चन्द्रस्पष्ट करने की विधि

भभोग एवं भयात के मिनट बनाओ। मिनटात्मक भयात को ४० से गुणा करके ३ से गुणित मिनटात्मक भभोग से भाग देकर तीन उपलब्धियां क्रमशः अंश, कला, विकला प्राप्त करो। इस अंशादि फल में इष्टकालिक वर्तमान नक्षत्र की राशि, अंश कलाओं को नीचे दिए गए "नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक" से लेकर जोड़ दो,—बस यही आपका इष्टकालिक स्पष्टचन्द्र होगा।

भभोग कैसे बनाएं ?

अभीष्ट समय में (जिस समय चन्द्रस्पष्ट करना है; उस समय) भा. स्टैं. टा. के वक्त जो वर्तमान नक्षत्र हो उसे "वर्तमान-नक्षत्र" एवं वर्तमान-नक्षत्र से पूर्ववर्ती नक्षत्र को गतनक्षत्र समझें। वर्तमाननक्षत्र के पञ्चांग में दिए गए घण्टा मिनटों में २४ घण्टा जोड़कर (यदि वर्तमान नक्षत्र की वृद्धि हो तो ४८ घण्टा जोड़कर तथा यदि वर्तमान नक्षत्र क्षय हो तो उसमें बिना कुछ जोड़े ही) उसमें से गतनक्षत्र के घण्टा मिनट घटाने पर घण्टा-मिनटात्मक भभोग बनेगा। संक्षेप से इस तरह कह सकते हैं कि— वर्तमान नक्षत्र के वार, घण्टा मिनटों में से गतनक्षत्र के वार घण्टा मिनटों को घटाने से शेष दिनादि भभोग होगा।

भयात कैसे बनाएं ?

भयात बनाने से पूर्व अभीष्ट 'भा.स्टैं. टा.' के घण्टा-मिनटों को ठीक उसी तरह लिखें, जैसे इस पंचांग में तिथि आदि के घण्टा मिनट लिखे गए हैं। अर्थात् दिन के १२ बजे के बाद रात्रि के १२ बजे तक के घण्टों को १३, १४ आदि एवं रात्रि के १२ बजे के सूर्योदय (पंचांग में दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदय) तक के घण्टों को २५, २६ आदि लिखें। इसी अभीष्ट भा. स्टैं. टा. को वार सहित लिखकर उसमें से गतनक्षत्र के वार, घण्टा, मिनट घटाने पर शेष दिनादि भयात होगा। भयात की दिनसंख्या को २४ से गुणा करके उसमें घण्टों को जोड़ देने पर घण्टादि भयात बन जाएगा। अथवा यूं कहिए; कि यदि इष्टकाल (भा. स्टैं. टा.) गतनक्षत्र के वार से एक बार आगे का हो तो इष्टकाल (भा. स्टैं. टा.) में २४ घण्टे जोड़कर, दो बार आगे का हो तो ४८ घण्टे जोड़कर उसमें से गतनक्षत्र के घण्टा मिनट घटाने से भयात के घण्टा मिनट प्राप्त होंगे।

नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा.	पुन.	पुष्य.	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५
अं.	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३
क.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
रा.	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११
अं.	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६
क.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं ३० मि. शा. स्टैं. टा.)(१ अप्रै. को अयनांश = २३°।३७'।५३")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
अप्रैल १	११।१७।४९। ८	११।१२।१४। ७	७। ४।३१।२२	०। ६।३३।३०	८।१८। ३।५०	१०।२७।५६।४३	६।२१।४०।५९	११।१६। ४।५६	४।३२	-१।४७	-४।२९
२	११।१८।४८।२१	११।२४।१६। ८	७। ४।३४।११	०। ७।४१।३६	८।१८। ८।५५	१०।२९।१०।४४	६।२१।३७।३६	११।१६। १।४५	४।५५	३।२६	-३।५४
३	११।१९।४७।३१	०। ६।२४।३३	७। ४।३६।१९	०। ८।४३।३३	८।१८।१३।५०	११। ०।२४।४५	६।२१।३४। ८	११।१५।५८।३४	५।१८	८।३४	-३। ७
४	११।२०।४६।४०	०।१८।४१। ७	७। ४।३७।४३	०। ९।३९।१०	८।१८।१८।३५	११। १।३८।४५	६।२१।३०।३७	११।१५।५५।२४	५।४१	१३।२७	-२।११
५	११।२१।४५।४६	१। १। ८।२६	७। ४।३८।२४	०।१०।२८।१६	८।१८।२३। ९	११। २।५२।४४	६।२१।२७। २	११।१५।५२।१३	६। ४	१७।५१	-१। ९
६	११।२२।४४।४९	१।१३।४३। ३	७। ४।३८।२२	०।११।१०।४४	८।१८।२७।३४	११। ४। ६।४४	६।२१।२३।२४	११।१५।४९। २	६।२७	२१।३१	०। १
७	११।२३।४३।५१	१।२६।३३।५७	७। ४।३७।३५	०।११।४६।३०	८।१८।३१।४८	११। ५।२०।४३	६।२१।१९।४१	११।१५।४५।५१	६।४९	२४।१२	१। ७
८	११।२४।४२।४९	२। ९।४०।५७	७। ४।३६। ४	०।१२।१५।२९	८।१८।३५।५२	११। ६।३४।४०	६।२१।१५।५६	११।१५।४२।४१	७।१२	२५।३८	२।१४
९	११।२५।४१।४५	२।२३। ७।१९	७। ४।३३।४९	०।१२।३७।४०	८।१८।३९।४६	११। ७।४८।३७	६।२१।१२। ६	११।१५।३९।३०	७।३४	२५।३६	३।१५
१०	११।२६।४०।४०	३। ६।५५।४७	७। ४।३०।४९	०।१२।५३। ५	८।१८।४३।२९	११। ९। २।३५	६।२१। ८।१४	११।१५।३६।१९	७।५६	२४। २	४। ६
११	११।२७।३९।३०	३।२१। ६। ५	७। ४।२७। ५	०।१३। १।४९	८।१८।४७। २	११।१०।१६।३०	६।२१। ४।१८	११।१५।३३। ८	८।१९	२०।५६	४।४४
१२	११।२८।३८।२०	४। ५।३७।३१	७। ४।२२।३३	०।१३। ४। १	८।१८।५०।२४	११।११।३०।२७	६।२१। ०।२०	११।१५।२९।५७	८।४१	१६।२९	५। ५
१३	११।२९।३७। ८	४।२०।२६।४२	७। ४।१७।१६	०।१२।५९।५४	८।१८।५३।३५	११।१२।४४।२२	६।२०।५६।१८	११।१५।२६।४७	९। २	१०।५८	५। ६
१४	०। ०।३५।५२	५। ५।२५।४४	७। ४।११।१५	०।१२।४९।४०	८।१८।५६।३६	११।१३।५८।१६	६।२०।५२।१४	११।१५।२३।३६	९।२४	४।४५	४।४७
१५	०। १।३४।३६	५।२०।२७। ६	७। ४। ४।२५	०।१२।३३।४४	८।१८।५९।२६	११।१५।१२।१२	६।२०।४८। ७	११।१५।२०।२५	९।४६	-१।४६	४। ७
१६	०। २।३३।१७	६। ५।२०।१३	७। ३।५६।५१	०।१२।१२।२९	८।१९। २। ५	११।१६।२६। ६	६।२०।४३।५७	११।१५।१७।१४	१०। ७	-८। ८	३।१२
१७	०। ३।३१।५५	६।१९।५७।१२	७। ३।४८।३१	०।११।४६।२१	८।१९। ४।३३	११।१७।३९।५९	६।२०।३९।४५	११।१५।१४। ३	१०।२८	-१३।५७	२। ४
१८	०। ४।३०।३४	७। ४।१२।१६	७। ३।३९।२५	०।११।१५।५९	८।१९। ६।५१	११।१८।५३।५३	६।२०।३५।३१	११।१५।१०।५३	१०।४९	-१८।५२	०।५०
१९	०। ५।२९।१०	७।१८। ०।४३	७। ३।२९।३३	०।१०।४१।५६	८।१९। ८।५७	११।२०। ७।४७	६।२०।३१।१४	११।१५। ७।४२	११।१०	-२२।३६	०।२५
२०	०। ६।२७।४३	८। १।२२।२४	७। ३।१८।५७	०।१०। ४।५६	८।१९।१०।५२	११।२१।२१।३९	६।२०।२६।५६	११।१५। ४।३१	११।३१	-२४।५७	-१।३६
२१	०। ७।२६।१६	८।१४।१९।२४	७। ३। ७।३५	०। ९।२५।४१	८।१९।१२।३६	११।२२।३५।३२	६।२०।२२।३६	११।१५। १।२०	११।५१	-२५।५२	-२।४०
२२	०। ८।२४।४७	८।२६।५३।५६	७। २।५५।२९	०। ८।४४।५९	८।१९।१४। ९	११।२३।४९।२५	६।२०।१८।१३	११।१४।५८।१०	१२।११	-२५।२४	-३।३५
२३	०। ९।२३।१५	९। ९।१०।४७	७। २।४२।४०	०। ८। ३।३१	८।१९।१५।३१	११।२५। ३।१६	६।२०।१३।५०	११।१४।५४।५९	१२।३१	-२३।४२	-४।१८
२४	०।१०।२१।४४	९।२१।१५। ६	७। २।२९। ८	०। ७।२२।१०	८।१९।१६।४१	११।२६।१७।१०	६।२०। ९।२४	११।१४।५१।४८	१२।५१	-२०।५८	-४।४९
२५	०।११।२०।११	१०। ३।१०।३८	७। २।१४।५४	०। ६।४१।३५	८।१९।१७।४१	११।२७।३१। ३	६।२०। ४।५७	११।१४।४८।३७	१३।११	-१७।२२	-५। ७
२६	०।१२।१८।३५	१०।१५। २।१७	७। १।५९।५९	०। ६। २।२९	८।१९।१८।२९	११।२८।४४।५४	६।२०। ०।३०	११।१४।४५।२७	१३।३०	-१३। ७	-५।१२
२७	०।१३।१६।५८	१०।२६।५४।३३	७। १।४४।२५	०। ५।२५।३३	८।१९।१९। ५	११।२९।५८।४५	६।१९।५६। १	११।१४।४२।१६	१३।५०	-८।२३	-५। ३
२८	०।१४।१५।१९	११। ८।४९।५५	७। १।२८।१३	०। ४।५१।२०	८।१९।१९।३०	०। १।१२।३६	६।१९।५१।३१	११।१४।३९। ५	१४। ९	-३।१९	-४।४२
२९	०।१५।१३।३९	११।२०।५१।३७	७।१।११।२४	०। ४।२०।२२	८।१९।१९।४४	०। २।२६।२८	६।१९।४६। ०	११।१४।३५।५४	१४।२७	१।५५	-४। ७
अप्रै. ३०	०।१६।११।५७	०। ३। २।१७	७। ०।५४। १	०। ३।५३। ३	८।१९।१९।४७	०। ३।४०।१८	६।१९।४२।२९	११।१४।३२।४३	१४।४६	७।१०	-३।२२
मई १	०।१७।१०।१३	०।१५।२२।२७	७। ०।३६। ५	०। ३।२९।४४	८।१९।१९।३८	०। ४।५४। ८	६।१९।३७।५७	११।१४।२९।३३	१५। ४	१२।१२	-२।२६
२	०।१८। ८।२७	०।२७।५३।३९	७। ०।१७।३७	०। ३।१०।४३	८।१९।१९।१८	०। ६। ७।५८	६।१९।३३।२५	११।१४।२६।२२	१५।२२	१६।५०	-१।२२

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं ३० मि. भा. स्टै. टा.)(१ मई को अयनांश = २३°।३७'।५७")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अ. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
मई ३	०।१९। ६।३९	१।१०।३७। ९	६।२९।५८।४१	०। २।५६।१४	८।१९।१८।४७	०। ७।२१।४८	६।१९।२८।५२	११।१४।२३।११	१५।४०	२०।४७	०।१३
४	०।२०। ४।४९	१।२३।३२।३३	६।२९।३९।१८	०। २।४६।२०	८।१९।१८। ५	०। ८।३५।३६	६।१९।२४।२०	११।१४।२०। ०	१५।५८	२३।४७	०।५८
५	०।२१। २।५८	२। ६।४०।५८	६।२९।१९।२९	०। २।४१।१२	८।१९।१७।११	०। ९।४९।२५	६।१९।१९।४८	११।१४।१६।५०	१६।१५	२५।३३	२। ७
६	०।२२। १। ४	२।२०। ३।३६	६।२८।५९।१७	०। २।४०।४८	८।१९।१६। ६	०।११। ३।१२	६।१९।१५।१६	११।१४।१३।३९	१६।३२	२५।५३	३।१०
७	०।२२।५९। ८	३। ३।३९।५५	६।२८।३८।४८	०। २।४५। ८	८ १९।१४।४९	०।१२।१६।५९	६।१९।१०।४५	११।१४।१०।२८	१६।४९	२४।४१	४। ४
८	०।२३।५७।११	३।१७।३०।४४	६।२८।१७। ०	०। २।५४।१०	८।१९।१३।२२	०।१३।३०।४७	६।१९। ६।१४	११।१४। ७।१७	१७। ५	२१।५९	४।४५
९	०।२४।५५।१२	४। १।३६।१२	६।२७।५६।५५	०। ३। ७।५०	८।१९।११।४३	०।१४।४४।३२	६।१९। १।४३	११।१४। ४। ६	१७।२१	१७।५७	५। ९
१०	०।२५।५३।१०	४।१५।५३।४७	६।२७।३५।४०	०। ३।२६। ०	८।१९। ९।५४	०।१५।५८।१८	६।१८।५७।१४	११।१४। ०।५६	१७।३७	१२।५१	५।१५
११	०।२६।५१। ७	५। ०।२९।१९	६।२७।१४।१३	०। ३।४८।३६	८।१९। ७।५३	०।१७।१२। ३	६।१८।५२।४५	११।१३।५७।४५	१७।५३	६।५९	५। १
१२	०।२७।४९। २	५।१४।५५।१८	६।२६।५२।३८	०। ४।१५।२९	८।१९। ५।४२	०।१८।२५।४८	६।१८।४८।१८	११।१३।५४।३४	१८। ८	०।४२	४।२८
१३	०।२८।४६।५५	५।२९।२९।११	६।२६।३१। १	०। ४।४६।३१	८।१९। ३।१९	०।१९।३९।३३	६।१८।४३।५२	११।१३।५१।२३	१८।२३	-५।३८	३।३७
१४	०।२९।४४।४७	६।१३।५७।३५	६।२६। ९।२०	०। ५।२१।३७	८।१९। ०।४५	०।२०।५३।१७	६।१८।३९।२७	११।१३।४८।१३	१८।३७	-११।३८	२।३३
१५	१। ०।४२।३७	६।२८।१५।१२	६।२५।४७।३७	०। ६। ०।३५	८।१८।५८। १	०।२२। ७। ०	६।१८।३५। ४	११।१३।४५। २	१८।५२	-१६।५७	१।२०
१६	१। १।४०।२६	७।१२।१५।५०	६।२५।२६। १	०। ६।४३।१९	८।१८।५५। ६	०।२३।२०।४४	६।१८।३०।४२	११।१३।४१।५१	१९। ६	-२१।१४	०। ४
१७	१। २।३८।१४	७।२५।५६।३०	६।२५। ४।२७	०। ७।२९।४२	८।१८।५२। १	०।२४।३४।२८	६।१८।२६।२२	११।१३।३८।४०	१९।१९	-२४।१३	-१।१२
१८	१। ३।३५।५९	८। ९।१५।५८	६।२४।४३। ४	०। ८।१९।३५	८।१८।४८।४५	०।२५।४८।१०	६।१८।२२। ४	११।१३।३५।२९	१९।३३	-२५।४५	-२।२१
१९	१। ४।३३।४४	८।२२।१३।१२	६।२४।२१।५०	०। ९।१२।५४	८।१८।४५।१८	०।२७। १।५४	६।१८।१७।४८	११।१३।३२।१९	१९।४६	-२५।४९	-३।२१
२०	१। ५।३१।२९	९। ४।५०।२३	६।२४। ०।४९	०।१०। ९।३०	८।१८।४१।४१	०।२८।१५।३७	६।१८।१३।३४	११।१३।२९। ८	१९।५८	-२४।३२	-४। ९
२१	१। ६।२९।११	९।१७।१०।५६	६।२३।४०। ६	०।११। ९।१७	८।१८।३७।५४	०।२९।२९।२०	६।१८। ९।२२	११।१३।२५।५७	२०।११	-२२। ५	-४।४५
२२	१। ७।२६।५३	९।२९।१७।३७	६।२३।१९।४०	०।१२।१२।१०	८।१८।३३।५७	१। ०।४३। ३	६।१८। ५।१३	११।१३।२२।४६	२०।२३	-१८।४२	-५। ८
२३	१। ८।२४।३५	१०।११।१५।१७	६।२२।५९।३४	०।१३।१८। ४	८।१८।२९।५०	१। १।५६।४७	६।१८। १। ६	११।१३।१९।३६	२०।३४	-१४।३७	-५।१६
२४	१। ९।२२।१४	१०।२३। ८।५५	६।२२।३९।५४	०।१४।२६।५४	८।१८।२५।३३	१। ३।१०।३०	६।१७।५७। २	११।१३।१६।२५	२०।४६	-९।५९	-५।१२
२५	१।१०।१९।५३	११। ५। २। ६	६।२२।२०।३८	०।१५।३८।३५	८।१८।२१। ६	१। ४।२४।१३	६।१७।५३। ०	११।१३।१३।१४	२०।५७	-५। ०	-४।५४
२६	१।११।१७।३१	११।१६।५९।३७	६।२२। १।५१	०।१६।५३। ६	८।१८।१६।२९	१। ५।३७।५७	६।१७।४९। १	११।१३।१०। ३	२१। ७	०।११	-४।२३
२७	१।१२।१५। ८	११।२९। ५।४४	६।२१।४३।३५	०।१८।१०।२०	८।१८।११।४४	१। ६।५१।४०	६।१७।४५। ६	११।१३। ६।५२	२१।१८	५।२७	-३।४०
२८	१।१३।१२।४३	०।११।२२।५२	६।२१।२५।५०	०।१९।३०।१७	८।१८। ६।४९	१। ८। ५।२२	६।१७।४१।१३	११।१३। ३।४२	२१।२७	१०।३५	-२।४६
२९	१।१४।१०।१९	०।२३।५३।५९	६।२१। ८।४१	०।२०।५२।५४	८।१८। १।४५	१। ९।१९। ५	६।१७।३७।२४	११।१३। ०।३१	२१।३७	१५।२५	-१।४४
३०	१।१५। ७।५२	१। ६।४१।१०	६।२०।५२। ९	०।२२।१८। ८	८।१७।५६।३२	१।१०।३२।४९	६।१७।३३।३८	११।१२।५७।२०	२१।४६	१९।४०	०।३५
मई ३१	१।१६। ५।२४	१।१९।४३।५९	६।२०।३६।१४	०।२३।४५।५८	८।१७।५१।१०	१।११।४६।३०	६।१७।२९।५५	११।१२।५४। ९	२१।५५	२३। २	०।३७
जून १	१।१७। २।५६	२। ३। ३।११	६।२०।२०। ०	०।२५।१६।२४	८।१७।४५।४०	१।१३। ०।१३	६।१७।२६।१६	११।१२।५०।५९	२२। ३	२५।१३	१।४९
२	१।१८। ०।२६	२।१६।३६।३१	६।२०। ६।२७	०।२६।४९।२३	८।१७।४०। ३	१।१४।१३।५६	६।१७।२२।४१	११।१२।४७।४८	२२।११	२५।५८	२।५६
३	१।१८।५७।५४	३। ०।२२।४५	६।१९।५२।३८	०।२८।२४।५४	८।१७।३४।१६	१।१५।२७।३८	६।१७।१९।१०	११।१२।४४।३७	२२।१९	२५। ८	३।५३

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैंडर्ड टाईम)(१ जून को अयनांश २३°।३८'।१")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
जून ४	१।१९।५५।२२	३।१४।२०।१२	६।१९।३९।३२	१। ०। २। ०	८।१७।२८।२३	१।१६।४१।२०	६।१७।१५।४२	११।१२।४१।२६	२२।२६	२२।४५	४।३८
५	१।२०।५२।४८	३।२८।२५।१८	६।१९।२७।१२	१। १।४३।३५	८।१७।२२।२१	१।१७।५५। २	६।१७।१२।११	११।१२।३८।१५	२२।३३	१८।५९	५। ७
६	१।२१।५०।१३	४।१२।३६। १	६।१९।१५।३८	१। ३।२६।४२	८।१७।१६।१३	१।१९। ८।४२	६।१७। ८।५९	११।१२।३५। ५	२२।३९	१४। ७	५।१७
७	१।२२।४७।३६	४।२६।५०।२०	६।१९। ४।५३	१। ५।१२।१८	८।१७। ९।५७	१।२०।२२।२४	६।१७। ५।४४	११।१२।३१।५४	२२।४५	८।२८	५। ७
८	१।२३।४४। ०	५।११। ४।३५	६।१८।५४।५३	१। ७। ०।२५	८।१७। ३।३५	१।२१।३६। ६	६।१७। २।३३	११।१२।२८।४३	२२।५१	२।२३	४।३९
९	१।२४।४२।२१	५।२५।१६।४३	६।१८।४५।४२	१। ८।५०।५६	८।१६।५७। ६	१।२२।४९।४७	६।१६।५९।२६	११।१२।२५।३२	२२।५६	-३।४८	३।५४
१०	१।२५।३९।४१	६। ९।२४।४४	६।१८।३७।२२	१।१०।४३।५४	८।१६।५०।३०	१।२४। ३।२८	६।१६।५६।२४	११।१२।२२।२१	२३। १	-९।४८	२।५५
११	१।२६।३७। २	६।२३।२४।४७	६।१८।२९।४८	१।१२।३९।१३	८।१६।४३।४९	१।२५।१७। ९	६।१६।५३।२६	११।१२।१९।११	२३। ५	-१५।१५	१।४६
१२	१।२७।३४।२१	७। ७।१४।४८	६।१८।२३। ५	१।१४।३६।५०	८।१६।३७। २	१।२६।३०।५१	६।१६।५०।३३	११।१२।१६। ०	२३। ९	-१९।५०	०।३१
१३	१।२८।३१।३८	७।२०।५२।४८	६।१८।१७।१२	१।१६।३६।३५	८।१६।३०। ९	१।२७।४४।३१	६।१६।४७।४५	११।१२।१२।४९	२३।१३	-२३।१६	०।४४
१४	१।२९।२८।५६	८। ४।१५।३३	६।१८।१२। ८	१।१८।३८।२९	८।१६।२३।११	१।२८।५८।१३	६।१६।४५। १	११।१२। ९।३८	२३।१६	-२५।२१	-१।५५
१५	२। ०।२६।१४	८।१७।२२। ९	६।१८। ७।५३	१।२०।४२।१९	८।१६।१६। ८	२। ०।११।५५	६।१६।४२।२२	११।१२। ६।२८	२३।१९	-२५।५७	-२।५९
१६	२। १।२३।२९	९। ०।१२।३२	६।१८। ४।२९	१।२२।४७।५३	८।१६। ९। ०	२। १।२५।३५	६।१६।३९।४८	११।१२। ३।१७	२३।२१	-२४। ८	-३।५३
१७	२। २।२०।४६	९।१२।४६। ९	६।१८। १।५४	१।२४।५५। ६	८।१६। १।४८	२। २।३९।१८	६।१६।३७।१९	११।१२। ०। ६	२३।२३	-२३। ४	-४।३३
१८	२। ३।१८। २	९।२५। ५। ५	६।१८। ०। ८	१।२७। ३।४१	८।१५।५४।३१	२। ३।५३। ०	६।१६।३४।५५	११।११।५६।५५	२३।२४	-१९।५७	-५। ०
१९	२। ४।१५।१७	१०। ७।१२।२३	६।१७।५९।११	१।२९।१३।२२	८।१५।४७।११	२। ५। ६।४१	६।१६।३२।३६	११।११।५३।४५	२३।२५	-१६। २	-५।१३
२०	२। ५।१२।३३	१०।१९।१०।२९	६।१७।५९। ३	२। १।२३।५८	८।१५।३९।४७	२। ६।२०।२४	६।१६।३०।२२	११।११।५०।३४	२३।२६	-११।३३	-५।१२
२१	२। ६। ९।४८	११। १। ३।५५	६।१७।५९।४३	२। ३।३५।१२	८।१५।३२।२०	२। ७।३४। ८	६।१६।२८।१३	११।११।४७।२३	२३।२६	-६।३९	-४।५८
२२	२। ७। ७। २	११।१२।५७।४०	६।१८। १।१३	२। ५।४६।४१	८।१५।२४।५०	२। ८।४७।५०	६।१६।२६। ९	११।११।४४।१२	२३।२६	-१।३२	-४।३१
२३	२। ८। ४।१७	११।२४।५५।२६	६।१८। ३।२९	२। ७।५८।१७	८।१५।१७।१७	२।१०। १।३४	६।१६।२४।११	११।११।४१। १	२३।२६	३।४२	-३।५३
२४	२। ९। १।३२	०। ७। २।२३	६।१८। ६।३४	२।१०। ९।३८	८।१५। ९।४३	२।११।१५।१८	६।१६।२२।१८	११।११।३७।५१	२३।२५	८।५१	-३। ३
२५	२। ९।५८।४६	०।१९।२३।२७	६।१८।१०।२५	२।१२।२०।२९	८।१५। २। ५	२।१२।२९। १	६।१६।२०।३१	११।११।३४।४०	२३।२३	१३।४७	-२। ५
२६	२।१०।५६। १	१। २। १।२२	६।१८।१५। ३	२।१४।३०।३७	८।१४।५४।२७	२।१३।४२।४७	६।१६।१८।४८	११।११।३१।२९	२३।२२	१८।१४	०।५८
२७	२।११।५३।१५	१।१४।५९।२३	६।१८।२०।२७	२।१६।३९।४७	८।१४।४६।४७	२।१४।५६।३२	६।१६।१७।१२	११।११।२८।१८	२३।२०	२१।५७	०।१२
२८	२।१२।५०।२८	१।२८।१९।२४	६।१८।२६।३६	२।१८।४७।४७	८।१४।३९। ६	२।१६।१०।१६	६।१६।१५।४१	११।११।२५। ८	२३।१७	२४।३६	१।२४
२९	२।१३।४७।४३	२।११।५९।५३	६।१८।३३।३१	२।२०।५४।२७	८।१४।३१।२४	२।१७।२४। १	६।१६।१४।१५	११।११।२१।५७	२३।१४	२५।५२	२।३३
जून ३०	२।१४।४४।५६	२।२५।५९। ८	६।१८।४१।१०	२।२२।५९।३९	८।१४।२३।४३	२।१८।३७।४६	६।१६।१२।५६	११।११।१८।४६	२३।११	२५।३२	३।३४
जुलाई १	२।१५।४२। ८	३।१०।१३।४७	६।१८।४९।३३	२।२५। ३।१२	८।१४।१६। १	२।१९।५१।३१	६।१६।११।४१	११।११।१५।३५	२३। ७	२३।३२	४।२३
२	२।१६।३९।२२	३।२४।३७।३०	६।१८।५८।३९	२।२७। ५। ५	८।१४। ८।२०	२।२१। ५।१७	६।१६।१०।३३	११।११।१२।२४	२३। २	२०। २	४।५६
३	२।१७।३६।३४	४। ९। ५।१२	६।१९। ८।२९	२।२९। ५। ९	८।१४। ०।३९	२।२२।१९। ३	३।१६। ९।३०	११।११। ९।१४	२२।५८	१५।१९	५।१०
४	२।१८।३३।४७	४।२३।३२। ३	६।१९।१९। ०	३। १। ३।२३	८।१३।५२।५९	२।२३।३२।४९	६।१६। ८।३३	११।११। ६। ३	२२।५३	९।४४	५। ५
५	२।१९।३०।५८	५। ७।५२।२६	६।१९।३०।१२	३। २।५९।४०	८।१३।४५।२१	२।२४।४६।३४	६।१६। ७।४२	११।११। २।५२	२२।४७	३।४१	४।४१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टै. टा.)(१ जुलाई को अयनांश = २३°।३८'।५")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
जुलाई ६	२।२०।२८।१०	५।२२। ३।४७	६।१९।४२। ६	३। ४।५४। ३	८।१३।३७।४५	२।२६। ०।२०	६।१६। ६।५७	१।१०।५९।४१	२२।४२	-२।३०	३।५९
७	२।२१।२५।२२	६। ६। ४।४८	६।१९।५४।३९	३। ६।४६।२८	८।१३।३०।११	२।२७।१४। ६	६।१६। ६।१७	१।१०।५६।३१	२२।३५	-८।३०	३। ४
८	२।२२।२२।३३	६।१९।५३।३०	६।२०। ७।५०	३। ८।३६।५४	८।१३।२२।३९	२।२८।२७।५१	६।१६। ५।४३	१।१०।५३।२०	२२।२९	-१४। १	१।५९
९	२।२३।१९।४३	७। ३।३०।१५	६।२०।२१।४२	३।१०।२५।२१	८।१३।१५। ९	२।२९।४१।३६	६।१६। ५।१५	१।१०।५०। ९	२२।२२	-१८।४५	०।४८
१०	२।२४।१६।५५	७।१६।५५।४०	६।२०।३६।१०	३।१२।११।५०	८।१३। ७।४३	३। ०।५५।२४	६।१६। ४।५३	१।१०।४६।५८	२२।१४	-२२।२७	०।२५
११	२।२५।१४। ६	८। ०। ८।४२	६।२०।५१।१५	३।१३।५६।१९	८।१३। ०।२०	३। २। ९। ९	६।१६। ४।३७	१।१०।४३।४७	२२। ७	-२४।५२	-१।३५
१२	२।२६।११।१७	८।१३। ९।४७	६।२१। ६।५८	३।१५।३८।५०	८।१२।५३। १	३। ३।२२।५५	६।१६। ४।२७	१।१०।४०।३७	२१।५९	-२५।५४	-२।३९
१३	२।२७। ८।२९	८।२५।५९।१४	६।२१।२३।१५	३।१७।१९।२३	८।१२।४५।४५	३। ४।३६।४२	६।१६। ४।२२	१।१०।३७।२६	२१।५०	-२५।३१	-३।३३
१४	२।२८। ५।४१	९। ८।३५।५२	६।२१।४०। ८	३।१८।५७।५४	८।१२।३८।३३	३। ५।५०।२९	६।१६। ४।२३	१।१०।३४।१५	२१।४१	-२३।४९	-४।१७
१५	२।२९। २।५३	९।२१। ०।२४	६।२१।५७।३६	३।२०।३४।२८	८।१२।३१।२६	३। ७। ४।१६	६।१६। ४।३१	१।१०।३१। ४	२१।३२	-२१। ०	-४।४७
१६	३। ०। ०। ७	१०। ३।१४। ७	६।२२।१५।३६	३।२२। ९। ४	८।१२।२४।२४	३। ८।१८। ३	६।१६। ४।४४	१।१०।२७।५४	२१।२२	-१७।१८	-५। ३
१७	३। ०।५७।१९	१०।१५।१७।३५	६।२२।३४।१०	३।२३।४१।३८	८।१२।१७।२७	३। ९।३१।४९	६।१६। ५। ३	१।१०।२४।४३	२१।१२	-१२।५६	-५। ६
१८	३। १।५४।३४	१०।२७।१४। ९	६।२२।५३।१६	३।२५।१२।१३	८।१२।१०।३५	३।१०।४५।३९	६।१६। ५।२८	१।१०।२१।३२	२१। २	- ८। ८	-४।५५
१९	३। २।५१।४९	११। ९। ६। ७	६।२३।१२।५४	३।२६।४०।४९	८।१२। ३।४८	३।११।५९।२७	६।१६। ५।५९	१।१०।१८।२१	२०।५१	- ३। ४	-४।३९
२०	३। ३।४९। ३	११।२०।५७।५३	६।२३।३३। ४	३।२८। ७।१९	८।११।५७। ८	३।१३।१३।१४	६।१६। ६।३५	१।१०।१५।१०	२०।४०	२। ७	-३।५७
२१	३। ४।४६।२०	०। २।५४।३०	६।२३।५३।४३	३।२९।३१।४८	८।११।५०।३३	३।१४।२७। ४	६।१६। ७।१८	१।१०।११। ०	२०।२९	७।१६	-३।११
२२	३। ५।४३।३८	०।१४।५९।५६	६।२४।१४।५४	४। ०।५४।१२	८।११।४४। ५	३।१५।४०।५३	६।१६। ८। ६	१।१०। ८।४९	२०।१७	१२।१४	-२।१७
२३	३। ६।४०।५४	०।२७।१९।४४	६।२४।३६।३३	४। २।१४।२६	८।११।३७।४३	३।१६।५४।४२	६।१६। ९। १	१।१०। ५।३८	२०। ५	१६।४८	-१।१५
२४	३। ७।३८।१३	१। ९।५९।१५	६।२४।५८।४१	४। ३।३२।३३	८।११।३१।२९	३।१८। ८।३२	६।१६।१०। १	१।१०। २।२७	१९।५२	२०।४६	०। ८
२५	३। ८।३५।३३	१।२३। १।३१	६।२५।२१।१८	४। ४।४८।२६	८।११।२५।२१	३।१९।२२।२२	६।१६।११। ७	१। ९।५९।१६	१९।४०	२३।४८	१।[illegible]
२६	३। ९।३२।५२	२। ६।२९।४१	६।२५।४४।२३	४। ६। १। ०	८।११।१९।२१	३।२०।३६।११	६।१६।१२।१८	१। ९।५६। ६	१९।२७	२५।३७	२।१०
२७	३।१०।३०।१३	२।२०।२४।४८	६।२६। ७।५४	४। ७।१३।१६	८।११।१३।२८	३।२१।५०। २	६।१६।१३।३६	१। ९।५२।५५	१९।१३	२५।५३	३।१३
२८	३।११।२७।३५	३। ४।४३।३६	६।२६।३१।५३	४। ८।२२। ६	८।११। ७।४४	३।२३। ३।५३	६।१६।१४।५९	१। ९।४९।४४	१९। ०	२४।२९	४। ५
२९	३।१२।२४।५७	३।१९।२२।१४	६।२६।५६।१८	४। ९।२८।२६	८।११। २। ७	३।२४।१७।४३	६।१६।१६।२८	१। ९।४६।३३	१८।४५	२१।३५	४।४२
३०	३।१३।२२।२०	४। ४।१२। ७	६।२७।२१। ९	४।१०।३२।११	८।१०।५६।३९	३।२५।३१।३२	६।१६।१८। ३	१। ९।४३।२३	१८।३१	१६।५६	५। १
जुलाई ३१	३।१४।१९।४४	४।१९। ५।१०	६।२७।४६।२६	४।११।३३।१५	८।१०।५१।१९	३।२६।४५।२२	६।१६।१९।४४	१। ९।४०।१२	१८।१६	११।२४	५। ०
अगस्त १	३।१५।१७। ८	५। ३।५३।२८	६।२८।१२। ७	४।१२।३१।२४	८।१०।४६। ८	३।२७।५९।१४	६।१६।२१।३०	१। ९।३७। १	१८। २	५।१४	४।३९
२	३।१६।१४।३२	५।१८।२८।५०	६।२८।३८।१५	४।१३।२६।४९	८।१०।४१। ६	३।२९।१३। ३	६।१६।२३।२२	१। ९।३३।५०	१७।४६	-१। ७	४। ०
३	३।१७।११।५७	६। २।४७।१६	६।२९। ४।४२	४।१४।१९। ४	८।१०।३६।१३	४। ०।२६।५३	६।१६।२५।२०	१। ९।३०।४०	१७।३१	-७।१९	३। ६
४	३।१८। ९।२४	६।१६।४७।१६	६।२९।३१।३४	४।१५। ८। ९	८।१०।३१।३०	४। १।४०।४३	६।१६।२७।२३	१। ९।२७।२९	१७।१५	-१३। १	२। २
५	३।१९। ६।५०	७। ०।२७।४१	६।२९।५८।५०	४।१५।५३।५२	८।१०।२६।५५	४। २।५४।३३	६।१६।२९।३२	१। ९।२४।१८	१६।५९	-१७।५७	०।५३
६	३।२०। ४।१८	७।१३।५०।२९	७। ०।२६।२८	४।१६।३६। २	८।१०।२२।३१	४। ४। ८।२२	६।१६।३१।४६	१। ९।२१। ७	१६।४३	-२१।५१	०।१८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टै. टा.) (१ अग. को अयनांश = २३°।३८'।१०")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
अग. ७	३।२१। १।४७	७।२६।५८।११	७। ०।५४।२९	४।१७।१४।३२	८।१०।१८।१६	४। ५।२२।१२	६।१६।३४। ६	११। ९।१७।५६	१६।२६	-२४।३३	-१।२६
८	३।२१।५९।१६	८। ९।५१।४७	७। १।२२।५१	४।१७।४९। ८	८।१०।१४।११	४। ६।३५। ०	६।१६।३६।३१	११। ९।१४।४६	१६। ९	-२५।५३	-२।२९
९	३।२२।५६।४५	८।२२।३४।१०	७। १।५१।३४	४।१८।१९।३८	८।१०।१०।१६	४। ७।४९।४९	६।१६।३९। २	११। ९।११।३५	१५।५२	-२५।४९	-३।२३
१०	३।२३।५४।१७	९। ५। ५।३७	७। २।२०।३९	४।१८।४५।५२	८।१०। ६।३१	४। ९। ३।३९	६।१६।४१।३८	११। ९। ८।२४	१५।३४	-२४।२६	-४। ७
११	३।२४।५१।४९	९।१७।२७।३६	७। २।५०। ३	४।१९। ७।३६	८।१०। २।५७	४।१०।१७।२७	६।१६।४४।२०	११। ९। ५।१३	१५।१७	-२१।५३	-४।३८
१२	३।२५।४९।२२	९।२९।४१।२०	७। ३।१९।४८	४।१९।२४।३६	८। ९।५९।३३	४।११।३१।१५	६।१६।४७। ७	११। ९। २। २	१४।५९	-१८।२३	-४।५६
१३	३।२६।४६।५८	१०।११।४६।३४	७। ३।४९।५२	४।१९।३६।४३	८। ९।५६।१९	४।१२।४५। ४	६।१६।४९।५९	११। ८।५८।५२	१४।४१	-१४।१०	-५। ०
१४	३।२७।४४।३३	१०।२३।४४।५३	७। ४।२०।१६	४।१९।४३।४३	८। ९।५३।१६	४।१३।५८।५२	६।१६।५२।५७	११। ८।५५।४१	१४।२२	-९।२६	-४।५१
१५	३।२८।४२।१०	११। ५।३८।२४	७। ४।५०।५८	४।१९।४५।२३	८। ९।५०।२३	४।१५।१२।४१	६।१६।५५।५९	११। ८।५२।३०	१४। ४	-४।२४	-४।२४
१६	३।२९।३९।५०	११।१७।२८।३०	७। ५।२१। ०	४।१९।४१।३८	८। ९।४७।४१	४।१६।२६।२९	६।१६।५९। ७	११। ८।४९।१९	१३।४५	०।४७	-३।५६
१७	४। ०।३७।३०	११।२९।१८।५०	७। ५।५३।१८	४।१९।३२।१७	८। ९।४५।१०	४।१७।४०।१७	६।१७। २।२१	११। ८।४६। ९	१३।२६	५।५७	-३।१३
१८	४। १।३५।११	०।११।१३।४८	७। ६।२४।५६	४।१९।१७।१६	८। ९।४२।५०	४।१८।५४। ५	६।१७। ५।३९	११। ८।४२।५८	१३। ७	१०।५७	-२।२०
१९	४। २।३२।५५	०।२३।१७। २	७। ६।५६।५१	४।१८।५६।३५	८। ९।४०।४१	४।२०। ७।५४	६।१७। ९। २	११। ८।३९।४७	१२।४७	१५।३६	-१।२१
२०	४। ३।३०।४१	१। ५।३४।३२	७। ७।२९। ३	४।१८।३०।१९	८। ९।३८।४३	४।२१।२१।४२	६।१७।१२।३१	११। ८।३६।३६	१२।२७	१९।४३	०।१७
२१	४। ४।२८।२६	१।१८।१०।३३	७। ८। १।३२	४।१७।५८।३४	८। ९।३६।५६	४।२२।३५।२८	६।१७।१६। ४	११। ८।३३।२६	१२। ८	२३। १	०।४९
२२	४। ५।२६।१५	२। १।१०।२५	७। ८।३४।१९	४।१७।२१।४०	८। ९।३५।२१	४।२३।४९।१६	६।१७।१९।४२	११। ८।३०।१५	११।४८	२५।१६	१।५५
२३	४। ६।२४। ५	२।१४।३८।३३	७। ९। ७।२१	४।१६।३९।५४	८। ९।३३।५६	४।२५। ३। ४	६।१७।२३।२६	११। ८।२७। ४	११।२७	२६। ८	२।५७
२४	४। ७।२१।५६	२।२८।३५।४४	७। ९।४०।३९	४।१५।५३।५६	८। ९।३२।४३	४।२६।१६।५१	६।१७।२७।१४	११। ८।२३।५३	११। ७	२५।२४	३।५१
२५	४। ८।१९।४९	३।१३। १।३३	७।१०।१४।१३	४।१५। ४।१७	८। ९।३१।४१	४।२७।३०।३८	६।१७।३१। ७	११। ८।२०।४२	१०।४६	२२।५९	४।३२
२६	४। ९।१७।४३	३।२७।५२।१२	७।१०।४८। ३	४।१४।११।५०	८। ९।३०।५०	४।२८।४४।२४	६।१७।३५। ४	११। ८।१७।३२	१०।२५	१८।५९	४।५६
२७	४।१०।१५।३९	४।१२।५८।३९	७।११।२२। ८	४।१३।१७।३०	८। ९।३०।११	४।२९।५८। ९	६।१७।३९। ७	११। ८।१४।२१	१०। ५	१३।४२	४।५९
२८	४।११।१३।३७	४।२८।११।१५	७।११।५६।२७	४।१२।२२।१३	८। ९।२९।४३	५। १।११।५६	६।१७।४३।१४	११। ८।११।१०	९।४३	७।३३	४।४२
२९	४।१२।११।३५	५।१३।१९।४५	७।१२।३१। २	४।११।२७।१२	८। ९।२९।२७	५। २।२५।४१	६।१७।४७।२५	११। ८। ७।५९	९।२२	०।५९	४। ५
३०	४।१३। ९।३५	५।२८।१३।२०	७।१३। ५।५१	४।१०।३३।३५	८। ९:२९।२२	५। ३।३९।२५	६।१७।५१।४२	११। ८। ४।४९	९। १	-५।३४	३।१२
अग ३१	४।१४। ७।३७	६।१२।४५।४७	७।१३।४०।५४	४। ९।४२।३४	८। ९।२९।२८	५। ४।५३।१०	६।१७।५६। २	११। ८। १।३८	८।३९	-११।४०	२। ७
सितं. १	४।१५। ५।४०	६।२६।५४।१३	७।१४।१६।१२	४। ८।५५।१४	८। ९।२९।४६	५। ६। ६।५३	६।१८। ०।२८	११। ७।५८।२७	८।१८	-१६।५९	०।५६
२	४।१६। ३।४४	७।१०।३७। १	७।१४।५१।४२	४। ८।१२।४९	८। ९।३०।१५	५। ७।२०।३६	६।१८। ४।५७	११। ७।५५।१६	७।५६	-२१।१६	०।१६
३	४।१७। १।५१	७।२३।५७। ३	७।१५।२७।२७	४। ७।३६।१२	८। ९।३०।५५	५। ८।३४।१९	६।१८। ९।३१	११। ७।५२। ५	७।३४	-२४।१७	-१।२५
४	४।१७।५९।५८	८। ६।५६।१७	७।१६। ३।२५	४। ७। ६।११	८। ९।३१।४८	५। ९।४८। ०	६।१८।१४। ९	११।७।४८।५५	७।१२	-२५।५५	-२।२८
५	४।१८।५८। ७	८।१९।३८।४१	७।१६।३९।३५	४। ६।४३।५५	८। ९।३२।५१	५।११। १।४१	६।१८।१८।५२	११। ७।४५।४४	६।५०	-२६। ८	-३।२३
६	४।१९।५६।१८	९। २। ८। ४	७।१७।१५।५९	४। ६।२९।३७	८। ९।३४। ५	५।१२।१५।२२	६।१८।२३।३८	११। ७।४२।३३	६।२७	-२५। १	-४। ६
७	४।२०।५४।३०	९।१४।२६।१५	७।१७।५२।३५	४। ६।२३।४८	८। ९।३५।३१	५।१३।२९। २	६।१८।२८।२९	११। ७।३९।२२	६। ५	-२२।४२	-४।३७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.), (१ सितं. को अयनांश = २३°।३८'।१४")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
सितं. ८	४।२१।५२।४४	९।२६।३६। २	७।१८।२९।२३	४।६।२६।४८	८। ९।३७। ८	५।१४।४२।४०	६।१८।३३।२४	११ ७।३६।१२	५।४२	-१९।२४	-४।५५
९	४।२२।५०। ०	१०। ८।३९।३९	७।१९। ६।२४	४।६।३८।४७	८। ९।३८।५७	५।१५।५६।१९	६।१८।३८।२३	११ ७।३३। १	५।२०	-१५।१९	-५। ०
१०	४।२३।४९।१७	१०।२०।३७।२९	७।१९।४३।३७	४।६।५९।४२	८। ९।४०।५६	५।१७। ९।५७	६।१८।४३।२६	११ ७।२९।५०	४।५७	-१०।४०	-४।५२
११	४।२४।४७।३७	११। २।३१।१७	७।२०।२१। १	४।७।२९।३०	८। ९।४३। ७	५।१८।२३।३६	६।१८।४८।३३	११ ७।२६।३९	४।३४	- ५।३९	-४।३१
१२	४।२५।४५।५६	११।१४।२२।५३	७।२०।५८।३६	४। ८। ७।५४	८। ९।४५।२९	५।१९।३७।११	६।१८।५३।४३	११ ७।२३।२८	४।११	०।२७	-३।५८
१३	४।२६।४४।२०	११।२६।१३। ५	७।२१।३६।२३	४। ८।५४।३९	८। ९।४८। २	५।२०।५०।४८	६।१८।५८।५८	११ ७।२०।१८	३।४९	४।४६	-३।१४
१४	४।२७।४२।४५	०। ८। ४।४१	७।२२।१४।२२	४। ९।४९।१९	८। ९।५०।४६	५।२२। ४।२४	६।१९। ४।१६	११ ७।१७। ७	३।२६	९।५१	-२।२२
१५	४।२८।४१।११	०।२०। ११। ८	७।२२।५२।३१	४।१०।५१।२३	८।९। ५३।४०	५।२३।१७।५९	६।१९। ९।३८	११ ७।१३।५६	३। २	१४।३७	-१।२४
१६	४।२९।३९।४१	१। २। ५।१२	७।२३।३०।५१	४।१२। ०।२४	८। ९।५६।४६	५।२४।३१।३४	६।१९।१५। ३	११ ७।१०।४५	२।३९	१८।५२	०।२१
१७	५। ०।३८।१३	१।१४।२१।४०	७।२४। ९।२२	४।१३।१५।४४	८।१०। ०। २	५।२५।४५। ८	६।१९।२०।३३	११ ७। ७।३५	२।१६	२२।२३	०।४५
१८	५। १।३६।४५	१।२६।५५।४५	७।२४।४८। ३	४।१४।३६।४६	८।१०। ३।२९	५।२६।५८।४०	६।१९।२६। ५	११ ७। ४।२४	१।५३	२४।५६	१।४९
१९	५। २।३५।२१	२। ९।५९।११	७।२५।२६।५४	४।१६। २।५७	८।१०। ७। ७	५।२८।१२।१४	६।१९।३१।४२	११ ७। १।१३	१।३०	२६।१४	२।५०
२०	५। ३।३३।५९	२।२३।१२।३९	७।२६। ५। ५६	४।१७।३३।३८	८।१०।१०।५६	५।२९।२५।४७	६।१९।३७।२१	११ ६।५८। २	१। ६	२६। ५	३।४४
२१	५। ४।३२।३७	३। ७। ३।३२	७।२६।४५। ७	४।१९। ८।१२	८।१०।१४।५५	६। ०।३९।१७	६।१९।४३। ४	११ ६।५४।५१	०।४३	२४।२१	४।२७
२२	५। ५।३१।१९	३।२१।२३।११	७।२७।२४।२८	४।२०।४६। ७	८।१०।१९। ४	६। १।५२।४८	६।१९।४८।५१	११ ६।५१।४१	०।२०	२।११	४।५५
२३	५। ६।३०। ४	४। ६। ९।२६	७।२८। ३। ०	४।२२।२६।५०	८।१०।२३।२४	६। ३। ६।१९	६।१९।५४।४०	११ ६।४८।३०	०। ४	१६।१७	५।५
२४	५। ७।२८।४८	४।२१।१६।३३	७।२८।४३।३९	४।२४। ९।४७	८।१०।२७।५४	६। ४।१९।४८	६।२०। ०।३३	११ ६।४५।१९	०।२७	१०।२६	४।५३
२५	५। ८।२७।३७	५। ६।३३।५५	७।२९।२३।२९	४।२५।५४।३८	८।१०।३२।३५	६। ५।३३।१७	६।२०। ६।२९	११ ६।४२। ८	०।५०	३।५४	४।२१
२६	५। ९।२६।२७	५।२१।५०।५९	८। ०। ३।२८	४।२७।४०।५२	८।१०।३७।२५	६। ६।४६।४५	६।२०।१२।२८	११ ६।३८।५७	-१।१४	-२।५२	३।३०
२७	५।१०।२५।१८	६। ६।५७।३२	८। ०।४३।३५	४।२९।२८। ८	८।१०।४२।२६	६। ८। ०।११	६।२०।१८।२९	११ ६।३५।४७	-१।३७	-९।२६	२।२५
२८	५।११।२४।१२	६।२१।४३।३०	८। १।२३।५१	५। १।१६। ९	८।१०।४७।३७	६। ९।१३।३८	६।२०।२४।३४	११ ६।३२।३६	-२। ०	-१५।१९	१।११
२९	५।१२।२३। ७	७। ६। ३।५४	८। २। ४।१७	५। ३। ४।३९	८।१०।५२।५८	६।१०।२७। ३	६।२०।३०।४२	११ ६।२९।२५	-२।२४	-२०।११	०। ५
सितं. ३०	५।१३।२२। ४	७।१९।५७। ३	८। २।४४।४९	५। ४।५३।१९	८।१०।५८।२८	६।११।४०।२६	६।२०।३६।५२	११ ६।२६।१४	-२।४७	-२३।४५	-१।१९
अक्तू. १	५।१४।२१। ४	८। ३।२२।२९	८। ३।२५।३१	५। ६।४२। २	८।११। ४। ९	६।१२।५३।५०	६।२०।४३। ६	११ ६।२३। ४	-३।१०	-२५।५१	-२।२६
२	५।१५।२०। ५	८।१६।२३।२६	८। ४। ६।२१	५। ८।३०।३८	८।११। ९।५९	६।१४। ७।१२	६।२०।४९।२२	११ ६।१९।५३	-३।३४	-२६।२७	-३।२४
३	५।१६।१९। ८	८।२९। ४।११	८। ४।४७।१९	५।१०।१८।५४	८।११।१५।५८	६।१५।२०।३८	६।२०।५५।४०	११ ६।१६।४२	-३।५७	-२५।३७	-४। ९
४	५।१७।१८।१३	९।११।२७।५३	८। ५।२८।२५	५।१२। ६।४९	८।११।२२। ७	६।१६।३३।५४	६।२१। २। १	११ ६।१३।३१	-४।२०	-२३।३३	-४।४२
५	५।१८।१७।२०	९।२३।३९। ३	८। ६। ९।३८	५।१३।५४।१३	८।११।२८।२६	६।१७।४७।१३	६।२१। ८।२५	११ ६।१०।२१	-४।४३	-२०।२६	-५। २
६	५।१९।१६।२९	१०। ५।४१।४५	८। ६।५१। ०	५।१५।४१। ६	८।११।३४।५४	६।१९। ०।३१	६।२१।१४।५१	११ ६। ७।१०	-५। ६	-१६।३०	-५। ८
७	५।२०।१५।३९	१०।१७।३८। १	८। ७।३२।२९	५।१७।२७।१९	८।११।४१।३१	६।२०।१३।४८	६।२१।२१।१९	११ ६। ३।५९	-५।२९	-११।५७	-५। ०
८	५।२१।१४।५१	१०।२९।३०।५१	८। ८।१४। ४	५।१९।१२।५६	८।११।४८।१७	६।२१।२७। ४	६।२१।२७।५०	११ ६। ०।४८	-५।५२	-६।५९	-४।३९
९	५।२२।१४। ६	११।११।२२।४५	८। ८।५५।४८	५।२०।५७।५१	८।११।५५।१२	६।२२।४०।१९	६।२१।३४।२३	११ ५।५७।३७	-६।१५	-१।४६	-४। ७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टै. टा.) (१ अ...

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टै. टा.) (१ अक्तू. को अयनांश = २३°३८′१८″)

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
अक्तू. १०	५।२३।१३।२२	११।२३।१४।३१	८। ९।३७।३८	५।२२।४२। ३	८।१२। २।१६	६।२३।५३।३२	६।२१।४०।५८	११ ५।५४।२७	-६।३८	३।३१	-३।२३
११	५।[illegible] १२।४०	०। ५। ८।१६	८।१०।१९।३५	५।२४।२५।३३	८।१२। ९।२९	६।२५। ६।४५	६।२१।४७।३८	११ ५।५१।१६	-७। १	८।४२	-२।३१
१२	५। ५।१२। १	०।१७। ६।१३	८।११। १।४०	५।२६। ८।२२	८।१२।१६।५०	६।२६।१९।५८	६।२१।५४।१४	११।५।४८। ५	-७।२३	१३।३६	-१।३१
१३	५।२६।११।२४	०।२९। ९।२९	८।११।४३।५०	५।२७।५०।२४	८।१२।२४।२०	६।२७।३३। ७	६।२२। ०।५५	११ ५।४४।५४	-७।४६	१८। २	०।२७
१४	५।२७।१०।४८	१।११।२९। २	८।१२।२६। ८	५।२९।३१।४६	८।१२।३१।५९	६।२८।४६।१७	६।२२। ७।३९	११ ५।४१।४३	-८। ८	२१।४७	०।३९
१५	५।२८।१०।१६	१।२३।४४।२०	८।१३। ८।३२	६। १।१२।२६	८।१२।३९।४७	६।२९।५९।२६	६।२२।१४।२४	११ ५।३८।३३	-८।३०	२४।३५	१।४५
१६	५।२९। ९।४५	२। ६।२१।४७	८।१३।५१। २	६। २।५२।२३	८।१२।४७।४२	७। १।१२।३३	६।२२।२१।११	११ ५।३५।२२	-८।५२	२६।१३	२।४७
१७	६। ०। ९।१६	२।१९।१७।५८	८।१४।३३।३९	६। ४।३१।४१	८।१२।५५।४६	७। २।२५।४०	६।२२।२७।५९	११ ५।३२।११	-९।१४	२६।२९	३।४२
१८	६। १। ८।५०	३। २।३५।१२	८।१५।१६।२३	६। ६।१०।१९	८।१३। ३।५८	७। ३।३८।४६	६।२२।३४।५०	११ ५।२९। ०	-९।३६	२५।१६	४।२७
१९	६। २। ८।२६	३।१६।१६।३५	८।१५।५९।११	६। ७।४८।१७	८।१३।१२।१८	७। ४।५१।४९	६।२२।४१।४२	११ ५।२५।५०	-९।५८	२२।३२	४।५८
२०	६। ३। ८। ४	४। ०।२३।४९	८।१६।४२। ६	६। ९।२५।३७	८।१३।२०।४६	७। ६। ४।५२	६।२२।४८।३५	११ ५।२२।३९	-१०।२०	१८।२४	५।१२
२१	६। ४। ७।४५	४।१४।५४।३३	८।१७।२५। ७	६।११। २।२२	८।१३।२९।२२	७। ७।१७।५५	६।२२।५५।३१	११ ५।१९।२८	-१०।४१	१३। ६	५। ७
२२	६। ५। ७।२६	४।२९।४५।२४	८।१८। ८।१३	६।१२।३८।२८	८।१३।३८। ६	७। ८।३०।५५	६।२३। २।२७	११ ५।१६।१७	-११। २	६।५६	४।४२
२३	६। ६। ७।११	५।१४।५०।११	८।१८।५१।२५	६।१४।१४। २	८।१३।४६।५८	७। ९।४३।५५	६।२३। ९।२५	११।५।१३। ६	-११।२४	०।१६	३।५७
२४	६। ७। ६।५८	५।२९।५८।४५	८।१९।३४।४२	६।१५।४९। २	८।१३।५५।५७	७।१०।५६।५४	६।२३।१६।२४	११ ५। ९।५६	-११।४५	-६।२८	२।५५
२५	६। ८। ६।४५	६।१५। २। १	८।२०।१८। ५	६।१७।२३।२६	८।१४। ५। ३	७।१२। ९।५०	६।२३।२३।२४	११ ५। ६।४५	-१२। ५	-१२।४८	१।४२
२६	६। ९। ६।३७	६।२९।५९।३०	८।२१। १।३३	६।१८।५७।२२	८।१४।१४।१७	७।१३।२२।४५	६।२३।३०।२६	११ ५। ३।३४	-१२।२६	-१८।१८	०।२२
२७	६।१०। ६।३०	७।१४।१८।५९	८।२१।४५। ६	६।२०।३०।४५	८।१४।२३।३८	७।१४।३५।४०	६।२३।३७।२९	११ ५। ०।२३	-१२।४६	-२२।३५	०।५७
२८	६।११। ६।२४	७।२८।२०।४५	८।२२।२८।४५	६।२२। ३।३८	८।१४।३३। ७	७।१५।४८।३२	६।२३।४४।३२	११ ४।५७।१३	-१३। ७	-२५।२२	-२।११
२९	६।१२। ६।२०	८।११।५५।५३	८।२३।१२।२७	६।२३।३५।५९	८।१४।४२।४२	७।१७। १।२२	६।२३।५१।३७	११ ४।५४। २	-१३।२७	-२६।३४	-३।१५
३०	६।१३। ६।१८	८।२५। ४।१४	८।२३।५६।१५	६।२५। ७।५४	८।१४।५२।२४	७।१८।१४।१२	६।२३।५८।४३	११ ४।५०।५१	-१३।४६	-२६।११	-४। ६
अक्तू. ३१	६।१४। ६।१८	९। ७।४९।१०	८।२४।४०। ८	६।२६।३९।१८	८।१५। २।१३	७।१९।२६।५९	६।२४। ५।४९	११ ४।४७।४०	-१४। ६	-२४।२६	-४।४३
नव. १	६।१५। ६।१९	९।२०।१५। ५	८।२५।२४। ४	६।२८।१०।१४	८।१५।१२। ९	७।२०।३९।४४	६।२४।१२।५६	११ ४।४४।२९	-१४।२५	-२१।३२	-५। ७
२	६।१६। ६।२३	१०। २।२५।२४	८।२६। ८। ६	६।२९।४०।४२	८।१५।२२।१२	७।२१।५२।२८	६।२४।२०। ४	११ ४।४१।१९	-१४।४४	-१७।४६	-५।१५
३	६।१७। ६।२७	१०।१४।२५। ३	८।२६।५२।१२	७। १।१०।४२	८।१५।३२।२१	७।२३। ५।१०	६।२४।२७।१२	११ ४।३८। ८	-१५। ३	-१३।२०	-५।१०
४	६।१८। ६।३३	१०।२६।१८।४४	८।२७।३६।२१	७। २।४०।१२	८।१५।४२।३७	७।२४।१७।४९	६।२४।३४।२१	११ ४।३४।५७	-१५।२२	-८।२६	-४।५२
५	६।१९। ६।४२	११। ८। ९।१६	८।२८।२०।३५	७। ४। ९।१५	८।१५।५२।५९	७।२५।३०।२७	६।२४।४१।३१	११ ४।३१।४६	-१५।४०	-३।१६	-४।२१
६	६।२०। ६।५१	११।२०। ०।२३	८।२९। ४।५३	७। ५।३७।४८	८।१६। ३।२७	७।२६।४३। ३	६।२४।४८।४०	११ ४।२८।३६	-१५।५८	२। २	-३।३९
७	६।२१। ७। २	०। १।५५।२०	८।२९।४९।१५	७। ७। ५।५०	८।१६।१४। २	७।२७।५५।३६	६।२४।५५।५०	११ ४।२५।२५	-१६।१६	७।१८	-२।४७
८	६।२२। ७।१५	०।१३।५५।२४	९। ०।३३।४१	७। ८।३३।२१	८।१६।२४।४२	७।२९। ८। ८	६।२५। ३। १	११ ४।२२।१४	-१६।३४	१२।२१	-१।४८
९	६।२३। ७।३१	०।२६। २।५३	९। १।१८।१०	७।१०। ०।२०	८।१६।३५।२९	८। ०।२०।३८	६।२५।१०।१२	११ ४।१९। ३	-१६।५१	१६।५९	०।४३
१०	६।२४। ७।४७	१। ८।१९।५०	९। २। २।४३	७।११।२६।४४	८।१६।४६।२२	८। १।३३। ४	६।२५।१७।२२	११ ४।१५।५२	-१७। ८	२०।५९	०।२५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टै. टा.),(१ नवम्बर को अयनांश = २३°।३८'।२२")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
नवं. ११	६।२५। ८। ५	१।२०।४६।३७	९। २।४७।२०	७।१२।५२।३०	८।१६।५७।२०	८। २।४५।२९	६।२५।२४।३३	११। ४।१२।४२	-१७।२५	२४। ४	१।३३
१२	६।२६। ८।२६	२। ३।२५। ६	९। ३।३२। १	७।१४।१७।३८	८।१७। ८।२४	८। ३।५७।५२	६।२५।३१।४४	११। ४। ९।३१	-१७।४१	२६। २	२।३७
१३	६।२७। ८।४७	२।१६।१७।१४	९। ४।१६।४४	७।१५।४२। ०	८।१७।१९।३४	८। ५।१०।१२	६।२५।३८।५५	११। ४। ६।२०	-१७।५७	२६।३८	३।३५
१४	६।२८। ९।११	२।२९।२३।२७	९। ५। १।३१	७।१७। ५।३७	८।१७।३०।४९	८। ६।२२।३१	६।२५।४६। ६	११। ४। ३। ९	-१८।१३	२५।४७	४।२२
१५	६।२९। ९।३७	३।१२।४५।४१	९। ५।४६।२२	७।१८।२८।२१	८।१७।४२। ९	८। ७।३४।४६	६।२५।५३।१७	११। ३।५९।५९	-१८।२९	२३।२७	४।५७
१६	७। ०।१०। ४	३।२६।२५।३४	९। ६।३१।१५	७।१९।५०। ७	८।१७।५३।३५	८। ८।४६।५९	६।२६। ०।२७	११। ३।५६।४८	-१८।४४	१९।४६	५।१५
१७	७। १।१०।३३	४।१०।२२।२६	९। ७।१६।११	७।२१।१०।४९	८।१८। ५। ७	८। ९।५९। ९	६।२६। ७।३७	११। ३।५३।३७	-१८।५९	१४।५५	५।१५
१८	७। २।११। ४	४।२४।३६।११	९। ८। १।११	७।२२।३०।१९	८।१८।१६।४३	८।११।११।१८	६।२६।१४।४७	११। ३।५०।२६	-१९।१३	९।११	४।५७
१९	७। ३।११।३८	५। ९। ५।१४	९। ८।४६।१४	७।२३।४८।२९	८।१८।२८।२५	८।१२।२३।२३	६।२६।२१।५६	११। ३।४७।१५	-१९।२७	२।५२	४।१९
२०	७। ४।१२।११	५।२३।४४।३५	९। ९।३१।१९	७।२५। ५। ४	८।१८।४०।११	८।१३।३५।२४	६।२५।२९। ५	११। ३।४४। ५	-१९।४१	-३।४१	३।२४
२१	७। ५।१२।४७	६। ८।२९।२१	९।१०।१६।२७	७।२६।१९।५८	८।१८।५२। २	८।१४।४७।२४	६।२६।३६।१३	११। ३।४०।५४	-१९।५४	-१०। ६	२।१६
२२	७। ६।१३।२६	६।२३।१३।३१	९।११। १।३८	७।२७।३२।५४	८।१९। ३।५९	८।१५।५९।२१	६।२६।४३।२१	११। ३।३७।४३	-२०।८	-१५।५७	०।५८
२३	७। ७।१४। ३	७। ७।४८।५४	९।११।४६।५१	७।२८।४३।३४	८।१९।१५।५९	८।१७।११।१२	६।२६।५०।२८	११। ३।३४।३२	-२०।२०	-२०।५०	०।२२
२४	७। ८।१४।४५	७।२२। ९।३८	९।१२।३२। ७	७।२९।५१।४२	८।१९।२८। ५	८।१८।२३। २	६।२६।५७।३४	११। ३।३१।२१	-२०।३३	-२४।२१	-१।४०
२५	७। ९।१५।२७	८। ६।११।१०	९।१३।१७।२५	८। ०।५६।५७	८।१९।४०।१५	८।१९।३४।४८	६।२७। ४।३९	११। ३।२८।११	-२०।४५	-२६।१७	-२।५०
२६	७।१०।१६। ९	८।१९।४९। ७	९।१४। २।४४	८। १।५८।५०	८।१९।५२।२९	८।२०।४६।३०	६।२७।११।४३	११। ३।२५। ०	-२०।५६	-२६।३३	-३।४९
२७	७।११।१६।५५	९। ३। २।५८	९।१४।४८। ७	८। २।५६।५९	८।२०। ४।४८	८।२१।५८। ९	६।२७।१८।४६	११। ३।२१।४९	-२१। ७	-२५।१६	-४।३३
२८	७।१२।१७।४०	९।१५।५४। ६	९।१५।३३।३१	८। ३।५०।४९	८।२०।१७।११	८।२३। ९।४३	६।२७।२५।४९	११। ३।१८।३८	-२१।१८	-२२।४२	-५। २
२९	७।१३।१८।२७	९।२८।२४। ३	९।१६।१८।५७	८। ४।३९।४५	८।२०।२९।३७	८।२४।२१।१२	६।२७।३२।४९	११। ३।१५।२८	-२१।२८	-१९। ७	-५।१६
नवं. ३०	७।१४।१९।१५	१०।१०।३७। ४	९।१७। ४।२६	८। ५।२३। ९	८।२०।४२। ९	८।२५।३२।४०	६।२७।३९।४९	११। ३।१२।१७	-२१।३८	-१४।४९	-५।१५
दिस. १	७।१५।२०। ४	१०।२२।३८। ७	९।१७।४९।५५	८। ६। ०।१६	८।२०।५४।४३	८।२६।४४। १	६।२७।४६।४८	११। ३। ९। ६	-२१।४८	-१०। ०	-५। ०
२	७।१६।२०।५४	११। ४।३०।५८	९।१८।३५।२७	८। ६।३०।२२	८।२१। ७।२२	८।२७।५५।१७	६।२७।५३।४५	११। ३। ५।५५	-२१।५७	-४।५३	-४।३२
३	७।१७।२१।४५	११।१६।२१।२२	९।१९।२१। १	८। ६।५२।३६	८।२१।२०। ५	८।२९। ६।३०	६।२८। ०।४०	११। ३। २।४४	-२२। ६	०।२३	-३।५३
४	७।१८।२२।३७	११।२८।१२।५२	९।२०। ६।३५	८। ७। ६। ७	८।२१।३२।५१	९। ०।१७।३७	६।२८। ७।३४	११। २।५९।३४	-२२।१४	५।४०.	-३। ४
५	७।१९।२३।२९	०।१०।१०। १	९।२०।५२।११	८। ७।१०। ९	८।२१।४५।४०	९। १।२८।३९	६।२८।१४।२७	११। २।५६।२३	-२२।२२	१०।४८	-२। ७
६	७।२०।२४।२४	०।२२।१६।४९	९।२१।३७।४९	८। ७। ३।५३	८।२१।५८।३४	९। २।३९।३७	६।२८।२१।१८	११। २।५३।१२	-२२।२९	१५।३६	-१। ३
७	७।२१।२५।१८	१। ४।३४।५९	९।२२।२३।२८	८। ६।४६।४४	८।२२।११।३०	९। ३।५०।२८	६।२८।२८। ७	११। २।५०। १	-२२।३६	१९।५०	०। ४
८	७।२२।२६।१३	१।१७। ६।५३	९।२३। ९। ८	८। ६।१८।१७	८।२२।२४।३०	९। ५। १।१३	६।२८।३४।५४	११। २।४६।५१	-२२।४३	२३।१६	१।१३
९	७।२३।२७।१०	१।२९।५३।५८	९।२३।५४।४९	८। ५।३८।२९	८।२२।३७।३३	९। ६।११।५५	६।२८।४१।४०	११। २।४३।४०	-२२।४९	२५।३६	२।१९
१०	७।२४।२८। ७	२।१२।५५।१८	९।२४।४०।३२	८। ४।४७।३६	८।२२।५०।४०	९। ७।२२।२९	६।२८।४८।२३	११। २।४०।२९	-२२।५५	२६।३६	३।१९
११	७।२५।२९। ५	२।२६।१०।४७	९।२५।२६।१५	८। ३।४६।३५	८।२३। ३।४९	९। ८।३२।५७	६।२८।५५। ५	११। २।३७।१८	-२३। ०	२६। ५	४।१०
१२	७।२६।३०। ४	३। ९।३९।४९	९।२६।११। ०	८। २।३६।४५	८।२३।१७। १	९। ९।४३।२०	६।२९। १।४५	११। २।३४। ७	-२३। ५	२४। ४	४।४७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)(१ दिसं. को अयनांश २३°।३८'।२६")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
दिसं. १३	७।२७।३१। ४	३।२३।१९।५३	९।२६।५७।४६	८। १।१९।५७	८।२३।३०।१७	९।१०।५३।३६	६।२९। ८।२२	११ २।३०।५७	-२३। ९	२०।३९	५। ९
१४	७।२८।३२। ६	४। ७। ९। ०	९।२७।४३।३२	७।२९।५८।४३	८।२३।४३।३५	९।१२। ३।४७	६।२९।१४।५७	११ २।२७।४६	-२३।१३	१६। ४	५।१४
१५	७।२९।३३। ७	४।२१। ९।१४	९।२८।२९।१९	७।२८।३५।४१	८।२३।५६।५५	९।१३।१३।४९	६।२९।२१।३०	११ २।२४।३५	-२३।१६	१०।३५	५। ०
१६	८। ०।३४।१०	५। ५।१५। १	९।२९।१५। ७	७।२७।१३।४०	८।२४।१०।१९	९।१४।२३।४५	६।२९।२८। १	११ २।२१।२४	-२३।१९	४।३१	४।२७
१७	८। १।३५।१४	५।१९।२६।२३	१०। ०। ०।५६	७।२५।५५।२३	८।२४।२३।४५	९।१५।३३।३४	६।२९।३४।२९	११ २।१८।१४	-२३।२१	-१।४९	३।३९
१८	८। २।३६।१८	६। ३।४२। १	१०। ०।४६।४५	७।२४।४३।१८	८।२४।३७।१४	९।१६।४३।१५	६।२९।४०।४५	११ २।१५। ३	-२३।२३	-८। ६	२।३६
१९	८। ३।३७।२४	६।१७।५८।२४	१०। १।३२।३५	७।२३।३९।१९	८।२४।५०।४५	९।१७।५२।४९	६।२९।४७।१८	११ २।११।५२	-२३।२५	-१३।५९	१।२४
२०	८। ४।३८।३१	७। २।१३। ३	१०। २।१८।२६	७।२२।४४।५५	८।२५। ४।१८	९।१९। २।१५	६।२९।५३।३९	११ २। ८।४१	-२३।२६	-१९। ७	०। ७
२१	८। ५।३९।३६	७।१६।२२।५२	१०। ३। ४।१६	७।२२। ०।५७	८।२५।१७।५३	९।२०।११।३२	६।२९।५९।५७	११ २। ५।३०	-२३।२६	-२३। ६	-१।१०
२२	८। ६।४०।४४	८। ०।२२।३६	१०। ३।५०। ८	७।२१।२७।५३	८।२५।३१।३१	९।२१।२०।४१	७। ०। ६।१२	११ २। २।२०	-२३।२६	-२५।४०	-२।२१
२३	८। ७।४१।५३	८।१४। ८।५२	१०। ४।३५। ०	७।२१। ५।३९	८।२५।४५।११	९।२२।२९।४३	७। ०।१२।२५	११ १।५९। ९	-२३।२६	-२६।३६	-३।२४
२४	८। ८।४३। ०	८।२७।३८।४९	१०। ५।२१।५१	७।२०।५३।५९	८।२५।५८।५३	९।२३।३८।३२	७। ०।१८।३४	११ १।५५।५८	-२३।२५	-२५।५५	-४।१३
२५	८। ९।४४।१०	९।१०।४९। ८	१०। ६। ७।४३	७।२०।५२।२०	८।२६।१२।३७	९।२४।४७।१४	७। ०।२४।४१	११ १।५२।४७	-२३।२४	-२३।४७	-४।४७
२६	८।१०।४५।२०	९।२३।३९।३७	१०। ६।५३।३५	७।२१। ०। ०	८।२६।२६।२२	९।२५।५५।४७	७। ०।३०।४५	११ १।४९।३७	-२३।२२	-२०।३०	-५। ६
२७	८।११।४६।२८	१०। ६।११।३८	१०। ७।३९।२६	७।२१।१६।१६	८।२६।४०। ९	९।२७। ४। ७	७। ०।३६।४५	११ १।४६।२६	-२३।२०	-१६।२१	-५।१०
२८	८।१२।४७।३८	१०।१८।२६।३०	१०। ८।२५।१८	७।२१।४०।२१	८।२६।५३।५८	९।२८।१२।१९	७। ०।४२।४२	११ १।४३।१५	-२३।१७	-११।३८	-४।५९
२९	८।१३।४८।४९	११। ०।२८।१७	१०। ९।११।१०	७।२२।११।३०	८।२७। ७।४८	९।२९।२०।२०	७। ०।४८।३७	११ १।४०। ४	-२३।१४	-६।३३	-४।३५
३०	८।१४।४९।५७	११।१२।२१।५३	१०। ९।५७। ०	७।२२।४८।५८	८।२७।२१।४०	१०। ०।२८। ७	७। ०।५४।२७	११ १।३६।५३	-२३।१०	-१।१७	-४। ०
दिसं. ३१	८।१५।५१। ८	११।२४।११।२०	१०।१०।४२।५१	७।२३।३२। ७	८।२७।३५।३३	१०। १।३५।४४	७। १। ०।१५	११ १।३३।४३	-२३। ६	४। १	-३।१४
जन'८५ ई. १	८।१६।५२।१८	०। ६। २।१९	१०।११।२८।४२	७।२४।२०।१८	८।२७।४९।२७	१०। २।४३।१०	७। १। ५।५९	११ १।३०।३२	-२३। १	९।११	-२।२०
२	८।१७।५३।२६	०।१८। ०।३९	१०।१२।१४।३१	७।२५।१२।५७	८।२८। ३।२२	१०। ३।५०।२१	७। १।११।३९	११ १।२७।२१	-२२।५६	१४। ४	-१।२०
३	८।१८।५४।३६	१। ०। ९।४६	१०।१३। ०।२२	७।२६। ९।३७	८।२८।१७।१९	१०। ४।५७।२१	७। १।१७।१६	११ १।२४।१०	-२२।५१	१८।२९	०।१५
४	८।१९।५५।४४	१।१२।३४।४०	१०।१३।४६।११	७।२७। ९।४८	८।२८।३१।१७	१०। ६। ४। ७	७। १।२२।४९	११ १।२१। ०	-२२।४५	२२।१२	०।५२
५	८।२०।५६।५४	१।२५।१८।४७	१०।१४।३१।५९	७।२८।१३। ९	८।२८।४५।१५	१०। ७।१०।३९	७। १।२८।१८	११ १।१७।४९	-२२।३८	२४।५६	१।५८
६	८।२१।५८। २	२। ८।२२।४२	१०।१५।१७।४७	७।२९।१९।१७	८।२८।५९।१५	१०। ८।१६।५७	७। १।३३।४४	११ १।१४।३८	-२२।३२	२६।२५	२।५९
७	८।२२।५९।१०	२।२१।४६।५१	१०।१६। ३।३४	८। ०।२७।५४	८।२९।१३।१५	१०। ९।२३। ०	७। १।३९। ६	११ १।११।२७	-२२।२४	२६।२३	३।५२
८	८।२४। ०।१९	३। ५।२९।५४	१०।१६।४९।२०	८। १।३८।४७	८।२९।२७।१६	१०।१०।२८।४९	७। १।४४।२४	११ १। ८।१६	-२२।१७	२४।४६	४।३३
९	८।२५। १।२७	३।१९।२७।२०	१०।१७।३५। ६	८। २।५१।३९	८।२९।४१।१७	१०।११।३४।२१	७। १।४९।३८	११ १। ५। ६	-२२। ८	२१।३८	४।५८
१०	८।२६। २।३४	४। ३।३५।१२	१०।१८।२०।५१	८। ४। ६।१९	८।२९।५५।१९	१०।१२।३९।३८	७। १।५४।४८	११ १। १।५५	-२२। ०	१७।१२	५। ६
११	८।२७। ३।४२	४।१७।४९।१६	१०।१९। ६।३५	८। ५।२२।३७	९। ०। ९।२२	१०।१३।४४।३८	७। १।५९।५४	११ ०।५८।४४	-२१।५१	११।४७	४।५४
१२	८।२८। ४।४९	५। २। ३।५९	१०।१९।५२।१८	८। ६।४०।२२	९। ०।२३।२५	१०।१४।४९।२१	७। २। ४।५५	११ ०।५५।३३	-२१।४१	५।४५	४।२५
१३	८।२९। ५।५६	५।१६।१६।२६	१०।२०।३७।५९	८। ७।५९।२८	९। ०।३७।२८	१०।१५।५३।४६	७। २। ९।५३	११ ०।५२।२३	-२१।३१	०।३४	३।३९

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं ३० मि. भा. स्टै. टा.)(१ जन. (१९८५ ई.) को अयनांश = २३°।३८'।३१")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चं. क्रां.	चं. श.
सन् १९८५ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. १४	९। ०। ७। ४	६। ०।२४।५४	१०।२१।२३।४१	८। ९।१९।४९	९। ०।५१।३२	१०।१६।५७।५४	७। २।१४।४६	११। ०।४९।१२	-२१।२१	-६।५१	२।४१
१५	९। १। ८।११	६।१४।२६।५९	१०।२२। ९।२१	८।१०।४१।१६	९। १। ५।३६	१०।१८। १।४३	७। २।१९।३५	११। ०।४६। १	-२१।१०	-१२।४५	१।३३
१६	९। २। ९।१७	६।२८।२३।१४	१०।२२।५५। ०	८।१२। ३।४७	९। १।१९।४०	१०।१९। ५।१२	७। २।२४।१९	११। ०।४२।५०	-२०।५९	-१७।५८	०।१९
१७	९। ३।१०।२४	७।१२।१२। ५	१०।२३।४०।३९	८।१३।२७।१६	९। १।३३।४४	१०।२०। ८।२२	७। २।२८।५९	११। ०।३९।३९	-२०।४८	-२२।११	-०।५४
१८	९। ४।११।३०	७।२५।५३।२७	१०।२४।२६।१६	८।१४।५१।३९	९। १।४७।४८	१०।२१।११।१०	७। २।३३।३५	११। ०।३६।२९	-२०।३६	-२५। ५	-२। ४
१९	९। ५।१२।३६	८। ९।२६।४६	१०।२५।११।५२	८।१६।१६।५५	९। २। १।५२	१०।२२।१३।३७	७। २।३८। ६	११। ०।३३।१८	-२०।२३	-२६।३०	-३।६
२०	९। ६।१३।४२	८।२२।५९।१६	१०।२५।५७।२७	८।१७।४२। ०	९। २।१५।५५	१०।२३।१५।४२	७। २।४२।३२	११। ०।३०। ७	-२०।११	-२६।२०	-३।५६
२१	९। ७।१४।४६	९। ५।५९।३९	१०।२६।४२। ०	८।१९। ९।५१	९। २।२९।५८	१०।२४।१७।२४	७। २।४६।५४	११। ०।२६।५६	-१९।५८	-२४।४०	-४।३३
२२	९। ८।१५।५०	९।१८।५६।४१	१०।२७।२८।३२	८।२०।३७।२७	९। २।४४। १	१०।२५।१८।४१	७। २।५१।११	११। ०।२३।४५	-१९।४४	-२१।४४	-४।५५
२३	९। ९।१६।५५	१०। १।३८।१३	१०।२८।१४। ३	८।२२। ५।४९	९। २।५८। ४	१०।२६।१९।३५	७। २।५५।२३	११। ०।२०।३५	-१९।३०	-१७।४९	-५। २
२४	९।१०।१७।५६	१०।१४। ४।३६	१०।२८।५९।३२	८।२३।३४।५०	९। ३।१२। ५	१०।२७।२०। १	७। २।५९।३०	११। ०।१७।२४	-१९।१६	-१३।१३	-४।५४
२५	९।११।१८।५९	१०।२६।१७।२५	१०।२९।४४। ०	८।२५। ४।३५	९। ३।२६। ७	१०।२८।२०। ३	७। ३। ३।३२	११। ०।१४।१३	-१९। १	-८।१०	-४।३३
२६	९।१२।२०। १	११। ८।१७।५८	११। ०।३०।२७	८।२६।३५। १	९। ३।४०। ७	१०।२९।१९।३६	७। ३। ७।२९	११। ०।११। २	-१८।४७	-२।५३	-४। ०
२७	९।१३।२०। ०	११।२०।१०।१०	११। १।१५।५०	८।२८। ६। ६	९। ३।५४। ७	११। ०।१८।३९	७। ३।११।२१	११। ०। ७।५२	-१८।३१	२।२६	-३।१७
२८	९।१४।२१। ०	०। १।५८।५२	११। २। १।१४	८।२९।३७।५३	९। ४। ८। ६	११। १।१७।१५	७। ३।१५। ८	११। ०। ४।४१	-१८।१६	७।४०	-२।२५
२९	९।१५।२२।५८	०।१३।४८।१०	११। २।४६।३५	९। १।१०।२०	९। ४।२२। ३	११। २।१५।१९	७। ३।१८।५०	११। ०। १।३०	-१८। ०	१२।३८	-१।२७
३०	९।१६।२३।५५	०।२५।४४। २	११। ३।३१।५५	९। २।४३।२७	९। ४।३५। ०	११। ३।१२।५१	७। ३।२२।२७	०।२९।५८।१९	-१७।४४	१७।११	०।२५
जन. ३१	९।१७।२४।५०	१। ७।५२।३१	११। ४।१७।१२	९। ४।१७।१४	९। ४।४९।५५	११। ४। ९।४९	७। ३।२५।५८	०।२९।५५। ८	-१७।२७	२१। ७	०।३९
फर. १	९।१८।२५।४५	१।२०।१७।५७	११। ५। २।२८	९। ५।५१।४५	९। ५। ३।५०	११। ५। ६।१४	७। ३।२९।२५	०।२९।५१।५८	-१७।१०	२४।११	१।४३
२	९।१९।२६।३७	२। ३। ५।१७	११। ५।४७।४२	९। ७।२६।५५	९। ५।१७।४२	११। ६। २। २	७। ३।३२।४५	०।२९।४८।४७	-१६।५३	२६। ७	२।४३
३	९।२०।२७।२९	२।१६।१८। ८	११। ६।३२।५४	९। ९। २।४८	९। ५।३१।३४	११। ६।५७।१३	७। ३।३६। १	०।२९।४५।३६	-१६।३६	२६।४१	३।३७
४	९।२१।२८।२०	२।२९।५६।२३	११। ७।१८। ४	९।१०।३९।२४	९। ५।४५।२४	११। ७।५१।४७	७। ३।३९।११	०।२९।४२।२५	-१६।१८	२५।३९	४।२०
५	९।२२।२९। ८	३।१३।५८।५८	११। ८। ३।१२	९।१२।१६।४५	९। ५।५९।१२	११। ८।४५।४०	७। ३।४२।१५	०।२९।३९।१५	-१६। ०	२३। ०	४।४९
६	९।२३।२९।५६	३।२८।२२।१२	११। ८।४८।१८	९।१३।५४।४८	९। ६।१२।५९	११। ९।३८।५२	७। ३।४५।१४	०।२९।३६। ४	-१५।४२	१८।५४	५। ०
७	९।२४।३०।४३	४।१२।५८।२६	११। ९।३३।२३	९।१५।३३।३९	९। ६।२६।४४	११।१०।३१।२२	७। ३।४८। ७	०।२९।३२।५३	-१५।२३	१३।३६	४।५२
८	९।२५।३१।२८	४।२७।४०।२८	११।१०।१८।२५	९।१७।१३।१५	९। ६।४०।२७	११।११।२३। ७	७। ३।५०।५५	०।२९।२९।४२	-१५। ४	७।२९	४।२५
९	९।२६।३२।१२	५।१२।२१।१४	११।११। ३।२५	९।१८।५३।३९	९। ६।५४। ८	११।१२।१४। ७	७। ३।५३।३७	०।२९।२६।३१	-१४।४५	०।५९	३।४०
१०	९।२७।३२।५५	५।२६।५३।११	११।११।४८।२३	९।२०।३४।५१	९। ७। ७।४८	११।१३। ४।२०	७। ३।५६।१४	०।२९।२३।२१	-१४।२६	-५।३२	२।४१
११	९।२८।३३।३७	६।११।१२।३५	११।१२।३३।२०	९।२२।१६।५२	९। ७।२१।२५	११।१३।५३।४२	७। ३।५८।४४	०।२९।२०।१०	-१४। ६	-११।४१	१।३३
१२	९।२९।३४।१७	६।२५।१७।५१	११।१३।१८।१३	९।२३।५९।४३	९। ७।३५। ०	११।१४।४२।१४	७। ४। १। ९	०।२९।१६।५९	-१३।४७	-१७। ८	०।२०
१३	१०। ०।३४।५६	७। ९। ७।२९	११।१४। ३। ६	९।२५।४३।२५	९। ७।४८।३४	११।१५।२९।५२	७। ४। ३।२८	०।२९।१३।४८	-१३।२७	-२१।३५	०।५३
१४	१०। १।३५।३५	७।२२।४२।५०	११।१४।४७।५६	९।२७।२७।५९	९। ८। २। ५	११।१६।१६।३७	७। ४। ५।४२	०।२९।१०।३८	-१३। ६	-२४।४५	-२। १

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं ३० मि. भा. स्टै. टा.), १ फर. अयनांश=२३°।३८′।३५″, १ मार्च अयनांश=२३°।३८′।४०″											
तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चं. क्रां.	चं. श.
सन् १९८५ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
फर. १५	१०। २।३६।१२	८। ६। ५।४०	११।१५।३२।४४	९।२९।१३।२३	९। ८।१५।३३	११।१७। २।२२	७। ४। ७।४९	०।२९। ७।२७	-१२।४६	-२६।२८	-३। २
१६	१०। ३।३६।४८	८।१९।१६। ५	११।१६।१७।३०	१०। ०।५९।४१	९। ८।२८।५९	११।१७।४७। ८	७। ४। ९।५१	०।२९। ४।१६	-१२।२५	-२६।४०	-३।५२
१७	१०। ४।३७।२३	९। २।१५।२५	११।१७। २।१४	१०। २।४६।५१	९। ८।४२।२३	११।१८।३०।५४	७। ४।११।४६	०।२९। १। ५	-१२। ४	-२५।२२	-४।२९
१८	१०। ५।३७।५६	९।१५। ४।२६	११।१७।४६।५५	१०। ४।३४।५२	९। ८।५५।४४	११।१९।१३।३५	७। ४।१३।३६	०।२८।५७।५४	-११।४३	-२२।४६	-४।५२
१९	१०। ६।३८।२८	९।२७।४२। २	११।१८।३१।३५	१०। ६।२३।४४	९। ९। ९। ३	११।१९।५५। ८	७। ४।१५।२०	०।२८।५४।४४	-११।२२	-१९। ६	-५। ०
२०	१०। ७।३८।५९	१०।१०। ८।३४	११।१९।१६।१३	१०। ८।१३।२८	९। ९।२२।१९	११।२०।३५।३२	७। ४।१६।५७	०।२८।५१।३३	-११। १	-१४।४०	-४।५४
२१	१०। ८।३९।२९	१०।२२।२४।३८	११।२०। ०।४८	१०।१०। ४। ०	९। ९।३५।३२	११।२१।१४।४४	७। ४।१८।२९	०।२८।४८।२२	-१०।३९	-९।४१	-४।३४
२२	१०। ९।३९।५५	११। ४।२९।५२	११।२०।४५।२०	१०।११।५५।१६	९। ९।४८।४२	११।२१।५२।३९	७। ४।१९।५५	०।२८।४५।११	-१०।१७	-४।२५	-४। १
२३	१०।१०।४०।२२	११।१६।२६।१५	११।२१।२९।५०	१०।१३।४७।१९	९।१०। १।४९	११।२२।२९।१७	७। ४।२१।१४	०।२८।४२। ०	-९।५५	०।५७	-३।१९
२४	१०।११।४०।४७	११।२८।१६।४१	११।२२।१५।१९	१०।१५।४०। १	९।१०।१४।५३	११।२३। ४।३४	७। ४।२२।२७	०।२८।३८।५०	-९।३३	६।१६	-२।२८
२५	१०।१२।४१। ८	०।१०। ३।३०	११।२२।५८।४४	१०।१७।३३।१६	९।१०।२७।५३	११।२३।३८।२२	७। ४।२३।३५	०।२८।३५।३९	-९।११	११।२०	-१।३१
२६	१०।१३।४१।२९	०।२१।५१।२४	११।२३।४३। ७	१०।१९।२७। १	९।१०।४०।५०	११।२४।१०।४६	७। ४।२४।३६	०।२८।३२।२८	-८।४९	१६। १	०।२९
२७	१०।१४।४१।४८	१। ३।४५।४५	११।२४।२७।२८	१०।२१।२१। ९	९।१०।५३।४४	११।२४।४१।३७	७। ४।२५।३१	०।२८।२९।१७	-८।२६	२०। ८	०।३४
फर. २८	१०।१५।४२। ३	१।१५।५०।५८	११।२५।११।४५	१०।२३।१५।२५	९।११। ६।३४	११।२५।१०।५०	७। ४।२६।२०	०।२८।२६। ७	-८। ४	२३।२८	१।३७
मार्च १	१०।१६।४२।१८	१।२८।१३। ४	११।२५।५६। १	१०।२५। ९।४६	९।११।१९।२१	११।२५।३८।२७	७। ४।२७। ३	०।२८।२२।५६	-७।४१	२५।४७	२।३६
२	१०।१७।४२।३१	२।१०।५७।५२	११।२६।४०।१४	१०।२७। ३।५५	९।११।३२। ५	११।२६। ४।२१	७। ४।२७।३९	०।२८।१९।४५	-७।१८	२६।५१	३।३०
३	१०।१८।४२।४०	२।२४। ८।३६	११।२७।२४।२३	१०।२८।५७।३५	९।११।४४।४४	११।२६।२८।२७	७। ४।२८।१०	०।२८।१६।३४	-६।५५	२६।२७	४।१४
४	१०।१९।४२।४९	३। ७।४८।५३	११।२८। ८।३१	११। ०।५०।३४	९।११।५७।१९	११।२६।५०।४५	७। ४।२८।३४	०।२८।१३।२३	-६।३२	२४।२९	४।४६
५	१०।२०।४२।५५	३।२१।५७।३२	११।२८।५२।३६	११। २।४२।३०	९।१२। ९।५१	११।२७।११। ६	७। ४।२८।५२	०।२८।१०।१३	-६। ९	२०।५७	५। २
६	१०।२१।४२।५९	४। ६।३१।४९	११।२९।३६।३८	११। ४।३२।५८	९।१२।२२।१८	११।२७।२९।३०	७। ४।२९। ४	०।२८। ७। २	-५।४६	१६। ३	४।५९
७	१०।२२।४३। २	४।२१।२५।५३	०। ०।२०।३८	११। ६।२१।४०	९।१२।३४।४२	११।२७।४५।५५	७। ४।२९।१०	०।२८। ३।५१	-५।२३	१०। ६	४।३६
८	१०।२३।४३। १	५। ६।२९।३७	०। १। ४।३५	११। ८। ८। ६	९।१२।४७। १	११।२८। ०।१२	७। ४।२९।१०	०।२८। ०।४०	-४।५९	३।३०	३।५३
९	१०।२४।४२।५९	५।२१।३३।४५	०। १।४८।२९	११। ९।५१।४६	९।१२।५९।१६	११।२८।१२।२०	७। ४।२९। ४	०।२७।५७।३०	-४।३६	-३।१९	२।५४
१०	१०।२५।४२।५६	६। ६।२९।४६	०। २।३२।२२	११।११।३२।१५	९।१३।११।२७	११।२८।२२।१८	७। ४।२८।५१	०।२७।५४।१९	-४।१२	-९।५५	१।४४
११	१०।२६।४२।५१	६।२१। ९।२०	०। ३।१६।११	११।१३। ८।५८	९।१३।२३।३४	११।२८।२९।५९	७। ४।२८।३३	०।२७।५१। ८	-३।४९	-१५।५१	०।२७
१२	१०।२७।४२।४३	७। ५।२८।४४	०। ३।५९।५८	११।१४।४१।२६	९।१३।३५।३६	११।२८।३५।२४	७। ४।२८। ८	०।२७।४७।५७	-३।२५	-२०।४६	०।४९
१३	१०।२८।४२।३५	७।१९।२६।५२	०। ४।४३।४२	११।१६। ९। ७	९।१३।४७।३३	११।२८।३८।२७	७। ४।२७।३७	०।२७।४४।४६	-३। २	-२४।२३	-२। १
१४	१०।२९।४२।२४	८। ३। २।५९	०। ५।२७।२४	११।१७।३१।३२	९।१३।५९।२६	११।२८।३९। १	७। ४।२७। ०	०।२७।४१।३६	-२।३८	-२६।२८	-३। ४
१५	११। ०।४२।१२	८।१६।१९।२६	०। ६।११। ४	११।१८।४८।१०	९।१४।११।१४	११।२८।३७।१५	७। ४।२६।१८	०।२७।३८।२५	-२।१४	-२६।५९	-३।५५
१६	११। १।४१।५८	८।२९।१९। ६	०। ६।५४।४०	११।१९।५८।३३	९।१४।२२।५७	११।२८।३३। २	७। ४।२५।२९	०।२७।३५।१४	-१।५१	-२५।५८	-४।३३
१७	११। २।४१।४२	९।१२। ३।२४	०। ७।३८।१४	११।२१। २।१८	९।१४।३४।३५	११।२८।२६।१७	७। ४।२४।३४	०।२७।३२। ३	-१।२७	-२३।३८	-४।५७
१८	११। ३।४१।२५	९।२४।३५। ३	०। ८।२१।४६	११।२१।५९। ४	९। ४।४६। ९	११।२८।१७। ६	७। ४।२३।३३	०।२७।२८।५२	-१। ३	-२०।१२	-५। ६
१९	११। ४।४१। ६	१०। ६।५६।२३	०। ९। ५।१५	११।२२।४८।२८	९।१४।५७।३७	११।२८। ५।२३	७। ४।२२।२६	०।२७।२५।४२	०।४०	-१५।५६	-५। ०
२०	११। ५।४०।४५	१०।१९। ७।५२	०। ९।४८।४२	११।२३।३०।१६	९।१५। ८। ०	११।२७।५१।१२	७। ४।२१।१४	०।२७।२२।३१	०।१६	-११। ५	-४।४१
२१	११। ६।४०।२३	११। १।११।१८	०।१०।३२। ६	११।२४। ४।१६	९।१५।२०।१७	११।२७।३४।३७	७। ४।१९।५५	०।२७।१९।२०	०। ८	-५।५१	-४। ९
२२	११। ७।३९।५८	११।१३। ८।२५	०।११।१५।२७	११।२४।३०।२१	९।१५।३१।२९	११।२७।१५।३९	७। ४।१८।३१	०।२७।१६। ९	०।३२	०।२८	-३।२७

निरयण यूरेनस-नेपच्यून (५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (वि. सं. २०४१ वि.)

ग्रह= तारीख १९८४ ई.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	तारीख १९८४	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	वेंकटेश (प्लूटो) तारीख १९८४	रा. अं. क.
२ अप्रै.	७।११।५१	८।७।४९	५ अक्तु.	७।१६।५१	८।५।१२	१ अप्रै ८४	६।७।३९
८	७।११।४५	८।७।४८	११	७।१७।७	८।५।१८	१ मई	६।६।४९
१४	७।११।३९	८।७।४६	१७	७।१७।२४	८।५।२५	१ जून	६।६।५
२०	७।११।२८	८।७।४२	२३	७।१७।४२	८।५।३३	१ जुला.	६।५।४२
२६	७।११।१६	८।७।३८	२९	७।१८।०	८।५।४२	१ अग.	६।५।५०
२ मई	७।११।५	८।७।३४	४ नवं.	७।१८।१८	८।५।५१	१ सितं.	६।६।३०
८	७।१८।५५	८।७।३०	१०	७।१८।३८	८।६।००	१ अक्तु.	६।७।२९
१४	७।१८।४५	८।७।२७	१६	७।१९।००	८।६।१०	१ नवं.	६।८।४३
२०	७।१८।३३	८।७।२३	२२	७।१९।२३	८।६।२२	१ दिसं.	६।९।५३
२६	७।१८।२०	८।७।१७	२८	७।१९।४६	८।६।३४	१ जन. ८५	६।१०।४२
१ जून	७।१८।५	८।७।९	४ दिसं.	७।२०।७	८।६।४९	१ फर.	६।११।६
७	७।१७।५०	८।७।५८	१०	७।२०।२७	८।७।४	१ मार्च	६।१०।५७
१३	७।१७।३६	८।७।४५	१६	७।२०।४६	८।७।१८	१ अप्रै.	६।१०।००
१९	७।१७।२१	८।६।३३	२२	७।२१।६	८।७।३२	१ मई.	६।९।३०
२५	७।१७।६	८।६।२१	२८	७।२१।२७	८।७।४६		
१ जुला.	७।१६।५०	८।६।११	३ जन. ८५	७।२१।४८	८।७।५९		
७	७।१६।३६	८।६।००	९	७।२२।७	८।८।११		
१३	७।१६।२३	८।५।५०	१५	७।२२।२६	८।८।२२		
१९	७।१६।१२	८।५।४१	२१	७।२२।४४	८।८।२४		
२५	७।१६।४	८।५।३३	२७	७।२३।२	८।८।४६		
३१	७।१५।५८	८।५।२६	२ फर.	७।२३।१८	८।८।५७		
६ अग.	७।१५।५५	८।५।२०	८	७।२३।३२	८।९।७		
१२	७।१५।५४	८।५।१५	१४	७।२३।४४	८।९।१६		
१८	७।१५।५४	८।५।११	२०	७।२४।५४	८।९।२५		
२४	७।१५।५६	८।५।८	२६	७।२४।२	८।९।३३		
३०	७।१६।०	८।५।५	४ मार्च	७।२४।८	८।९।४१		
५ सितं	७।१६।५	८।५।२	१०	७।२४।१४	८।९।४७		
११	७।१६।११	८।५।१	१६	७।२४।२०	८।९।५२		
१७	७।१६।१९	८।५।१	२२	७।२४।२४	८।९।५७		
२३	७।१६।२९	८।५।४	२८	७।२४।२२	८।९।५९		
२९	७।१६।३९	८।५।७	३ अप्रै.	७।२४।१८	८।९।५९		

ग्रहों के उदयास्त (वि. सं. २०४१)

ग्रह	दिशा	तारीख
बुध	प. अ.	१३ अप्रै. ८४
,,	पू. उ.	३० अप्रै. ८४
,,	पू.अ.	११ जू. ८४
,,	प. उ.	४ जुला. ८४
,,	प. अ.	२१ अग. ८४
,,	पू. उ.	६ सितं. ८४
,,	प. अ.	२४ सितं. ,,
,,	प. उ.	३१ अक्तु. ,,
,,	प. अ.	८ दिसं. ८४
,,	पू. उ.	२० दिसं. ,,
,,	पू. अ.	३१ जन. ८५
,,	प. उ.	६ मार्च ८५
गुरु	प. अ.	५ जन. ८५
,,	पू. उ.	१ फर. ,,
शुक्र	पू. अ.	१३ मई ८४
,,	प. उ.	२२ जुला. ८४
श.	प.अ.	२५ अक्तू. ८४
,,	पू. उ.	२८ नवं. ८४

ग्रहों के वक्र-मार्ग (वि. सं. २०४१)

ग्रह	व.मार्ग	तारीख
मंगल	वक्री	५ अप्रै. १९८४
,,	मार्गी	१९ जून ८४
बुध	वक्री	११ अप्रै. ८४
,,	मार्गी	५ मई ८४
,,	वक्री	१४ अग. ८४
,,	मार्गी	७ सितं. ८४
,,	वक्री	४ दिसं. ८४
,,	मार्गी	२४ दिसं. ८४
गुरू	वक्री	२९ अप्रै. ८४
,,	मार्गी	२९ अग. ८४
शुक्र	वक्री	१४ मार्च ८५
शनि	मार्गी	१३ जुला. ८४
,,	वक्री	७ मार्च ८५
यूरेनस	मार्गी	१७ अग. ८४
नेप.	मार्गी	१० सितं. ,,
वें. (प्लूटो)	मार्गी	१० जुला. ८४
,,	वक्री	६ फर. ८५

ग्रहों की समकल युतियों की तारीखें (वि. सं. २०४१)

युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख
सू. बु.	२२-०-१९८४	मं. के.	२२-८-१९८४	गु. श.	२५-११-१९८४
,,	२३-६-१९८४	मं. यू.	०-९-१९८४	शु. श.	८-१०-१९८४
,,	२८-८-१९८४	मं. नेप.	३-१०-१९८४	शु. रा.	३१-५-१९८४
,,	११-१०-१९८४	बु. गु.	३१-१-१९८५	शु. के.	१९-१०-१९८४
,,	१४-१२-१९८४	बु. शु.	३०-४-१९८४	शु. यू.	३०-१०-१९८४
,,	१९-२-१९८५	बु. शु.	२५-६-१९८४	शु. ने.	१३-११-१९८४
सू. गु.	१५-१-१९८५	बु. शु.	१८-८-१९८४	शु. वें.	२६-९-१९८४
सू. श.	११-११-१९८४	बु. श.	२९-१०-१९८४	श. के.	४-१-१९८५
सू. के.	१८-११-१९८४	बु. शु.	११-६-१९८४		
सू. रा.	२८-५-१९८४	बु. के.	५-११-१९८४		
[illegible]	५-१२-१९८४	बु. वें.	१९-१०-१९८४		
बु. वें.	२५-१०-१९८४	बु. यू.	१५-११-१९८४		
[illegible]	[illegible]	बु. ने.	[illegible]		

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.) वि. सं. २०४१

ग्रह	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
तारीख १९८४ ई.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.
अप्रै. ४	-१८।३६	१।१३	१५।११	२।४४	-२२।४१	०।१३	-३।१४	-१।२८	-१३।५४	२।३५
१०	-१८।४३	१। ४	१६।३९	३। ८	-२२।४०	०।१३	०।१९	-१।३१	-१३।४७	२।३६
१६	-१८।४५	०।५४	१६। ३	२।४४	-२२।३८	०।१२	२।३६	-१।३१	-१३।४०	२।३६
२२	-१८।४३	०।४२	१३।४३	१।३१	-२२।३८	०।१२	५।३०	-१।२८	-१३।३२	२।३७
२८	-१८।३५	०।२८	१०।४७	०।१०	-२२।३८	०।११	८।२०	-१।२३	-१३।२४	२।३७
मई ४	-१८।२४	०।१३	८।३६	-१।४२	-२२।३८	०।११	११। ३	-१।१६	-१३।१६	२।३७
१०	-१८। ८	०। ४	७।५०	-२।४७	-२२।४०	०।१०	१३।३७	-१। ७	-१३। ८	२।३६
१६	-१७।४९	०।२१	८।२९	-३।१९	-२२।४२	०। ९	१६। ०	-०।५७	-१३। ०	२।३६
२२	-१७।३०	०।३८	१०।१८	-३।२२	-२२।४४	०। ९	१८। ८	-०।४५	-१२।५३	२।३५
२८	-१७।१३	-०।५४	१२।५६	-२।५९	-२२।४७	०। ८	१९।५९	-०।३२	-१२।४७	२।३५
जून ३	-१७। ०	-१। ९	१६। ५	-२।१७	-२२।५१	०। ७	२१।३१	-०।१८	-१२।४१	२।३४
९	-१६।५२	-१।२३	१९।२३	-१।१८	-२२।५५	०। ७	२२।४१	-०। ४	-१२।३६	२।३२
१५	-१६।५२	-१।३४	२२।१९	०।१२	-२२।५९	०। ६	२३।२८	०।१०	-१२।३२	२।३१
२१	-१६।५९	-१।४४	२४।१५	०।५०	-२३। २	०। ५	२३।५०	०।२४	-१२।२९	२।३०
२७	-१७।१३	-१।५३	२४।३६	१।३४	-२३। ६	०। ४	२३।४७	०।३८	-१२।२७	२।२८
जुला. ३	-१७।३५	-२। ०	२३।२२	१।५२	-२३।१०	०। ३	२३।१९	०।५०	-१२।२६	२।२७
९	-१८। ३	-२। ६	२०।५७	१।४५	-२३।१३	०। २	२२।२६	१। १	-१२।२६	२।२५
१५	-१८।३६	-२।११	१७।४८	१।१७	-२३।१६	०। २	२१। ९	१।११	-१२।२७	२।२४
२१	-१९।१३	-२।१४	१४।१८	०।३२	-२३।१९	०। १	१९।३०	१।१८	-१२।३०	२।२२
२७	-१९।५३	-२।१७	१०।४५	-०।२६	-२३।२१	०। ०	१७।३२	१।२४	-१२।३३	२।२०
अग. २	-२०।३५	-२।१९	७।२८	-१।३३	-२३।२३	-०। १	१५।१६	१।२७	-१२।३८	२।१९
८	-२१।१८	-२।२१	४।४७	-२।४४	-२३।२५	०। २	१२।४६	१।२८	-१२।४३	२।१७
१४	-२२। ०	-२।२१	३। ०	-३।५०	-२३।२६	०। २	१०। ३	१।२७	-१२।५०	२।१६
२०	-२२।४२	-२।२२	२।४७	-४।३४	-२३।२७	०। ३	७।११	१।२३	-१२।५७	२।१४
२६	-२३।२१	-२।२१	४।२७	-४।३०	-२३।२८	०। ४	४।१२	१।१७	-१३। ५	२।१३
सितं. १	-२३।५९	-२।२१	७।२७	-३।२०	-२३।२९	०। ५	१। ९	१। ८	-१३।१४	२।१२
७	-२४।२८	-२।१९	१०। ३	-१।३०	-२३।२९	०। ५	-१।५७	०।५८	-१३।२४	२।१०
१३	-२४।५४	-२।१८	१०।४७	०।१४	-२३।३०	०। ६	-५। १	०।४५	-१३।३५	२। ९
१९	-२५।१५	-२।१६	९।१३	१।२३	-२३।३०	०। ६	-८। २	०।३१	-१३।४५	२। ८
२५	-२५।२८	-२।१३	५। ५०	१।५१	-२३।३०	०। ७	-१०।५७	०।१५	-१३।५७	२। ७
अक्तू. १	-२५।३५	-२।१०	१।३०	१।४७	-२३।२९	०। ८	-१३।४४	०। २	-१४। ८	२। ६
७	-२५।३३	-२। ७	-३। ७	१।२३	-२३।२८	०। ८	-१६।१९	०।२०	-१४।२०	२। ५
१३	-२५।२४	-२। ४	-७।३७	०।४९	-२३।२७	०। ९	-१८।४०	०।३८	-१४।३२	२। ५
१९	-२५। ५	-२। ०	-११।५०	०। ९	-२३।२५	०। ९	-२०।४४	०।५५	-१४।४५	२। ४
२५	-२४।३८	-१।५६	-१५।३८	-०।३१	-२३।२३	०।१०	-२२।२८	-१।१२	-१४।५७	२। ३
३१	-२४। २	-१।५२	-१८।५७	-१।११	-२३।२०	०।१०	-२३।५०	-१।२९	-१५। ९	२। ३
नवं. ६	-२३।१७	-१।४७	-२१।४३	-१।४५	-२३।१६	०।११	-२४।४८	-१।४३	-१५।२१	२। ३
१२	-२२।२४	-१।४२	-२३।५०	-२।१३	-२३।११	०।११	-२५।२१	-१।५६	-१५।३३	२। २
१८	-२१।२२	-१।३७	-२५।१३	-२।३०	-२३। ६	०।१२	-२५।२७	-२। ६	-१५।४५	२। २

ग्रह	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
तारीख ८४-८५	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.
नवं. २४	-२०।१३	-१।३२	-२५।४७	-२।३०	-२३। ०	०।१२	-२५। ७	-२।१४	-१५।५६	२। २
३०	-१८।५७	-१।२७	-२५।२९	-२। ३	-२२।५३	०।१२	-२४।२१	-२।१८	-१६। ७	२। २
दिसं. ६	-१७।३३	-१।२२	-२४।२०	-०।५३	-२२।४४	०।१३	-२३।१०	-२।१९	-१६।१८	२। ३
१२	-१६। ४	-१।१६	-२२।२४	०।५९	-२२।३५	०।१३	-२१।३६	-२।१६	-१६।२७	२। ३
१८	-१४।२९	-१।११	-२०।१९	२।३७	-२२।२६	०।१४	-१९।४२	-२। ९	-१६।३७	२। ३
२४	-१२।५०	-१। ५	-१९।३५	२।५९	-२२।१५	०।१४	-१७।३१	-१।५७	-१६।४६	२। ४
३०	-११। ७	०।५९	-२०।१८	२।२८	-२२। ३	०।१५	-१५। ४	-१।४१	-१६।५४	२। ४
जन. ५	-९।२०	०।५४	-२१।३४	१।३७	-२१।५०	०।१५	-१२।२६	-१।२०	-१७। १	२। ५
११	-७।३१	०।४८	-२२।४२	०।४४	-२१।३६	०।१६	-९।३९	-०।५५	-१७। ८	२।६
१७	-५।४०	०।४३	-२३।२०	०। ५	-२१।२२	०।१७	-६।४६	०।२५	-१७।१४	२। ७
२३	-३।४८	०।३७	-२३।१९	-०।४९	-२१। ७	०।१७	-३।४९	०।१०	-१७।१९	२। ८
२९	-१।५५	०।३२	-२२।३२	-१।२४	-२०।५१	०।१८	०।५३	०।४९	-१७।२४	२। ९
फर. ४	०। २	०।२७	-२०।५८	-१।५०	-२०।३५	०।१८	२। १	१।३३	-१७।२७	२।१०
१०	१।५०	०।२२	-१८।३२	-२। ४	-२०।१८	०।१९	४।४९	२।२०	-१७।३०	२।११
१६	३।४१	०।१७	-१५।१५	-२। ४	-२०। ०	०।२०	७।२८	३।१२	-१७।३२	२।१२
२२	५।३०	०।१२	-११। ८	-१।४७	-१९।४३	०।२०	९।५४	४। ६	-१७।३३	२।१३
२८	७।१७	०। ७	-६।१५	-१।१०	-१९।२५	०।२१	१२। ३	५। ३	-१७।३३	२।१४
मार्च ६	९। ०	०। २	०।५४	०।१२	-१९। ७	०।२२	१३।४८	६। ०	-१७।३३	२।१५
१२	१०।४०	०। २	४।१७	१। ४	-१८।५०	०।२३	१५। २	६।५३	-१७।३२	२।१६
१८	१२।१७	०। ७	८।१९	२।२०	-१८।३२	०।२४	१५।३६	७।३७	-१७।३०	२।१७

यूरेनस नेपच्यून प्लूटो के क्रान्ति--शर (वि. सं. २०४१ वि.)

तारीख	यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.
५ अप्रै. (१९८४)	-२२।२३	+०।१३	-२२।१४	+१।११	+४।२९	+१७।१६
५ मई	२२।१७	०।१२	२२।१४	१।१३	४।४५	१७।२५
५ जून	२२। ७	०।१२	२२।१३	१।१३	४।५०	१७।१६
५ जुलाई	२१।५८	०।१२	२२।१४	१।१३	४।४२	१७।०
५ अगस्त	२१।५२	०।११	२२।१४	१।१२	४।२१	१६।४२
५ सितम्बर	२१।५३	०।११	२२।१६	१।११	३।५३	१६।२७
५ अक्तूबर	२२। १	०।११	२२।१७	१। ९	३।२३	१६।१७
५ नवम्बर	२२।१३	०।१०	२२।१९	१। ८	२।५७	१६।१५
५ दिसम्बर	२२।२७	+०।१०	२२।१९	१। ७	२।४२	१६।२२
५ जन. (१९८५)	२२।४०	-०।१०	२२।१९	१। ७	२।३९	१६।३५
५ फर.	२२।४९	०।१०	२२।१८	१। ७	२।४८	१६।५१
५ मार्च	-२२।५४	-०।११	-२२।१५	+१। ८	३। ६	+१७। ६

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. २०४१ वि.)

(भा.स्टै.टा.)

ता. १९८४	ति. चै.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. वै.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.	ता. १९८४	ति. वै.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. ज्ये.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.	ता. १९८४	ति. ज्ये.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. आ.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.	ता. १९८४	ति. आ.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. आ.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
अप्रैल २	१	१९।३१	अप्रै. १६	१	१९।३९	मई २	१	२०।१२	मई १६	१	२०।१३	मई ३१	१	२०।११	जून १४	१	२०।२६	जून ३०	१	२०।५७	जु. १४	१	२०।४६
३	२	२०।२७	१७	२	२०।४५	३	२	२१।१९	१७	२	२१।१४	जून १	२	२१।१२	१५	२	२१।२०	जुला. १	३	२१।४६	१५	२	२१।२२
४	३	२१।२८	१८	३	२१।५२	४	३	२२।२०	१८	३	२२।१३	२	३	२२।११	१६	३	२२।८	२	४	२२।२९	१६	३	२१।५५
५	४	२२।२८	१९	४	२२।५९	५	४	२३।२०	१९	४	२३।२९	३	४	२३।३	१७	४	२२।४०	३	५	२३।८	१७	४	२२।२५
६	५	२३।२५	२०	५	२३।५६	६	५	—	२०	५	—	४	५	२३।५०	१८	५	२३।२४	४	६	२३।४३	१८	५	२२।५२
७	६	—	२१	६	—	७	६	०।१६	२१	६	०।१३	५	६	—	१९	६	२३।५५	५	७	—	१९	६	२३।१९
८	७	०।२५	२२	७	०।५१	८	७	१।६	२२	७	०।५१	६	७	०।३१	२०	७	—	६	८	०।१६	२०	७	२३।४५
९	८	१।२८	२३	८	१।३७	९	९	१।४९	२३	८	१।२५	७	८	१।७	२१	८	०।२३	७	९	०।४९	२१	८	—
१०	९	२।१९	२४	९	२।१८	१०	१०	२।३०	२४	९	१।५५	८	९	१।४०	२२	८	०।५१	८	१०	१।२३	२२	९	०।१४
११	१०	३।७	२५	१०	२।५३	११	११	३।६	२५	१०	२।२२	९	११	२।१४	२३	९	१।१८	९	११	२।१	२३	१०	०।४६
१२	११	३।५०	२६	११	३।२५	१२	१२	३।३९	२६	११	२।५०	१०	१२	२।४७	२४	१०	१।४६	१०	१२	२।४२	२४	११	१।२३
१३	१२	४।३०	२७	१२	३।५४	१३	१३	४।१४	२७	१२	३।१८	११	१३	३।२३	२५	११	२।१६	११	१३	३।२९	२५	१२	२।७
१४	१३	५।७	२८	१३	४।२२	१४	१४	४।४६	२८	१३	३।४७	१२	१४	४।२	२६	१२	२।५१	१२	१४	४।२३	२६	१३	२।५६
१५	१५	५।४३	२९	१३	४।४८	१५	१५	५।२७	२९	१४	४।२९	१३	१५	४।४७	२७	१३	३।३०	१३	१५	५।१९	२७	१४	३।५६
			३०	१४	५।१६				३०	३०	४।५५				२८	१४	४।१८				२८	३०	५।२
			मई १	३०	५।४६										२९	३०	५।२१						

ता. १९८४	ति. श्रा.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. भा.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.	ता. १९८४	ति. भा.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. आ.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.	ता. १९८४	ति. आ.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. का.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.	ता. १९८४	ति. का.शु.	चन्द्रास्त घ. मि.	ता. १९८४	ति. मार्ग.कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
जुला. २९	१	२०।२८	अग. १२	१	१९।५५	अग. २७	२	१९।३७	सि. ११	१	१९।१३	सि. २६	२	१९।२६	अ. १०	१	१८।२०	अ. २५	१	१८।२५	नवं. ९	१	१७।५४
३०	२	२१।५	१३	२	२०।२५	२८	३	२०।१४	१२	२	१९।५०	२७	३	१९।५३	११	१	१८।४९	२६	२	१९।६	१०	२	१८।२२
३१	३	२१।४२	१४	३	२०।५३	२९	४	२०।४९	१३	३	२०।१७	२८	४	२०।३६	१२	२	१९।१९	२७	३	१९।५५	११	३	१९।१६
अग. १	५	२२।१९	१५	४	२१।२०	३०	५	२१।२३	१४	४	२०।४५	२९	५	२१।१७	१३	३	१९।५४	२८	४	२०।४८	१२	४	२०।८
२	६	२२।५०	१६	४	२१।४९	३१	६	२२।१०	१५	५	२१।१७	३०	६	२२।६	१४	४	२०।३३	२९	६	२१।४५	१३	५	२१।५
३	७	[illegible]	१७	५	२२।१९	सित. १	७	२२।३९	१६	६	२१।५४	अक्तू. १	७	२३।०	१५	५	२१।२७	३०	७	२२।४५	१४	६	२२।८
४	८	—	१८	६	२२।५४	२	८	२३।२८	१७	७	२२।३५	२	८	२३।५७	१६	६	२२।१२	३१	८	२३।४५	१५	७	२३।१३
५	९	०।१	१९	७	२३।१८	३	९	—	१८	८	२३।२८	३	९	—	१७	७	२३।१२	नव. १	८	—	१६	८	—
६	१०	०।४१	२०	८	२३।५९	४	१०	०।१८	१९	९	—	४	१०	०।५४	१८	८	—	२	९	०।४३	१७	९	०।२०
७	११	१।२८	२१	९	—	५	११	१।७	२०	१०	०।२२	५	११	१।५३	१९	९	०।१६	३	१०	१।३८	१८	१०	१।२६
८	१२	२।२८	२२	१०	०।४३	६	१२	२।४	२१	११	१।२५	६	१२	२।५०	२०	१०	१।२४	४	११	२।३२	१९	११	२।३४
९	१३	३।१२	२३	११	१।३८	७	१२	३।०	२२	१२	२।३४	७	१३	३।४६	२१	११	२।३४	५	१२	३।२५	२०	१२	३।४०
१०	१४	४।१०	२४	१२	२।३९	८	१३	३।५९	२३	१३	३।४६	८	१४	४।४१	२२	१३	३।४२	६	१३	४।१८	२१	१३	४।४८
११	१५	५।८	२५	१३	३।४८	९	१४	४।५८	२४	१४	४।५७	९	१५	५।३३	२३	१४	४।५२	७	१४	५।१२	२२	१४	५।५८
			२६	३०	४।५९	१०	१५	५।५०	२५	३०	६।८				२४	३०	६।१	८	१५	६।८			

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. २०४१ वि.)

(भा. स्टैं. टा.)

ता. १९८४	ति. मार्ग. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८४	ति. पौष कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८४-८५	ति. पौष शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. माघ कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. माघ शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. फाल्गु. कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. फाल्गु. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. चैत्र कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.
नव.२३	१	१७।४१	दिसं.९	१	१८।१३	दि.२३	१	१८।१२	जन. ८	२	१८।५५	जन.२२	१	१९।२	फर. ६	१	१८।५४	फर.२०	१	१८।४७	मार्च ८	२	१९।५९
२४	२	१८।३३	१०	२	१८।५९	२४	२	१९।१४	९	३	२०।१३	२३	२	२०।१०	७	२	२०।१२	२१	२	१९।४२	९	३	२१।८
२५	३	१९।२९	११	३	२०।१	२५	३	२०।१५	१०	४	२१।१९	२४	३	२०।५७	८	३	२१।१८	२२	३	२०।३५	१०	४	२२।१८
२६	४	२०।३०	१२	४	२१।७	२६	४	२१।१५	११	५	२२।१७	२५	४	२१।५२	९	४	२२।१८	२३	४	२१।२९	११	५	२३।२८
२७	५	२१।३१	१३	५	२२।१३	२७	५	२२।१३	१२	६	२३।२२	२६	५	२२।४५	१०	६	२३।२४	२४	४	२२।२२	१२	६	—
२८	६	२२।३१	१४	६	२३।१८	२८	६	२३।१७	१३	७	—	२७	६	२३।३८	११	७	—	२५	५	२३।१७	१३	७	०।३७
२९	७	२३।२९	१५	७	—	२९	७	—	१४	८	०।२६	२८	७	—	१२	८	०।३१	२६	६	—	१४	८	१।४२
३०	८	—	१६	८	०।२४	३०	८	०।१	१५	९	१।३२	२९	८	०।३२	१३	९	१।३८	२७	७	०।१३	१५	९	२।५२
दिस.१	९	०।२४	१७	१०	१।२८	३१	९	०।५४	१६	१०	२।३८	३०	९	१।२७	१४	१०	२।४४	२८	८	१।११	१६	१०	३।३५
२	१०	१।१८	१८	११	२।३४	जन. १	१०	१।४७	१७	११	२।४४	३१	१०	२।२५	१५	११	३।४७	मार्च १	९	२।१०	१७	११	४।२१
३	१०	२।१२	१९	१२	३।४१	२	११	२।४२	१८	१२	४।५१	फर. १	११	३।२४	१६	१२	४।४५	२	१०	३।९	१८	१२	५।०
४	११	३।४	२०	१३	४।४९	३	१२	३।४०	१९	१३	५।५४	२	१२	४।२४	१७	१३	५।३६	३	११	४।५	१९	१३	५।३४
५	१२	३।५९	२१	१४	५।५८	४	१३	४।३९	२०	१४	६।५१	३	१३	५।२३	१८	१४	६।२०	४	१२	४।५६	२०	१४	६।४
६	१३	४।५५	२२	३०	७।६	५	१३	५।४०	२१	३०	७।४२	४	१४	६।१८	१९	३०	६।५९	५	१३	५।४२	२१	३०	६।३१
७	१४	५।५३				६	१४	६।४१				५	१५	७।८				६	१४	६।२४			
८	१५	६।५३				७	१५	७।३९										७	१५	७।३			

(+ उत्तर) **अक्षांश भेद से समस्त भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें व उन्नत शृंग (सं. २०४१ वि.)** (— दक्षिण)

मास→	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८५ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८५ ई०)	शृंगोन्नति अंश
	अप्रैल		मई		जून		जून		जुलाई		अगस्त		सितम्बर		अक्तूबर		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी		फरवरी	
५°	६ ३	—१२	,, २	— ९	,, १	— ९	,, ३०	— ४	,, २९	०	,, २८	+१६	,, २६	+२०	,, २५	+२०	,, २४	+२३	,, २३	+२२	,, २२	+१०	,, २१	— ३
१५°	,, ३	— १	,, २	+ १	,, १	+ २	,, ३०	+ ६	,, २९	+१०	,, २८	+२७	,, २६	+३०	,, २६	+३७	,, २४	+३३	,, २४	+२६	,, २२	+२१	,, २१	+ ८
२५°	,, ३	+१०	,, २	+११	,, १	+१३	,, ३०	+१७	,, २९	+२०	,, २८	+३७	,, २६	+४०	,, २६	+४८	,, २४	+४४	,, २४	+३७	,, २२	+३१	,, २१	+१८
३५°	,, ३	+२१	,, २	+२१	,, १	+२३	,, ३०	+२७	,, २९	+३०	,, २८	+४८	,, २६	+५०	,, २६	+५८	,, २४	+५४	,, २४	+४७	,, २२	+४१	,, २१	+२८

नोट—यहां दिए गए चन्द्रशृंगोन्नति के अंश लगभग है।

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र-चरण-चार एवं वक्र मार्ग (सं. २०४१ वि.)

सूर्यचार								मंगलचार				बुधचार					
तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८५ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मार्च ३१	रेवती १	जुला. ९	पुन २	अक्तू. १६	चि३ तुला	जन. २०	उ.षा. ४	जुला. २८	विशा. ३	दिस. २१	धनि ४	मई १	अश्वि २	जुला. ८	पुष्य ३	अक्तू. ४	हस्त २
अप्रैल ३	२	१२	३	२०	४	२३	श्रव. १	अग. ५	४ वृश्चिक	२५	शत. १	१६	३	१०	४	६	३
६	३	१६	४ कर्क	२३	स्वा. १	२७	२	१२	अनु. १	३०	२	२०	४	१२	आश्ले. १	८	३
१०	४	१९	पुष्य १	२७	२	३०	३	१८	२	जन. ३ १९८५	३	२३	भर. १	१४	२	८	४
१३	अ.१ मेष	२३	२	३०	३	फर. २	४	२३	३	८	४	२५	२	१६	३	१०	चित्रा १
१७	२	२६	३	नव. २	४	६	धनि. १	३०	४	१२	पू.भा. १	२८	३	१९	४	१२	२
२०	३	३०	४	६	विशा. १	९	२	सित. ५	ज्ये. १	१६	२	३०	४	२१	म. १ सिंह	१४	३ तुला
२३	४	अग. २	आश्ले. १	९	२	१२	३ कुम्भ	१०	२	२१	३	जून २	कृत्ति. १	२४	२	१६	४
२७	भरणी १	६	२	१२	३	१५	४	१५	३	२५	४ मीन	४	२ वृष	२६	३	१८	स्वा. १
३०	२	९	३	१५	४ वृश्चिक	१९	शत. १	२१	४	३०	उ.भा. १	६	३	२९	४	२०	२
मई ३	३	१३	४	१९	अनु. १	२२	२	२६	मूल १ धनु	फर. ३	२	८	४	अग. २	पू.फा. १	२२	३
७	४	१६	म. १ सिंह	२२	२	२५	३	अक्तू. १	२	७	३	९	रोहि. १	६	२	२४	४
११	कृत्ति १	२०	२	२५	३	मार्च १	४	५	३	१२	४	११	२	१४	वक्री	२६	विशा. १
१४	२ वृष	२३	३	२९	४	४	पू.भा. १	१०	४	१६	रेव. १	१३	३	२३	पू.फा. १	२९	२
१८	३	२६	४	दिस. २	ज्ये. १	७	२	१५	पू.षा. १	२१	२	१४	४	२७	मघा ४	३१	३
२१	४	३०	पू.फा. १	५	२	११	३	२०	२	२५	३	१६	मृग. १	३०	३	नव. २४	वृश्चिक
२४	रो १	सित. २	२	८	३	१४	४ मीन	२४	३	मार्च २	४	१८	२	सित. ५	२	४	अनु. १
२८	२	६	३	१२	४	१७	उ.भा. १	२९	४	६	अ.१ मेष	१९	३ मिथुन	७	मार्गी	६	२
३१	३	९	४	१५	मूल १ धनु	२१	२	नव. २	उ.षा. १	११	२	२१	४	९	३	९	३
जून ४	४	१३	उ.फा. १	१८	२	**मंगलचार**		७	२ मकर	१५	३	२२	आर्द्रा १	१४	४	११	४
७	मृग १	१६	२ कन्या	२२	३	अप्रै ५	वक्री	११	३	२०	४	२४	२	१७	पू.फा. १	१३	ज्ये. १
११	२	२०	३	२५	४	२०	विशा ४	१६	४	**बुधचार**		२५	३	१९	२	१६	२
१४	३ मिथुन	२३	४	२८	पू. षा. १	मई ३	३ तुला	२०	श्रव. १	अप्रै १	अश्वि ३	२७	४	२१	३	१८	३
१८	४	२६	हस्त १	जन. १ १९८५	२	१२	२	२५	२	४	४	२८	पुन. १	२३	४	२१	४
२१	आर्द्रा १	३०	२	४	३	२२	१	२९	३	११	वक्री	३०	२	२५	उ.फा. १	२४	मूल १ धनु
२५	२	अक्तू. ३	३	७	४	जून २	स्वा. ४	दिस. ४	४	२०	अश्वि ३	जुला ३	३	२७	२ कन्या	२७	२
२८	३	६	४	१०	उ.षा. १	१९	मार्गी	८	धनि. १	२५	२	[illegible]	४ कर्क	२९	३	दिस. २	३
जुला २	४	१०	चित्रा १	१३	२ मकर	जुला. ७	विशा १	१२	२	मई १	१	५	पुष्य १	अक्तू. १	४	४	वक्री
५	पुन १	१३	२	१७	३	१९	२	१७	३ कुम्भ	५	मार्गी	७	२	३	हस्त १	७	मूल ३

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरण-चार एवं वक्र मार्ग (सं. २०४१ वि.)

बुधचार

तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८५ ई.	नक्षत्र चरण राशि
दिस ११	मूल १	फर. २४	शत. ३
१३	ज्ये. ४ वृश्चि.	२५	४
१६	३	२६	पू.भा. १
१९	२	२८	२
२४	मार्गी	मार्च १	३
३०	ज्ये. ३	३	४ मीन
जन. ३	४	५	उ.भा. १
(१९८५) ६	मू. १ धनु.	७	२
९	२	९	३
१२	३	११	४
१४	४	१३	रेव. १
१७	पू.षा. १	१६	२
१९	२	२०	३
२१	३		
२३	४		
२६	उ.षा. १		
२८	२ मकर		
३०	३		
फर १	४		
३	श्रव. १		
५	२		
७	३		
९	४		
११	धनि. १		
१३	२		
१५	३ कुम्भ		
१७	४		
१९	शत. १		
२१	२		

गुरुचार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. २९	वक्री
जून ११	पू.षा. १
जुला. ८	मूल. ४
अग. १२	३
३०	मार्गी
सित. १७	मूल ४
अक्तू. २१	पू.षा. १
नव. ९	२
२६	३
दिस. १२	४
२७	उ.षा. १
जन ८५,११	२ मकर
जन २४	३
फर. ८	४
२३	श्रव. १
मार्च १०	श्रव. २

शुक्रचार

तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८५ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मार्च ३१	पू.भा. ३	जून १२	मृग २	अग. ३०	उ.फा. ३	नव. १७	मूल ४	फर. १४	रेव. १
अप्रै. २	४ मीन	१५	३ मिथुन	सित. १	४	२०	पू.षा. १	१९	२
अप्रै. ५	उ.भा. १	१७	४	४	हस्त १	२२	२	२४	३
८	२	२०	आर्द्रा १	७	२	२५	३	मार्च ३	४
१०	३	२३	२	९	३	२८	४	१३	वक्री
१३	४	२५	३	१२	४	दिस. १	उ.षा. १		
१६	रेव. १	२८	४	१५	चित्रा १	३	२ मकर		
१९	२	जुला. १	पुन १	१८	२	६	३		
२२	३	४	२	२०	३ तुला	९	उ.षा. ४		
२४	४	६	३	२३	४	१२	श्रव. १		
२७	अ. १ मेष	९	४ कर्क	२६	स्वा. १	१५	२		
२९	२	१२	पुष्य १	२८	२	१८	३		
मई २	३	१४	२	अक्तू. १	३	२१	४		
५	४	१७	३	४	४	२३	धनि. १		
८	भर. १	२०	४	७	विशा. १	२६	२		
१०	२	२३	आश्ले १	९	२	२९	३ कुम्भ		
१३	३	२६	२	१२	३	जन ८५, १	४		
१६	४	२९	३	१५	४ वृश्चिक	४	शत. १		
१८	कृत्ति. १	३१	४	१८	अनु. १	७	२		
२१	२ वृष	अग. २	म. १ सिंह	२०	२	१०	३		
२४	३	५	२	२३	३	१३	४		
२७	४	८	३	२६	४	१७	पू.भा. १		
२९	रो. १	११	४	२८	ज्ये. १	२०	२		
जून १	२	१४	पू.फा. १	३१	२	२३	३		
४	३	१६	२	नव. ३	३	२६	४ मीन		
७	४	१९	३	६	४	३०	उ.भा. १		
९	मृग १	२१	४	८	मू. १ धनु	फर. २	२		
		२४	उ.फा. १	११	२	६	३		
		२७	२ कन्या	१४	३	१०	४		

शनिचार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै ८४,२६	स्वा ४
जून १६	३
जुला. १३	मार्गी
अग. ९	स्वा. ४
सितं. २४	विशा. १
अक्तू. २५	२
नवं. २२	३
दिसं. २२	४ वृश्चिक
जन ८५,२९	अनु. १

राहुचार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ८४,२३	रोहि १
जुला. २४	कृत्ति. ४
सितं. २५	३
नवं. २७	२
जन. २९	१ मेष

केतुचार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ८४,२३	अनु. ३
जुला २४	२
सितं २५	१
नव. २७	विशा. ४
जन ८५,२९	३ तुला

यूरेनसचार

तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अग. १८	मार्गी
सित. २०	ज्ये. १
दिसं. ३	२
फर.८५, २	३

नेपच्यूनचार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै ८४, ३	वक्री
सित. १०	मार्गी
नवं. ३०	मूल ३.

वैंकटेश (प्लूटो) चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ७	चित्रा ४
जुला. १०	मार्गी
नवं. ३०	स्वा. १

यूरेनसचार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
जुला १९	अनु. ४

	२	२३ मार्च १०	प्रव. १ प्रव. २	०	मृग १	२७	२ कन्या	१४	३	१०	४	जुला ११ (१९८४)	अनु. ४

—दैनिक लग्न सारणी से लग्न ज्ञान—

आगे दी गई दैनिक लग्न सारणी में अंग्रेजी तारीख और प्रविष्टों के अनुसार चण्डीगढ़ (प.) में निरयण लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) दिया गया है। किसी अंग्रेजी तारीख या प्रविष्टे को कौन सा लग्न कब समाप्त होता है—यह इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है। कई बार सारणी में दिए गए प्रविष्टे और अंग्रेजी तारीखों में परस्पर एक दिन का अन्तर पाया जाएगा, इस से गणक को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अधिक सूक्ष्मता चाहने वाले गणक को इन सारणियों का प्रयोग अंग्रेजी तारीख के अनुसार ही करना चाहिए।

ध्यान रहे—लग्न सारणी में दुहरी लाईन से दाईं ओर छपे घ.मि. अगली अंग्रेजी तारीख के हैं। जैसे १३ अप्रै. के आगे धनु से मीन तक के घ. मि. १४ अप्रै. के हैं।

अयन चलन आदि के कारण दैनिक लग्न सारणी में दिए गए लग्न के समाप्ति कालों में प्रतिवर्ष थोड़ी २ स्थूलता आती जाती है। इस स्थूलता को दूर करने के लिए यहां दाईं ओर एक कोष्ठक (वार्षिक संस्कार कोष्ठक) दिया गया है। अपने अभीष्ट ईस्वी सन् के अनुसार इस कोष्ठक में लिया गया संस्कार दैनिक सारणी के लग्न समाप्ति काल में देने पर लग्न की समाप्ति का काल पर्याप्त सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाएगा। इस संस्कार के अनन्तर लग्न के समाप्ति काल में एक मिनट से कम ही स्थूलता रहेगी। इस वार्षिक संस्कार कोष्ठक में लीप इयर दो बार दिया गया है, एक के पहिले ‡ ऐसा और दूसरे के पहिले * ऐसा चिह्न लगाया गया है। ‡ इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार १ जन. से २८ फर. तक के लिए तथा * इस चिन्ह के आगे लिखा संस्कार २९ फर. से ३१ दिस. तक के लिए है। २९ फर. के लिए दैनिक लग्न सारणी में २८ फर. को प्रयोग में लाइए।

'यहां वार्षिक संस्कार कोष्ठक द्वारा शुद्ध लग्न समाप्ति काल जानने के उदाहरण देते हैं:—

(i) १३ अप्रैल सन् १९७५ को चण्डीगढ़ में मिथुनलग्न का प्रारम्भ काल, दूसरे शब्दों में वृषलग्न का समाप्ति काल बतलाइए ?—दैनिक लग्न सारणी में १३ अप्रै. को वृष का समाप्ति काल ९ घं. ३० मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७५ के आगे वृष के नीचे +२ मिनट लिखा है। अतः ९ घं ३० मि. में २ मि. जोड़ने पर ९ घं. ३२ मि. वृष लग्न का सूक्ष्म समाप्ति काल ज्ञात हो गया।

(ii) सन् १९७२ की १ जन. को चण्डीगढ़ में मकर लग्न कब समाप्त हुआ ?—दैनिक लग्न सारणी में १ जन. को मकर का समाप्ति काल ९ घ. ५७ मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७२ दो बार लिखा है। जैसा कि पहिले बतलाया गया है कि ‡ इस चिन्ह वाला संस्कार १ जन. से २८ फर तक के लिए है। ‡ इस चिन्ह वाले सन् १९७२ के आगे मकर के नीचे +३ मिनट दिए हैं। इन्हें चिन्हानुसार ९ घ. ५७ मि. में जोड़ने पर १० घं. ० मि. मकर का सूक्ष्म समाप्ति काल हुआ।

(iii) २९ फर. सन् १९७२ को चण्डीगढ़ में कुम्भ लग्न कब समाप्त हुआ ?—**दैनिक लग्न सारणी में २९ फर. नहीं है, इसके लिए २८ फर. को प्रयोग में लाएंगे।** २८ फर. के आगे कुम्भ का समाप्ति काल ७ घ. ३४ मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में इस चिन्ह वाले सन् १९७२ के आगे कुम्भ के नीचे −१ मिनट लिखा है। इसे चिन्हानुसार ७ घ. ३४ मि. में से घटाने पर ७ घ. ३३ मि. कुम्भ का सूक्ष्म समाप्तिकाल हुआ।

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ मीन	ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.		मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
‡ १९५६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	‡ १९७२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९५६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९७२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९५७	०	०	०	०	०	०	०	१९७३	०	०	०	०	०	०	०
१९५८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९७४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९५९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	१९७५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+१	१९७६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	१९७६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६१	०	०	०	०	०	०	०	१९७७	०	०	०	०	०	०	०
१९६२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९७८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९७९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	३	‡ १९८०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६४	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९८०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६५	०	०	०	०	०	०	०	१९८१	०	०	०	०	०	०	०
१९६६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९८२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९८३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	‡ १९८४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६८	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९८४	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९६९	०	०	०	०	०	०	०	१९८५	०	०	+१	+१	०	०	०
१९७०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९८६	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९७१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९८७	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२

(यह 'वार्षिक संस्कार कोष्ठक' मेरे "**गणकमार्त्तण्ड**" के लग्न प्रकरण में दिए गए एकबड़े कोष्ठक का एक भाग है जिसमें सन् १९००से सन् २२०० तक का सूक्ष्मतम वार्षिक संस्कार दिया गया है। दुनिया के किसी भी नगर में लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल तुरन्त जानने के लिए "**गणक मार्त्तण्ड**" में एक अद्भुत सारणी दी गई है)।

यह दैनिक लग्न सारिणी चण्डीगढ़ (पं) के लिए है। समस्त पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू काश्मीर के किसी भी नगर में लग्नों का लगभग समाप्ति काल जानने के लिए इस सारणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पंचांग में आगे दी गई '**पंचांग परिवर्तन सारणी**' की सहायता से भारत के प्रसिद्ध २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्ति काल पर्याप्त सूक्ष्मता से जाना जा सकता है।

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

मास	अंग्रेजी तारीख	बैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७।३६	९।३०	११।४४	१४। ७	१६।२७	१८।४४	२१। ६	२३।२६	१।३१	३।१२	४।३७	५।५९
	१४	२	७।३२	९।२६	११।४०	१४। ३	१६।२३	१८।४०	२१। २	२३।२२	१।२७	३। ८	४।३३	५।५५
	१५	३	७।२८	९।२२	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।५८	२३।१८	१।२३	३। ४	४।२९	५।५१
	१६	४	७।२४	९।१८	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।३३	२०।५४	२३।१४	१।१९	३। ०	४।२५	५।४७
	१७	५	७।२०	९।१४	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।२९	२०।५०	२३।१०	१।१५	२।५६	४।२१	५।४३
	१८	६	७।१६	९।११	११।२५	१३।४७	१६। ७	१८।२५	२०।४६	२३। ६	१।११	२।५२	४।१७	५।३९
	१९	७	७।१२	९। ७	११।२१	१३।४३	१६। ३	१८।२१	२०।४२	२३। २	१। ७	२।४८	४।१३	५।३५
	२०	८	७। ८	९। ३	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।१७	२०।३८	२२।५८	१। ३	२।४४	४। ९	५।३१
	२१	९	७। ४	८।५९	११।१३	१३।३५	१५।५५	१८।१३	२०।३४	२२।५४	०।५९	२।४०	४। ५	५।२८
	२२	१०	७। ०	८।५५	११। ९	१३।३१	१५।५१	१८। ९	२०।३०	२२।५१	०।५५	२।३६	४। १	५।२४
	२३	११	६।५६	८।५१	११। ५	१३।२७	१५।४७	१८। ५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३२	३।५७	५।२०
	२४	१२	६।५२	८।४७	११। १	१३।२३	१५।४३	१८। १	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२८	३।५३	५।१६
	२५	१३	६।४८	८।४३	१०।५७	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२४	३।४९	५।१२
	२६	१४	६।४४	८।३९	१०।५३	१३।१६	१५।३६	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२०	३।४५	५। ८
	२७	१५	६।४१	८।३५	१०।४९	१३।१२	१५।३२	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१६	३।४२	५। ४
	२८	१६	६।३७	८।३१	१०।४५	१३। ८	१५।२८	१७।४५	२०। ७	२२।२७	०।३२	२।१३	३।३८	५। ०
	२९	१७	६।३३	८।२७	१०।४२	१३। ४	१५।२४	१७।४१	२०। ३	२२।२३	०।२८	२। ९	३।३४	४।५६
	३०	१८	६।२९	८।२३	१०।३८	१३। ०	१५।२०	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
मई	१	१९	६।२५	८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२०	२। १	३।२६	४।४८
	२	२०	६।२१	८।१६	१०।३०	१२।५२	१५।१२	१७।३०	१९।५१	२२।११	०।१६	१।५७	३।२२	४।४४
	३	२१	६।१७	८।१२	१०।२६	१२।४८	१५। ८	१७।२६	१९।४७	२२। ७	०।१२	१।५३	३।१८	४।४०
	४	२२	६।१३	८। ८	१०।२२	१२।४४	१५। ४	१७।२२	१९।४३	२२। ३	०। ८	१।४९	३।१४	४।३६
	५	२३	६। ९	८। ४	१०।१८	१२।४०	१५। ०	१७।१८	१९।३९	२१।५९	०। ४	१।४५	३।१०	४।३२
	६	२४	६। ५	८। ०	१०।१४	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।३५	२१।५६	०। ०	१।४१	३। ६	४।२९
	७	२५	६। १	७।५६	१०।१०	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।३२	२१।५२	२३।५६	१।३७	३। २	४।२५
	८	२६	५।५७	७।५२	१०। ६	१२।२८	१४।४८	१७। ६	१९।२८	२१।४८	२३।५२	१।३३	२।५८	४।२१
	९	२७	५।५३	७।४८	१०। २	१२।२४	१४।४४	१७। २	१९।२४	२१।४४	२३।४८	१।२९	२।५४	४।१७
	१०	२८	५।४९	७।४४	९।५८	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।२०	२१।४०	२३।४४	१।२५	२।५०	४।१३
	११	२९	५।४६	७।४०	९।५४	१२।१७	१४।३६	१६।५४	१९।१६	२१।३६	२३।४०	१।२१	२।४६	४। ९
	१२	३०	५।४२	७।३६	९।५०	१२।१३	१४।३३	१६।५०	१९।१२	२१।३२	२३।३७	१।१८	२।४३	४। ५
	१३	३१	५।३८	७।३२	९।४६	१२। ९	१४।२९	१६।४६	१९। ८	२१।२८	२३।३३	१।१४	२।३९	४। १
	१४	[illegible]	५।३४											

मास	अंग्रेजी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७।२८	९।४३	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१९। ४	२१।२४	२३।२९	१।१०	२।३५	३।५७	५।३०
	१५	२	७।२४	९।३९	१२। १	१४।२१	१६।३८	१९। ०	२१।२०	२३।२५	१। ६	२।३१	३।५३	५।२६
	१६	३	७।२०	९।३५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१। २	२।२७	३।४९	५।२२
	१७	४	७।१७	९।३१	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।५२	२१।१२	२३।१७	०।५८	२।२३	३।४५	५।१८
	१८	५	७।१३	९।२७	११।४९	१४। ९	१६।२७	१८।४८	२१। ८	२३।१३	०।५४	२।१९	३।४१	५।१४
	१९	६	७। ९	९।२३	११।४५	१४। ५	१६।२३	१८।४४	२१। ४	२३। ९	०।५०	२।१५	३।३७	५।१०
	२०	७	७। ५	९।१९	११।४१	१४। १	१६।१९	१८।४०	२१। १	२३। ५	०।४६	२।११	३।३४	५। ६
	२१	८	७। १	९।१५	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।३६	२०।५७	२३। १	०।४२	२। ७	३।३०	५। २
	२२	९	६।५७	९।११	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।३३	२०।५३	२२।५७	०।३८	२। ३	३।२६	४।५८
	२३	१०	६।५३	९। ७	११।२९	१३।४९	१६। ७	१८।२९	२०।४९	२२।५३	०।३४	१।५९	३।२२	४।५४
	२४	११	६।४९	९। ३	११।२५	१३।४५	१६। ३	१८।२५	२०।४५	२२।४९	०।३०	१।५५	३।१८	४।५०
	२५	१२	६।४५	८।५९	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२२।४५	०।२६	१।५१	३।१४	४।४७
	२६	१३	६।४१	८।५५	११।१८	१३।३८	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।४२	०।२२	१।४८	३।१०	४।४३
	२७	१४	६।३७	८।५१	११।१४	१३।३४	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।३८	०।१९	१।४४	३। ६	४।३९
	२८	१५	६।३३	८।४७	११।१०	१३।३०	१५।४७	१८। ९	२०।२९	२२।३४	०।१५	१।४०	३। २	४।३५
	२९	१६	६।२९	८।४४	११। ६	१३।२६	१५।४३	१८। ५	२०।२५	२२।३०	०।११	१।३६	२।५८	४।३१
	३०	१७	६।२५	८।४०	११। २	१३।२२	१५।४०	१८। १	२०।२१	२२।२६	०। ७	१।३२	२।५४	४।२७
	३१	१८	६।२२	८।३६	१०।५८	१३।१८	१५।३६	१७।५७	२०।१७	२२।२२	०। ३	१।२८	२।५०	४।२३
जून	१	१९	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२४	२।४६	४।१९
	२	२०	६।१४	८।२८	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४९	२०। ९	२२।१४	२३।५५	१।२०	२।४२	४।१५
	३	२१	६।१०	८।२४	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४५	२०। ५	२२।१०	२३।५१	१।१६	२।३८	४।११
	४	२२	६। ६	८।२०	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।४१	२०। २	२२। ६	२३।४७	१।१२	२।३५	४। ७
	५	२३	६। २	८।१६	१०।३८	१२।५८	१५।१६	१७।३७	१९।५८	२२। २	२३।४३	१। ८	२।३१	४। ३
	६	२४	५।५८	८।१२	१०।३४	१२।५४	१५।१२	१७।३४	१९।५४	२१।५८	२३।३९	१। ४	२।२७	३।५९
	७	२५	५।५४	८। ८	१०।३०	१२।५०	१५। ८	१७।३०	१९।५०	२१।५४	२३।३५	१। ०	२।२३	३।५५
	८	२६	५।५०	८। ४	१०।२६	१२।४६	१५। ४	१७।२६	१९।४६	२१।५०	२३।३१	०।५६	२।१९	३।५१
	९	२७	५।४६	८। ०	१०।२३	१२।४३	१५। ०	१७।२२	१९।४२	२१।४६	२३।२७	०।५२	२।१५	३।४८
	१०	२८	५।४२	७।५६	१०।१९	१२।३९	१४।५६	१७।१८	१९।३८	२१।४३	२३।२३	०।४९	२।११	३।४४
	११	२९	५।३८	७।५२	१०।१५	१२।३५	१४।५२	१७।१४	१९।३४	२१।३९	२३।२०	०।४५	२। ७	३।४०
	१२	३०	५।३४	७।४९	१०।११	१२।३१	१४।४८	१७।१०	१९।३०	२१।३५	२३।१६	०।४१	२। ३	३।३६
	१३	३१	५।३०	७।४५	१०। ७	१२।२७	१४।४५	१७। ६	१९।२६	२१।३१	२३।१२	०।३७	१।५९	३।३२
	१४	आ. १	५।२६											

दैनिक लग्न सारणी चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

आषाढ़

मास	अंग्रेजी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७।४१	१०। ३	१२।२३	१४।४१	१७। २	१९।२२	२१।२७	२३। ८	०।३३	१।५५	३।२८	५।२३
	१५	२	७।३७	९।५९	१२।१९	१४।३७	१६।५८	१९।१८	२१।२३	२३। ४	०।२९	१।५१	३।२४	५।१९
	१६	३	७।३३	९।५५	१२।१५	१४।३३	१६।५४	१९।१४	२१।१९	२३। ०	०।२५	१।४७	३।२०	५।१५
	१७	४	७।२९	९।५१	१२।११	१४।२९	१६।५०	१९।१०	२१।१५	२२।५६	०।२१	१।४३	३।१६	५।११
	१८	५	७।२५	९।४७	१२। ७	१४।२५	१६।४६	१९। ६	२१।११	२२।५२	०।१७	१।३९	३।१२	५। ७
	१९	६	७।२१	९।४३	१२। ३	१४।२१	१६।४२	१९। ३	२१। ७	२२।४८	०।१३	१।३६	३। ८	५। ३
	२०	७	७।१७	९।३९	११।५९	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१। ३	२२।४४	०। ९	१।३२	३। ४	४।५९
	२१	८	७।१३	९।३५	११।५५	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२०।५९	२२।४०	०। ५	१।२८	३। ०	४।५५
	२२	९	७। ९	९।३१	११।५१	१४। ९	१६।३१	१८।५१	२०।५५	२२।३६	०। १	१।२४	२।५६	४।५१
	२३	१०	७। ५	९।२७	११।४७	१४। ५	१६।२७	१८।४७	२०।५१	२२।३२	२३।५७	१।२०	२।५३	४।४७
	२४	११	७। १	९।२४	११।४४	१४। १	१६।२३	१८।४३	२०।४८	२२।२८	२३।५४	१।१६	२।४९	४।४३
	२५	१२	६।५७	९।२०	११।४०	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।४४	२२।२५	२३।५०	१।१२	२।४५	४।३९
	२६	१३	६।५३	९।१६	११।३६	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।४०	२२।२१	२३।४६	१। ८	२।४१	४।३५
	२७	१४	६।५०	९।१२	११।३२	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।३६	२२।१७	२३।४२	१। ४	२।३७	४।३१
	२८	१५	६।४६	९। ८	११।२८	१३।४६	१६। ७	१८।२७	२०।३२	२२।१३	२३।३८	१। ०	२।३३	४।२७
	२९	१६	६।४२	९। ४	११।२४	१३।४२	१६। ३	१८।२३	२०।२८	२२। ९	२३।३४	०।५६	२।२९	४।२४
	३०	१७	६।३८	९। ०	११।२०	१३।३८	१५।५९	१८।१९	२०।२४	२२। ५	२३।३०	०।५२	२।२५	४।२०
जुलाई	१	१८	६।३४	८।५६	११।१६	१३।३४	१५।५५	१८।१५	२०।२०	२२। १	२३।२६	०।४८	२।२१	४।१६
	२	१९	६।३०	८।५२	११।१२	१३।३०	१५।५१	१८।११	२०।१६	२१।५७	२३।२२	०।४४	२।१७	४।१२
	३	२०	६।२६	८।४८	११। ८	१३।२६	१५।४७	१८। ८	२०।१२	२१।५३	२३।१८	०।४१	२।१३	४। ८
	४	२१	६।२२	८।४४	११। ४	१३।२२	१५।४३	१८। ४	२०। ८	२१।४९	२३।१४	०।३७	२। ९	४। ४
	५	२२	६।१८	८।४०	११। ०	१३।१८	१५।४०	१८। ०	२०। ४	२१।४५	२३।१०	०।३३	२। ५	४। ०
	६	२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३६	१७।५६	२०। ०	२१।४१	२३। ६	०।२९	२। १	३।५६
	७	२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१०	१५।३२	१७।५२	१९।५६	२१।३७	२३। २	०।२५	१।५७	३।५२
	८	२५	६। ६	८।२९	१०।४८	१३। ६	१५।२८	१७।४८	१९।५२	२१।३३	२२।५८	०।२१	१।५३	३।४८
	९	२६	६। २	८।२५	१०।४५	१३। २	१५।२४	१७।४४	१९।४९	२१।२९	२२।५४	०।१७	१।५०	३।४४
	१०	२७	५।५८	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।२०	१७।४०	१९।४५	२१।२६	२२।५१	०।१३	१।४६	३।४०
	११	२८	५।५५	८।१७	१०।३७	१२।५४	१५।१६	१७।३६	१९।४१	२१।२२	२२।४७	०। ९	१।४२	३।३६
	१२	२९	५।५१	८।१३	१०।३३	१२।५०	१५।१२	१७।३२	१९।३७	२१।१८	२२।४३	०। ५	१।३८	३।३२
	१३	३०	५।४७	८। ९	१०।२९	१२।४७	१५। ८	१७।२८	१९।३३	२१।१४	२२।३९	०। १	१।३४	३।२९
	१४	३१	५।४३	८। ५	१०।२५	१२।४३	१५। ४	१७।२४	१९।२९	२१।१०	२२।३५	२३।५७	१।३०	३।२५
	१५	३२	५।३९	८। १	१०।२१	१२।३९	१५। ०	१७।२०	१९।२५	२१। ६	२२।३१	२३।५३	१।२६	३।२१
	१६	[illegible]	५।३५											

श्रावण

मास	अंग्रेजी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७।५७	१०।१७	१२।३५	१४।५६	१७।१६	१९।२१	२१। २	२२।२७	२३।४९	१।२२	३।१७	५।३१
	१७	२	७।५३	१०।१३	१२।३१	१४।५२	१७।१२	१९।१७	२०।५८	२२।२३	२३।४५	१।१८	३।१३	५।२७
	१८	३	७।४९	१०। ९	१२।२७	१४।४८	१७। ९	१९।१३	२०।५४	२२।१९	२३।४१	१।१४	३। ९	५।२३
	१९	४	७।४५	१०। ५	१२।२३	१४।४४	१७। ५	१९। ९	२०।५०	२२।१५	२३।३८	१।१०	३। ५	५।१९
	२०	५	७।४१	१०। १	१२।१९	१४।४१	१७। १	१९। ५	२०।४६	२२।११	२३।३४	१। ६	३। १	५।१५
	२१	६	७।३७	९।५७	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९। १	२०।४२	२२। ७	२३।३०	१। २	२।५७	५।११
	२२	७	७।३३	९।५३	१२।११	१४।३३	१६।५३	१८।५७	२०।३८	२२। ३	२३।२६	०।५८	२।५३	५। ७
	२३	८	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।२९	१६।४९	१८।५३	२०।३४	२१।५९	२३।२२	०।५५	२।४९	५। ३
	२४	९	७।२६	९।४६	१२। ३	१४।२५	१६।४५	१८।५०	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४५	४।५९
	२५	१०	७।२२	९।४२	११।५९	१४।२१	१६।४१	१८।४६	२०।२७	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४१	४।५६
	२६	११	७।१८	९।३८	११।५५	१४।१७	१६।३७	१८।४२	२०।२३	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३७	४।५२
	२७	१२	७।१४	९।३४	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।३८	२०।१९	२१।४४	२३। ६	०।३९	२।३३	४।४८
	२८	१३	७।१०	९।३०	११।४८	१४। ९	१६।२९	१८।३४	२०।१५	२१।४०	२३। २	०।३५	२।३०	४।४४
	२९	१४	७। ६	९।२६	११।४४	१४। ५	१६।२५	१८।३०	२०।११	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
	३०	१५	७। २	९।२२	११।४०	१४। १	१६।२१	१८।२६	२०। ७	२१।३२	२२।५४	०।२७	२।२२	४।३६
	३१	१६	६।५८	९।१८	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।२२	२०। ३	२१।२८	२२।५०	०।२३	२।१८	४।३२
अगस्त	१	१७	६।५४	९।१४	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।१८	१९।५९	२१।२४	२२।४७	०।१९	२।१४	४।२८
	२	१८	६।५०	९।१०	११।२८	१३।४९	१६।१०	१८।१४	१९।५५	२१।२०	२२।४३	०।१५	२।१०	४।२४
	३	१९	६।४६	९। ६	११।२४	१३।४६	१६। ६	१८।१०	१९।५१	२१।१६	२२।३९	०।११	२। ६	४।२०
	४	२०	६।४२	९। २	११।२०	१३।४२	१६। २	१८। ६	१९।४७	२१।१२	२२।३५	०। ७	२। २	४।१६
	५	२१	६।३८	८।५८	११।१६	१३।३८	१५।५८	१८। २	१९।४३	२१। ८	२२।३१	०। ३	१।५८	४।१२
	६	२२	६।३४	८।५४	११।१२	१३।३४	१५।५४	१७।५८	१९।३९	२१। ४	२२।२७	०। ०	१।५४	४। ८
	७	२३	६।३१	८।५१	११। ८	१३।३०	१५।५०	१७।५५	१९।३६	२१। १	२२।२३	२३।५६	१।५०	४। ४
	८	२४	६।२७	८।४७	११। ४	१३।२६	१५।४६	१७।५१	१९।३२	२०।५७	२२।१९	२३।५२	१।४६	४। ०
	९	२५	६।२३	८।४३	११। ०	१३।२२	१५।४२	१७।४७	१९।२८	२०।५३	२२।१५	२३।४८	१।४२	३।५७
	१०	२६	६।१९	८।३९	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४३	१९।२४	२०।४९	२२।११	२३।४४	१।३८	३।५३
	११	२७	६।१५	८।३५	१०।५३	१३।१४	१५।३४	१७।३९	१९।२०	२०।४५	२२। ७	२३।४०	१।३४	३।४९
	१२	२८	६।११	८।३१	१०।४९	१३।१०	१५।३०	१७।३५	१९।१६	२०।४१	२२। ३	२३।३६	१।३१	३।४५
	१३	२९	६। ७	८।२७	१०।४५	१३। ६	१५।२६	१७।३१	१९।१२	२०।३७	२१।५९	२३।३२	१।२७	३।४१
	१४	३०	६। ३	८।२३	१०।४१	१३। २	१५।२२	१७।२७	१९। ८	२०।३३	२१।५५	२३।२८	१।२३	३।३७
	१५	३१	५।५९	८।१९	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२३	१९। ४	२०।२९	२१।५१	२३।२४	१।१९	३।३३
	१६	[illegible]	५।५५											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टैं० टा०]

	अंग्रेजी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.
अगस्त	१६	१	८।१५	१०।३३	१२।५४	१५।१५	१७।१९	१९। ०	२०।२५	२१।४८	२३।२०	१।१५	३।२९	५।५१
	१७	२	८।११	१०।२९	१२।५०	१५।११	१७।१५	१८।५६	२०।२१	२१।४४	२३।१६	१।११	३।२५	५।४७
	१८	३	८। ७	१०।२५	१२।४६	१५। ७	१७।११	१८।५२	२०।१७	२१।४०	२३।१२	१। ७	३।२१	५।४३
	१९	४	८। ३	१०।२१	१२।४२	१५। ३	१७। ७	१८।४८	२०।१३	२१।३६	२३। ८	१। ३	३।१७	५।३९
	२०	५	७।५९	१०।१७	१२।३९	१४।५९	१७। ३	१८।४४	२०। ९	२१।३२	२३। ४	०।५९	३।१३	५।३५
	२१	६	७।५६	१०।१३	१२।३५	१४।५५	१६।५९	१८।४०	२०। ५	२१।२८	२३। १	०।५५	३। ९	५।३२
	२२	७	७।५२	१०। ९	१२।३१	१४।५१	१६।५६	१८।३६	२०। २	२१।२४	२२।५७	०।५१	३। ५	५।२८
	२३	८	७।४८	१०। ५	१२।२७	१४।४७	१६।५२	१८।३३	१९।५८	२१।२०	२२।५३	०।४७	३। २	५।२४
	२४	९	७।४४	१०। १	१२।२३	१४।४३	१६।४८	१८।२९	१९।५४	२१।१६	२२।४९	०।४३	२।५८	५।२०
	२५	१०	७।४०	९।५७	१२।१९	१४।३९	१६।४४	१८।२५	१९।५०	२१।१२	२२।४५	०।३९	२।५४	५।१६
	२६	११	७।३६	९।५४	१२।१५	१४।३५	१६।४०	१८।२१	१९।४६	२१। ८	२२।४१	०।३६	२।५०	५।१२
	२७	१२	७।३२	९।५०	१२।११	१४।३१	१६।३६	१८।१७	१९।४२	२१। ४	२२।३७	०।३२	२।४६	५। ८
	२८	१३	७।२८	९।४६	१२। ७	१४। ७	१६।३२	१८।१३	१९।३८	२१। ०	२२।३३	०।२८	२।४२	५। ४
	२९	१४	७।२४	९।४२	१२। ३	१४।२३	१६।२८	१८। ९	१९।३४	२०।५६	२२।२९	०।२४	२।३८	५। ०
	३०	१५	७।२०	९।३८	११।५९	१४।१९	१६।२४	१८। ५	१९।३०	२०।५२	२२।२५	०।२०	२।३४	४।५६
	३१	१६	७।१६	९।३४	११।५५	१४।१६	१६।२०	१८। १	१९।२६	२०।४९	२२।२१	०।१६	२।३०	४।५२
सितम्बर	१	१७	७।१२	९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५	२२।१७	०।१२	२।२६	४।४८
	२	१८	७। ८	९।२६	११।४८	१४। ८	१६।१२	१७।५३	१९।१८	२०।४१	२२।१३	०। ८	२।२२	४।४४
	३	१९	७। ४	९।२२	११।४४	१४। ४	१६। ८	१७।४९	१९।१४	२०।३७	२२। ९	०। ४	२।१८	४।४०
	४	२०	७। ०	९।१८	११।४०	१४। ०	१६। ४	१७।४५	१९।१०	२०।३३	२२। ६	०। ०	२।१४	४।३७
	५	२१	६।५७	९।१४	११।३६	१३।५६	१६। ०	१७।४१	१९। ६	२०।२९	२२। २	२३।५६	२।१०	४।३३
	६	२२	६।५३	९।१०	११।३२	१३।५२	१५।५६	१७।३८	१९। ३	२०।२५	२१।५८	२३।५२	२। ६	४।२९
	७	२३	६।४९	९। ६	११।२८	१३।४८	१५।५३	१७।३४	१८।५९	२०।२१	२१।५४	२३।४८	२। २	४।२५
	८	२४	६।४५	९। २	११।२४	१३।४४	१५।४९	१७।३०	१८।५५	२०।१७	२१।५०	२३।४४	१।५९	४।२१
	९	२५	६।४१	८।५९	११।२०	१३।४०	१५।४५	१७।२६	१८।५१	२०।१३	२१।४६	२३।४०	१।५५	४।१७
	१०	२६	६।३७	८।५५	११।१६	१३।३६	१५।४१	१७।२२	१८।४७	२०। ९	२१।४२	२३।३७	१।५१	४।१३
	११	२७	६।३३	८।५१	११।१२	१३।३२	१५।३७	१७।१८	१८।४३	२०। ५	२१।३८	२३।३३	१।४७	४। ९
	१२	२८	६।२९	८।४७	११। ८	१३।२८	१५।३३	१७।१४	१८।३९	२०। १	२१।३४	२३।२९	१।४३	४। ५
	१३	२९	६।२५	८।४३	११। ४	१३।२४	१५।२९	१७।१०	१८।३५	१९।५७	२१।३०	२३।२५	१।३९	४। १
	१४	३०	६।२१	८।३९	११। ०	१३।२१	१५।२५	१७। ६	१८।३१	१९।५४	२१।२६	२३।२१	१।३५	३।५७
	१५	३१	६।१७	८।३५	१०।५६	१३।१७	१५।२१	१७। २	१८।२७	१९।५०	२१।२२	२३।१७	१।३१	३।५३
	१६	आ१	६।१३											

	अंग्रेजी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.
सितम्बर	१६	१	८।३१	१०।५३	१३।१३	१५।१७	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१८	२३।१३	१।२७	३।४९	६। ९
	१७	२	८।२७	१०।४९	१३। ९	१५।१३	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१४	२३। ९	१।२३	३।४५	६। ५
	१८	३	८।२३	१०।४५	१३। ५	१५। ९	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।१०	२३। ५	१।१९	३।४२	६। १
	१९	४	८।१९	१०।४१	१३। १	१५। ५	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१। ७	२३। १	१।१५	३।३८	५।५८
	२०	५	८।१५	१०।३७	१२।५७	१५। २	१६।४२	१८। ८	१९।३०	२१। ३	२२।५७	१।११	३।३४	५।५४
	२१	६	८।११	१०।३३	१२।५३	१४।५८	१६।३९	१८। ४	१९।२६	२०।५९	२२।५३	१। ७	३।३०	५।५०
	२२	७	८। ७	१०।२९	१२।४९	१४।५४	१६।३५	१८। ०	१९।२२	२०।५५	२२।४९	१। ४	३।२६	५।४६
	२३	८	८। ३	१०।२५	१२।४५	१४।५०	१६।३१	१७।५६	१९।१८	२०।५१	२२।४५	१। ०	३।२२	५।४२
	२४	९	८। ०	१०।२१	१२।४१	१४।४६	१६।२७	१७।५२	१९।१४	२०।४७	२२।४१	०।५६	३।१८	५।३८
	२५	१०	७।५६	१०।१७	१२।३७	१४।४२	१६।२३	१७।४८	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१४	५।३४
	२६	११	७।५२	१०।१३	१२।३३	१४।३८	१६।१९	१७।४४	१९। ६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।१०	५।३०
	२७	१२	७।४८	१०। ९	१२।२९	१४।३४	१६।१५	१७।४०	१९। २	२०।३५	२२।३०	०।४४	३। ६	५।२६
	२८	१३	७।४४	१०। ५	१२।२५	१४।३०	१६।११	१७।३६	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३। २	५।२२
	२९	१४	७।४०	१०। १	१२।२२	१४।२६	१६। ७	१७।३२	१८।५५	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५८	५।१८
	३०	१५	७।३६	९।५७	१२।१८	१४।२२	१६। ३	१७।२८	१८।५१	२०।२३	२२।१८	०।३२	२।५४	५।१४
अक्तूबर	१	१६	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।१८	१५।५९	१७।२४	१८।४७	२०।१९	२२।१४	०।२८	२।५०	५।१०
	२	१७	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।१४	१५।५५	१७।२०	१८।४३	२०।१५	२२।१०	०।२४	२।४६	५। ६
	३	१८	७।२४	९।४६	१२। ६	१४।१०	१५।५१	१७।१६	१८।३९	२०।११	२२। ६	०।२०	२।४२	५। ३
	४	१९	७।२०	९।४२	१२। २	१४। ६	१५।४७	१७।१२	१८।३५	२०। ८	२२। २	०।१६	२।३९	४।५९
	५	२०	७।१६	९।३८	११।५८	१४। ३	१५।४३	१७। ९	१८।३१	२०। ४	२१।५८	०।१२	२।३५	४।५५
	६	२१	७।१२	९।३४	११।५४	१३।५९	१५।४०	१७। ५	१८।२७	२०। ०	२१।५४	०। ८	२।३१	४।५१
	७	२२	७। ८	९।३०	११।५०	१३।५५	१५।३६	१७। १	१८।२३	१९।५६	२१।५०	०। ५	२।२७	४।४७
	८	२३	७। ५	९।२६	११।४६	१३।५१	१५।३२	१६।५७	१८।१९	१९।५२	२१।४६	०। १	२।२३	४।४३
	९	२४	७। १	९।२२	११।४२	१३।४७	१५।२८	१६।५३	१८।१५	१९।४८	२१।४३	२३।५७	२।१९	४।३९
	१०	२५	६।५७	९।१८	११।३८	१३।४३	१५।२४	१६।४९	१८।११	१९।४४	२१।३९	२३।५३	२।१५	४।३५
	११	२६	६।५३	९।१४	११।३४	१३।३९	१५।२०	१६।४५	१८। ७	१९।४०	२१।३५	२३।४९	२।११	४।३१
	१२	२७	६।४९	९।१०	११।३०	१३।३५	१५।१६	१६।४१	१८। ३	१९।३६	२१।३१	२३।४५	२। ७	४।२७
	१३	२८	६।४५	९। ६	११।२६	१३।३१	१५।१२	१६।३७	१७।५९	१९।३२	२१।२७	२३।४१	२। ३	४।२३
	१४	२९	६।४१	९। २	११।२३	१३।२७	१५। ८	१६।३३	१७।५६	१९।२८	२१।२३	२३।३७	१।५९	४।१९
	१५	३०	६।३७	८।५९	११।१९	१३।२३	१५। ४	१६।२९	१७।५२	१९।२४	२१।१९	२३।३३	१।५५	४।१५
	१६	का१	६।३३											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

कार्तिक

अंग्रेजी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
१६	१	८।५५	११।१५	१३।१९	१५। ०	१६।२५	१७।४८	१९।२०	२१।१५	२३।२९	१।५१	४।११	६।२६
१७	२	८।५१	११।११	१३।१५	१४।५६	१६।२१	१७।४४	१९।१६	२१।११	२३।२५	१।४७	४। ७	६।२५
१८	३	८।४७	११। ७	१३।११	१४।५२	१६।१७	१७।४०	१९।१३	२१। ७	२३।२१	१।४४	४। ४	६।२१
१९	४	८।४३	११। ३	१३। ८	१४।४८	१६।१४	१७।३६	१९। ९	२१। ३	२३।१७	१।४०	४। ०	६।१७
२०	५	८।३९	१०।५९	१३। ४	१४।४५	१६।१०	१७।३२	१९। ५	२०।५९	२३।१३	१।३६	३।५६	६।१३
२१	६	८।३५	१०।५५	१३। ०	१४।४१	१६। ६	१७।२८	१९। १	२०।५५	२३। ९	१।३२	३।५२	६। ९
२२	७	८।३१	१०।५१	१२।५६	१४।३७	१६। २	१७।२४	१८।५७	२०।५१	२३। ६	१।२८	३।४८	६। ६
२३	८	८।२७	१०।४७	१२।५२	१४।३३	१५।५८	१७।२०	१८।५३	२०।४७	२३। २	१।२४	३।४४	६। २
२४	९	८।२३	१०।४३	१२।४८	१४।२९	१५।५४	१७।१६	१८।४९	२०।४४	२२।५८	१।२०	३।४०	५।५८
२५	१०	८।१९	१०।३९	१२।४४	१४।२५	१५।५०	१७।१२	१८।४५	२०।४०	२२।५४	१।१६	३।३६	५।५४
२६	११	८।१५	१०।३५	१२।४०	१४।२१	१५।४६	१७। ८	१८।४१	२०।३६	२२।५०	१।१२	३।३२	५।५०
२७	१२	८।११	१०।३१	१२।३६	१४।१७	१५।४२	१७। ४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१। ८	३।२८	५।४६
२८	१३	८। ७	१०।२८	१२।३२	१४।१३	१५।३८	१७। १	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१। ४	३।२४	५।४२
२९	१४	८। ३	१०।२४	१२।२८	१४। ९	१५।३४	१६।५७	१८।२९	२०।२४	२२।३८	१। ०	३।२०	५।३८
३०	१५	८। ०	१०।२०	१२।२४	१४। ५	१५।३०	१६।५३	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५६	३।१६	५।३४
३१	१६	७।५६	१०।१६	१२।२०	१४। १	१५।२६	१६।४९	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५२	३।१२	५।३०
१	१७	७।५२	१०।१२	१२।१६	१३।५७	१५।२२	१६।४५	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४८	३। ९	५।२६
२	१८	७।४८	१०। ८	१२।१२	१३।५३	१५।१८	१६।४१	१८।१३	२०। ८	२२।२२	०।४५	३। ५	५।२२
३	१९	७।४४	१०। ४	१२। ९	१३।४९	१५।१५	१६।३७	१८। ९	२०। ४	२२।१८	०।४१	३। १	५।१८
४	२०	७।४०	१०। ०	१२। ५	१३।४६	१५।११	१६।३३	१८। ६	२०। ०	२२।१५	०।३७	२।५७	५।१४
५	२१	७।३६	९।५६	१२। १	१३।४२	१५। ७	१६।२९	१८। २	१९।५६	२२।११	०।३३	२।५३	५।१०
६	२२	७।३२	९।५२	११।५७	१३।३८	१५। ३	१६।२५	१७।५८	१९।५२	२२। ७	०।२९	२।४९	५। ७
७	२३	७।२८	९।४८	११।५३	१३।३४	१४।५९	१६।२१	१७।५४	१९।४९	२२। ३	०।२५	२।४५	५। ३
८	२४	७।२४	९।४४	११।४९	१३।३०	१४।५५	१६।१७	१७।५०	१९।४५	२१।५९	०।२१	२।४१	४।५९
९	२५	७।२०	९।४०	११।४५	१३।२६	१४।५१	१६।१३	१७।४६	१९।४१	२१।५५	०।१७	२।३७	४।५५
१०	२६	७।१६	९।३६	११।४१	१३।२२	१४।४७	१६। ९	१७।४२	१९।३७	२१।५१	०।१३	२।३३	४।५१
११	२७	७।१२	९।३३	११।३७	१३।१८	१४।४३	१६। ५	१७।३८	१९।३३	२१।४७	०। ९	२।२९	४।४७
१२	२८	७। ८	९।२९	११।३३	१३।१४	१४।३९	१६। २	१७।३४	१९।२९	२१।४३	०। ५	२।२५	४।४३
१३	२९	७। ५	९।२५	११।३०	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३०	१९।२५	२१।३९	०। १	२।२१	४।३९
१४	३०	७। १	९।२१	११।२६	१३। ६	१४।३१	१५।५४	१७।२६	१९।२१	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।३५
१५	मा१	६।५७											

मार्गशीर्ष

अंग्रेजी तारीख	मार्ग. प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
१५	१	९।१७	११।२१	१३। २	१४।२७	१५।५०	१७।२२	१९।१७	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।३१	६।५३
१६	२	९।१३	११।१७	१२।५८	१४।२३	१५।४६	१७।१८	१९।१३	२१।२७	२३।५०	२।१०	४।२७	६।४९
१७	३	९। ९	११।१३	१२।५४	१४।१९	१५।४२	१७।१५	१९। ९	२१।२३	२३।४६	२। ६	४।२३	६।४५
१८	४	९। ५	११।१०	१२।५०	१४।१६	१५।३८	१७।११	१९। ५	२१।१९	२३।४२	२। २	४।१९	६।४१
१९	५	९। १	११। ६	१२।४७	१४।१२	१५।३४	१७। ७	१९। १	२१।१६	२३।३८	१।५८	४।१५	६।३७
२०	६	८।५७	११। २	१२।४३	१४। ८	१५।३०	१७। ३	१८।५७	२१।१२	२३।३४	१।५४	४।१२	६।३३
२१	७	८।५३	१०।५८	१२।३९	१४। ४	१५।२६	१६।५९	१८।५३	२१। ८	२३।३०	१।५०	४। ८	६।२९
२२	८	८।४९	१०।५४	१२।३५	१४। ०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१। ४	२३।२६	१।४६	४। ४	६।२५
२३	९	८।४५	१०।५०	१२।३१	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१। ०	२३।२२	१।४२	४। ०	६।२१
२४	१०	८।४१	१०।४६	१२।२७	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५६	६।१७
२५	११	८।३७	१०।४२	१२।२३	१३।४८	१५।१०	१६।४३	१८।३८	२०।५२	२३।१४	१।३४	३।५२	६।१३
२६	१२	८।३३	१०।३८	१२।१९	१३।४४	१५। ७	१६।३९	१८।३४	२०।४८	२३।१०	१।३०	३।४८	६। ९
२७	१३	८।३०	१०।३४	१२।१५	१३।४०	१५। ३	१६।३५	१८।३०	२०।४४	२३। ६	१।२६	३।४४	६। ६
२८	१४	८।२६	१०।३०	१२।११	१३।३६	१४।५९	१६।३१	१८।२६	२०।४०	२३। २	१।२२	३।४०	६। २
२९	१५	८।२२	१०।२६	१२। ७	१३।३२	१४।५५	१६।२७	१८।२२	२०।३६	२२।५८	१।१८	३।३६	५।५८
३०	१६	८।१८	१०।२२	१२। ३	१३।२८	१४।५१	१६।२३	१८।१८	२०।३२	२२।५४	१।१४	३।३२	५।५४
१	१७	८।१४	१०।१८	११।५९	१३।२४	१४।४७	१६।२०	१८।१४	२०।२८	२२।५१	१।११	३।२८	५।५०
२	१८	८।१०	१०।१५	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।१०	२०।२४	२२।४७	१। ७	३।२४	५।४६
३	१९	८। ६	१०।११	११।५२	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८। ६	२०।२०	२२।४३	१। ३	३।२०	५।४२
४	२०	८। २	१०। ७	११।४८	१३।१३	१४।३५	१६। ८	१८। २	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१६	५।३८
५	२१	७।५८	१०। ३	११।४४	१३। ९	१४।३१	१६। ४	१७।५८	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१३	५।३४
६	२२	७।५४	९।५९	११।४०	१३। ५	१४।२७	१६। ०	१७।५४	२०। ९	२२।३१	०।५१	३। ९	५।३०
७	२३	७।५०	९।५५	११।३६	१३। १	१४।२३	१५।५६	१७।५१	२०। ५	२२।२७	०।४७	३। ५	५।२६
८	२४	७।४६	९।५१	११।३२	१२।५७	१४।१९	१५।५२	१७।४७	२०। १	२२।२३	०।४३	३। १	५।२२
९	२५	७।४२	९।४७	११।२८	१२।५३	१४।१५	१५।४८	१७।४३	१९।५७	२२।१९	०।३९	२।५७	५।१८
१०	२६	७।३८	९।४३	११।२४	१२।४९	१४।११	१५।४४	१७।३९	१९।५३	२२।१५	०।३५	२।५३	५।१४
११	२७	७।३५	९।३९	११।२०	१२।४५	१४। ८	१५।४०	१७।३५	१९।४९	२२।११	०।३१	२।४९	५।१०
१२	२८	७।३१	९।३५	११।१६	१२।४१	१४। ४	१५।३६	१७।३१	१९।४५	२२। ७	०।२७	२।४५	५। ७
१३	२९	७।२७	९।३१	११।१२	१२।३७	१४। ०	१५।३२	१७।२७	१९।४१	२२। ३	०।२३	२।४१	५। ३
१४	३०	७।२३	९।२७	११। ८	१२।३३	१३।५६	१५।२८	१७।२३	१९।३७	२१।५९	०।१९	२।३७	४।५९
१५	पौ. १	७।१९											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (प.) में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.)

पौष

अंग्रेजी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.
१५	१	९।२३	११। ४	१२।२९	१३।५२	१५।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५६	०।१६	२।३३	४।५५	७।१५
१६	२	९।१९	११। ०	१२।२५	१३।४८	१५।२१	१७।१५	१९।२९	२१।५२	०।१२	२।२९	४।५१	७।११
१७	३	९।१६	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१७	१७।११	१९।२५	२१।४८	०। ८	२।२५	४।४७	७। ७
१८	४	९।१२	१०।५३	१२।१८	१३।४०	१५।१३	१७। ७	१९।२२	२१।४४	०। ४	२।२१	४।४३	७। ३
१९	५	९। ८	१०।४९	१२।१४	१३।३६	१५। ९	१७। ३	१९।१८	२१।४०	०। ०	२।१७	४।३९	६।५९
२०	६	९। ४	१०।४५	१२।१०	१३।३२	१५। ५	१६।५९	१९।१४	२१।३६	२३।५६	२।१४	४।३५	६।५५
२१	७	९। ०	१०।४१	१२। ६	१३।२८	१५। १	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५२	२।१०	४।३१	६।५१
२२	८	८।५६	१०।३७	१२। २	१३।२४	१४।५७	१६।५२	१९। ६	२१।२८	२३।४८	२। ६	४।२७	६।४७
२३	९	८।५२	१०।३३	११।५८	१३।२०	१४।५३	१६।४८	१९। २	२१।२४	२३।४४	२। २	४।२३	६।४३
२४	१०	८।४८	१०।२९	११।५४	१३।१६	१४।४९	१६।४४	१८।५८	२१।२०	२३।४०	१।५८	४।१९	६।३९
२५	११	८।४४	१०।२५	११।५०	१३।१२	१४।४५	१६।४०	१८।५४	२१।१६	२३।३६	१।५४	४।१५	६।३६
२६	१२	८।४०	१०।२१	११।४६	१३। ९	१४।४१	१६।३६	१८।५०	२१।१२	२३।३२	१।५०	४।१२	६।३२
२७	१३	८।३६	१०।१७	११।४२	१३। ५	१४।३७	१६।३२	१८।४६	२१। ८	२३।२८	१।४६	४। ८	६।२८
२८	१४	८।३२	१०।१३	११।३८	१३। १	१४।३३	१६।२८	१८।४२	२१। ४	२३।२४	१।४२	४। ४	६।२४
२९	१५	८।२८	१०। ९	११।३४	१२।५७	१४।२९	१६।२४	१८।३८	२१। ०	२३।२०	१।३८	४। ०	६।२०
३०	१६	८।२४	१०। ५	११।३०	१२।५३	१४।२६	१६।२०	१८।३४	२०।५७	२३।१७	१।३४	३।५६	६।१६
३१	१७	८।२०	१०। १	११।२६	१२।४९	१४।२२	१६।१६	१८।३०	२०।५३	२३।१३	१।३०	३।५२	६।१२
१	१८	८।१६	९।५७	११।२२	१२।४४	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३। ८	१।२५	३।४७	६। ७
२	१९	८।१२	९।५३	११।१८	१२।४०	१४।१३	१६। ७	१८।२२	२०।४४	२३। ४	१।२१	३।४३	६। ३
३	२०	८। ८	९।४९	११।१४	१२।३६	१४। ९	१६। ३	१८।१८	२०।४०	२३। ०	१।१७	३।३९	५।५९
४	२१	८। ४	९।४५	११।१०	१२।३२	१४। ५	१५।५९	१८।१४	२०।३६	२२।५६	१।१४	३।३५	५।५५
५	२२	८। ०	९।४१	११। ६	१२।२८	१४। १	१५।५६	१८।१०	२०।३२	२२।५२	१।१०	३।३१	५।५१
६	२३	७।५६	९।३७	११। २	१२।२४	१३।५७	१५।५२	१८। ६	२०।२८	२२।४८	१। ६	३।२७	५।४७
७	२४	७।५२	९।३३	१०।५८	१२।२०	१३।५३	१५।४८	१८। २	२०।२४	२२।४४	१। २	३।२३	५।४३
८	२५	७।४८	९।२९	१०।५४	१२।१६	१३।४९	१५।४४	१७।५८	२०।२०	२२।४०	०।५८	३।१९	५।३९
९	२६	७।४४	९।२५	१०।५०	१२।१३	१३।४५	१५।४०	१७।५४	२०।१६	२२।३६	०।५४	३।१५	५।३६
१०	२७	७।४०	९।२१	१०।४६	१२। ९	१३।४१	१५।३६	१७।५०	२०।१२	२२।३२	०।५०	३।१२	५।३२
११	२८	७।३६	९।१७	१०।४२	१२। ५	१३।३७	१५।३३	१७।४६	२०। ८	२२।२८	०।४६	३। ८	५।२८
१२	२९	७।३२	९।१३	१०।३८	१२। १	१३।३३	१५।२८	१७।४२	२०। ४	२२।२४	०।४२	३। ४	५।२४
१३	मा१	७।२८											

माघ

अंग्रेजी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.
१३	१	९। ९	१०।३४	११।५७	१३।२९	१५।२४	१७।३८	२०। ०	२२।२०	०।३८	३। ०	५।२०	७।२४
१४	२	९। ५	१०।३०	११।५३	१३।२६	१५।२०	१७।३४	१९।५७	२२।१७	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
१५	३	९। १	१०।२७	११।४९	१३।२२	१५।१६	१७।३०	१९।५३	२२।१३	०।३०	२।५२	५।१२	७।१७
१६	४	८।५८	१०।२३	११।४५	१३।१८	१५।१२	१७।२६	१९।४९	२२। ९	०।२६	२।४८	५। ८	७।१३
१७	५	८।५४	१०।१९	११।४१	१३।१४	१५। ८	१७।२३	१९।४५	२२। ५	०।२२	२।४४	५। ४	७। ९
१८	६	८।५०	१०।१५	११।३७	१३।१०	१५। ४	१७।१९	१९।४१	२२। १	०।१९	२।४०	५। ०	७। ५
१९	७	८।४६	१०।११	११।३३	१३। ६	१५। १	१७।१५	१९।३७	२१।५७	०।१५	२।३६	४।५६	७। १
२०	८	८।४२	१०। ७	११।२९	१३। २	१४।५७	१७।११	१९।३३	२१।५३	०।११	२।३२	४।५२	६।५७
२१	९	८।३८	१०। ३	११।२५	१२।५८	१४।५३	१७। ७	१९।२९	२१।४९	०। ७	२।२८	४।४८	६।५३
२२	१०	८।३४	९।५९	११।२१	१२।५४	१४।४९	१७। ३	१९।२५	२१।४५	०। ३	२।२४	४।४४	६।४९
२३	११	८।३०	९।५५	११।१७	१२।५०	१४।४५	१६।५९	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।२०	४।४१	६।४५
२४	१२	८।२६	९।५१	११।१४	१२।४६	१४।४१	१६।५५	१९।१७	२१।३७	२३।५५	२।१६	४।३७	६।४१
२५	१३	८।२२	९।४७	११।१०	१२।४२	१४।३७	१६।५१	१९।१३	२१।३३	२३।५१	२।१३	४।३३	६।३७
२६	१४	८।१८	९।४३	११। ६	१२।३८	१४।३३	१६।४७	१९। ९	२१।२९	२३।४७	२। ९	४।२९	६।३३
२७	१५	८।१४	९।३९	११। २	१२।३४	१४।२९	१६।४३	१९। ५	२१।२५	२३।४३	२। ५	४।२५	६।२९
२८	१६	८।१०	९।३५	१०।५८	१२।३०	१४।२५	१६।३९	१९। २	२१।२२	२३।३९	२। १	४।२१	६।२५
२९	१७	८। ६	९।३१	१०।५४	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५८	२१।१८	२३।३५	१।५७	४।१७	६।२२
३०	१८	८। २	९।२८	१०।५०	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५४	२१।१४	२३।३१	१।५३	४।१३	६।१८
३१	१९	७।५९	९।२४	१०।४६	१२।१९	१४।१३	१६।२८	१८।५०	२१।१०	२३।२७	१।४९	४। ९	६।१४
१	२०	७।५५	९।२०	१०।४२	१२।१५	१४। ९	१६।२४	१८।४६	२१। ६	२३।२३	१।४५	४। ५	६।१०
२	२१	७।५१	९।१६	१०।३८	१२।११	१४। ५	१६।२०	१८।४२	२१। २	२३।२०	१।४१	४। १	६। ६
३	२२	७।४७	९।१२	१०।३४	१२। ७	१४। २	१६।१६	१८।३८	२०।५८	२३।१६	१।३७	३।५७	६। २
४	२३	७।४३	९। ८	१०।३०	१२। ३	१३।५८	१६।१२	१८।३४	२०।५४	२३।१२	१।३३	३।५३	५।५८
५	२४	७।३९	९। ४	१०।२६	११।५९	१३।५४	१६। ८	१८।३०	२०।५०	२३। ८	१।२९	३।४९	५।५४
६	२५	७।३५	९। ०	१०।२२	११।५५	१३।५०	१६। ४	१८।२६	२०।४६	२३। ४	१।२५	३।४५	५।५०
७	२६	७।३१	८।५६	१०।१९	११।५१	१३।४६	१६। ०	१८।२२	२०।४२	२३। ०	१।२१	३।४२	५।४६
८	२७	७।२७	८।५२	१०।१५	११।४७	१३।४२	१५।५६	१८।१८	२०।३८	२२।५६	१।१७	३।३८	५।४२
९	२८	७।२३	८।४८	१०।११	११।४३	१३।३८	१५।५२	१८।१४	२०।३४	२२।५२	१।१४	३।३४	५।३८
१०	२९	७।१९	८।४४	१०। ७	११।३९	१३।३४	१५।४८	१८।१०	२०।३०	२२।४८	१।१०	३।३०	५।३४
११	३०	७।१५	८।४०	१०। ३	११।३५	१३।३०	१५।४४	१८। ६	२०।२६	२२।४४	१। ६	३।२६	५।३०
१२	फा.१	७।११											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (प.) में लग्नों का समाप्तिकाल |भा. स्ट. टा.|

फाल्गुन

अंग्रेजी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
१२	१	८।३६	९।५९	११।३२	१३।२६	१५।४०	१८। ३	२०।२३	२२।४०	१। २	३।२२	५।२६	७। ७
१३	२	८।३३	९।५५	११।२८	१३।२२	१५।३६	१७।५९	२०।१९	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२३	७। ४
१४	३	८।२९	९।५१	११।२४	१३।१८	१५।३२	१७।५५	२०।१५	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१९	७। ०
१५	४	८।२५	९।४७	११।२०	१३।१४	१५।२९	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१५	६।५६
१६	५	८।२१	९।४३	११।१६	१३।१०	१५।२५	१७।४७	२०। ७	२२।२५	०।४६	३। ६	५।११	६।५२
१७	६	८।१७	९।३९	११।१२	१३। ६	१५।२१	१७।४३	२०। ३	२२।२१	०।४२	३। २	५। ७	६।४८
१८	७	८।१३	९।३५	११। ८	१३। ३	१५।१७	१७।३९	१९।५९	२२।१७	०।३८	२।५८	५। ३	६।४४
१९	८	८। ९	९।३१	११। ४	१२।५९	१५।१३	१७।३५	१९।५५	२२।१३	०।३४	२।५४	४।५९	६।४०
२०	९	८। ५	९।२७	११। ०	१२।५५	१५। ९	१७।३१	१९।५१	२२। ९	०।३०	२।५०	४।५५	६।३६
२१	१०	८। १	९।२३	१०।५६	१२।५१	१५। ५	१७।२७	१९।४७	२२। ५	०।२६	२।४६	४।५१	६।३२
२२	११	७।५७	९।२०	१०।५२	१२।४७	१५। १	१७।२३	१९।४३	२२। १	०।२२	२।४३	४।४७	६।२८
२३	१२	७।५३	९।१६	१०।४८	१२।४३	१४।५७	१७।१९	१९।३९	२१।५७	०।१९	२।३९	४।४३	६।२४
२४	१३	७।४९	९।१२	१०।४४	१२।३९	१४।५३	१७।१५	१९।३५	२१।५३	०।१५	२।३५	४।३९	६।२०
२५	१४	७।४५	९। ८	१०।४०	१२।३५	१४।४९	१७।११	१९।३१	२१।४९	०।११	२।३१	४।३५	६।१६
२६	१५	७।४१	९। ४	१०।३६	१२।३१	१४।४५	१७। ७	१९।२७	२१।४५	०। ७	२।२७	४।३१	६।१२
२७	१६	७।३७	९। ०	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७। ४	१९।२४	२१।४१	०। ३	२।२३	४।२८	६। ८
२८	१७	७।३४	८।५६	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१७। ०	१९।२०	२१।३७	२३।५९	२।१९	४।२४	६। ५
१	१८	७।३०	८।५२	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।५५	२।१५	४।२०	६। १
२	१९	७।२६	८।४८	१०।२१	१२।१५	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।२९	२३।५१	२।११	४।१६	५।५७
३	२०	७।२२	८।४४	१०।१७	१२।११	१४।२६	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।४७	२। ७	४।१२	५।५३
४	२१	७।१८	८।४०	१०।१३	१२। ८	१४।२२	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।४३	२। ३	४। ८	५।४९
५	२२	७।१४	८।३६	१०। ९	१२। ४	१४।१८	१६।४०	१९। ०	२१।१८	२३।३९	१।५९	४। ४	५।४५
६	२३	७।१०	८।३२	१०। ५	१२। ०	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।१४	२३।३५	१।५५	४। ०	५।४१
७	२४	७। ६	८।२८	१०। १	११।५६	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२१।१०	२३।३१	१।५१	३।५६	५।३७
८	२५	७। २	८।२४	९।५७	११।५२	१४। ६	१६।२८	१८।४८	२१। ६	२३।२७	१।४८	३।५२	५।३३
९	२६	६।५८	८।२०	९।५३	११।४८	१४। २	१६।२४	१८।४४	२१। २	२३।२३	१।४४	३।४८	५।२९
१०	२७	६।५४	८।१७	९।४९	११।४४	१३।५८	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।२०	१।४०	३।४४	५।२५
११	२८	६।५०	८।१३	९।४५	११।४०	१३।५४	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२३।१६	१।३६	३।४०	५।२१
१२	२९	६।४६	८। ९	९।४१	११।३६	१३।५०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३।१२	१।३२	३।३६	५।१७
१३	३०	६।४२	८। ५	९।३८	११।३२	१३।४६	१६। ९	१८।२९	२०।४६	२३। ८	१।२८	३।३२	५।१३
१४	चै. १	५।३८											

चैत्र

अंग्रेजी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
१४	१	८। १	९।३४	११।२८	१३।४२	१६। ५	१८।२५	२०।४२	२३। ४	१।२४	३।२९	५। ९	६।३५
१५	२	७।५७	९।३०	११।२४	१३।३८	१६। १	१८।२१	२०।३८	२३। ०	१।२०	३।२५	५। ५	६।३१
१६	३	७।५३	९।२६	११।२०	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।२१	५। २	६।२७
१७	४	७।४९	९।२२	११।१६	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।१७	४।५८	६।२३
१८	५	७।४५	९।१८	११।१२	१३।२७	१५।४९	१८। ९	२०।२७	२२।४८	१। ८	३।१३	४।५४	६।१९
१९	६	७।४१	९।१४	११। ९	१३।२३	१५।४५	१८। ५	२०।२३	२२।४४	१। ४	३। ९	४।५०	६।१५
२०	७	७।३७	९।१०	११। ५	१३।१९	१५।४१	१८। १	२०।१९	२२।४०	१। ०	३। ५	४।४६	६।११
२१	८	७।३३	९। ६	११। १	१३।१५	१५।३७	१७।५७	२०।१५	२२।३६	०।५६	३। १	४।४२	६। ७
२२	९	७।२९	९। २	१०।५७	१३।११	१५।३३	१७।५३	२०।११	२२।३२	०।५२	२।५७	४।३८	६। ३
२३	१०	७।२५	८।५८	१०।५३	१३। ७	१५।२९	१७।४९	२०। ७	२२।२८	०।४९	२।५३	४।३४	५।५९
२४	११	७।२२	८।५४	१०।४९	१३। ३	१५।२५	१७।४५	२०। ३	२२।२५	०।४५	२।४९	४।३०	५।५५
२५	१२	७।१८	८।५०	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४१	१९।५९	२२।२१	०।४१	२।४५	४।२६	५।५१
२६	१३	७।१४	८।४६	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३७	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।४१	४।२२	५।४७
२७	१४	७।१०	८।४२	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३३	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।३७	४।१८	५।४३
२८	१५	७। ६	८।३८	१०।३३	१२।४७	१५।१०	१७।३०	१९।४७	२२। ९	०।२९	२।३३	४।१४	५।३९
२९	१६	७। २	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५। ६	१७।२६	१९।४३	२२। ५	०।२५	२।३०	४।१०	५।३६
३०	१७	६।५८	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५। २	१७।२२	१९।४०	२२। १	०।२१	२।२६	४। ७	५।३२
३१	१८	६।५४	८।२७	१०।२१	१२।३६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५७	०।१७	२।२२	४। ३	५।२८
१	१९	६।५०	८।२३	१०।१७	१२।३२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।५३	०।१३	२।१८	३।५९	५।२४
२	२०	६।४६	८।१९	१०।१३	१२।२८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४९	०। ९	२।१४	३।५५	५।२०
३	२१	६।४२	८।१५	१०।१०	१२।२४	१४।४६	१७। ६	१९।२४	२१।४५	०। ५	२।१०	३।५१	५।१६
४	२२	६।३८	८।११	१०। ६	१२।२०	१४।४२	१७। २	१९।२०	२१।४१	०। १	२। ६	३।४७	५।१२
५	२३	६।३४	८। ७	१०। २	१२।१६	१४।३८	१६।५८	१९।१६	२१।३७	२३।५७	२। २	३।४३	५। ८
६	२४	६।३०	८। ३	९।५८	१२।१२	१४।३४	१६।५४	१९।१२	२१।३३	२३।५३	१।५८	३।३९	५। ४
७	२५	६।२६	७।५९	९।५४	१२। ८	१४।३०	१६।५०	१९। ८	२१।२९	२३।५०	१।५४	३।३५	५। ०
८	२६	६।२३	७।५५	९।५०	१२। ४	१४।२६	१६।४६	१९। ४	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३१	४।५६
९	२७	६।१९	७।५१	९।४६	१२। ०	१४।२२	१६।४२	१९। ०	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२७	४।५२
१०	२८	६।१५	७।४७	९।४३	११।५६	१४।१८	१६।३८	१८।५६	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२३	४।४८
११	२९	६।११	७।४३	९।३८	११।५२	१४।१४	१६।३४	१८।५२	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।१९	४।४४
१२	३०	६। ७	७।४०	९।३४	११।४८	१४।११	१६।३१	१८।४८	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१५	४।४१
१३	वै. १	६। ३											

अक्षांशादि सारिणी   भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. स.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकोला (म. रा.)	२०।४२	७७। २	—२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	—१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	—२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	—१२।२०	झांसी	२५।२७	७८।३७	—१५।३२
अगरतला	२३।४९	९१।१७	+३५।०८	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	—२६।३२	झालावाड़	२४।३६	७४। ९	—३३।२४
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	—३०।४८	कोहिमा	२५।४१	९४। ७	+४६।२८	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	—२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	—३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	— १। ४	कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	—२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	—१७। ०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	— ११।२०	खम्भात	२२।१९	७२।३६	—३९।३६	डूंगरपुर (राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५। ८
अलवर	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	गया	२४।४९	८५। १	+१०। ४	डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	—४९।५४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	—३०।४८	गंगटोक	२७।२०	८८।४०	+२४।४०	त्रिवेन्द्रम्	८।३०	७६।५७	—२२।१२
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	—३९।२८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	—४०। ८
अलीगढ़ (यू. पी.)	२७।५४	७८। ६	— १७।३६	गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
आगरा (,,)	२७।१०	७८। ५	—१७।४०	गिलगित	३५।५५	७४।२२	—३२।३२	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
आजमगढ़ (,,)	२६। ५	८३।१७	+ २।४८	गोंडा (उ. प्र.)	२७।१०	८१।५७	— २।१२	द्वारिका	२२।१४	६९। १	—५३।५६
आबू	२४।४०	७२।४५	—३९। ०	गौहाटी	२६।११	९१।४५	+३७। ०	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
इटावा	२६।४८	७९। २	—१३।५२	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	—२८।१२	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	—२६।४०	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६	देहरादून	३०।१९	७८। ४	—१७।४४
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	—२७। ८	गोवा	१५।३०	७३।५७	—३४।१२	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२८
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	चम्बा	३२।२९	७६।१०	—२५।२०	नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	—३८।२०
एलिचपुर (म. रा)	२१।१८	७७।३३	— १९।४८	चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	—[illegible]।३२	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	—३०।५६
औरङ्गाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	— २८।२८	चीरापुन्जी	२५।१७	९१।४७	+	नागपुर	२१। ९	७९। ९	—१३।२४
कठूवा (कश्मीर)	३२।१७	७५।३६	—२७।३६	छतरपुर	२४।५४	७९।३८	—११।२८	नाभा	३०।२५	७६। ९	—२५।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	—२८।२०	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	—३४।३२
करनाल	२९।४२	७७। २	—२१।५२	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	नासिक	२०। २	७३।५०	—३४।४०
कटक	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	—१२। ०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	—१०। ४	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
कोडकनाल	१०।१३	७७।२८	— २०।०८	जयपुर	२६।५५	७५।५२	—२६।३२	पटियाला	३०।२०	७६।२५	—२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	— ८।२४	जालन्धर	३१।१९	७५।३४	—२७।४४	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	—२७।१२
कटनी (म. प्र.)	२३।५०	८०।२३	— ८।२८	जामनगर	२२।२७	७०। ७	—४९।३२	प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	— २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जीन्द	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	—१०।२८
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	—२४।४८	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	पुन्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	—३३।२८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	—३४।२४	जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	—४६।१२	पूना	१८।३०	७३।५३	—३४।२८
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	—२२।४८	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	—३७।४४	पोर्टब्लेअर (अण्डेमान)	११।४०	९२।४६	+४१। ४
				जौनपुर	२५।४६	८२।४८	+ ०।५६				

अक्षांशादि सारिणी

भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
पंजिम	१५।२९	७३।४९	—३४।४४	रतलाम	२३।२०	७५। ७	—२९।३२
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	-५०।४४	रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	—३६।४४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	-११।३२	रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	—१२।३२
फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	—३१।००	रायबरेली	२६।१५	८१।१६	— ४।५६
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	—३१।२०	राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७। ५	८१।४८	— २।४८
बड़ौदा	१२। ०	७३।३०	—३६। ०	रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	—२३।२०
बम्बई	१९। ०	७२।५४	—३८।२४	रीवां	२४।३१	८१।१६	— ४।४४
बरेली	२८।२२	७९।२७	—१२।१२	रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	— ३।१६
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	—११।५२	राजकोट	२२।१८	७०।५६	—४६।१६
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	रोहतक	२८।५४	७६।३८	—२३।२८
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५४	—१८।२४	रोपड़ (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	—२४।००
बिलासपुर (म. प्र)	२२। ५	८२।१३	— १। ८	लखनऊ	२६।५५	८०।५९	— ६। ४
बीकानेर	२८। १	७३।२२	—३६।३२	लश्कर	२६।११	७८। ८	—१७।२८
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	—२६।५२	लाचेन (सिक्किम)	२७।४४	८८।३४	+२४।१६
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	—१९।२८	लोहारू	२८।२६	७५।४७	—२६।५२
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	—३०। ०	लुधियाना	३०।५५	७५।५४	—२६।२४
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	—२०। ०	शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६
भागलपुर	२५।१४	८६।५९	+१७।५६	शिमला	३१। ६	७७।१३	—२१। ८
भोपाल	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	—३०।३६
भुज	२३।१६	६९।४८	—५०।४८	सवाई (माधोपुर)	२६। ०	७६।३०	—२४।००
मद्रास	१३। ४	८०।१७	— ८।५२	सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	—२०।२८
मथुरा	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	—१५।४८
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५९	—२६। ४	सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	—३३।५२
मंगलोर	२४। ४	७५। ५	—२९।४०	सागर (म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५। ०
मछलीपट्टम	१६।०९	८१।०८	— ५।२८	सूरत	२१।१२	७२।५२	—३८।३२
मिर्जापुर	२५।१०	८२।३३	+ ०।१२	सोलन (हि. प्र)	३०।५५	७७। ९	—२१।२४
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	+११।४८	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	—१७। ८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	+४५।५२	हिसार	२९।१०	७५।४६	—२६।५६
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	—१४।४४	हाथरस	२७।३६	७८। ६	—१७।३६
मेरठ	२९। १	७७।४५	—१९। ०	हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	—१६। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	—२३।१२	होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	—२६।१२
मण्डी (हि. प्र.)	३१।४२	७६।५८	—२२। ८	होशंगाबाद (म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९। ०
रांची	२३।२०	८५।२०	+११।२०				

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टैं. टा. से देशीय स्टैं. टा. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अ. क.	अं. क.	घ. मि.	मि. से.
काबुल (अफगा.)	उ.३४।३३	पू. ६९।१२	— १। ०	+ ६।४८
कन्दहार	उ.३१।३७	पू. ६५।३०	— १। ०	— ८।-०
बैंगकाक (स्याम)	उ.१३।४२	पू.१००।३०	+ १।३०	—१८। ०
इस्तंबूल (टर्की)	उ.४१। ०	पू. २९। ०	— ३।३०	— ४। ०
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	पू. ४४।२७	— २।३०	— २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू. ३९।५४	— २।३०	—२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू. ५१।२५	— २। ०	— ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू. ३१।१५	— ३।३०	+ ५। ०
जेनेवा (स्विट्जर पू.	उ.४६।१३	पू. ६। ७	— ४।३०	—३५।३२
जेरुसलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू. ३५।१४	— ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प. ७४। ०	—१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन ,,	उ.३८।५५	प. ७७। ४	—१०।३०	— ८।१६
बर्लिन (पू. जर्मनी)	उ.५२।३२	पू. १३।२५	— ४।३०	— ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२६	पू. १९। ३	— ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	— ५।३०	— ०।२०
ग्रीनविच ,,	उ.५१।३०	०। ०	— ५।३०	— ०।०
लिस्बन (पुर्तगाल)	उ.३८।४४	पू. ९। ६	— ५।३०	—३६।३६
नैरोबी (केन्या)	द. १।१८	पू. ३६।५२	— २।३०	—३२।३२
मोम्बासा ,,	द. ४। ०	पू. ३९।४०	— २।३०	—२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू. ३२।५६	— २।३०	—४८।१६
मोशी ,,	द. ३।२१	पू. ३७।२०	— २।३०	—३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	पू.१३९।३२	+ ३।३०	+१८। ८
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	पू. २।२०	— ४।३०	—५०।४०
मास्को (रूस)	उ.५५।४५	पू. ३७।३७	— २।३०	—९९।३२
रोम (इटली)	उ.४१।५५	पू. १२।२८	— ४।३०	—१०। ८
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१२	पू.११४।१०	+ २।३०	—२३।२०
पीकिंग ,,	उ.३९।५५	पू.११६।२४	+ २।३०	—१४।२४

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं असाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखांश की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए किन्तु भिन्न २ अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे १२१ पृष्ठ पर हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न दशम स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्टकाल, दिनमान और इष्ट-कालिक स्पष्ट की जरूरत नहीं होती जब कि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उसदिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पञ्चांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अब इस अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए :—

पीछे २९, ३०, ३१, अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं और अगले अंश के नीचे जो घड़ी पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को सहायक सारणी (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहिले कालम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्टसूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखें हों उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी-पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटा कर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी-पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ीपल लग्नसारणी में ढूंढिए जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिये। 'सारणीस्थ घड़ीपलों' के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ीपलों का "सारणीस्थ घड़ीपलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ीपलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं। उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण— मान लीजिए,—वि. सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ का ५८ घ. ४५प. इष्ट पर शिमला (हि. प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अं. ६क. (उत्तर) है, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५प. के दाईं ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २प. लिखे हैं। इनका २ घ. ५५ प. से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहिले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्टसूर्य की ३७ क. ४७वि. नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में "अभीष्ट घड़ी पल" १ घ. ४४ प. नहीं है, अतः इस से कुछ कम १ घ. ४० प. सारणी में देखे जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहिले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखे हैं। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों' (१ घ. ४० प.) के दाईं ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० प. से अन्तर ६ प. "सारणीस्थ अन्तर" है। "अभीष्ट घड़ीपल" (१ घ. ४४ प.) और "सारणीस्थ घड़ी पल" (१ घ. ४० प.) का अन्तर ४ पल है। "सहायक सारणी" की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए ४ पल के नीचे "सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ पल के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हें ११ रा. २१ अं में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे +१ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

पीछे साम्पातिक काल द्वारा दशमलग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तत्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम-साधन विधि : इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिन-मान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह 'नतकाल' होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्टसूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशमलग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

लिखे हैं। उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला

सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशम लग्न साधन का उदाहरण:- वि. सं २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. हैं अत: दिनार्ध १६ घ. ० प हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प० में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारिणी में स्पष्ट सूर्य की० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प "अभीष्ट घड़ी पल" हुए। "दशम लग्न सारणी" में इन "अभीष्ट घटी पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ "सारणीस्थ घ. प." धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं अत: ८ रा. १६ अ. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। "सारणीस्थ घड़ी पल" ४६।४२ और "अभीष्ट घड़ी पल" ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० प. के आगे ५ प के नीचे ३० क. ० वि. मिलीं. इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे दिया गया, अयनांश संस्कार + १ क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ० वि. निरयण दशम लग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
६	१०। ०	२०। ०	३०। ०	४०। ०	५०। ०	६०। ०							
७	८।३४	१७। ९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०। ०						
८	७।३०	१५। ०	२२।३०	३०। ०	३७।३०	४५। ०	५२।३०	६०। ०					
९	६।४०	१३।२०	२०। ०	२६।४०	३३।२०	४०। ०	४६।४०	५३।२०	६०। ०				
१०	६। ०	१२। ०	१८। ०	२४। ०	३०। ०	३६। ०	४२। ०	४८। ०	५४। ०	६०। ०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९। ५	५४।३३	६०। ०		
१२	५। ०	१०। ०	१५। ०	२०। ०	२५। ०	३०। ०	३५। ०	४०। ०	४५। ०	५०। ०	५५। ०	६०। ०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३। ५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०। ०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०१०	+१७	२०१६	+१२	२०२२	+७	२०२८	+२	२०३४	—३	२०४०	—८
२०११	+१७	२०१७	+१२	२०२३	+७	२०२९	+१	२०३५	—४	२०४१	—९
२०१२	+१६	२०१८	+११	२०२४	+६	२०३०	+१	२०३६	—४	२०४२	—९
२०१३	+१५	२०१९	+१०	२०२५	+५	२०३१	०	२०३७	—५	२०४३	—१०
२०१४	+१४	२०२०	+९	२०२६	+४	२०३२	—१	२०३८	—६	२०४४	—११
२०१५	+१३	२०२१	+८	२०२७	+३	२०३३	—२	२०३९	—७	२०४५	—१२

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी "गणक मार्तण्ड" पुस्तक की प्रतीक्षा करें जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों (लगभग ७ हजार नगरों) के अक्षांश रेखांश तथा अन्य अनेक लग्नोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्न सारणियाँ दी गई हैं, जिनकी मदद से लग्न आदि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहाँगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

लग्न सारणी (अक्षांश, २१ उत्तर)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	घ.	११	११	११	[illegible]	१२	१२	१२	१२	१२	१२	[illegible]	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
४	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मकर	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुम्भ	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	[illegible]
११	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिल्ली, मेरठ, ... जीन्द, ... आदि के लिए

लग्न सारणी (अक्षांश ... उत्तर)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
०	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मकर	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुम्भ	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

... आदि के लिए

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	प.	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४२	५१	१	११	२१
मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	प.	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	प.	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६	प.	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७	प.	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४१

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालन्धर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
०	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन	घ.	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२
कर्क	घ.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिंह	घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या	घ.	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला	घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक	घ.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु	घ.	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२
मकर	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कुम्भ	घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' (*Sidereal Time*) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"—इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक-विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं।

विधि :—सां.का. (साम्पातिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते हैं, तैयार करें—

(१) **अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)**
(२) **अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)**
(३) **अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+ या —)**

ये तीनों उपकरण **'अक्षांशादि सारणी'** से उठाइये।

विशेष यदि **"अक्षांशादि सारणी"** में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

ध्यान रहे—भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही हैं।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यमकाल— जिस समय लग्नस्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड-टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो वहां) के स्टैण्डर्ड-अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का **"स्थानीयमध्यमकाल"** बन जाता है। '+' यह चिन्ह जोड़ने की एवं '—' यह चिन्ह घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है।

जैसे – चण्डीगढ़ में दोपहर के १२ घं. ५७ मि. (भा. स्टै. टा.) पर स्थानीयमध्यमकाल जानने के लिए हम (भा. स्टै. टा.) में से चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर—२२ मिनट ३२ सैकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१ सितं. १९४२ ई. से १५ अक्तू. १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थीं। अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे—सन् १९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन के १२ बजकर ४५ मि. पर पैदा हुआ। इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्मकाल भा.स्टै.टा. के अनुसार ११ घं. ४५ मि. मानना होगा।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश आगे दो [नं. (१) और नं. (२)] अयनांश-सारणियां दी गई हैं। अयनांशसारणी नं. (१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें और 'अयनांशसारणी' सारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें;—यह अयनांश होगा।

जैसे —१५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए **"अयनांशसारणी"** नं. (१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३ अं. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया। इसमें **"अयनांशसारणी"** नं. (२) से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल— आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर 'इष्टकालिक साम्पातिककाल' इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—

सां. का. कोष्टक नं. (१) में से अभीष्ट सन का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीपईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें। इसमें सां. का. कोष्ठक नं. (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सां. का. के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में **स्थानीयमध्यमकाल** के घण्टा-मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं. (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का. बन जाएगा। इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण— यहांहम १५ जुलाई १९६९ को भा.स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि पर चम्बा (हि.प्र.) में सां.का. स्पष्ट करेंगे। अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टै. अन्तर—२५ मि. २० सै. है। स्टैण्डर्डअन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे ४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० सै. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ। सां.का. कोष्ठक नं. (१) से सन् १९६९ ई. का सां.का. (६ घं. ४१ मि. २ सै.) लिया। इससे कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सां.का. (१२ घं. ४८ मि.४९ सै.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ सै. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अब १९ घं. २९ मि. ५१ सै. में चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १० घं. १९ मि. ४० सै. जोड़ा तो २९ घं. ४९ मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के १० घं. २० मि. से उठाए गए १ मि. ४२ सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ सै. हुए। यहां घण्टे २४ से अधिक हैं अतः २४ घं. घटाएं तो ५ घं ५१ मि. १३ सै. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन तीन बातों को भी ध्यान में रखें :—

[१] यदि धन (+) चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टै. अं.) के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल ४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में २४ मि. जोड़ कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें। जैसे—कलकत्ता में २ जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बजकर ५५ मि.) भा.स्टै.टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। कलकत्ता का रेखांश

११ बजकर ५५ मि.) भा.स्टै.टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। कलकत्ता का रेखांश

८८ अं. २४ क, (पूर्व) और स्टैं अन्तर+२३ मि. ३६ सै. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए २३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि, ३६ सै. हुए। यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है, अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ सै. स्थानीय-मध्यमकाल हुआ। अब सां.का. बनाने के लिए कोष्ठक नं. (१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ सै. में कोष्ठक नं. (२) से लिए गए २ जन के ० घं. ३ मि. ५७ सै. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं० (३) से कलकत्ता के रेखांश ८८ से प्राप्त—८ सै. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ सै. हुए। इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं, २ मि. ३७ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ सै. जोड़ने पर ७ घं. २ मि. ४० सै. हुए। क्योंकि स्टैं. टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था। अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० सै. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना। लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. का प्रयोग में लाइए।

[२] सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें, कि यदि स्टैं. टा. से (—) ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड़ कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सां. का. कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैसे—जयपुर में १५ मार्च १९७० को ० घं. १५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टैं. अं.—२६ मि. ३२ सै. है। यहां स्टैं.टा. के घं मि. से स्टैं. अं. ज्यादा है, अत: स्टैं.टा. में २४ घं जोड़ कर स्टै. अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना। सां. का. के कोष्ठक नं. (१) से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ सै. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ सै. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ सै. हुए। जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार लगभग ० है। अब ११ घं. २७ मि. ५४ सै. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ सै. हुए। क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था, अत: यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग हम नहीं करेंगे। इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११ घं. १६ मि. २२ सै. ही हुआ। यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए।

[३] जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं—लीपइयर (२९ फरवरी वाले साल) में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे—मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१)" में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ सै. मिले। क्योंकि हमारा सन् लीपइयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च) फरवरी के बाद की भी है, इसलिए "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं. ५१ मि. ४५ सै.) ही लेंगे और इन्हें ही ६ घं. ३७ मि. १७ सै. में जोड़ेंगे। ध्यान रहे—यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" से १० फर. के घं. मि. सै. ही उठाने होंगे।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि —

ऊपर दी गई विधि से आने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं ओर वाले पहिले कालम में देखें। इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश-कला लिखी है, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अंक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है। अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मि. न मिलें, और यह भी अधिकतर सम्भव है कि आपको अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी न मिले। ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम) सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम (अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखी लग्न की अंश-कलाएं नोट करें—यह "स्थूलतम लग्न" है। अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३० मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है)। ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें। ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह "३ अक्षांशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी। अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" के धन-ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा। इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि — लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशम-लग्न) दिया गया है। इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात्—दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षांशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं.मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न) की अंश-कलाएं उठा लें। यह "स्थूलदशमलग्न" है। सां. का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएँ मिलेंगी। इन्हें 'स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा। इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण — चम्बा (हि. प्र.) में १५ जुलाई सन्.१९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सां. का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है। चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. हैं। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है। यह "स्थूलतम लग्न" है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का. ६ घं ० मि. के आगे १८० अं. ० क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. २६.क. (=३८६ क.) लग्न की ३० मि. की गति है। हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है। इन २१ मि. (सां. का. के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मि० की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७०क. (=४ अं.३०क.) मिलीं। इन्हें "स्थूलतमलग्न" में जोड़ने पर १७८

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ थ]

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	अक्षांश १७° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
०।०	०।०	९३।१२	९४।२४	९५।४०	९६।५६	९८।१४
०।३०	८।१०	१००।३	१०१।१५	१०२।२७	१०३।४१	१०४।५७
१।०	१६।१७	१०६।५४	१०८।३	१०९।११	११०।२४	१११।३६
१।३०	२४।१८	११३।४७	११४।५३	११५।५९	११७।६	११८।१४
२।०	३२।११	१२०।४३	१२१।४५	१२२।४७	१२३।५०	१२४।५२
२।३०	३९।५५	१२७।४५	१२८।४३	१२९।४०	१३०।३६	१३१।३२
३।०	४७।२८	१३४।५४	१३५।४५	१३६।३६	१३७।२७	१३८।१८
३।३०	५४।५१	१४२।१०	१४२।५५	१४३।३९	१४४।२२	१४५।६
४।०	६२।५	१४९।३३	१५०।१०	१५०।४६	१५१।२३	१५१।५८
४।३०	६९।१२	१५७।३	१५७।३१	१५८।०	१५८।२७	१५८।५५
५।०	७६।११	१६४।३८	१६४।५८	१६५।१७	१६५।३६	१६५।५४
५।३०	८३।७	१७२।१८	१७२।२८	१७२।३८	१७२।४७	१७२।५७
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८७।४२	१८७।३२	१८७।२२	१८७।१३	१८७।३
७।०	१०३।४९	१९५।२२	१९५।२	१९४।४३	१९४।२४	१९४।६
७।३०	११०।४८	२०२।५७	२०२।२९	२०२।०	२०१।३३	२०१।५
८।०	११७।५२	२१०।२७	२०९।५०	२०९।१४	२०८।३७	२०८।२
८।३०	१२५।९	२१७।५०	२१७।५	२१६।२१	२१५।३८	२१४।५४
९।०	१३२।३२	२२५।६	२२४।१५	२२३।२४	२२२।३३	२२१।४२
९।३०	१४०।५	२३२।१५	२३१।१७	२३०।२०	२२९।२४	२२८।२७
१०।०	१४७।४९	२३९।१७	२३८।१५	२३७।१३	२३६।१०	२३५।८
१०।३०	१५५।४२	२४६।१३	२४५।७	२४४।१	२४२।५४	२४१।४६
११।०	१६३।४३	२५३।६	२५१।५७	२५०।४७	२४९।३६	२४८।२४
११।३०	१७१।५०	२५९।५७	२५८।४५	२५७।३३	२५६।१९	२५५।३
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	आक्षाश २६° (उ.)	अक्षांश ३०° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६
१२।३०	१८८।१०	२७३।४१	२७२।२७	२७१।११	२६९।५३	२६८।३३
१३।०	१९६।१७	२८०।३९	२७९।२५	२७८।९	२७६।५०	२७५।२९
१३।३०	२०४।१८	२८७।४३	२८६।३०	२८५।१५	२८३।५७	२८२।३५
१४।०	२१२।११	२९४।५७	२९३।४६	२९२।३३	२९१।१६	२८९।५५
१४।३०	२१९।५५	३०२।२१	३०१।१४	३००।४	२९८।५०	२९७।३२
१५।०	२२७।२८	३०९।५८	३०८।५६	३०७।५१	३०६।४२	३०५।२८
१५।३०	२३४।५१	३१७।४९	३१६।५४	३१५।५५	३१४।५३	३१३।४५
१६।०	२४२।५	३२५।५४	३२५।७	३२४।१७	३२३।२३	३२२।२५
१६।३०	२४९।१२	३३४।१२	३३३।३५	३३२।५५	३३२।१२	३३१।२६
१७।०	२५६।११	३४२।४१	३४२।१५	३४१।४८	३४१।१८	३४०।४५
१७।३०	२६३।७	३५१।१८	३५१।५	३५०।५१	३५०।३६	३५०।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	८।४१	८।५५	९।९	९।२४	९।४१
१९।०	२८३।४९	१७।१९	१७।४५	१८।१२	१८।४२	१९।१५
१९।३०	२९०।४८	२५।४८	२६।२५	२७।५	२७।४८	२८।३४
२०।०	२९७।५५	३४।६	३४।५३	३५।४३	३६।३७	३७।३५
२०।३०	३०५।९	४२।११	४३।६	४४।५	४५।७	४६।१४
२१।०	३१२।३२	५०।२	५१।४	५२।९	५३।१८	५४।३२
२१।३०	३२०।५	५७।३९	५८।४६	५९।५६	६१।१०	६२।२८
२२।०	३२७।४९	६५।३	६६।१४	६७।२७	६८।४४	७०।५
२२।३०	३३५।४२	७२।१७	७३।३०	७४।४५	७६।३	७७।२५
२३।०	३४३।४३	७९।२१	८०।३५	८१।५१	८३।१०	८४।३१
२३।३०	३५१।५०	८६।१९	८७।३३	८८।४९	९०।७	९१।२०
२४।०	०।०	९३।१२	९४।२५	९५।४०	९६।५६	९८।१४

अं ४ क. "स्थूल लग्न" हुआ। अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क हुआ. यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है, अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गतिकलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्नगति धन है अत: इसे "स्थूललग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायनलग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा. ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

[illegible] का उदाहरण :— १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टें. टा.) पर ही चम्बा (हि. प्र.) में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां. का. ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशमलग्न ८३ अं ७ क. है, यह "स्थूलदशमलग्न" है। सारणी में सां. का. ५ घं ३० मि. और ६ घं. ० मि. के आगे दशमलग्न क्रमश: ८३ अं. ७ क एवं ९० अं. ० क. है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.—५ घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४ अं. ४९ क.) मिलीं। इन्हें "स्थूल दशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं ५६ क. सायनदशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (=२ रा. ४ अं. ३० क.) इष्टकालिक निरयण दशमलग्न हुआ।

[illegible] दें :- यहां हमने सां का. के संकल्प और अवलोप की विकलाओं को अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में सम्भव नहीं है; इस तथ्य का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "अवकलासंख्य" में हमने किया है—वहां पढ़ें।

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिये) [भाग २ य]

साम्पातिक काल	सभी स्थानों के लिए	अक्षांश २३° (उ.)	अक्षांश २६°(उ.)	अक्षांश २९° (उ.)	अक्षांश ३२° (उ.)	अक्षांश ३५° (उ.)	साम्पातिक काल	सभी स्थानों के लिए	अक्षांश २३° (उ.)	अक्षांश २६° (उ.)	अक्षांश २९° (उ.)	अक्षांश ३२° (उ.)	अक्षांश ३५° (उ.)
घं. मि.	दशम अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	घं. मि.	दशम अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.
०।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४	१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६
०।३०	८।१७	१०६।१४	१०७।३४	१०८।५७	११०।२४	१११।५३	१२।३०	१८८।१०	२६७।१०	२६५।४३	२६४।१२	२६२।३३	२६०।५४
१।०	१६।१७	११२।४९	११४।४	११५।२२	११६।४३	११८।७	१३।०	१९६।१७	२७४।३	२७२।३४	२७१।०	२६९।२१	२६७।३३
१।३०	२४।१८	११९।२२	१२०।१३	१२१।४५	१२३।०	१२४।१७	१३।३०	२०४।१८	२८१।९	२७९।३९	२७८।२	२७६।१९	२७४।२९
२।०	३२।११	१२५।५६	१२७।०	१२८।७	१२९।१७	१३०।२५	१४।०	२१२।११	२८८।३०	२८६।५९	२८५।२२	२८३।३६	२८१।४७
२।३०	३९।५५	१३२।३१	१३३।२९	१३४।२९	१३५।३०	१३६।३२	१४।३०	२१९।५५	२९६।९	२९४।४०	२९३।४	२९१।३०	२८९।२९
३।०	४७।२८	१३९।९	१४०।०	१४०।५२	१४१।४५	१४२।४०	१५।०	२२७।२८	३०४।१०	३०२।४४	३०१।१२	२९९।२८	२९७।३८
३।३०	५४।५१	१४५।५०	१४६।३४	१४७।१८	१४८।४	१४८।५०	१५।३०	२३४।५१	३१२।३३	३११।१५	३०९।४८	३०८।१३	३०६।२५
४।०	६२।५	१५२।३४	१५३।१०	१५३।४७	१५४।२४	१५५।१	१६।०	२४२।५	३२१।२२	३२०।१३	३१८।५६	३१७।३०	३१५।५४
४।३०	६९।१२	१५९।२२	१५९।५०	१६०।१७	१६०।४६	१६१।१४	१६।३०	२४९।१२	३३०।३५	३२९।३९	३२८।३६	३२७।२५	३२६।४
५।०	७६।११	१६६।१३	१६६।३२	१६६।५०	१६७।९	१६७।२८	१७।०	२५६।११	३४०।९	३३९।३०	३३८।४५	३३७।५४	३३६।५५
५।३०	८३।७	१७३।६	१७३।१५	१७३।२५	१७३।३४	१७३।४४	१७।३०	२६३।७	३५०।०	३४९।४०	३४९।१६	३४८।४९	३४८।१९
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
६।३०	९६।५३	१८६।५४	१८६।४५	१८६।३५	१८६।२६	१८६।१६	१८।३०	२७६।५३	१०।०	१०।२०	१०।४४	११।११	११।४१
७।०	१०३।४९	१९३।४७	१९३।२८	१९३।१०	१९२।५१	१९२।३२	१९।०	२८३।४९	१९।५१	२०।३०	२१।१५	२२।६	२३।४
७।३०	११०।४८	२००।३८	२००।१०	१९९।४३	१९९।१४	१९८।४६	१९।३०	२९०।४८	२९।२५	३०।२१	३१।२४	३२।३५	३३।५५
८।०	११७।५५	२०७।२६	२०६।५०	२०६।१३	२०५।३६	२०४।५९	२०।०	२९७।५५	३८।३८	३९।४७	४१।४	४२।३०	४४।६
८।३०	१२५।९	२१४।१०	२१३।२६	२१२।४२	२११।५६	२११।१०	२०।३०	३०५।९	४७।२७	४८।४५	५०।१२	५१।४७	५३।३५
९।०	१३२।३२	२२०।५१	२२०।०	२१९।८	२१८।१५	२१७।२०	२१।०	३१२।३२	५५।५०	५७।११	५८।४८	६०।३२	६२।२२
९।३०	१४०।५	२२७।२९	२२६।३१	२२५।३१	२२४।३०	२२३।२८	२१।३०	३२०।५	६३।५१	६५।२०	६६।५६	६८।४०	७०।३४
१०।०	१४७।४९	२३४।४	२३३।०	२३१।५३	२३०।४५	२२९।३५	२२।०	३२७।४९	७१।३०	७३।१	७४।३८	७६।२४	७८।१९
१०।३०	१५५।४२	२४०।३८	२३९।२७	२३८।१५	२३७।०	२३५।४१	२२।३०	३३५।४२	७८।५१	८०।२१	८१।५८	८३।४१	८५।३१
११।०	१६३।४३	२४७।११	२४५।५६	२४४।३८	२४३।१७	२४१।५३	२३।०	३४३।४३	८५।५१	८७।२६	८९।०	९०।३९	९२।२६
११।३०	१७१।५०	२५३।४६	२५२।२६	२५१।३	२४९।३६	२४८।७	२३।३०	३५१।५०	९२।५०	९४।१७	९५।४८	९७।२४	९९।६
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६	२४।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. १.

सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.
१९३६	६।३७।४	१९४३	६।३८।१५	१९५०	६।३९।२७	१९५७	६।४०।४०	१९६४	६।३७।५६	१९७१	६।३९।७	१९७८	६।४०।१९	१९८५	६।४१।३२
१९३७	६।४०।३	१९४४	६।३७।१७	१९५१	६।३८।३०	१९५८	६।३९।४३	१९६५	६।४०।५५	१९७२	६।३८।१०	१९७९	६।३९।२२	१९८६	६।४०।३५
१९३८	६।३९।६	१९४५	६।४०।१६	१९५२	६।३७।३३	१९५९	६।३८।४५	१९६६	६।३९।५७	१९७३	६।४१।१०	१९८०	६।३८।२४	१९८७	६।३९।३८
१९३९	६।३८।८	१९४६	६।३९।१९	१९५३	६।४०।३३	१९६०	६।३७।४७	१९६७	६।३९।०	१९७४	६।४०।१२	१९८१	६।४१।२३	१९८८	६।३८।४०
१९४०	६।३७।११	१९४७	६।३८।२२	१९५४	६।३९।३५	१९६१	६।४०।४७	१९६८	६।३८।३	१९७५	६।३९।१५	१९८२	६।४०।२६	१९८९	६।४१।३९
१९४१	६।४०।१०	१९४८	६।३७।२५	१९५५	६।३८।३८	१९६२	६।३९।५०	१९६९	६।४१।२	१९७६	६।३८।१७	१९८३	६।३९।२९	१९९०	६।४०।४१
१९४२	६।३९।१२	१९४९	६।४०।२४	१९५६	६।३७।४१	१९६३	६।३८।५३	१९७०	६।४०।५	१९७७	६।४१।१६	१९८४	६।३८।३२	१९९१	६।३९।४४

*साम्पातिक काल कोष्ठक नं. २

ता	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता.
↓	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	↓
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५२।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७	२
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८। १	२०।१०।२४	२२। ८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३८	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५ ५२	२२।४४। ९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७.३७	२०।४९।४९	२२।४८। ६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २	१५
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४ ५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५ ५९	१६
१७	१। ३। ४	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५३	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८	१३।१६।२५	१५।१८ ३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९ ४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७ ४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०		५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१ ५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६		५।५०।५४		९।५१।२४		१३।५१।५४	१५।५४। ७		१९।५४।३८		२३।५५। ७	३१
												२३।५९। ३	३२

*लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं.२ को प्रयोग में लाइए।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ३

पूर्व रेखांश →	३०°	३६°	४२°	४८°	५४°	६०°	६६°	७२°	७८°	८४°	९०°	९६°	१०२°	१०८°
सा. का. संस्कार (सैकण्ड)	+३१	+२७	+२३	+१९	+१५	+११	+७	+३	−१	−५	−९	−१३	−१७	−२१

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. ४

मि. → / घं ↓	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	·३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३=	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारणी नं. १

इस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.	इस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.	इस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९४५	२३। ५।१९	१९६९	२३।२५।२६
१९२२	२२।४६। ३	१९४६	२३। ६।१०	१९७०	२३।२६।१६
१९२३	२२।४६।५४	१९४७	२३। ७। ०	१९७१	२३।२७। ६
१९२४	२२।४७।४४	१९४८	२३। ७।५०	१९७२	२३।२७।५७
१९२५	२२।४८।३४	१९४९	२३। ८।४१	१९७३	२३।२८।४७
१९२६	२२।४९।२५	१९५०	२३। ९।३१	१९७४	२३।२९।३७
१९२७	२२।५०।१५	१९५१	२३।१०।२१	१९७५	२३।३०।२७
१९२८	२२।५१। ५	१९५२	२३।११।११	१९७६	२३।३१।१८
१९२९	२२।५१।५५	१९५३	२३।१२। २	१९७७	२३।३२। ८
१९३०	२२।५२।४५	१९५४	२३।१२।५२	१९७८	२३।३२।५८
१९३१	२२।५३।३६	१९५५	२३।१३।४२	१९७९	२३।३३।४८
१९३२	२२।५४।२६	१९५६	२३।१४।३२	१९८०	२३।३४।३९
१९३३	२२।५५।१६	१९५७	२३।१५।२३	१९८१	२३।३५।२९
१९३४	२२।५६। ७	१९५८	२३।१६।१३	१९८२	२३।३६।१९
१९३५	२२।५६।५७	१९५९	२३।१७। ३	१९८३	२३।३७। ९
१९३६	२२।५७।४७	१९६०	२३।१७।५३	१९८४	२३।३८। ०
१९३७	२२।५८।३७	१९६१	२३।१८।४४	१९८५	२३।३८।५०
१९३८	२२।५९।२८	१९६२	२३।१९।३४	१९८६	२३।३९।४०
१९३९	२३। ०।१८	१९६३	२३।२०।२४	१९८७	२३।४०।३०
१९४०	२३। १। ८	१९६४	२३।२१।१५	१९८८	२३।४१।२०
१९४१	२३। १।५८	१९६५	२३।२२। ५	१९८९	२३।४२।११
१९४२	२३। २।४९	१९६६	२३।२२।५५	१९९०	२३।४३। १
१९४३	२३। ३।३९	१९६७	२३।२३।४५		
१९४४	२३। ४।२९	१९६८	२३।२४।३६		

अयनांश सारणी नं. २

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्टूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचांग में जो पहले दैनिकलग्नसारणी दी गई है वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) बतलाती है। इसी सारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :– दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे—मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्तिकाल जाता है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे, मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १९ मि. मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	−१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	−२	−५	−६	−६	−३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	−१	−४	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६	−२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	−१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	−१	−४	−८	−११	−१३	−१३	−९	−६	−२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	−१	−८	−१३	−११	−४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	−२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	−३	−१०	−१५	−१३	−६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	−१	−२	−२	−२	−१	−१	०
कलकत्ता	−३२	−२८	−३०	−३६	−४५	−५३	−६०	−६५	−६३	−५६	−४७	−४०
कांगड़ा	०	−१	−१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	−९	−५	−६	−९	−१३	−१७	−२२	−२४	−२३	−१९	−१५	−११
काशी	−१५	−१३	−१४	−१८	−२४	−२९	−३४	−३७	−३६	−३१	−२५	−२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	−१	−१	−१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	−५	−८	−७	−२	+४	+९
गुडगाव	+४	+४	+४	+२	०	−२	−४	−५	−५	−३	−१	+१
गुरदासपुर	+३	−२	−२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	−१८	−१७	−१८	−२१	−२५	−२९	−३४	−३६	−३५	−३१	−२७	−२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	−४	−९	−१३	−१६	−१५	−११	−६	−२
चम्बा	−१	−२	−१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−३	−५	−४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	−१	−१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	−६	−११	−१६	−१९	−१८	−१३	−७	−२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	−१	−३	−५	−६	−६	−४	−२	०
देहरादून	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	−७	−१७	−२६	−३१	−२९	−२०	−११	−२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	−८	−७	−८	−९	−१०	−१२	−१३	−१४	−१४	−१२	−११	−९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	−२४	−२२	−२३	−२७	−३२	−३८	−४२	−४५	−४४	−३९	−३४	−२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	−११	−९	−१०	−१४	−१९	−२४	−२९	−३१	−३१	−२६	−२१	−१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	−४	−१०	−८	+३	+१४	+२५
बरेली	−६	−६	−६	−८	−१०	−१२	−१४	−१५	−१५	−१३	−११	−९
बंगलोर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	−१६	−३२	−४०	−३७	−२२	−६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	−२	−४	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	−२	−६	−९	−११	−११	−७	−४	०
भुवनेश्वर	−१८	−१४	−१६	−२४	−३४	−४४	−५४	−५८	−५७	−४८	−३८	−२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	−१	−८	−१५	−२०	−१८	−११	−४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	−११	−२७	−४३	−५१	−४८	−३३	−१७	०
मथुरा	+३	+५	+३	+१	−२	−६	−९	−१०	−१०	−७	−४	०
मण्डी (हि.प्र.)	−२	−३	−३	−२	−१	०	+२	+२	+२	+१	०	−१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	−१	०	−१	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	−२	−३	−३	−१	+१	+२
लखनऊ	−९	−८	−९	−१२	−१५	−१९	−२३	−२५	−२४	−२०	−१७	−१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−२
श्रीनगर (क)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	−१	−१	−१	−२	−२	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−२
हरिद्वार	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	−५	−१७	−२९	−३५	−३३	−२२	−९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+१	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्रम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रो.ह.श्रवण.				मृ.चि.ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	च.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
च.	०	६	०	म.	०	७	०	रा.	१	०	१८
म.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	च.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ.स्वा.श.				पुन.वि.पू.भा.				पु.अनु.उ.भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	च.	१	७	०
र.	०	१०	२४	च.	१	४	०	म.	१	१	९
च.	१	६	०	म.	०	११	६	रा.	२	१०	६
म.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले.ज्ये.रे.				म.मू.अश्विनी				पू.फा.पू.षा.भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	गु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	च.	१	८	०
र.	०	१०	६	च.	०	७	०	म.	१	२	०
च.	१	५	०	म.	०	४	२७	रा.	३	०	०
म.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बृ.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			अ., श्ले.ऽनु. पूभा.		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१.०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रह
मृ.म.ज्ये.उभा.			कृ.पू.फा.मू.रे.			रो.उ.फा.पू.षा.			ह.म.ह.उषा.			जन्म नक्षत्र
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	शुभदशा — म.धा.भ्र.सि.
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	नष्टदशा — पि.भ्रा.उ.सं.
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्त-भोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना ले. भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। लब्धांक वर्ष, होगा। फिर शेषांक को १२ से गुणा करे, और भभोग के पलों से भाग दें। लब्धांक मास होगा। फिर ३० से गुणाकर करके भभोग के पलों से भाग दें, लब्धांक दिन होंगे। तत्पश्चात् ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी, होगी। फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दे लब्धि पल होगी। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा प्राप्त होती है।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ-ग्रहफलबोध चक्रम्

ग्रहा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रु नाश:	पीडा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुखम्	धनला.	पीडा
चन्द्र	पीडा	धनलाभ:	हर्ष:	शत्रुनाश:	सुखम्	पीडा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय:	धनला.	व्यय
भौम	व्रज.	धननाश:	जय:	व्यसनं	दुर्गति:	शत्रुनाश:	स्त्रीकष्टम्	पीडा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ:	पुत्रलाभ:	कलह:	धनलाभ:	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाह. ला.	पुत्र.रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ:	शत्रुभीति:	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीडा	धनलाभ:	दु:खम्:	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग:	भाग्यहा.	धनहा:	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभी.	सुखम्	दु:खम्:	बुद्धि नाश	शत्रुनाश:	रोगभी:	कष्टम्	धर्महा.	विजय:	सुलाभ:	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्यं	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीडा	भाग्यना.	धनला.	लाभ:	शोक:
मन्या	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दुखम्:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम्	भाग्योद.	राज्यप्रा:	लाभ:	कष्टम

सूर्यसिद्धान्तीय वर्ष-प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना— वर्षमित: वर्षमान सूर्यसिद्धान्तीय, वर्षमान से ८।। पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्ष-प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८।। से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्मवर्षमानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल-साधन प्रकार:—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष (गताब्द) जानें। स्मरण रहे कि मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी संवत् से करना (वर्षायनलग्नप्रवेशकमत्र सौगत्)। इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हो तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म-समय के स्पष्ट सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। पंचांगों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहां पर वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थानयनप्रकार**:— गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनानि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० यह दशा के दिन हैं।

• **हर्ष स्थान बल**—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ वर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल—सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गु. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **पुरुष स्त्री बल** स्त्रीग्रह (चं. बु. श. शु.) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रिबल**—दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	म	श.	म.	गु.	चं.	दिनलग्नेश
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नेश

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से पांचवें ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। **फल**—कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है। उनसे प्रेम होता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। **फल**—कार्य कठिनता एवं गुप्त भाव से सफल हो पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। **फल**—शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से वैर, धन हानि, बनते काम को बिगाड़ना आदि फल होते हैं। ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते हैं। **फल**—कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियोंमें से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा।। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा।। **फल**—वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखस्वयं कीवृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश-तृतीयेश या चतुर्थेश-नवमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखे तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्ष-लग्नेश वक्री हो और वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी।

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाद दृष्टि
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
च. म. गु.	र. बु.	र. बृ. च.	र. रा. शु.	र. च. म.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा	बु. रा.	च.	बु. शु.	र. च.	र. च. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुमक	पुरुष	स्त्री	नपुसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ में शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षेशाधिकारिणोबलेन मुद्दादशा

मं.	त्रि.	धा.	क्षा.	भ.	ब.	नि.	व.
०	०	१	१	१	२	३	३
१०	२०	०	१०	२०	०	२०	२०

गर्भ योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश पाँचवें या सातवें पड़ा हो वा पञ्चमेश और सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है।

मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पाँचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना, यहमुथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग—यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ नहीं तो अशुभ कष्ट भयप्रद होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, बह शास्त्र-समस्त शुभ-मुहूर्त में करें, तो अवश्य सफल हो कर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी यात्रा में, नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता। शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं कृष्णपक्ष की प्रतिपदा सर्व-कार्यों में शुभ मानी है। प्रथम वार देव दर्शन एवं प्रथम तीर्थयात्रा में गुरु शुक्रास्त अवश्य विचार्य है।

चन्द्र-शुद्धि—अपनी राशि से ४, ८, १२वीं छोड़ अन्य राशियां हों तो चन्द्र-शुद्धि समझें। अभिषेक निषेक, यज्ञोपवीत तथा विवाह में द्वादशस्थ चन्द्र पुरुष को ग्राह्य है। कन्या को १२ चन्द्र का निषेध है।

तारा शुद्धि—अपने नक्षत्र से इष्ट दिन के नक्षत्र तक की संख्या में ९ का भाग देकर २।४।६।८ या ९ शेष बचे तो ताराशुद्धि समझें।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१, २, ३, ५,७, १०,११,१२,१३। **शुभ-नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ. ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। **शुभ लग्न**—जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ-ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन; सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी निधन तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात वैधृति-योग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, जन्मराशि से अष्टमलग्न पापयुक्त-लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल रखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरु-शुक्रयोः॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभलग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर 'ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ, भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन पान कराने या सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र-मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीन-उत्तरा, रो, मृ, ह, स्वा, अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूतास्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा. रो. ह. अश्विना पुष्य, अभि, स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्मदिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।५।६।७।९।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४ ११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम.-शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में, ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में शुभदिन में बालक के करधनी का द्विसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बैठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मन्त्र—"रक्षैन वसुधे देवि सदा सर्वगत शुभे। आयुः प्रमाण सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥" इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे, उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, २, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, १२ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ है।

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे चि. अनु. ह. अश्वि पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तुला, वृष, धनु, या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समयपर करने से मनुष्य के हानिया (आन्त्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या का नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिनके प्रथमप्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत में प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़ कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ.. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांचमास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष में अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो "यथाकुलधर्मं वा" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं, वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल शनि, रवि, भौमवार, हजामत में नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य से नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह., अश्वि., पुष्य, अभि. श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों के बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क, तुला, और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोडकर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र. ध. शत., अश्विनी, मू., तीनों उत्तरा, रो, पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने पिरोने (सूचि कर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र, सूर्य, बुध, चन्द्र, बृ. श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक की गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाए तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं) सू. चं. बु, (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथी जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्यान्ह से पहले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश, ६।८ वें स्थान में, चं. श. १२वें स्थान में, और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ है। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का सम्पूर्ण चन्द्रमा; लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक से उपनयन संस्कार के लिए समय शुद्धि न मिले। अथवा सिंह, मकर विना अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्र

सांझे व्यापार (साझेदारी) में परस्पर अशुभ षडष्टक तथा गण-दोष नहीं होना चाहिए।

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंचशलाका में विद्ध	सप्तशलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा.	पू.फा.
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा	पूषा.
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व.	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा	उभा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा.	बलिनिभ	४	म.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
पू. षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
उ. षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व.	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व.	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले	वि.
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व.	मंद	चरचल	बतुंल	१००	स्वा.	स्वा.
पू. भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चिता.	चित्रा.
उ. भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक।

स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी और चतुर्थ मित्र समझना चाहिए।

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मूहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिले उस में गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्राय: कोई संख्या वा चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है, कि—नाड़ी दोष की जगह (३), गण महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षड़ष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया, वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिन्ह(+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है। वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और, कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष हैं इसलिए सम्बन्ध अशुभ हैं। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इसमें अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हों और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हों तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है।

नाड़ी-दोष-परिहार—यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो, अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता। यदि दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता। **आवश्यके दोष शान्ति**—द्विर्द्वादश दोष होने पर ताम्र-सुवर्ण, वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र, सुवर्ण, नव पंचम में कांसी चांदी, अशुभ षडष्टक में गोमिथुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें। "गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वं दोषापहारकम्।—(गुरु:)। महादोष एकनाड़ी हो तो अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थ महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम ३१ रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करें अन्यथा नहीं।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षड़ष्टके वा। तारा विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥ राशीशयो: सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयो:। गणादि दौष्ट्येऽप्युद्वाह: पुत्रपौत्रप्रवर्धन: ॥

मिलान के बिना ही विवाह—जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों को सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुनर्भू एवं क्रीता—स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए गुण-ग्रह मेलापनादि विचार शास्त्र विहित नहीं है।

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
	चरणानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा. १	वि ।।।	वि ।	अनु. १	ज्ये १	मू. १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे. १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१६॥	१८॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ १	२३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२३॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	६॥ १३२	१६॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ. ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१६॥	१६॥ १	१६॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१६ ३	१६॥ ३६	१६॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१६ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१६॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१६ १४	१६ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१६ ३	१६ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १२६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२६	३०	२३ १	२० १	२२ १	११ ३
	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	२६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ १	१३॥ १६	१६॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३४	१६ -१५	२८॥ -१	२८ -१	२६	२६	२७	११ ३
	मृ. ।।	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१६ ३	२१	१६॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ --६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५-	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ।।	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१६ +४	२६॥ ४+	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१६॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१६ ३	२५ २+	१६॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१६ +१४	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१६ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२५
	पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१६॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१६ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१६॥	१९	२६॥	२०॥	१६ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	६॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	२६॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२६ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१६ -५	१७ ३५	२० -५	१७ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२० -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	२२॥ ३	११ ३१	१६	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१६॥ १	१६॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	२४॥ ३५	१६ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१६॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१६ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१६ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ २४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४	३० १	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२३॥ ३	२४॥ -१	२० १५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा १	१५॥ ३५	२५ ५+	२१ -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ।।।	११ ३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२३॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२२ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १३	२६	१२ १३	१४ १३	२६॥	२६॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	६॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह १	११ २३६	१८॥ ६	१७॥ १६	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	२२॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२६॥	१५ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२१ १+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ १३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ।।	१२॥ १	८॥ १३६	१८॥ ६	१८ ५+	१८॥ १५	२०॥ ३४	२० ३	२२ १	२४॥	१६॥	११॥ ३	२५॥	१०॥ -४	६॥ १३४	१३॥ १३४	२६॥ १३	२०	२८ १	१६ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	२१	२५	२७	१३ २३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१६ १	१० १३६	१६

मेलापक सारिणी

कन्यायाः ↓ / वरस्य →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भांश	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ।।	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	२९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७॥ ०	३३॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	२२ २६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा १	२६ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३	२२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१८ ३	२१॥ ३	२३॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ १९
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४-	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३९
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२७॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१६॥ १	१९ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२४॥ ३	१० ३६	१५ २६	१७॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ ३५	२६ ३+
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२६॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१६ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१६॥ ४	१४॥ ४	१६ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	६॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	१३॥ ३५	१६ १५	२५ ५+	१६॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१६॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१९ ३४	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१६॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२१
	पूषा १	२५॥ -५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१६ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१६ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ ३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५-	१३॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१८॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१६ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ २
मकर	उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	६॥ १+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१५॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१६॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१६ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२६॥	२३ २
	ध ।।	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५॥	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२२	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	१७ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२३॥ +२
कुम्भ	ध ।।	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१६ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१६ ६	२५॥	१९॥ १	१९॥ १३	२०॥ १३६	२०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२३॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	१६ ०१	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१६॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	१९॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२९॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ -४	१८॥ -१४	२८¾ -१	११ १३	२८ ३	१६ १४	२२ ०४	१६॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	१९॥ ४२	१६॥ -१४	१६ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ १६	२६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१२ -१५	२५ +५	६॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	२०॥ +
	उभा १	२३॥ ६+	१५॥ ३६	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	१६ ५	१६ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६२	१६ ५	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ५५	२० -१५	२३॥ -२	२१॥ ३	२६॥	२९॥	२६॥	१४॥ १३	५॥ १३४	१९ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ६+	२३॥ ४	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	२२ ३६	२३॥ ६+	२३॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० १६	४ १६	२०॥ २५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	१६॥ ३	२१॥ ३	२३॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२६॥ +२	३३	२८ १

ग्रह-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा—वैधव्ययोग वाली कन्या को शालिग्राम या कुम्भ से यथाविधि विवाह करके दीर्घायु वाले वर के साथ विवाह करे।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये खास गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश वाला, द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह वाला, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे व किसी भी दोषवाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

गोत्र में विवाह निषेध—समान गोत्रप्रवर में विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होती है तथा वर-वधु जाति से च्युत हो जाते हैं तुल्यसपिण्ड मातृगोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है।

वाग्दान—(कुड़माई सगाई) से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए दोषादिका मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएं—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पूर्वा ३, रिक्ता-अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभलग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर या पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन कालेऽस्मि सान्निध्ये स्नातः स्नाते ग्रुरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. षा., स्वा., श्र., पूर्वा. ३, अनु., ध., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाह काल-निर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवें। तथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्म वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को कोई विशेष दोष नहीं लगता। वात्स्यः—रजस्वलायाः कन्यायाः गुरु-शुद्धि न चिन्तयेत्। वशिष्ठ-तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमतः॥ विवाह लग्न के समय कन्या ऋतुमती हो तो—स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः। युञ्जानामाहुतिं हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्।

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधु की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्यायाः नवमे वरः" बोलते हुए नाम बदल देते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	मार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	२	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	५	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनार्थः
चरणे	४	साधनाढितः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिकमास रहित चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष मि. सिंह. क. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० में शुभग्रह हों, ३।६।११ में पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है। **विशेष**—सतीर्थ पर सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. मासों की २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा यां तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) रो. मृ. पुन. पु. उ. ३, ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे, शिवस्य चरे, दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धन मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न-गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाह मासः—(विवाहशुद्धौ)-मीनार्कञ्च बिना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो ऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्मामास(अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन), जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। **अत्यावश्यके परिहारः**—जातं दिन दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना निषिद्ध है परन्तु अति आवश्यकता में ६ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप बनाकर जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करने और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभकार्यों में मरणाशौच—साहेचिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर **और उसी दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिए, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं।** यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि—गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा, ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु. सू. चं.) शुद्धि प्रथम देखे। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ बृहस्पतिः ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽप्यष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्चे उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्राद्दष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिस्था भादिगोऽपि चेत् ॥ (रणवीर ज्यो. नि.)

तुलाराशौ अपूज्यःरविः—धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः। **आवश्यके पूज्यरवि-परिहारः**—गार्ग्याङ्गिरोवत्स-वशिष्ठ-गौतम-पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः। (मु०प्र०सा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१ ध. मी. कर्क
श्रेष्ठगुरुः—६।५।११।२।७ राशि में
नेष्टगुरुः—४।८।१२ हो तो नेष्ट
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११ गुरु भी
पूज्यरविः—२।५।६ श्रेष्ठ है।
विशेष पूज्य रविः—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।६।१०।११।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न) दिन संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं. →	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥ विवाह में विशेष कर लग्न और नक्षत्र की प्रधानता है।

सभी कार्यों में लग्नशुद्धि—जन्म राशि से आठवीं, बारहवीं राशि न हो तथा लग्न से आठवें बारहवें कोई ग्रह न हो तो लग्न शुद्धि समझें।

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्य-वती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पसीना, कूटना, मंगल कलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोवा बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुद्ध होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि—इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इसवर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दसों दोषों में जो जिस मुहूर्त में है वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

(१) लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष-ज्ञानार्थ चक्र													
रा.	मृ.	मघा	उफा	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उषा	उभा.	रे	वि.	नक्षत्र	हर्षण वैधृति साध्य व्यतिपात गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।
आर्द्रा पुन. भर. पूफा चि. मू.	मृ. आ ज्ये ध. मं. ह.	अ. मृ. ज्ये पुष्य ह. रे.	कृ आ वि पूफा उभा पूभा	भ मृ श पूभा स्वा म.	कृ श्र ध पुष्य ह रे	अ आ. उषा पूभा पूषा पूफा	रो ज्ये ध श्ले मू उभा	भ पुन श वि अनु उषा	भ श वि उफा. पूफा. मृ.	अ ज्ये ध म पूफा स्वा.		पूर्वोल्लिखित नक्षत्र	

(३) **युति**—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेधदोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा	श्रवण.	रे.	उभा.	भ.	मृ.	पुन.	विशा.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा	अनु	मू.	उ. षा.	उ. भा. रे.	विवाह न.
अनु	ज्ये	ध.	पू. भा.	उ. भा	अ.	कृ.	मृ.	पुन	उ. फा. ह.	क्रूर नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र है और नीचे यह नक्षत्र है, याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड; व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	क०	तुला
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कु०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रांति-साम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है; जिसका निर्णय महापात गणित से करना चाहिए।

(६) बाणदोष ज्ञानार्थं चक्रम्

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	बाणः वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	सध्ययोः वर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोषः

९	२	४	६	५	१० सूर्य
१२	११	१	३	८	७ राशयः
२	४	६		८।१०	तिथय

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।
—कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) दशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र, बांगर) जांगले (फ़िरोज़पुर; भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षं कुरु बाह्लीकेषु (आगरा प्रान्त) कलिगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्याज्यंस्तुविद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) यामित्रस्य च यामने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष-परिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा।
पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातं सर्वत्र वर्ज्यंश्च भुजगपातः॥

युति-परिहार—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दाम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ **अत्यावश्यके वेधपरिहारः**—पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभेनैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ **अस्यापवादः**—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।—एकार्गलोपग्रहपात-लत्ता-जामित्रकर्तयुं दयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ मु. चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वाऽपि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न-शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं पाप	०	शु	रा.	०	चं. श. लग्नेशः	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेशः	०	मं.	०	श.	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं कांतिसाम्यञ्च				चं.	म.	चं. म.	विद्धंभञ्च				गोधूली त्याज्याः

लग्न-भंग दोषा—व्यये शनि खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरूसमौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहो न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादि वृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पङ्गवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्याश्चयास्तारा राशयो बधिरादयः । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ।

कर्तरी दोष—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजु-वक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ॥ इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीच नवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगणैः सह ॥ अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्नरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तु भा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रेलग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमगिरा ॥ स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद-वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

तारा शुद्धि—अपने जन्मनक्षत्र से अभीप्सित दिन के नक्षत्र तक की संख्या गिन कर ९ से भाग दें । यदि २, ४, ६, ८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभ विवाहे स्याद्दश विशोपकाधिकम् ।
धी-	५	१॥	२	३	२	१॥	१।	।॥		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार—यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः । गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषाः धूलिमुखाः स्मृताः ॥ लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । । तदा वै सर्वं वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्नं विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग . माघ, फाल्गुन में संध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर, चै. वै. में गौओं की धूलि से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्य दोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषैस्तु दूषितः । "अस्तं याते गुरुदिवस सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्तः—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु, प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते है ।

पुनर्विवाहे (रोत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मुत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः ।

वधु प्रवेश का मुहूर्त—जब वधु विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधुप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वे वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे. अश्वि रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. वृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो ता वधुप्रवेश शुभ है ।

वधु-प्रवेश-समय :—वधुप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ।

विवाहतः प्रथमे वर्षे वधु-निवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षयमास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उसमास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम. बुध. गुरु. शुक्रवार को, २. ३. ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनों उत्तरा. रा. स्वा. पुन, श्र. ध. श. म. मृ. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेष:—द्विरागमः षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु ।
न चात्र ऋक्षं न तिथिर्नयोगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेध :—जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है । अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में; वृष, कन्या, मकर में हो तो दक्षिण में; मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है । ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधु जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व-पश्चिम कपाल में स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष:—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकर्त्तमिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शचिमुक्ताफलान्वितम् । महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि में प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्रीसंगम करें । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर-सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-पक्षियों में भी तोता, चिड़ा तथा बन्दर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नववध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र.ध.श. रो. चि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवा-स्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषण विधारण मुहूर्तः—हः चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि, एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ११ तक श्रेष्ठ, १३ तक नेष्ट, २० तक श्रेष्ठ, २२ तक नेष्ट, २६ तक श्रेष्ठ, २७ तक नेष्ट । गुरुशुक्रोदय में शुभ वार भी हो ।

वस्त्रधारणे विशेष:—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम् ।
निन्द्येऽपि धिष्ण्य वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ।

भूषण घटन मुहूर्त—ह. अ. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामोक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभदशा भी चलती हो तो दुकान खोलना शुभ है । चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृ गृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूर्वा ३ भ., मू., म., ज्ये., आ., आश्ले. एतद्भिन्नेषु, च. बु. श. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्तः—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पु. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

गुरुपुष्य एवं रविपुष्य में व्यापार प्रारम्भ करना शुभ है । सांझे व्यापार में गण दोष एवं अशुभ षडष्टक न हो, देव-राक्षस में बैर, अपने गण में परम प्रीति जाने ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी)—मुहूर्तः—अ.मृ.चि.ह. पुष्य.अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहिततिथौ.र.बु.बृ.शु. वारेषु शुभः । लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही)—पत्रारम्भ मुहूर्तः—अश्वि.रो.मृ. पुन. पु. उत्तरा ३ ., चि. अनु. श्र.रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू.चं.बु.बृ.श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्र कोणगः शुभः स्यात् ।

द्रव्यप्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अवावसरे ६।४ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुधवार को धन नहीं देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्त—शाम का समय शुभ चौघड़िया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं । बुधवार नई ईंट बनाने में विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य., पू.भा., अनु. श्र.ह.म. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले.रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गए हैं ।

वस्तु बेचने का नक्षत्र—पू. फा. पू. भा., पू. षा., वि., कृ., श्ले., म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं।
नालिश (अर्जी) का मुहूर्त-- ४।९।१४ तिथि हो, म. श.: वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो. भद्रा होवे तो उत्तम है। लग्न मे पाप ग्रह हो तो अत्युत्तम है।

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्रं यावत् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तक	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहादि निर्माण मे आयविचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भः, ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि समसंख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्ययज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर या काली ईंट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, च. बु, गु. शु. श. वारों में, रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व वासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्ष	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो. म. अश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति वार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि इनमें से जिस पर बुध हो उसे नक्षत्र में बुध-वार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. बृ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम् नवम जोय। दस इक्कीस २६ में षट् दिन पृथवी साय। **तत्रात्यावश्यके क्रमात्** ५।११।७।६।२।१० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्य वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।६।१२।१६।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी-शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचारः

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नै	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्र विचारः

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर, स्टोव, गैस, चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना)। उत्तरा ३., अनु., रो., मृ., चि., रे इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में च.बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में, अत्यावश्यकता में ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गो कन्या जलपूर्ण-पुष्पमालायुक्त-कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशि-वश-खात-ज्ञान

देवालय की नींव खोदनी हो तो सौर चैत्र. वैशा०. ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ० फा० में नैऋत्यकोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा. ज्ये. आषा. ईशान श्रा. भा. आश्वि. में वायव्य कार्तिक मार्ग. पौष में नैऋत्य, माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय—वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य, भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग, माघ, में ईशान, में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थानं.	न:	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	७
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों (उ., रो. ध. श. म., पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।८।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है। और जलाशयखात सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्, जल का वास भी "गृहमध्ये कूप विचार" से भूमि पर विचारें।

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्-वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे. मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा. अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः।
महिषासुर हंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. शनि-मंगल तिथि वार छोड़ कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तथा ३।६।११ में पापग्रह हो, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र में दिन नक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु, राजभय २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थ शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थ कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३, पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सस्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना। पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुख कारक होता है. शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा:
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चौलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्यराहुणा। नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेष्वथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूना-मुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभग गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शांति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसी प्रतिमा कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरचितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

यथा—अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना, फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार आने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १,५,६,११,१५, तिथि, मृग. पुन. ऽश्ले. म., पू. फा., वि., ऽनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में-घर जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ.रे.चि. अनु.रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि.स्वा. पु.श्र. ध.श.म.मू.वि.एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे,१।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्

सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने				
३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहुचक्रम्

राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. र. स्वा. ध. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः-रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमौ संजायतेरजः। तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्

नवान्न भक्षण मुहूर्त:—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. चं. गु. शुक्रवार शुभ है।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र, उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवाँ हो, तो गाय लेना अशुभ है। उ.फा. नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४,५,२६,२७ वें) नक्षत्रों को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों में गाय लेना शुभ है। भैंस लेने के लिए भी यही क्रम है, परन्तु वहां उ.फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करें, नक्षत्रों की शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। बैल खरीदना हो तो भी उ. फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करें, परन्तु यहा उ.फा. से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशुभ है, शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें।

"नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया॥"

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	ववायकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

लता-वृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो ह- पुष्य, अश्वि-श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. वृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है **तृणकाष्ठादिसंग्रहनिषेधः**—तृणकाष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि काम कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त—कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार, तिथि, अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उफा. ह. चि. स्वा ऽनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. मं. शु.च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे, चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो, उत्तरा ३, पूर्वा ३. एषु भेषु मध्याः भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्या-दिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

दिग्द्वारलग्नानि

१।५।९	२।६।१०	३।७।१२	४।८।१२	शुभम्
२।२।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१	मे०म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टम शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्							नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व. आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर.	ईशा.	दिशा पू०	द.	प.	उ.
चं.श. च.श.?	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.बु.	बु.श.	नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य-दिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल शान्त्यर्थ-रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तैलकी वस्तु खाकर जाए तो शुभ है।

यात्रा में काल ज्ञान

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखेनष्ट: पृष्ठे शुभ:

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तर०	ईशा०दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ, युद्ध यात्रा की बाएं और की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल :—उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकाल: सप्तपञ्च (५७) अरुणोदय:। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेष सूर्योदयो भवेत्।

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्व	दक्षि.	पश्चि.	उत्तर
मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चि मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू	द.	पू.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	१०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पद:। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षय: ॥१॥ सर्वे दोषा:लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ **सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा**—
करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं, यामयामार्धदोषम्।
कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थ:।

सर्वाङ्क सिद्धि योग:—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखे क्रमश: ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्रअंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है। नोट—श्वास खींचते हुए सवारी पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित होती है।

वर्ण क्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाये तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रखे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें। प्रस्थान (पैंता) रखने के दिन से तीन दिन के अन्दर ही चल देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम् / रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	मं	बु.	गु	शु	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३।।।	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.	ला.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७।।	अ.	रो	ला.	श.	च.	का.	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	च.	का	उ.	अ	रो.	ला,	श.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला	शु	च.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।।।	का.	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।।	ला.	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	श.	च.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

चतुर्घटिका मुहूर्त में चर लाभ अमृत शुभ हैं शेष अशुभ हैं।

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांयते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रात:काल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, शीशा, श्वेत वृषभ गोदधि सर्षप, कमल निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, रोदनरहित मृतक, मंगल गान, वेदध्वनि ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने शुभ हैं। **अशुभ शकुनानि**—वन्ध्या स्त्री, चर्म अस्थि, इन्धन, सन्यासी, रिक्त-घट भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार-युद्ध, कटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा-मनुष्य, दक्षिण में गर्दभ शब्द, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पौ.	मा	फा	चै.	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मित्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

दिशा शूल ले जावें वामे । राहु योगिनी पूठ ॥
सन्मुख लेवे चन्द्रमा । लावे लक्ष्मी लूट ॥

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले इसी तरह [illegible] पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका [illegible] मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु सतिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र[illegible]त्ये सति शुभम्।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त—म.रे.चि.अनु.रो.,उ. ३. ह.अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. गु.शु.श. वारेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।८।६।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।६ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा आश्ले. नक्षत्राणि ।४।६।१४।६।१२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल का मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्।
नवमे जातु नो कुर्यांद्दिनेवारे तिथाविति ॥

घातचन्द्र, घातवार आदि का चक्र

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घातचन्द्र	मे.	क.	कु.	सि	मं.	मि.	ध.	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
घातवार	र.	श.	चं.	बु,	श.	श	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.
घातनक्षत्र	मं.	ह.	स्वा	अनु	मू.	श्र.	श	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा
स्त्रीचं.घात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घातमास	का.	मार्ग	पौ.	माघ	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	अ.	श्राव	भा.	आ.
घातयोग	वि.	मु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृद्धि	वैधृ.	गं.	व्या	व.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
,,	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
,,	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५

कार्य सिद्ध्यर्थ यात्रा में, युद्ध, विवाद, राजदर्शन, वाहन तथा रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखें। तीर्थयात्रा, विवाह एवं उपनयन आदि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं। "घात-तिथिर्घात-बारः घात-नक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये-त्प्राज्ञस्त्वन्य कर्मसु शोभनम् ॥" कार, स्कूटर, बाईसाइकिल आदि की खरीद घातचन्द्र में वर्जित है।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल

अग्रिम चक्रोक्त सर्वफल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना. पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा है, वही फल सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांग-विभागे पल्ली-(छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य सम्बन्धः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम	दक्षिणपादे	गमनम	मुखे	मिष्ठान्न भोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धन प्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयोः	शुभम्.	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभ;
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

पल्ली-पतने प्रशस्त बार-तिथ्यर्क्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी. रो. मू. पुनः उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक है। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यं कर्म—पली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप-ग्रह युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं पीन सरदी घास फल हींनी। छीकि पीठि की कुशल उचारे, बाईं कारज सब सवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी। नीची छींक होय भय कारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक विचारे भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजनं। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहा ॥ सन्ध्या वन्दन जपादि के आरम्भ में भी छिक्का शुभ है। एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक ॥

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ श्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ श्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे। यदि एक कोस के बाद शुभाशुभ शकुन हो तो उसका कुछ फल न समझें।

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	भ्रातृवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-वृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी यथोक्त फल जानना। पैर के तलवों में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल बर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महर्घता
पत्थर बर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदलीकेपगृहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अंधेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्रमंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसें	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबी कबूतर	गृहस्वा. ना.
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमीगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री बध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक बध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	कुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्प	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

रवौ भौम व्यतीपाते
संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च रिक्तासु च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेष—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व बातारोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काक-स्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्टकार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष को दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मय पात्र में स्थापना कर उड़द, चावल, घी, मीठा, नैवेद्य देवें, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुख दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करादे)। घृतच्छाया पात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे, यह विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काकविष्ठा विचार—शिरसि—मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः-रोगः। भुजयो :—प्रियार्तिः। उदरे-शोकः। गुह्ये-सन्तान-कष्टम्। जंघयोः—वाहनपीड़ा। पादयोः-प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि—घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे-यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थ हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अंकप्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ४।५।८।१० बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ट भाविक (न देखी न सनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से ।'दृष्ट श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित' ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि—बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता हैं। शुभ स्वप्न देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प दक्षिणा रखे, स्वस्थचित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक, वृद्ध, गुरु, श्वेतवस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल पर्वत, सिंह, अश्व एवं अन्न की ढेरी पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान रथ शय्यादि का ज्वलन; स्व-शिर का छेदन, स्व-रुदन, अपना मरण, वेद-ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्रधनुष का देखना, छाछ, अस्थि कपास, नमक, इन चार वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क वा मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

दर्पण में मुख देखें तो प्रेमी से मिलाप हो। यदि स्वप्न में फल-पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेतवस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूता व खड़ाऊ छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्यलाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कोष्टवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दरफल संयुक्त देखना पिछड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसका समझ लेना चाहिए कि रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ा है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी।

शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लालवस्त्र पहिनना, सूर्य-चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का पड़ना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, भस्म, तेल, लोहा मिलना या देखना इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूतप्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में वह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ गीदड़ बिलाव, भैंस, सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इन के सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाए। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। मुण्डित-केश नर, भिक्षुक तथा सूखी-नदी, सूखा पेड़ आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष मे, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। अथवा—रात्रि में जिस समय स्वप्न दिखाई दे, उस समय से जितनी घड़ी रात्रिशेष रहे, उस घटी को चार से गुणा करे, जितनी संख्या हो उतने ही दिनों में स्वप्नफल मिलेगा।

अशुभस्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्र नाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

सिद्ध होरा मुहूर्त :—यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम्
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वं कर्म विधीयते ॥

सूर्य की होरा—टैण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।
चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।
मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकद्दमा के कार्यों में उत्तम होती है।
बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन-लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।
गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।
शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्धक कार्य व सिनेमा शूटिंग के लिए शुभ होता है। **शनि की होरा**—द्रव्य संग्रह, भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिषशास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घण्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन रात के २४ घंटों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घण्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा समझनी चाहिए।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वराशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में यात्रा-विवाहादि तथा शुभ कर्मों का त्याग कर देना चाहिए, अन्यथा अशुभफल मिलेगा। स्वराशि के मित्र ग्रहों की होरा में कार्यारम्भ श्रेयस्कर रहेगा।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घण्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्ध्यर्थ ग्रह होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार →	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्ध्यर्थ किसी बड़े पुरुष से मिलने जाना है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और इक्कीसवें घण्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे व तेरहवें अथवा बीसवें घन्टे के बाद एक-एक घण्टे तक की गुरु होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य कार्यों के लिए भी समझ कर कार्य करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन शुक्रवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़ कर शुक्र की होरा में जाए तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों का टेंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टेंडर देना लाभप्रद रहता है।

सद्यः नई गद्दी स्थापना व नई बही लगाने का मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के बढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़ कर शुभ लाभ व अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्यो	ति. ५ न. ह.	ति. ५ न. मृ.	ति. ७ न. अ.	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति. १० न. रे.	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोग (अधमाः तिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९ १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योग	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति. ६
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	५	९	१०	११
क्या जन्म तिथि	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	ध.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलिक मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	२१
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	१।२
यमघण्टयोगः	म	वि.	आ.	म.	कृ.	रो.	ह.

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धता पूर्वक 'ॐश्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धा पूर्वक सात बार पढ़ कर नीचे दिये गए चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अंकों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नावली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो 'मुकदमा का फल' वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो 'नौकरी का फल' वाली उत्तरावली में... इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिए—आपका प्रश्न मुकदमे के विषय में है कि जीत होगी कि नहीं? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७ एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर 'मुकदमे का फल' शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है—'विशेष खर्च करके जीत होगी'। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।

अंगुल रखने के लिए चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र बड़ा कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी।
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं है।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूल कर भी मत जाओ हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचार कर गमनकरो लाभहोगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विष र विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे यह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा।
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देगी।
५ विद्या हो परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होगा।
८ विद्या में विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आएगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते में ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च से तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उनसे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह की जायेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (१०)
१ इष्ट साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना-शुभफल से पूर्ण होवे।
५ प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

बाग लगाने का फल (११)
१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगानें में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक समय का जावेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग अगाध कष्ट का मूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१२)
१ विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं।
२ राजा के दर्शन में हानि है।
३ राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४ राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५ लाभ हुआ चाहता है, वैरी रोकता है।
६ राजा के दर्शन से कोई लाभ नहीं है।
७ राजा आदर करे जगत् में नाम हो।
८ इस झगड़े में मत पड़ो पश्चाताप होगा।
९ राजा का दर्शन सफल होगा।

बन्ध-मोक्ष का फल (१३)
१ खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२ नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो
३ जल्दी छूटेगा, देर नहीं होगी।
४ रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५ धन खर्च करने से छूटेगा।
६ देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७ सिफारिश से छूटेगा।
८ जल्दी छूट जाएगा।
९ अभी नहीं छूटेगा।

मकान बनाने में हानि-लाभ (१४)
१ मकान बनाओ सुख मिलेगा।
२ अधिक दिनों में पूरा होगा।
३ इस कार्य में लाभ नहीं, मत करो
४ द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५ इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६ मकान निर्बल खराब बनेगा।
७ इस मकान से लाभ होगा।
८ इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे।
९ पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

इच्छा पूरी होगी कि नहीं (१५)
१ इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी।
२ अधूरी इच्छा पूर्ण होगी।
३ इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४ निष्फलता है।
५ देर से होगी।
६ इच्छा पूर्ति में कुछ विघ्न, बाधाएं।
७ इच्छा पूर्ण होगी।
८ इच्छा पूर्ण न होगी।
९ किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

दुकान करूं या नहीं (१६)
१ दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२ दुकान करने से लाभ नहीं।
३ दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४ दुकानसे लाभ है,परन्तु खर्च बहुतहोगा
५ दुकान मत करो, हानि है।
६ लाभ-हानि समान है न करो।
७ लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८ दुकान में लाभ न होगा
९ दुकान में लाभ अच्छा होगा

खेती करूं या नहीं (१७)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१८)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है,शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रखो।
७ चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी है।
८ आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिक है
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता

संतान भाग्य में क्या है फल (१९)
१ सन्तान आपके भाग्य में नहीं।
२ प्रेतबाधा से होगी।
३ सन्तान होगी कमजोर।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से।
५ मेहनत से होगी।
६ दया या विधि विधि से।
७ होकर नष्ट होने का भय है।
८ सन्तान की आशा छोड़ो।
९ सन्तान यज्ञ से होगी।

धर्म दीक्षा-फल (२०)

१ धर्म से प्रीति थोड़ी हो।
२ धर्म में अधिक प्रीति हो।
३ धर्म करते रोग हो।
४ धर्म में यश बढ़े।
५ धर्म में आकुलता हो।
६ धर्म से नाम स्थिर रहे।
७ धर्म करते मृत्यु हो।
८ धर्म से वृत्ति उखड़े।
९ धर्म-दीक्षा में शांति मिले।

अनाज खरीद फल (२१)

१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ साझी व्यापार न करें।
६ देर से मिलेगा।
७ अनाज में कसावे होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न-फल अशुभ है।

पुत्र गोद में लेने का फल (२२)

१ गोद लेने से नाम रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी निभेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बे-मुहब्बत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ मुनासिब नहीं है

तबादले का प्रश्न (२३)

१ तबादला होगा।
२ कुछ रुकावट के साथ होगा।
३ तबादले में विघ्न आवे।
४ तबादला अभी नहीं।
५ तबादला होगा।
६ तबादले में देर है।
७ तबादला जरूर होवे।
८ अभी ठहरो।
९ देरी से होगा।

कर्ज लेने देने का परिणाम क्या है (२४)

१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि-लाभ समान है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अंत समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है ? फल (२५)

१ इस गर्भ की सुरक्षा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ कन्या जन्मेगी।
९ जोड़े बालक होंगे।

विवाह शादी का फल [२६]

१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो काम बनेगा।
८ थोड़ी विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुण वाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल [२७]

१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ अन्न मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रह की दशा है। अभी चुप रहो।
९ जो विचार है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोरी गई का फल [२८]

१ वस्तु शीघ्र मिलेगी।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी है।
७ माल आधा नष्ट हो गया है।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ दो।
९ चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा।

गुप्त चिन्ता का फल [२९]

१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा मत करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ [illegible]
८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता [illegible] है किसी की मदद [illegible]

क्या मुझे साझा व्यापार से लाभ होगा [३०]

१ साझे में लाभ होगा।
२ साझे में लाभ कम होगा।
३ साझे में हानि का भय है।
४ लाभ होगा परन्तु ठहर कर।
५ हानि का भय है।
६ लाभ होगा।
७ लाभ होगा, परन्तु अंत में गड़बड़ी का भय है।
८ लाभ की आशा व्यर्थ है।
९ लाभ होगा विश्वास रखो।

खोया पशु किधर मिलेगा [३१]

१ पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा।
२ पश्चिम में गया है, मिलेगा।
३ उत्तर-पश्चिम के कोण में गया है, नहीं मिलेगा
४ उत्तर दिशा में ढूंढो, मिलेगा।
५ पूर्व की ओर गया है, जल्दी ढूंढने से मिलेगा
६ उत्तर में ही मिलेगा।
७ पूर्वोत्तर कोण में गया है, मिलना कठिन है
८ दक्षिण में गया है मिलेगा।
९ पश्चिम में गया है, खर्च से मिलेगा।

मेरा यह वर्ष कैसा है [३२]

१ यह वर्ष शुभ रहेगा।
२ वर्ष कष्टप्रद है।
३ वर्ष मध्यम है।
४ वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५ वर्ष शुभ लाभप्रद है।
६ वर्ष साधारण है।
७ वर्ष शुभ है।
८ वर्ष हानिकारक है ग्रहशान्ति करो।
९ इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी।

यह प्राणी जीवित है या नहीं [३३]

१ जीवित नहीं।
२ वह जीवित है।
३ जीवित नहीं है।
४ जीवन में सन्देह है।
५ जीवित है।
६ जीवित नहीं।
७ जीवित है।
८ जीवित नहीं।
९ जीवित है।

यह व्यक्ति विश्वास-योग्य है कि नहीं (३४)

१ विश्वास-योग्य है।
२ विश्वास-योग्य कम है।
३ विश्वास योग्य नहीं।
४ ईमानदार है।
५ भरोसा कर सकते हैं।
६ भरोसा मत करो।
७ विश्वास-पात्र है।
८ विश्वास योग्य नहीं है।
९ विश्वास [illegible]

इस काम में लाभ है कि नहीं [३५]

१ इस काम से सुख लाभ होगा।
२ इस काम में दुःख एवं हानि होगी।
३ इस काम में हानि-लाभ समान होगा।
४ इस काम में हानि दुःख होगा।
५ इसमें लाभ सुख है।
६ लाभ सुख मध्यम है।
७ सुख लाभ होगा।
८ सावधान, हानि दुःख होगा।
९ सुख लाभ होगा।

मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर [३६]

१ अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा।
२ इसी स्थान पर लाभ होगा, धैर्य करो।
३ अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४ अन्य स्थान पर लाभ रहेगा।
५ यहीं ठहरो, कुछ दिन बाद लाभ होने लगेगा।
६ यहीं पर ठहरो दूसरी जगह भी कष्ट होगा
७ यह स्थान मत छोड़ो देर से लाभ होगा।
८ दूसरी जगह जाना ठीक है।
९ यहीं परिश्रम करो, ग्रहशान्ति से लाभ होगा

यह खबर झूठी है या सच्ची [३७]

१ यह खबर ठीक सच्ची है।
२ यह बात झूठी है।
३ बात सच्ची है।
४ बात झूठी है।
५ बात सत्य है।
६ सत्य है।
७ कुछ कुछ सत्य है।
८ निराधार, झूठी है।
९ सच्ची है।

मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा ? [३८]

१ आज का दिन अच्छा है।
२ आज सावधान रहें।
३ अच्छा दिन है।
४ खराब है।
५ अच्छा दिन है।
६ अशुभ चिन्ताप्रद है।
७ शुभ दिन है।
८ बहुत ज्यादा खराब है।
९ मध्यम है।

इसे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा [३९]

१ कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है।
२ रोग से ही पीड़ित है।
३ ग्रहकृत मानसिक रोग है।
४ प्रेतपीड़ा है, शान्ति करावें।
५ शत्रुकृत टोना आदि असर है।
६ ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें।
७ शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें।
८ रोग कष्टसाध्य है शिवार्चन करें।
९ कर्मजन्य फल से विवश है।

क्या नलकूपादि लगाना ठीक है [४०]

१ शीघ्र जल मिलेगा।
२ खण्डित जल मिलेगा।
३ सुन्दर जल मिलेगा।
४ जल नहीं मिलेगा।
५ अमृत जल मिलेगा।
६ जल मिलेगा।
७ मिश्रित कम जल मिलेगा।
८ अभी जल नहीं मिलेगा।
९ जल कम या क्षार मिलेगा।

इस व्यक्ति से मेरा कार्य सिद्ध होगा कि नहीं [४१]

१ इस व्यक्ति द्वारा सफलता होगी।
२ इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३ कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४ इससे काम सिद्ध न होगा।
५ इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जाएगा।
६ यह दिल से काम नहीं करेगा।
७ बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा
८ इससे कुछ आशा न करो।
९ मिलो, कार्य बनेगा।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी कि नहीं ? [४२]

१ सफलता की कम आशा है।
२ बड़े परिश्रम से सफलता मिलेगी।
३ सफलता मिलेगी।
४ सफल होना मुश्किल है।
५ सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६ सफलता देर से मिलेगी।
७ किसी की सहायता से सफलता मिलेगी
८ सफलता की आशा नहीं।
९ निराशा के बाद सफलता मिलेगी।

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धता पूर्वक 'ॐ श्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धा पूर्वक सात बार पढ़ कर नीचे दिये गए चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खे। फिर यन्त्रों के उन चारों अंकों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नावली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो 'मुकदमा का फल' वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में... इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिए—आपका प्रश्न मुकदमे के विषय में है कि जीत होगी कि नहीं? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७ एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है—"विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।

अंगुल रखने के लिए चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)

१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र बड़ा कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकदमे का फल (२)

१ मुकदमा देर से होगा।
२ मुकदमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी।
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१ गमन मत करो, लाभ नहीं है।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूल कर भी मत जाओ हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचार कर गमनकरो लाभहोगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)

१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)

१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे यह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा।
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देगी।
५ विद्या हो परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होगा।
८ विद्या में विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१ परदेशी शीघ्र ही आएगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते में ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया, डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह की जायेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

कार्य सिद्ध करने का फल (१०)

१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना कुछ नहीं।
४ साधना युक्ति से पूर्ण होगी।
५ आरम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ यह सिद्धि को खेल मत समझो।

बाग लगाने का फल (११)

१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक समय बाद आयेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग लगाओ, जगह का भूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१२)

१ विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं।
२ राजा के दर्शन में हानि है।
३ राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४ राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५ लाभ हुआ चाहता है, वैरी रोकता है।
६ राजा के दर्शन से कोई लाभ नहीं है।
७ राजा आदर करे जगत् में नाम हो।
८ इस झगड़े में मत पड़ो पश्चाताप होगा।
९ राजा का दर्शन सफल होगा।

बन्ध-मोक्ष का फल (१३)

१ खर्च करने से जल्द छूटेगा।
२ नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो।
३ जल्दी छूटेगा, देर नहीं होगी।
४ रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५ धन खर्च करने से छूटेगा।
६ देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७ सिफारिश से छूटेगा।
८ जल्दी छूट जाएगा।
९ अभी नहीं छूटेगा।

मकान बनाने में हानि-लाभ (१४)

१ मकान बनाओ सुख मिलेगा।
२ अधिक दिनों में पूरा होगा।
३ इस कार्य में लाभ नहीं, मत करो
४ द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५ इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६ मकान निर्बल खराब बनेगा।
७ इस मकान से लाभ होगा।
८ इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे।
९ पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

इच्छा पूरी होगी कि नहीं (१५)

१ इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी।
२ अधूरी इच्छा पूर्ण होगी।
३ इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४ निष्फलता है।
५ देर से होगी।
६ इच्छा पूर्ति में कुछ विघ्न, बाधाएं।
७ इच्छा पूर्ण होगी।
८ इच्छा पूर्ण न होगी।
९ किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

दुकान करूं या नहीं (१६)

१ दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२ दुकान करने से लाभ नहीं।
३ दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४ दुकानसे लाभ है,परन्तु खर्च बहुतहोगा
५ दुकान मत करो, हानि है।
६ लाभ-हानि समान है न करो।
७ लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८ दुकान में लाभ न होगा
९ दुकान में लाभ अच्छा होगा

खेती करूं या नहीं (१७)

१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१८)

१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रखो।
७ चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी है।
८ आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिकहै
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता

संतान भाग्य में क्या है फल (१९)

१ संतान आपके भाग्य में नहीं।
२ प्रेतशांति से होगी।
३ सन्तान होगी कमजोर।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से।
५ मेहनत से होगी।
६ सवा या विहोए विधि से।
७ होकर नष्ट होने का भय है।
८ संतान की आशा छोड़ो।
९ सन्तान चवन से होगी।

धर्म दीक्षा-फल (२०)

१ धर्म में प्रीति थोड़ी हो।
२ धर्म में अधिक प्रीति हो।
३ धर्म करते रोग हो।
४ धर्म से धन बढ़े।
५ धर्म से आकुलता हो।
६ धर्म से नाम स्थिर रहे।
७ धर्म करते मृत्यु हो।
८ धर्म से वृत्ति उखड़े।
९ धर्म-दीक्षा से शांति मिले।

अनाज खरीद फल (२१)

१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ सांझी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्नफल अशुभ है।

पुत्र गोद में लेने का फल (२२)

१ गोद लेने से नाम रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करावेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी निभेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बे-मुहब्बत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ बुराई नहीं है

तबादले का प्रश्न (२३)

१ तबादला होगा।
२ कुछ रुकावट के साथ होगा।
३ तबादले में विघ्न आवे।
४ तबादला अभी नहीं।
५ तबादला होगा।
६ तबादले में देर है।
७ तबादला जरूर होवे।
८ अभी ठहरो।
९ देरी से होगा।

कर्ज लेने देने का परिणाम क्या है (२४)

१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि-लाभ समान है।
७ लेने देने में कोई हर्ज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है ? फल (२५)

१ इस गर्भ की सुरक्षा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ कन्या जन्मेगी।
९ जोड़े बालक होंगे।

विवाह शादी का फल [२६]

१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो काम बनेगा।
८ थोड़ी विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुण वाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल [२७]

१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रह की दशा है। अभी चुप रहो
९ जो विचार है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोरी गई का फल [२८]

१ वस्तु शीघ्र मिलेगी।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी है।
७ माल आधा नष्ट हो गया है।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ दो।
९ चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा।

गुप्त चिन्ता का फल [२९]

१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा मत करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ मेरा गुप्त [illegible] बाहर [illegible] है।
८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता जल्दी है किसी की मदद [illegible]

क्या मुझे सांझा व्यापार से लाभ होगा [३०]

१ सांझे में लाभ होगा।
२ सांझे में लाभ कम होगा।
३ सांझे में हानि का भय है।
४ लाभ होगा परन्तु ठहर कर।
५ हानि का भय है।
६ लाभ होगा।
७ लाभ होगा, परन्तु अंत में गड़बड़ी का भय है।
८ लाभ की आशा व्यर्थ है।
९ लाभ होगा विश्वास रखो।

खोया पशु किधर मिलेगा [३१]

१ पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा।
२ पश्चिम में गया है, मिलेगा।
३ उत्तर-पश्चिम के कोण में गया है, नहीं मिलेगा
४ उत्तर दिशा में ढूंढो, मिलेगा।
५ पूर्व की ओर गया है, जल्दी ढूंढने में मिलेगा
६ उत्तर में ही मिलेगा।
७ पूर्वोत्तर कोण में गया है, मिलना कठिन है
८ दक्षिण में गया है मिलेगा।
९ पश्चिम में गया है, खर्च से मिलेगा।

मेरा यह वर्ष कैसा है [३२]

१ यह वर्ष शुभ रहेगा।
२ वर्ष कष्टप्रद है।
३ वर्ष मध्यम है।
४ वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५ वर्ष शुभ लाभप्रद है।
६ वर्ष साधारण है।
७ वर्ष शुभ है।
८ वर्ष हानिकारक है ग्रहशान्ति करो।
९ इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी।

वह प्राणी जीवित है या नहीं [३३]

१ जीवित नहीं।
२ वह जीवित है।
३ जीवित नहीं है।
४ जीवन में सन्देह है।
५ जीवित है।
६ जीवित नहीं।
७ जीवित है।
८ जीवित नहीं।
९ जीवित है।

यह व्यक्ति विश्वास-योग्य है कि नहीं (३४)

१ विश्वास-योग्य है।
२ विश्वास-योग्य कम है।
३ विश्वास योग्य नहीं।
४ ईमानदार है।
५ भरोसा कर सकते हैं।
६ भरोसा मत करो।
७ विश्वास-पात्र है।
८ विश्वास योग्य नहीं है।
९ विश्वास-पात्र है।

इस काम में लाभ है कि नहीं [३५]

१ इस काम से सुख लाभ होगा।
२ इस काम से दुःख एवं हानि होगी।
३ इस काम में हानि-लाभ समान होगा।
४ इस काम में हानि दुःख होगा।
५ इसमें लाभ सुख है।
६ लाभ सुख मध्यम है।
७ सुख लाभ होगा।
८ सावधान, हानि दुःख होगा।
९ सुख लाभ होगा।

मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर [३६]

१ अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा।
२ इसी स्थान पर लाभ होगा, धैर्य करो।
३ अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४ अन्य स्थान पर लाभ रहेगा।
५ यहीं ठहरो, कुछ दिन बाद लाभ होने लगेगा।
६ यहीं पर ठहरो दूसरी जगह भी कष्ट होगा
७ यह स्थान मत छोड़ो देर से लाभ होगा।
८ दूसरी जगह जाना ठीक है।
९ यहीं परिश्रम करो, ग्रहशान्ति से लाभ होगा

यह खबर झूठी है या सच्ची [३७]

१ यह खबर ठीक सच्ची है।
२ यह बात झूठी है।
३ बात सच्ची है।
४ बात झूठी है।
५ बात सत्य है।
६ सत्य है।
७ कुछ कुछ सत्य है।
८ निराधार, झूठी है।
९ सच्ची है।

मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा ? [३८]

१ आज का दिन अच्छा है।
२ आज सावधान रहें।
३ अच्छा दिन है।
४ खराब है।
५ अच्छा दिन है।
६ अशुभ चिन्ताप्रद है।
७ शुभ दिन है।
८ बहुत ज्यादा खराब है।
९ मध्यम है।

इसे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा [३९]

१ कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है।
२ रोग से ही पीड़ित है।
३ ग्रहकृत मानसिक रोग है।
४ प्रेतपीड़ा है, शान्ति करावें।
५ शत्रुकृत टोना आदि असर है।
६ ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें।
७ शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें।
८ रोग कष्टसाध्य है शिवार्चन करें।
९ कर्मजन्य फल से विवश है।

क्या नलकूपादि लगाना ठीक है [४०]

१ शीघ्र जल मिलेगा।
२ खण्डित जल मिलेगा।
३ सुन्दर जल मिलेगा।
४ जल नहीं मिलेगा।
५ अमृत जल मिलेगा।
६ जल मिलेगा।
७ मिश्रित कम जल मिलेगा।
८ अभी जल नहीं मिलेगा।
९ जल कम या क्षार मिलेगा।

इस व्यक्ति से मेरा कार्य सिद्ध होगा कि नहीं [४१]

१ इस व्यक्ति द्वारा सफलता होगी।
२ इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३ कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४ इससे काम सिद्ध न होगा।
५ इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जाएगा।
६ यह दिल से काम नहीं करेगा।
७ बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा
८ इससे कुछ आशा न करो।
९ मिलो, कार्य बनेगा।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी कि नहीं ? [४२]

१ सफलता की कम आशा है।
२ बड़े परिश्रम से सफलता मिलेगी।
३ सफलता मिलेगी।
४ सफल होना मुश्किल है।
५ सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६ सफलता देर से मिलेगी।
७ किसी की सहायता से सफलता मिलेगी
८ सफलता की आशा नहीं।
९ निराशा के बाद सफलता मिलेगी।

विवाहादि मुहूर्त्त (स. २०४१ वि.)

—समय शुद्धि—

शुक्रास्त :—वैशाख शुक्ल १३ रवि (वैशा. प्रविष्टा ३१, १३ मई सन् १९८४ ई.) से श्राव.कृ.८ शनि (श्राव. प्रविष्टा ७, २१ जुलाई सन् १९८४) तक शुक्र पूर्व में अस्त रहेगा।

गुरु अस्त—पौष शु. १३ शनि (पौष प्रविष्टा २२, जन. ५ सन् १९८५) से माघ शु. १० गुरुवार (माघ प्रविष्टा १९, जन. ३१, सन् १९८५) तक गुरु अस्त रहेगा।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न प्रदेशों में गुरु शुक्रोदयास्त

अक्षांश	+१५°	+२५°	+३०°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	२० मई'८४	१५ मई ८४	१३ मई'८४	९ मई'८४
शुक्र पश्चिम में उदित	१५ जुला.'८४	२० जुला.'८४	२२ जुला.'८४	२५ जुला.'८४
गुरु अस्त	६ जन.'८५	५ जन.'८५	५ जन.'८५	४ जन.'८५
गुरु उदित	२९ जन.'८५	३१ जन.'८५	१ फर.'८५	३ फर.'८५

मकरस्थ गुरु—इसवर्ष (स. २०४१ में) माघ कृ. ४ गुरुवार को गुरु मकरराशि में प्रवेश करेगा। मकरस्थ गुरु के काल में केवल वही काल विवाहादि शुभकृत्यों के लिए वर्जित होता है जबकि गुरु मकर के पञ्चम-अंश में रहता है। इस विषय पर विशेष विवेचन पृष्ठ १५४ पर पढ़िए।

ध्यान रहे—यहां विवाहादि मुहूर्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरयाणा, हि. प्र., दिल्ली आदि की ही ली गई हैं। अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरूरी है।

यदि गुरु-शुक्र के उदयानन्तर ५-७ दिन के भीतर ही विवाह-मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी, माइयां-हत्थ (मायहस्त) आदि विवाहांगकृत्यों का प्रारम्भ गुरु-शुक्र के अस्त होने से पहले ही कर लेना चाहिए।

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र

अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा—ये चार विवाह के नक्षत्र कात्यायन आर्ष-सूत्रोक्त होने से हम यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य हैं। अन्य ऋग्वेदी-सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं।

प्रमाणार्थ देखिए— पारस्करगृह्य (कात्यायन)सूत्र —"उदगयने आपूर्यमाण-पक्षे कुमार्याः पाणि गृह्णीयात्" ॥१॥ "त्रिषु-त्रिषु उत्तरादिषु" ॥२॥ हरिहरभाष्य में इससूत्र का अर्थ इसप्रकार स्पष्ट किया है—"उत्तरा आदिर्येषा तानि उत्तरादीनि, तेष कतिषु ? त्रिषु-त्रिषु, उ. फा., ह., चि.। उ. षा., श्र., ध.। उ. भा., रे., अश्विनी।"

इसी प्रमाण के अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णय-सागर के छपे) पृष्ठ २१८ पर "विवाहे-नक्षत्रनिर्णयः" में वेद-व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है—"चित्रा-श्रवण धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि चत्वारि-तत्रापि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यम्।"

और भी देखिए—जैसे मंगलवार यजुर्वेदियों के लिए यज्ञोपवीत मुहूर्त में अग्राह्य है—(मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सामवेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से ग्राह्य है। ऐसेही इस नक्षत्र-चतुष्टयी का भी विवाह में वेद व सूत्रभेद से ग्राह्याग्राह्यत्व शुभाशुभत्व) समझना चाहिए। उपरोक्त वेदोक्त-प्रमाणानुसार अश्विनी आदि चार नक्षत्रों में भी विवाह-मुहूर्त लिखे हैं, पूज्य विद्वज्जन भ्रम न करते हुए स्वीकार करें।

मुहूर्तों में जिसलग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम (रेलवे टाईम) के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है, कि—इसलग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहिले ही मुहूर्त में स्वीकार करें।

यहां विवाह मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेषगणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चाङ्गकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

"भुजङ्गं क्रान्तिसाम्यं च बाणवेधं तथैव च।
लग्नहीनं-विवाहं तु कर्तौ पञ्च विवर्जयेत् ॥"

इन मुहूर्तों में जहां युति, वेध, दग्धातिथि, कर्त्तरी आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, वहां मुहूर्त लगा दिए हैं।

शुद्ध-विवाहमुहूर्त्त (सं. २०४१ वि.)

ध्यान रहे—(१) कोष्ठकों में भा. स्टैं. टा. के. घं. मि. दिए गए हैं। (२) तारीख वाले कालम में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न दान-पूजा एवं अन्य विवरण	तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
चैत्र शु. १३ श.	वैशा. २	अप्रैल १४	उ. फा.	ऽमू.रा.॥॥॥	ल. ३ (११।२७ तक) (मु. दा.)	वैशा. कृ. १ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	स्वाती	॥॥ऽसू.ऽअऽऽ॥	दि. ल. ३ (मु. दा.), ४, रा. ल. ९, १०, ११ (२८।२३तक) (रा. दा.)
„ „ १५ र.	„ ३	„ १५	चित्रा	।ऽ॥।ऽअ.।ऽ॥	ल. गोधू. ९, १०, ११ रा. दा)	„ „ ४ बु.	„ ७	„ १९	मूल	॥॥ऽचो.ऽ॥	ल. ११ (२७।१६ बाद) (रा. दा.), १२

शुद्ध-विवाहमुहूर्त्त (सं. २०४१ वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दानपूजा एवं अन्य विवरण
वैशाख.कृ.५ बु.	वैशा.८	अप्रै. २०	मूल	।।।।ऽचौ.ऽ।।।	दि. ल. ३ (गु. चं. दा.), गोधू., १० (२८।३६ तक) (मकर में बाणदोष नहीं है)
,, ,, ६ श.	,, ९	,, २१	उ. षा.	।।।।ऽरो,ऽऽ।।	ल. १२ (२९।३ बाद),
,, ,, ७ र.	,, १०	,, २२	उ. षा.	।।।।ऽरो ऽऽ।।	दि. ल. ३ (गु. चं. दा.), गोधू. ,९, ११ (रा. दा.), १२,
,, ,, ८ चं.	,, ११	,, २३	श्रव.	ऽबु ऽ।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ४ (चं. दा.), गोधू.
,, ,, ९ मं.	,, १२	,, २४	धनि.	।।।।ऽश.।ऽ।।	ल. ९, १०, १२
,, ,, १० बु.	,, १३	,, २५	धनि.	।।।।ऽश.।ऽ।।	दि. ल. ३ (१०।१६ तक) (गु. दा.)
वैशा. शु ३ बु.	,, २२	मई ४	मृग.	।।।।ऽश.।।।।	दि. ल. ३ (गु. दा.), ९ (च. दा.), ४, ५, गोधू.
,, ,, ७ चं.	,, २६	,, ८	मघा	।।।।ऽचौ.ऽ।।।	ल. ११ (२६।४७ बाद) (चं. रा. दा.)
,, ,, ९ बु.	,, २७	,, ९	मघा	।।।।।ऽ।।।	ल. ४, (१०।३९ तक क्रां सा.), गोधू., ९, (मिथुन लग्न में क्रां. सा. है।)

देशाचार के अनुसार केवल पंजाब और त्रिगर्त प्रदेश के लिए—

श्राव कृ. १२ बु.	श्राव. ११	जुला. २५	मृग.	ऽशु.।।ऽचं.।ऽरो.।ऽ।।	दि. ल. ५ (८।६ बाद), ६
श्राव शु. १ र.	,, १५	,, २९	मघा	।ऽऽबु.।।ऽनृऽ।।।	ल. ६ (२८।१० बाद) (गु. दा.)
,, ,, २ चं.	,, १६	,, ३०	मघा	।ऽऽबु.।।ऽनृऽ।।।	दि. ल. ६
,, ,, ५ बु.	,, १८	अग. १	उ. फा.	।।।।ऽचौऽऽ।।	दि. ल. ५
,, ,, ५ बु.	,, १८	,, १	हस्त	।।।।ऽचौ.।।।।	ल. गोधू. १२, (चं. दा.)
,, ,, ६ गु.	,, १९	,, २	हस्त	।।।।।।।।ऽ	दि.ल ५,
,, ,, ६ गु.	,, १९	,, २	चित्रा	।ऽ।।ऽरो.।।ऽ (२३।० तक)	ल.गोधू., ३(गु.दा.), गोधूलि में बाण दोष नहीं है।
,, ,, ७गु.	,, २०	,, ३	चित्रा	।ऽ।।ऽरो.।।।।	दि.ल. ५,६(१०।५४ तक)
,, ,, ११मं.	,, २४	,, ७	मूल	।ऽऽशु.।।।ऽ।।।	ल. ३(२७घ.२८ मि. बाद) (गु. च दा.)(अत्यावश्यकतामें)
,, ,, १२बु.	,, २५	,, ८	मूल	।ऽऽशु.।।ऽनृ.ऽ।।।	दि.ल.५,६(१०।४९ तक)
,, ,, १३गु.	,, २६	,, ९	उ.षा.	।।।।।ऽ।।।	ल. गोधू.,१२,
,, ,, १४शु.	,, २७	,, १०	उ.षा.	।।।।ऽचौ.ऽ।।।	दि.ल.६,
,, ,, १४शु.	,, २७	,, १०	श्रव.	ऽश.।।ऽशु.।ऽचौ.ऽऽ।।	दि.ल ९,
,, ,, १५श.	,, २८	,, ११	श्रव	ऽश.।।ऽशु.।।ऽऽ।।	दि.ल. ६ (८।३१ बाद,) ९(१५।४८ तक)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई.	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दानपूजा एवं अन्य विवरण
भाद्र.कृ. ८चं.	भाद्र. ५	अग. २०	रोहि.	।।।।ऽके.ऽनृ.ऽऽ।।	दि.ल.९, गोधू, ३(गु.दा.), ४, धनु लग्न मेंबाणदोष नहीं है।
,, ,, ९मं.	,, ६	,, २१	रोहि.	।।।।ऽके ऽनृ ऽऽ।।	दि.ल.६,
,, ,, ९मं.	,, ६	,, २१	मृग.	।ऽ।।।।।ऽ।ऽ	ल. गोधू.,१२,
भाद्र. शु. २म.	,, १३	,, २८	हस्त	।ऽ।।।।।।।	ल. ३(गु.दा.), ४
,, ,, ३बु.	,, १४	,, २९	हस्त	।ऽ।।।।।।।	दि.ल. ९,१०,
,, ,, ४गु.	,, १५	,, ३०	चित्रा	।।।।ऽनृ.।।।।	दि.ल. ९, (मकर में क्रान्ति-साम्य है)
,, ,, ९चं.	,, १९	सितं. ३	मूल	ऽमं.।ऽगु.।।ऽरो.ऽ।।।	दि.ल. १०(१६।२६ बाद), गोधूलि, ३(गु.चं.दा.),
,, ,, १०मं.	,, २०	,, ४	मूल	ऽमं.।ऽगु.।।।ऽ।।ऽ	दि.ल.६,१०(१६।१९ तक)
,, ,, १२गु.	,, २२	,, ६	उ.षा.	।।।।ऽश.ऽ।।।	दि.ल.६(७।१बाद),९,गोधूलि.
,, ,, १२गु.	,, २२	,, ६	श्रव.	ऽमृ.श.।।ऽबु.।ऽश.ऽ।।।	ल. ४(चं.दा.),
,, ,, १२शु.	,, २३	,, ७	श्रव.	ऽमृ.श.।।ऽबु.।ऽश.ऽ।।।	दि.ल.६(७।५४ तक),गोधूलि,
,, ,, १२शु.	,, २३	,, ७	धनि.	।।।।।।।।।	ल.४(चं.दा.)
,, ,, १३श.	,, २४	,, ८	धनि.	।।।।ऽनृ.।।।।	दि.ल.६,९,रा.ल.३(२७।१९ तक) (गु.दा.);
आश्वि. शु. २बु.	आश्वि११	,, २६	चित्रा	।।।ऽचं.।ऽरो.ऽ।।।	दि.ल.७,१०, गोधूलि,
,, ,, ८मं.	,, १७	अक्तू. २	उ.षा.	ऽमं।।।।ऽ।।।	ल.५,
,, ,, ९बु.	,, १८	,, ३	उ.षा.	ऽमं।।।।ऽ।।।	दि.ल.११(रा.दा.), गोधूलि, ४(२५।२६ तक) (चं.दा.), (कर्क में रोगबाण है)
,, ,, १०गु.	,, १९	,, ४	श्रव.	।।।।ऽरो ऽऽ।।	दि.ल.११ (रा.दा.), गोधू., ४ (चं.दा.)
,, ,, १४मं.	,, २४	,, ९	रेव.	।।।ऽसू.बु.ऽनृ.।ऽ।।	दि.ल. ११ (१६।१२ बाद) (रा.दा.)
कार्ति. कृ. १बु.	,, २५	,, १०	रेव	।।।।ऽबु.।ऽऽ।।	दि.ल. १०,११(रा.दा),
,, ,, १बु.	,, २५	,, १०	अश्वि	।ऽ।।ऽसू.बु.ऽचौ.।ऽ।।	ल.४,५,
,, ,, ४र,	,, २९	,, १४	रोहि.	।ऽ।।ऽके.।ऽऽ।'	ल.४(२५।२० तक)
,, ,, १०श.	कार्ति ५	,, २०	मघा	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.११(रा.चं.दा.), गोधूलि, ४
,, ,, ११र.	,, ६	,, २१	उ.फा.	।।।ऽचं.।ऽनृ.ऽ।।ऽ	ल.४ (२४।३३ बाद), ६ (२८।२४ तक),
कार्ति. शु. ४र.	,, १३	,, २८	मूल	।।।।ऽश.ऽऽ।।	दि.ल.१०,११(रा.दा.), १२ (मं.दा.), गोधूलि,५,६
,, ,, ७मं.	,, १५	,, ३०	उ.षा.	।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	दि.ल. १०, ११ (रा.दा.), १२ (मं.दा.), गोधूलि, ४ (चं.दा.), ६ (गु.दा.),
,, ,, ८गु.	,, १७	नवं. १	धनि.	ऽश.ऽ।।ऽचौ.।।।।	दि.ल.११(रा.दा.),१२(मं.दा.), गोधूलि,४(चं.दा.),५(चं.दा.),

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
कार्ति. शु. ९गु.	कार्ति. १८	नवं. २	धनि.	ऽश.ऽ।।।।।।।	दि.ल.१०(१२।४६ तक)
	सभी प्रवेशों के लिए				—
मार्ग. कृ. २श.	कार्ति. २६	नवं.१०	रोहि.	।।।ऽके.ऽचौ.ऽ।।।	दि.ल. ११ (रा.दा.), १२ गोधूलि, ५,६
,, ,, ८गु.	मार्ग. २	,, १६	मघा	।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.११ (१२।१७ बाद) (रा.चं.दा.), गोधूलि
,, ,, १०र.	,, ४	,, १८	उ.फा.	ऽबु ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल.५,
,, ,, ११च.	,, ५	,, १९	हस्त	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल. ९, १२ (चं.दा.), गोधूलि, ५,
,, ,, १२म.	,, ६	,, २०	चित्रा	।।।।ऽनृ.।ऽ।।	ल.९
मार्ग. शु. २श.	,, १०	,, २४	मूल	।।ऽबृ.।।।ऽ।।।	ल.५,६
,, ,, ३र.	,, ११	,, २५	मूल	।।ऽबु.।।।ऽ।।।	दि.ल.११(रा.दा.),१२
,, ,, ४चं.	,, १२	,, २६	उ.षा.	।ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल.५(२३।५९ तक),६
,, ,, ५मं.	,, १३	,, २७	उ.षा.	।ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि.ल.९, ११(रा.दा.),१२
,, ,, ६बु.	,, १४	,, २८	धनि.	ऽश.।।।।ऽनृ.।ऽ।।	ल.६(२६।२६ तक),
,, ,, ७गु.	,, १५	,, २९	धनि.	ऽश.।।।।ऽनृ.।ऽ।।	दि.ल.९,१२, गोधूलि
,, ,, ९श.	,, १७	दिसं. १	उ.भा.	।।।।।।ऽऽ।।	ल.६(२७।६ बाद) (चं.दा.)
,, ,, १०र.	,, १८	,, २	उ.भा.	।।।।।ऽ(१३।२ तक) ऽ(१३।२ तक)।ऽ	दि.ल.९,११(रा.दा.),गोधूलि, ६(चं.दा.), [कन्या में रोग बाण है]
,, ,, ११मं.	,, २०	,, ४	अश्वि.	।।।।।।।।।	दि.ल. ११ (रा.दा.), १२, गोधूलि,

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
मार्ग.शु.१५श.	मार्ग.२४	दिस. ८	रोहि.	।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	दि.ल.११(रा.दा.),१२
पौष कृ. १ र.	,, २५	,, ९	मृग.	।।।ऽशु.ऽमू.।।ऽ।।	दि.ल.९(च.दा.,)११ (रा.दा), १२,
फाल्गु. कृ.१बु.	माघ २५	फर. ६ (१९८५ई)	मघा	।।।ऽबु.ऽमू.।ऽऽ।।	दि.ल.११(८।११बाद) (चं. दा), गोधूलि,९(२८।१७तक) (श.दा) [गोधूलि और धनु में चौर बाण है]
,, ,, ३शु.	,, २७	,, ८	उ.फा.	।।।।ऽरो.ऽ।।।	ल. गोधूलि
,, ,, १०गु.	फाल्गु.३	,, १४	मूल	।ऽ।।।ऽअ.।ऽ।।	ल.१०(गु.रा. दान),
फाल्गु.शु.२गु.	,, १०	,, २१	उ.भा.	ऽगु.ऽ।।।।ऽ।।।	ल.९(२७।१०बाद)(श.दा.), १०(गु.रा.दा.)
,, ४ र.	,, १३	,, २४	अश्वि.	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.४(गु.दा.), ९(शनि दान),१०(गु.रा.दान), (गोधूलि में क्रां.सा. है।)
,, ७ बु.	,, १६	,, २७	रोहि.	।ऽ।।ऽश.ऽचौ.।ऽ।।	ल.१०(२९।६बाद) (गु.रा.दा.)
चैत्रकृ. २शु.	,, २५	मार्च ८	हस्त	।ऽ।ऽबु.ऽबु.ऽचौ.।।।।	दि.ल.४(गु.मं.दा.),गोधू., ९ (२७।२ बाद),(श.दा.), १०(गु.रा.दा.)
,, ३श.	,, २६	,, ९	हस्त	।ऽ।ऽबु.ऽबुऽचौ.।।।।	दि.ल.१२(७।८तक)(चं.दा.)
,, ४ र.	,, २७	,, १०	स्वाती	।।।।ऽमं.ऽरो.।ऽ।ऽ (१८।७ तक)	दि.ल.४(गु.म.दा.), ९(२६।२४तक)(श.दा.),

वि. सं. २०४२ में गुरु शुक्र अस्त—२०४२ वि. में चैत्र शुक्ल १२ से चैत्र पूर्णिमा और मार्ग शुक्ल १४ से माघ ३ तक शुक्र अस्त रहेगा। गुरु माघ अमा. से फाल्गुन अमा. तक अस्त रहेगा।

सं. २०४१ वि० में मकरस्थ-गुरु का दोष और उसका परिहार

इसवर्ष (सं. २०४१ वि. में) माघकृष्ण चतुर्थी गुरुवार (२७ पौष, १० जन. ८५ ई०) को गुरु मकर (अपनी नीचराशि) में प्रवेश करेगा और वह अग्रिम वर्ष (सं. २०४२ वि.) तक इसमें ही सञ्चार करेगा।

शुभकृत्यों में मकरस्थ गुरु की वर्ज्यता के विषय में मुहूर्तग्रंथों में अनेक प्रकार के वाक्य मिलते हैं। कुछ वाक्य देशभेद के अनुसार मकरस्थ गुरु की वर्ज्यता का निर्देश करते हैं। इन वाक्यों के अनुसार रेवा (नर्मदा) नदी के पूर्वी, गण्डकी नदी के पश्चिमी और शोण (सोन) नदी के उत्तर-दक्षिणी (दोनों) भागों में स्थित प्रदेशों में मकरस्थगुरु का दोष नहीं माना जाता, शेषप्रदेशों में ही इसका दोष है—"नर्मदा-पूर्वभागे तु शोणस्योत्तर-दक्षिणे। गण्डक्याः पश्चिमे भागे मकरस्थो न दोषभाक्"—लल्ल।

मुहूर्त-चिन्तामणि में इस बारे यह श्लोक मिलता है—

"रेवापूर्वे, गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदक्-दक्षिणेनीच इज्यः।
वर्ज्यो नार्यं, कौंकणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ॥"

इसके अनुसार कोंकण (कन्नड, बम्बई आदि) मगध (बिहार का दक्षिणी भाग), गौड़ और सिन्धु प्रदेश में मकरस्थ गुरु वर्ज्य है।

दूसरे वाक्य मकरराशि के मकर के ही नवांश (उ.षा.के द्वितीय चरण) में स्थित गुरु को ही शुभकृत्यों में वर्ज्य बतलाते हैं। इनके अनुसार गुरु अपनी नीचराशि (मकर) के नीचांशक (मकर-नवांश) में ही दोषकारक है—"नीचराशि-गतोजीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता।"—(व्यवहारचण्डेश्वर)।

कुछेक वाक्य कहते है,कि मकर में गुरु के आने पर पहले ६० दिन शुभकृत्यों के लिए वर्जित कर देने चाहिए—"नक्रे गुरौ समायाते शुभकर्म परित्यजेत्। तत्रापि षष्ठि-दिवसान् सर्वकर्मसु वर्जयेत्"—(भीमः)।

टोडरानन्द का यह वाक्य मकर में गुरु के आने पर पहले एकमास को ही वर्ज्य बतलाता है—

"अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादश एव च।
नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥"

गरुड़पुराण का यह वाक्य तो मकरस्थ गुरु में शुभकृत्यों की वर्ज्यता का ही निषेध करता है—

यदा सिंह गतो जीवो नैव कल्याणमाचरेत्।
मकरस्थेऽपि कर्तव्यं नात्रकार्या विचारणा ॥"

भीमपराक्रम में भी मकरस्थ गुरु के दोष का प्रतिवाद किया है—

"वापीकूप-तड़ागादौ निषिद्धं सिंहगे गुरौ।
मकरस्थे तु तत्कार्यं न दोषः काल-लोपतः ॥"

इस प्रकार इन विभिन्न वाक्यों में ऐकमत्य का अभाव है।

यदि मकर के मकरनवांश में गुरु-स्थिति के काल को अग्राह्य माना जाए तो ध्यान रहे कि इसवर्ष (सं० २०४१ वि. में) मकरस्थ गुरु का मकरनवांश में संचारकाल माघ कृ० ४ गुरु (२७ पौष, १० जन' ८५ ई०) से माघ शु० ३ गुरु (१२ माघ, २४ जन० ८५) तक रहेगा। इन दिनों इसवर्ष सौभाग्यवश गुरु के अस्त रहने से वैसे भी कोई शुभकृत्य नहीं हो सकता।

किञ्च—कुछ विद्वानों का कहना है कि, "नीचांशकगतस्त्याज्य:" आदि वाक्यों में 'नीचांशक' का अभिप्राय 'परमनीचांश' से है। यह मत अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है। इस मत की पुष्टि 'देवीपुराण' के इस वचन से भी होती है :—

"मकरस्थो यदाजीवो वर्जयेत् पंचमांशकम्।
शेषेष्वपि च भागेषु विवाहः शोभनो मत ॥"

यह प्रमाण स्पष्टरूप से कहता है। कि—मकर के पंचम अंश में गुरु हो तो विवाहादिकृत्य वर्जित करने चाहिए, मकर के शेष अंशों में गुरु की स्थिति के समय ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। यह तो सभी जानते ही हैं कि—मकर के पांचवें अंश पर ही गुरु अपने परमनीच में होता है। अर्थात् मकर का पांचवा अंश ही उसका नीचांश है। इस वर्ष गुरु मकर के पांचवें अंश में २७ से ३१ जन०' ८५ तक ही रहता है। यहां भी गुरु अस्त होने के कारण कोई शुभकृत्य वैसे भी सम्भव नहीं है।

मकर का पांचवां अंश (गुरु का परमनीचांश) ही शुभकृत्यों में त्याज्य होना चाहिए,—यही मत अधिक प्रामाणिक प्रतीत होता है। इसी को अधिकतर पंचांगकार मान्यता देते हैं। देवीपुराण का ऊपर उद्धृत वाक्य भी इसी मत की सुस्पष्टरूपेण पुष्टि करता है। किञ्च—'तत्रापि षष्टिदिवसान् सर्वकर्मसु वर्जयेत्",—यह वाक्य भी स्थूलरूप से मकर के पांचवें अंश तक ही मकरस्थ गुरु को शुभकृत्यों के लिए अग्राह्य बतलाता है। गुरु की मध्यमदैनिकगति ५ कला है। स्पष्ट है—पांच अंशों (३०० कलाओं) को पार करने में गुरु को अपनी मध्यमगति से ६० दिन $\left(=\frac{१ \text{ दिन} \times ३०० \text{ क०}}{५ \text{ क०}}\right)$ लगेंगे। प्रकृत वाक्य (तत्रापि षष्टिदिवसान्) के लेखक ने गुरु के परमनीचांश (मकर के पांचवें अंश) तक के पूरे भाग को ही त्याज्य बतला डाला। लेकिन देवीपुराण के वाक्यानुसार एवं च यथार्थतयापि मकर का केवल पांचवां अंश ही त्याज्य होना चाहिए, क्योंकि वही अंश परमनीचांश होने से दोषावह है।

अपित्र एक यह निम्नांकित वाक्य तो मकर के उस पूरे नवांश में गुरु स्थिति के काल को वर्ज्य कह रहा है, जिस नवांश में उसका नीचांश (परमनीच) अर्थात् मकर का पांचवां अंश पड़ता है—

वाक्पतौ मकरराशिमुपेते पाणिपीडन-विधिर्न विधेयः।
तत्र दूषण मुशन्ति मुनीश्वराः केवलं परमनीचनवांशे ॥

इस वचन के अनुसार तो जबतक उ.षा. के तृतीय चरण में (९ रा. ३ अं. २० क. ० वि. से ९ रा. ६ अं. ४० क. ० वि. तक) गुरु रहेगा, तब तक कोई शुभकृत्य नहीं हो सकता;—यह वचन आर्ष भी नहीं है, अत: उपेक्ष्य है।

अस्तु, सभी दृष्टियों से मकर के पांचवें अंश में गुरु की स्थिति के काल को ही मांगलिक-कृत्यों के लिए वर्जित करना युक्तिसंगत है—यही सिद्धान्त है। जिन प्रदेशों में मकरस्थ गुरु के काल को निर्दोष कहा गया है वहां मकर के पांचवें अंश में गुरु की स्थिति का काल अपेक्षाकृत कम दोषकारक होगा;—यह तर्क से स्पष्ट है। हो सके तो वहां भी मकर के पांचवें अंश में गुरु के संचारकाल को छोड़ ही देना चाहिए।

अभिजित् मुहूर्त

ऊपर दिए गए मुहूर्तों में अनेक स्थलों पर हमने 'अभिजित' शब्द का प्रयोग किया है. यह अभिजित् नक्षत्र नहीं है, अपितु एक मुहूर्त (समय विशेष) का नाम है। घण्टा मिनटात्मक-दिनमान के आधे को सूर्योदयकाल में जोड़ने पर स्पष्टमध्याह्नकाल बन जाता है। स्पष्टमध्याह्नकाल से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद के समय को 'अभिजित् मुहूर्त' कहा जाता है। इस मुहूर्त में अनेक दोष दूर करने की शक्ति मानी जाती है। इसलिए इसमें किए गए सभी काम सफल होते हैं :—

"अभिजित्-सर्वदेशेषु मुख्यदोषविनाशकृत्। मध्यदिने गते भानौ मुहूर्तोऽभिजिदाह्वयः। नाशयत्यखिलान् दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा।

चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त

(१) चैत्रशुक्ल प्रतिपदा (२) अक्षय (वैशा. शु.) तृतीया, (३) विजयादशमी, (४) दीपावली (प्रदोष समय)

ये 'चार स्वयं-सिद्ध मुहूर्त' कहलाते हैं। ग्रामीण पंजाबी जनता इन्हें 'अणपुछ मुहूर्त' कहती है। इन मुहूर्तों में विवाहादि के अतिरिक्त कोई भी शुभकार्य करने के लिए नक्षत्रादि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

द्विरागमन (मुकलावा मुहूर्त (सं० २०४१)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख (१९८४ ई.)	नक्षत्र	काल (भा. स्टै. टा.)
वैशा. कृ. १ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	चित्रा	६।२८ तक
,, ,, १ चं.	,, ४	,, १६	स्वा.	७।४० बाद
,, ,, ५ शु.	,, ८	,, २०	मूल	१५।३६ तक
,, ,, ८ चं.	,, ११	,, २३	श्रव.	७।७ बाद
,, ,, ११ गु.	,, १४	,, २६	शत.	७।२५ से ८।८ तक
वैशा. शु. २ गु.	,, २१	मई ३	रोहि.	१७।३२ तक
,, ,, ३ शु.	,, २२	,, ४	मृग	१०।३२ तक
,, ,, ६ सं.	,, २५	,, ७	पुष्य	७।५९ से १०।५८ तक, १३।२२ बाद
मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. ५	नवं. १९	हस्त.	७।० बाद
,, ,, १३ बु.	,, ७	,, २१	स्वा.	१०।१५ तक
मार्ग. शु. ८ शु.	,, १६	,, ३०	धनि.	१३।३६ बाद

शुद्ध-विवाहमुहूर्त (सं. २०४१ वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
कार्ति. शु. ९बु.	कार्ति. १८	नवं. २	धनि.	ऽश.ऽ।।।।।।।	दि.ल.१०(१२।४६ तक)
	सभी प्रवेशों के लिए				
मार्ग. कृ. २ब.	कार्ति. २६	नवं.१०	रोहि.	।।।ऽके.ऽचौ.ऽ।।।	दि.ल. ११ (रा.दा.), १२ गोधूलि, ५,६
,, ,, ८गु.	मार्ग. २	,, १६	मघा	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.११ (१३।१७ बाद) (रा.चं.दा.), गोधूलि
,, ,, १०र.	,, ४	,, १८	उ.फा.	ऽबु.ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल.५,
,, ,, ११चं.	,, ५	,, १९	हस्त	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल. ९, १२ (चं.दा.), गोधूलि, ५,
,, ,, १२मं.	,, ६	,, २०	चित्रा	।।।।ऽनु.।ऽ।।	ल.९
मार्ग. शु. २श.	,, १०	,, २४	मूल	।।ऽबु.।।।ऽ।।।	ल.५,६
,, ,, ३र.	,, ११	,, २५	मूल	।।ऽबु.।।।ऽ।।।	दि.ल.११(रा.दा.),१२
,, ,, ४चं.	,, १२	,, २६	उ.षा.	।ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल.५(२३।५९ तक),६
,, ,, ५मं.	,, १३	,, २७	उ.षा.	।ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि.ल.९, ११(रा.दा.),१२
,, ,, ६बु.	,, १४	,, २८	धनि.	ऽश.।।।।ऽनु.।ऽ।।	ल.६(२६।२६ तक),
,, ,, ७गु.	,, १५	,, २९	धनि.	ऽश.।।।।ऽनु.।ऽ।।	दि.ल.९,१२, गोधूलि
,, ,, ९श.	,, १७	दिसं. १	उ.भा.	।।।।।ऽऽ।।	ल.६(२७।६ बाद) (चं.दा.)
,, ,, १०र.	,, १८	,, २	उ.भा.	।।।।।ऽ(१३।२ तक) ऽ(१३।२ तक)।ऽ	दि.ल.९,११(रा.दा.),गोधूलि, ६(चं.दा.), [कन्या में रोग बाण है]
,, ,, ११म.	,, २०	,, ४	अश्वि.	।।।।।।।।।	दि.ल. ११ (रा.दा.), १२, गोधूलि,

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८४ई	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
मार्ग.शु १५श.	मार्ग.२४	दिसं. ८	रोहि.	।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	दि.ल.११(रा.दा.),१२
पौष कृ. १ र.	,, २५	,, ९	मृग.	।ऽ।ऽशु.ऽमृ.।।ऽ।।	दि.ल.९(चं.दा.,)११ (रा.दा). १२,
फाल्गु. कृ.१बु.	माघ २५	फर. ६ (१९८५ई)	मघा	।।ऽबु.ऽमृ.।ऽऽ।।	दि.ल.११(८।११बाद) (चं. दा), गोधूलि,९(२८।१७तक) (श.दा) [गोधूलि और धनु में चौर बाण है]
,, ,, ३शु	,, २७	,, ८	उ.फा.	।।।।ऽरो.ऽ।।।	ल. गोधूलि
,, ,, १०गु.	फाल्गु.३	,, १४	मूल	।ऽ।।।ऽअ.।ऽ।।	ल.१०(शु.रा. दान),
फाल्गु.शु.२गु.	,, १०	,, २१	उ.भा.	ऽनु.ऽ।।।।ऽ।।।	ल.९(२७।१०बाद)(श.दा.), १०(शु.रा.दा)
,, ४ र.	,, १२	,, २४	अश्वि.	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.४(गु.दा.), ९(शनि दान),१०(शु.रा.दान). (गोधूलि में क्रां.सा. है।)
,, ७ बु.	,, १६	,, २७	रोहि.	।ऽ।।ऽश.ऽचौ.।ऽ।।	ल.१०(२९।६बाद) (शु.रा.दा.)
चैत्रकृ. २शु.	,, २५	मार्च ८	हस्त	।ऽ।ऽबु,ऽबु.ऽचौ.।।।।	दि.ल.४(गु.मं.दा.),गोधू., ९ (२७।२ बाद), (श.दा.), १०(शु.रा.दा.)
,, ३श.	,, २६	,, ९	हस्त	।ऽ।ऽबु.ऽबुऽचौ.।।।।	दि.ल.१२(७।८तक)(चं.दा.)
,, ४ र.	,, २७	,, १०	स्वाती	।।।ऽमं.ऽरो.।ऽ।ऽ (१८।७ तक)	दि.ल.४(गु.मं.दा.), ९(२६।२४तक)(श.दा.),

वि. सं. २०४२ में गुरु शुक्र अस्त—२०४२ वि. में चैत्र शुक्ल १२ से चैत्र पूर्णिमा और मार्ग शुक्ल १४ से माघ ३ तक शुक्र अस्त रहेगा। गुरु माघ अमा. से फाल्गुन अमा. तक अस्त रहेगा।

सं. २०४१ वि० में मकरस्थ-गुरु का दोष और उसका परिहार

इसवर्ष (सं. २०४१ वि. में) माघकृष्ण चतुर्थी गुरुवार (२७ पौष, १० जन. ८५ ई०) को गुरु मकर (अपनी नीचराशि) में प्रवेश करेगा और वह अग्रिम वर्ष (सं. २०४२ वि.) तक इसमें ही सञ्चार करेगा।

शुभकृत्यों में मकरस्थ गुरु की वर्ज्यता के विषय में मुहूर्तग्रंथों में अनेक प्रकार के वाक्य मिलते हैं। कुछ वाक्य देशभेद के अनुसार मकरस्थ गुरु की वर्ज्यता का निर्देश करते हैं। इन वाक्यों के अनुसार रेवा (नर्मदा) नदी के पूर्वी, गण्डकी नदी के पश्चिमी और शोण (सोन) नदी के उत्तर-दक्षिणी (दोनों) भागों में स्थित प्रदेशों में मकरस्थगुरु का दोष नहीं माना जाता, शेषप्रदेशों में ही इसका दोष है—"नर्मदा-पूर्वभागे तु शोणस्योत्तर-दक्षिणे। गण्डक्याः पश्चिमे भागे मकरस्थो न दोषभाक्"—लल्ल।

मुहूर्त-चिन्तामणि में इस बारे यह श्लोक मिलता है—

"रेवापूर्वे, गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदक्-दक्षिणेऽनीच इज्यः।
वर्ज्यो नायं, कोंकणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु॥"

इसके अनुसार कोंकण (कन्नड, बम्बई आदि) मगध (बिहार का दक्षिणी भाग), गौड़ और सिन्धु प्रदेश में मकरस्थ गुरु वर्ज्य है।

दूसरे वाक्य मकरराशि के मकर के ही नवांश (उ.षा.के द्वितीय चरण) में स्थित गुरु को ही शुभकृत्यों में वर्ज्य बतलाते हैं। इनके अनुसार गुरु अपनी नीचराशि (मकर) के नीचांशक (मकर-नवांश) में ही दोषकारक है—"नीचराशि-गतोजीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता।"—(व्यवहारचण्डेश्वर)।

कुछेक वाक्य कहते हैं, कि मकर में गुरु के आने पर पहले ६० दिन शुभकृत्यों के लिए वर्जित कर देने चाहिए—"नक्रे गुरौ समायाते शुभकर्म परित्यजेत्। तत्रापि षष्ठिदिवसान् सर्वकर्मसु वर्जयेत्"—(भीम:)।

टोडरानन्द का यह वाक्य मकर में गुरु के आने पर पहले एकमास को ही वर्ज्य बतलाता है—

"अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादश एव च।
नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत्॥"

गरुड़पुराण का यह वाक्य तो मकरस्थ गुरु में शुभकृत्यों की वर्ज्यता का ही निषेध करता है—

यदा सिंह गतो जीवो नैव कल्याणमाचरेत्।
मकरस्थेऽपि कर्त्तव्यं नात्रकार्या विचारणा॥"

भीमपराक्रम में भी मकरस्थ गुरु के दोष का प्रतिवाद किया है—

"वापीकूप-तड़ागादौ निषिद्धं सिंहगे गुरौ।
मकरस्थे तु तत्कार्यं न दोषः काल-लोपतः॥"

इस प्रकार इन विभिन्न वाक्यों में ऐकमत्य का अभाव है।

यदि मकर के मकरनवांश में गुरु-स्थिति के काल को अग्राह्य माना जाए तो ध्यान रहे कि इसवर्ष (सं० २०४१ वि. में) मकरस्थ गुरु का मकरनवांश में संचारकाल माघ कृ० ४ गुरु (२७ पौष, १० जन' ८५ ई०) से माघ शु० ३ गुरु (१२ माघ, २४ जन० ८५) तक रहेगा। इन दिनों इसवर्ष सौभाग्यवश गुरु के अस्त रहने से वैसे भी कोई शुभकृत्य नहीं हो सकता।

किञ्च—कुछ विद्वानों का कहना है कि, "नीचांशकगतस्त्याज्य:" आदि वाक्यों में 'नीचांशक' का अभिप्राय 'परमनीचांश' से है। यह मत अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है। इस मत की पुष्टि 'देवीपुराण' के इस वचन से भी होती है :—

"मकरस्थो यदाजीवो वर्जयेत् पंचमांशकम्।
शेषेष्वपि च भागेषु विवाह: शोभनो मत.॥"

यह प्रमाण स्पष्टरूप से कहता है कि—मकर के पंचम अंश में गुरु हो तो विवाहादिकृत्य वर्जित करने चाहिए, मकर के शेष अंशों में गुरु की स्थिति के समय ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। यह तो सभी जानते ही हैं कि—मकर के पांचवें अंश पर ही गुरु अपने परमनीच में होता है। अर्थात् मकर का पांचवां अंश ही उसका नीचांश है। इस वर्ष गुरु मकर के पांचवें अंश में २७ से ३१ जन०' ८५ तक ही रहता है। यहां भी गुरु अस्त होने के कारण कोई शुभकृत्य वैसे भी सम्भव नहीं है।

मकर का पांचवां अंश (गुरु का परमनीचांश) ही शुभकृत्यों में त्याज्य होना चाहिए,—यही मत अधिक प्रामाणिक प्रतीत होता है। इसी को अधिकतर पंचांगकार मान्यता देते हैं। देवीपुराण का ऊपर उद्धृत वाक्य भी इसी मत की सुस्पष्टरूपेण पुष्टि करता है। किञ्च— 'तत्रापि षष्ठिविंशतान् सर्वकर्मसु वर्जयेत्",—यह वाक्य भी स्थूलरूप से मकर के पांचवें अंश तक ही मकरस्थ गुरु को शुभकृत्यों के लिए अग्राह्य बतलाता है। गुरु की मध्यमदैनिकगति ५ कला है। स्पष्ट है—पांच अंशों (३०० कलाओं) को पार करने में गुरु को अपनी मध्यमगति से ६० दिन $\left(= \frac{१ \text{ दिन} \times ३०० \text{ क०}}{५ \text{ क०}}\right)$ लगेंगे। प्रकृत वाक्य (तत्रापि षष्टिविंशमान्) के लेखक ने गुरु के परमनीचांश (मकर के पांचवें अंश) तक के पूरे भाग को ही त्याज्य बतला डाला। लेकिन देवीपुराण के वाक्यानुसार एवं च यथार्थतयापि मकर का केवल पांचवां अंश ही त्याज्य होना चाहिए, क्योंकि वही अंश परमनीचांश होने से दोषावह है।

अपिच एक यह निम्नांकित वाक्य तो मकर के उस पूरे नवांश में गुरु स्थिति के काल को वर्ज्य कह रहा है, जिस नवांश में उसका नीचांश (परमनीच) अर्थात् मकर का पांचवां अंश पड़ता है—

वाक्पती मकरराशिमुपेते पाणिपीडन-विधिर्न विधेय:।
तत्र दूषण मुशन्ति मुनीन्द्रा: केवलं परमनीचनवांशे॥

इस वचन के अनुसार तो जबतक उ. षा. के तृतीय चरण से (९ रा. ३ अं. २० क. ० वि. से ९ रा. ६ अं. ४० क. ० वि. तक) गुरु रहेगा, तब तक कोई शुभकृत्य नहीं हो सकता;—यह वचन आर्ष भी नहीं है, अत: उपेक्ष्य है।

अस्तु, सभी दृष्टियों से मकर के पांचवें अंश में गुरु की स्थिति के काल को ही मांगलिक-कृत्यों के लिए वर्जित करना युक्तिसंगत है—यही सिद्धान्त है। जिन प्रदेशों में मकरस्थ गुरु के काल को निर्दोष कहा गया है वहां मकर के पांचवें अंश में गुरु की स्थिति का काल अपेक्षाकृत कम दोषकारक होगा;—यह तर्क से स्पष्ट है। हो सके तो वहां भी मकर के पांचवें अंश में गुरु के संचारकाल को छोड़ ही देना चाहिए।

अभिजित् मुहूर्त

ऊपर दिए गए मुहूर्तों में अनेक स्थलों पर हमने 'अभिजित' शब्द का प्रयोग किया है, यह अभिजित् नक्षत्र नहीं है, अपितु एक मुहूर्त (समय विशेष) का नाम है। घण्टा मिनटात्मक-दिनमान के आधे को सूर्योदयकाल में जोड़ने पर स्पष्टमध्याह्नकाल बन जाता है। स्पष्टमध्याह्नकाल से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद के समय को 'अभिजित् मुहूर्त' कहा जाता है। इस मुहूर्त में अनेक दोष दूर करने की शक्ति मानी जाती है। इसलिए इसमें किए गए सभी काम सफल होते हैं :—

"अभिजित्-सर्वदेशेषु मुख्यदोषविनाशकृत्। मध्यंदिने गते भानौ मुहूर्तोऽभिजिदाह्वय:। नाशयत्यखिलान् दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा।

चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त

(१) चैत्रशुक्ल प्रतिपदा (२) अक्षय (वैशा. शु.) तृतीया, (३) विजयादशमी, (४) दीपावली (प्रदोष समय)

ये 'चार स्वयं-सिद्ध मुहूर्त' कहलाते हैं। ग्रामीण पंजाबी जनता इन्हें 'अणपुछ मुहूर्त' कहती है। इन मुहूर्तों में विवाहादि के अतिरिक्त कोई भी शुभकार्य करने के लिए नक्षत्रादि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

द्विरागमन (मुकलावा मुहूर्त (सं० २०४१)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख (१९८४ ई.)	नक्षत्र	काल (भा. स्टै. टा.)
वैशा. कृ. १ चं.	वैशा ४	अप्रै. १६	चित्रा	६।२८ तक
,, ,, १ चं.	,, ४	,, १६	स्वा.	७।४० बाद
,, ,, ५ शु.	,, ८	,, २०	मूल	१५।३६ तक
,, ,, ८ चं.	,, ११	,, २३	श्रव.	७।७ बाद
,, ,,११ गु.	,, १४	,, २६	शत.	७।२५ से ८।८ तक
वैशा. शु. २ गु.	,, २१	मई ३	रोहि.	१७।३२ तक
,, ,, ३ शु.	,, २२	,, ४	मृग	१०।३२ तक
,, ,, ६ चं.	,, २५	,, ७	पुष्य	७।५९ से १०।५८ तक, १३।२२ बाद
मार्ग.कृ.११ चं.	मार्ग. ५	नवं. १९	हस्त.	७।० बाद
,, ,,१३ बु.	,, ७	,, २१	स्वा.	१०।१५ तक
मार्ग शु. ८ श.	,, १६	,, ३०	शत	१३।३६ बाद

द्विरागमन मुहूर्त (सं० २०४१)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८५ ई.	नक्षत्र	काल (भा. स्टै. टा.)
फाल्गु.कृ.११ गु.	फाल्गु. ४	फर. १५	मूल	
फाल्गु.शु. ३ गु.	,, ११	,, २२	उ.भा.	
,, ,, ५ च.	,, १४	,, २५	अश्वि.	११।२१ तक
चैत्र कृ. २ गु.	,, २५	मार्च ८	उ.फा.	७।३७ से ९।५३ तक

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दीपावली के दिन दीपकों के प्रकाश में हो तो घर में सुख व लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

उपनयन मुहूर्त (सं० २०४१)

चैत्र शु. ५ गु.	चैत्र २५	अप्रै. ६ (१९८४ ई.)	रोहि.	
वैशा. कृ. ५ गु.	वैशा. ८	,, २०	मूल	
वैशा. शु. २ गु	,, २१	मई ३	रोहि.	
,, ,, ३ शु.	,, २२	,, ४	मृग	१०।३२ तक
,, ,, ५ र.	,, २४	,, ६	पुन.	९।१५ तक (ब्राह्मणेतरों के लिए)
,, ,,१०.गु.	,, २८	,, १०	पू.फा.	८।२० तक
फाल्गु. कृ. २ गु.	माघ २६	फर. ७ (१९८५ई.)	पू.फा.	
फाल्गु. शु. ३ गु.	फाल्गु. ११	,, २२	उ.भा.	
,, ,, ४ र.	,, १३	,, २४	अश्वि.	९।० बाद
,, ,, ५ चं.	,, १४	,, २५	अश्वि.	१०।५८ तक
चैत्र कृ. २ शु.	,, २५	मार्च ८	उ.फा.	७।३७ से ९।५३ तक
,, ,, २ शु.	,, २५	,, ८	हस्त	११।१५ बाद

उपनयन में विशेष—अत्यावश्यकता में चन्द्र-बल देखकर सत्तीर्थ पर बिना उपनयन-मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। ऋषितर्पण (श्राव. शु. पूर्णिमा) का दिन भी यज्ञोपवीत लेने के लिए शुभ माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त (सं० २०४१)

वैशा. कृ. १ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	स्वा.	१६।२६ बाद
श्राव. शु.१३ गु.	श्राव. २६	अग. ९	उ.षा.	१३।१९ से १८।४१ तक
भाद्र शु. १२ गु.	भाद्र २२	सित. ६	उ.षा.	७।० तक

गृहारम्भ मुहूर्त (सं० २०४१)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख (१९८४ ई.)	नक्षत्र	काल (भा. स्टै. टा.)
मार्ग.कृ, २ श.	कार्ति.२६	नवं. १०	रोहि.	१३।० बाद
चैत्र कृ. २ शु.	फाल्गु.२५	मार्च ८ (१९८५ ई.)	उ.फा.	७।३७ से ९।५३ तक
,, ,, २ शु.	,, २५	मार्च ८	हस्त	११।१५ बाद

गृह प्रवेश मुहूर्त (सं० २०४१)

श्राव. शु. ६ गु.	श्राव. १९	१९८४ ई. अग. २	चित्रा	१२।३५ बाद (पुराने घर में)
,, ,, ७ शु.	,, २०	,, ३	चित्रा	१०।५४ तक (पुराने घर में)
,, ,,१३ गु.	,, २६	,, ९	उ.षा.	१३।१९ से १८।४१ तक (पुराने घर में)
मार्ग. शु. ९ श.	मार्ग. १७	दिसं, १	उ.भा.	२९।८ बाद (नए घर में)
फाल्गु.शु. ७ बु.	फाल्गु. १६	फर. २७ (१९८५ ई.)	रोहि.	२९।६ बाद (नए घर में)

सात्त्विक देव (राम, कृष्ण, विष्णु आदि), जलाशय (तालाब, बावड़ी आदि) एवं उपवन की प्रतिष्ठा के मुहूर्त (सं० २०४१)

चैत्र शु. ५ शु.	चैत्र २५	१९८४ ई. अप्रै. ६	रोहि.	
,, ,, ६ श.	,, २६	,, ७	मृग.	
,, ,, ८ चं.	,, २८	,, ९	पुन.	१०।१७ बाद
वैशा. कृ. १ चं.	वैशा. ४	,, १६	स्वा.	७।४० बाद
वैशा. कृ. ७ र.	वैशा. १०	अप्रै. २२	उ.षा.	
,, ,, ८ चं.	,, ११	,, २३	श्रव,	७।७ बाद
वैशा, शु. २ गु.	,, २१	मई ३	रोहि.	
,, ,, ३ शु.	,, २२	,, ४	मृग.	१०।३२ तक
,, ,, ५ र.	,, २४	,, ६	पुन.	
,, ,, ६ चं.	,, २५	,, ७	पुष्य	१०।५८ तक
पौष शु. २ चं.	पौष १०	दिसं.२४	उ.षा.	११।३६ तक
,, ,, ७ श.	,, १५	,, २९	उ.भा.	११।१५ बाद
,, ,, ८ र.	,, १६	,, ३०	उ.भा.	११।० बाद
फाल्गु. कृ. ६ र.	माघ २९	फर. १० (१९८५ ई.)	चित्रा	
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु.११	,, २२	उ.भा.	
,, ,, ४ र.	,, १३	,, २४	अश्वि.	९।० बाद
,, ,, ५ चं.	,, १४	,, २५	अश्वि.	१०।५८ तक
चैत्र कृ. २ शु,	,, २५	मार्च ८	उ.फा.	७।३७ से ९।५३ तक,

तामसदेव (काली, भैरव आदि) प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०४१ वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख (१९८४ ई.)	नक्षत्र	काल (भा. स्टै, टा.)
मार्ग. शु. १० र.	मार्ग. १८	दिसं. २	उ.भा.	
,, ,, १५ श.	,, २४	,, ८	रोहि.	
पौष कृ. १ र.	,, २५	,, ९	मृग.	
,, ,, १० चं.	पौष ३	,, १७	हस्त	१०।५२ तक

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सं० २०४१)

इस वर्ष कोई अक्षरारम्भ मुहूर्त्त नहीं है, अतः अक्षयतृतीया, विजयादशमी, उपाकर्म (ऋषितर्पण) के दिन अथवा सर्वार्थसिद्धि योग या रवियोग के समय पंचांग-शुद्धि देखकर अक्षरारम्भ करना चाहिए।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सं० २०४१)

		(१९८४ ई.)		
वैशा. कृ. ५ गु.	वैशा. ८	अप्रै. २०	मूल	
,, ,, ११ गु.	,, १४	,, २६	शत	७।२५ से ८।८ तक
,, ,, १२ शु.	,, १५	,, २७	पू.भा.	१७।१५ तक
वैशा. शु. ३ शु.	,, २२	मई ४	मृग	१०।३२ तक
,, ,, ५ र.	,, २४	,, ६	पुन.	१३।६ तक, १५।६ बाद
,, ,, ६ चं.	,, २५	,, ७	पुष्य	७।५९ तक
,, ,, १० गु.	,, २८	,, १०	पू.फा.	१२।१९ तक
फाल्गु. कृ. २ गु.	माघ २६	फर. ७ (१९८५ ई.)	पू.फा.	
,, ,, ११ शु	फाल्गु. ४	,, १५	मूल	
फाल्गु. शु. २ गु.	,, १०	,, २१	पू.भा.	
,, ,, ४ र.	,, १३	,, २४	अश्वि.	९।०० बाद
,, ,, ५ चं.	,, १४	,, २५	अश्वि.	१०।५८ तक
चैत्र कृ. २ शु.	,, २५	मार्च ८	हस्त	११।१५ बाद

मुण्डन मुहूर्त्त (सं० २०४१)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख (१९८४ ई.)	नक्षत्र	काल (भा. स्टै टा.)
वैशा. कृ. ११ गु.	वैशा. १४	अप्रै. २६	शत.	७।२५ से ८।८ तक
वैशा. शु. ३ शु.	,, २२	मई ४	मृग.	१०।३२ तक
,, ,, ६ चं.	,, २५	,, ७	पुष्य	७।५९ से १०।५८ तक, १३।२२ बाद
फाल्गु. कृ. १० गु.	फाल्गु. ३	फर. १४ (१९८५ ई.)	ज्येष्ठा	११।६ तक
फाल्गु. शु. ५ चं.	,, १४	,, २५	अश्वि.	१०।२१ तक
चैत्र कृ. २ शु	,, २५	मार्च ८	हस्त	११।१५ बाद

विपणि दुकान खोलने का मुहूर्त्त (सं० २०४१)

		(१९८४ ई.)		
चैत्र शु १३ श.	वैशा. २	अप्रै. १४	उ.फा.	७।३० तक
वैशा. कृ. ७ र.	,, १०	,, २२	उ.षा.	
,, ,, १३ र.	,, १७	,, २९	रेव.	६।१८ तक
वैशा. शु. २ गु.	,, २१	मई ३	रोहि.	१७।३२ तक
,, ,, ३ शु.	,, २२	,, ४	मृग.	१०।३२ तक
,, ,, ६ चं.	,, २५	,, ७	पुष्य	१०।५८ तक, १३।२२ बाद
फाल्गु. कृ. ६ र.	माघ २९	फर. १० (१९८५ ई.)	चित्रा	१४।१० तक, १६।३४ बाद
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु. ११	,, २२	उ.भा.	
,, ,, ५ चं.	,, १४	,, २५	अश्वि.	१०।५८ तक
चैत्र कृ. २ शु.	,, २५	मार्च ८	उ.फा.	७।३७ से ९।५३ तक

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

सं. २०४१ में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबलशुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०४१ में कुल कितने विवाह-मुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह मुहूर्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए यहां नीचे "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" दे रहे हैं। सं. २०४१ के शुद्ध विवाहमुहूर्त इस पंचांग में पृ. १५२ पर दिए गए हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख वाले विवाह मुहूर्त में किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबल-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक में लिख दिया गया है। अमुकराशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इसवर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—यह कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुकराशि वाले लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाले दिन भी इस कोष्ठक में दिए गए हैं। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों उन तारीखों में लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—मकरराशि वाले लड़के और धनुराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०४१ में अगस्त के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें। लड़के वाले कालम में मकर के आगे अगस्त की केवल १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में धनु के आगे अगस्त की १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३० तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि अगस्त में मकरराशि वाले लड़के और धनुराशि वाली लड़की का विवाह केवल १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें दोनों में एक सी मिलती हैं। उपरोक्त प्रकार से विवाह की तारीखों का निश्चय करके पृ. १५२ पर दिए गए शुद्ध विवाहमुहूर्तों से उसदिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न मानकर पूज्य मानना चाहिए। यहां दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय से आरम्भ होकर सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।)

ध्यान दें—इस वर्ष ९ जन. १९८५ ई. तक गुरु अपनी राशि धनु में रहेगा, इसलिए ९ जन. '८५ तक कन्या की राशि से गुरु नेष्ट होने पर भी वह बोध कारक नहीं होगा।

त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. २०४१ वि.) (२ अप्रै. १९८४ ई. से २१ मार्च १९८५ ई. तक के लिए) (कोष्ठकों में भा. स्टै. टा. के घं.मि. दिए गए हैं)

राशि ↓	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष	अप्रै. १४, १५ (२०।५४या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४, ८, ९, अग. २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४, २०, २१, २८, ३०, नव. १, २, १०, फर. ६, ८, १४, २१, २४, २७, मार्च ८, ९, १०.	१४ अप्रै से १३ मई १७ अग. से १५ सितं. १७ अक्तू. से १४ नवं.	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.)/१६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४, २०, २१, २८, ३०, नवं. १, २, १०, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिसं. १, २, ४, ८, ९, फर. ६, ८, १४, २१, २४, २७, मार्च ८, ९, १०,	४ फर. बाद
वृष	जुला. २५, अग. १, २, ३, ९ (१९।४४ उ.), १०, ११, सितं. २६, अक्तू. ३, ४, ९, १०, १४, ३० (१०।४६ उ.), नवं. १, २, १०, १८, १९, २०, २६, (२३।५९ उ.), २७, २८, २९, दिसं. १, २, ४, ८, ६, फर. ८, २१, २४, २७, मार्च ८, ९, १०.	१५ जून से १४ जुला. १७ सितं. से १५ अक्तू. १६ नवं. से १४ दिस. १४ जन. से ११ फर.	अप्रै. १४, १५, (२०।५४ या.), १६, २२ (११।३४ उ.), २३, २४, २५, मई ४, जुला. २५, अग. १, २, ३, ६ (१९।४४ उ.), १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ६, ७, ८, २६, अक्तू. ३, ४, ९, १०, १४, ३० (१०।४६ उ.), नवं. १, २, १०, १८, १९, २०, २६ (२३।५९ उ.), २७, २८, २९, दिसं. १, २, ४, ८, ९, फर. ८, २१, २४, २७, मार्च ८, ९, १०	----
मिथुन	अप्रै. १६, १९, २०, २१, २२, (११।३४ या.), २४, (२३।६ उ.), २५, मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. २, (२४।५१ उ.), ३, ७, ८, ९ (१९।४४ या.), २०, २१, ३०, सितं. ३, ४, ८, (१२।१७ उ.), अक्तू. २०, २१, २८, ३० (१४।४६ या.), नवं. १ (२४।४५ उ.), २, १०, १६, २४, २५, २६ (२३।२९ या.), २९ (८।४२उ.), दिसं. १, २, ४, ८, ९, फर. १४, २१, २४, २७, मार्च १०.	१५ जून से १५ अग. १७ अक्तू. से १४ नवं. १३ फर. से १३ मार्च	अप्रै. १६, १९, २०, २१, २२ (११।३४ या.), २४ (२३।६ उ.), २५, मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. २ (२४।५१उ.), ३, ७, ८, ९ (१९।४४ या.), २०, २१, ३०, सितं ३, ४, ८ (१२।१७ उ.), अक्तू. २, ९, १०, १४, २०, २१, २८, ३० (१४।४६या.), नवं. १ (२४।४५ उ.), २, १०, १६, २४, २५, २६ (२३।२९ या.), २९ (८।४२उ.), दिसं. १, २, ४, ८, ९, फर. ६, १४, २१, २४, २७, मार्च १०.	४ फर. बाद
कर्क	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.), १९, २०, २१, २२, २३, २४ (२३।६ या.). मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २ (२४।५१ या.), ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, सितं. ३, ४, ६, ७, ८ (१२।१७ या.), २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४, नवं. १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९ (८।४२ या.), दिसं. १, २, ४, ८, ९, फर. ६, ८.	१७ जुला. से १५ सितं १६ नवं से १४ दिसं. १४ जन. से ११ फर.	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.), १९, २०, २१, २२, २३, २४ (२३।६ या.). मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २ (२४।५१ या.), ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, सितं. ३, ४, ६, ७, ८ (१२।१७या.), २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४, २०, २१, २८, ३०, नवं. १ (२४।४५ या.), १०, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९ (८।४२ या.), दिसं. १, २, ४, ८, ९, फर. ६, ८, १४, २१, २४, २७, मार्च ८, ९	-----
सिंह	अप्रै. १४, १५, (२०।५४ या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४, ८, ९, अग. २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, १०, (१९।१९ उ.), १४, २०, २१, २८, ३०, नवं. १, २, १०, फर. ६, ८, १४, २४, २७, मार्च ८, ९, १०.	१४ अप्रै. से १३ मई १७ अग. से १५ अक्तू. १३ फर. से १३ मार्च	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, १०, (१९।१९ उ.), १४, २०, २१, २८, ३०, नवं. १, २, १०, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिसं. ४, ८, ९, फर. ६, ८, १४, २४, २७, मार्च ८, ९, १०	४ फर. बाद

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक [सं. २०४१ वि.]

राशि ↓	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्या	जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २, ३, ९, (१९।४४ उ.), १०, ११, सितं. २६, अक्तू. ३, ४, ९, १० (१९।१९या.) १४, २०, २१, ३० (१०।४६ उ.), नव. १, २, १०, १६, १८, १९, २०, २६ (२३।५९ उ.), २७, २८, २९, दिसं. १, २, ८, ९, फर. ६, ८, २१, २७, मार्च ८, ९, १०.	१५ मई से १३ जून १७ सितं. से १४ नवं १४ जन. से ११ फर.	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.), १६, २२ (११।३४ उ.), २३, २४, २५, मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २, ३, ९(१९।४४उ.), १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ६, ७, ८, २६, अक्तू. ३, ४, ९, १० (१९।१९या.), १४, २०, २१, ३०(१०।४६उ.), नव. १, २, १०, १६, १८, १९, २०, २६(२३।५९उ.), २७, २८, २९. दिसं. १, २, ८, ९, फर. ६, ८, २१, २७, मार्च ८, ९, १०,	———
तुला	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.) १६, १९, २०, २१, २२ (११।३४ या.), २४ (२३।६ उ.), २५, मई ४(१७।१७ उ.), ८, ९, जुला. २९, ३०, अग. १, २, ३, ७, ८, ९(१९।४४ या.), २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ८(१२।१७ उ.), अक्तू. २०, २१, २८, ३०(१४।४६या.), नवं. १ (२४।४५ उ.), २, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६ (२३।२९ या.), २९(८।४२ उ.), दिस. १, २, ४, ९, फर. १४, २१, २४, मार्च ८, ९, १०.	१४ अप्रै. से १३ मई १५ जून से १४ जुला. १७ अक्तू. से १४ दिसं. १३ फर. से १३ मार्च	अप्रै. १४, १५ (२०।५४या.) १६, १९, २०, २१, २२(११।३४ या.), २४ (२३।६उ.), २५, मई ४(१७।१७उ.), ८, ९, जुला. २९, ३०, अग. १, २, ३, ७, ८, ९ (१९।४४या.), २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ८ (१२।१७उ.), २६, अक्तू. २, ९, १०, २०, २१, २८, ३० (१४।४६या.), नवं. १ (२४।४५ उ.), २, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६ (२३।२९ या.), २९ (८।४२ उ.), दिस. १, २, ४, ९, फर. ६, ८, १४, २१, २४, मार्च ८, ९, १०.	४ फर. बाद
वृश्चि	अप्रै. १४, १५ (२०।५४या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४ (२३।६या.), मई ४(१७।१७ या.), ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ६, ७, ८ (१२।१७ या.), २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४ नव. १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९(८।४२ या.), दिस. १, २, ४, ८, फर. ६, ८.	१५ मई से १३ जून १७ जुला. से १५ अग. १६ नव से १४ दिसं.	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४ (२३।६ या), मई ४ (१७।१७या), ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ६, ७, ८ (१२।१७ या.), २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४, २०, २१, २८, ३०, नवं. १ (२४।४५ या.), १०, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९ (८।४२या.), विसं. १, २, ४, ८, फर. ६, ८, १४, २१, २४, २७, मार्च ८, ९, १०	४ फर. बाद
धनु	अप्रै. १४ १५ (२०।५४ या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४, ८, ९, अग. २०, २१, २८, २९, ३०, सित. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, १०(१९।१९ उ.), १४, २०, २१, २८, ३०, नव. १, २, १०, फर. ६, ८, १४, २४, २७, मार्च ८, ९, १०.	१४ अप्रै. से १३ मई १५ जून से १४ जुला. १७ अग. से १५ सितं. १४ जन. से ११ फर.	अप्रै. १४, १५ (२०।५४या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४, ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३० सितं. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, १० (१९।१९ उ.), १४, २०, २१, २८, ३०, नवं. १, २, १०, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९, विसं. ४, ८, ९, फर. ६, ८, १४, २४, २७, मार्च ८, ९, १०	———
मकर	जुला. २५, अग. १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, सितं. २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०(१९।१९ या.), १४, २८, ३०, नवं. १, २, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिसं. १, २, ८, ९, फर. ८, १४, २१, २७, मार्च ८, ९, १०.	१५ मई से १३ जून १७ जुला. से १५ अग. १७ सितं. से १५ अक्तू. १४ जन. से १३ मार्च	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.), १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४, जुला. २५, अग. १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, ३०, सितं. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १० (१९।१९ या.), १४, २८, ३०, नव. १, २, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिस. १, २, ८, ९, फर. ८, १४, २१, २७, मार्च ८, ९, १०	४ फर. बाद
कुम्भ	अप्रै. १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४ (१७।१७ उ.), ८, ९, जुला. २९, ३० अग. २(२४।५१ उ.), ३, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, सित. ३, ४, ६, ७, ८, अक्तू. २०, २१, २८, ३०, नव. १, २, १६, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिसं. १, २, ४, ९, फर. १४, २१, २४, मार्च १०.	१५ जून से १४ जुला. १७ अग. से १५ सितं १७ अक्तू. से १४ नव. १३ फर. से १३ मार्च	अप्रै. १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४(१७।१७उ.), ८, ९, जुला. २९, ३०, अग. २(२४।५१उ.), ३, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, सितं, ३, ४, ६, ७, ८, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, २०, २१, २८, ३०, नवं. १, २, १६, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिसं.. १, २, ४, ९, फर. ६, १४, २१, २४, मार्च १०.	४ फर. बाद
मीन	अप्रै. १४, १५(२०।५४या.), १९, २० २१, २२, २३, २४, २५, मई ४ (१७।१७या), ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २(२४।५१ या.), ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९ सितं. ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४, नवं. १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिसं. १, २, ४, ८, फर. ६, ८,	१४ अप्रै. से १३ मई १७ जुला. से १५ अग. १७ सित. से १५ अक्तू. १६ नव से १४ दिसं.	अप्रै. १४, १५ (२०।५४ या.), १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मई ४ (१७।१७ या.), ८, ९, जुला. २५, २९, ३०, अग. १, २ (२४।५१ या.), ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २८, २९, सितं ३, ४, ६, ७, ८, २६, अक्तू. २, ३, ४, ९, १०, १४, २०, २१, २८, ३०, नव १, २, १०, १६, १८, १९, २०, २४, २५, २६, २७, २८, २९, दिसं. १, २, ४, ८, फर. ६, ८, १४, २१, २४, २७, मार्च ८, ९.	———

अशुद्ध-विवाहमुहूर्त्त (सं. २०४१)

नीचे अशुद्ध-विवाहमुहूर्त्तों की सूची दी गई है, अशुद्ध मुहूर्त के सामने उसदोष का भी निर्देश किया गया है, जिसके कारण वह मुहूर्त अशुद्ध, त्याज्य माना गया है।

तिथि	तारीख १९८४	नक्षत्र	दोष
चैत्रशु. १२शु.	अप्रै. १३	उ.फा.	संक्रान्ति
,, ,, १३श.	,, १४	हस्त	शुक्रास्त वेध, मृत्युबाण
,, ,, १५ र.	,, १५	हस्त	भद्रा
वैशा.कृ. १चं	,, १६	चित्रा	लग्नाभाव
,, ,, २मं.	,, १७	अनु.	केतुभौमयुति
,, ,, ३बु.	,, १८	अनु	
,, ,, ८चं.	,, २३	उ.षा	नक्षत्रान्त
,, ,, ९मं.	,, २४	श्रव.	मृत्युबाण
,, ,, १२शु.	,, २७	उ.भा.	वैधृति
वैशा.शु. १बु	मई २	रोहि.	मृत्युबाण
,, ,, २गु	,, ३	रोहि.	लग्नाभाव
,, ,, २गु.	,, ३	मृग.	लग्नाभाव
,, ,, १० गु.	,, १०	उ.फा.	शुक्रवार्धक्य

शुक्रास्त (१३ मई १९८४ से २१ जुला. १९८४ ई. तक)

तिथि	तारीख १९८४	नक्षत्र	दोष
श्राव.शु ३मं.	जुला. ३१	उ.फा	लग्नाभाव
,, ,, ७शु.	अग. ३	स्वा.	शनियुति
,, ,, ८श.	,, ४	स्वा.	
,, ,, ९र.	,, ५	अनु.	केतुयुति
,, ,, १०चं.	,, ६	अनु.	
,, ,, १५श.	,, ११	धनि.	सूर्यवेध
भाद्र.कृ. १र.	,, १२	धनि.	
,, ,, ३मं.	,, १४	उ.भा.	मृत्युबाण
,, ,, ४बु.	,, १५	उ.भा	मासान्त
,, ,, ४बु.	,, १५	रेव.	भुजंगपात
भाद्र कृ. ४गु.	अग. १६	रेव.	संक्रान्ति
,, ,, ५शु.	,, १७	रेव.	नक्षत्रान्त
,, ,, ५शु.	,, १७	अश्वि.	मृत्यु,लग्नाभाव
,, ,, ६श.	,, १८	अश्वि.	मृत्युबाण
भाद्र शु. १चं.	,, २६	उ.फा.	
,, ,, २मं.	,, २८	उ.फा.	शुक्रयुति
,, ,, ३बु.	,, २९	चित्रा.	लग्नाभाव
,, ,, ४गु.	,, ३०	स्वा.	
,, ,, ५शु.	,, ३१	स्वा.	शनियुति
,, ,, ७श.	सित. १	अनु.	मंगल-केतुयुति
,, ,, ८र.	,, २	अनु.	
,, ,, ११बु.	,, ५	उ.षा.	मृत्युबाण

श्राद्ध पक्ष

तिथि	तारीख १९८४	नक्षत्र	दोष
अश्वि.शु. २बु.	सित. २६	हस्त.	लग्नाभाव
,, ,, २बु.	,, २७	स्वा.	शुक्रयुति
,, ,, ३गु.	,, २७	स्वा.	,,
,, ,, ४शु.	,, २८	अनु.	केतुयुति
,, ,, ५श.	,, २९	अनु.	
,, ,, ६र.	,, ३०	मूल	मंगलयुति
,, ,, ७चं.	अक्तू. १	मूल	
,, ,, ९बु.	,, ३	श्रव.	लग्नाभाव
,, ,, १०गु.	,, ४	धनि.	लग्नाभाव
,, ,, ११शु.	,, ५	धनि.	
,, ,, १२श.	,, ६	धनि.	नक्षत्रान्त
,, ,, १४चं.	,, ८	उ.भा.	सूर्यवेध
,, ,, १५मं.	,, ९	उ.भा.	
कार्ति.कृ. १गु.	,, ११	अश्वि.	लग्नाभाव
,, ,, ३श.	,, १३	रोहि.	व्यतीपात
कार्ति.कृ. ४र.	अक्तू. १४	मृग.	मृत्युबाण
,, ,, ५चं.	,, १५	मृग.	मासान्त
,, ,, ९शु.	,, १९	मघा	भद्रा
कार्ति.शु. १गु.	,, २५	स्वा.	सूर्ययुति
,, ,, २शु.	,, २६	अनु	केतुयुति
,, ,, ३श.	,, २७	अनु.	
,, ,, ६चं.	,, २९	मूल	लग्नाभाव
,, ,, ८बु.	,, ३१	उ.षा.	भद्रा
,, ,, ८बु.	,, ३१	श्रव.	भुजंगपात
,, ,, ८गु.	नव. १	श्रव.	

भीष्म पञ्चक

तिथि	तारीख १९८४	नक्षत्र	दोष
मार्ग.कृ. ३र.	नवं. ११	रोहि.	लग्नाभाव
,, ,, ३र.	,, ११	मृग.	भौमवेध
,, ,, ४चं.	,, १२	मृग.	
,, ,, ९श.	,, १७	मघा	मृत्युबाण
,, ,, ११च.	,, १९	उ.फा.	नक्षत्रान्त
,, ,, ११चं.	,, १९	चित्रा.	लग्नाभाव
मार्ग.शु. १शु.	,, २३	अनु.	सूर्य-केतुयुति
,, ,, ५म	,, २७	श्रव.	भौमयुक्ति
,, ,, ६बु.	,, २८	श्रव.	
,, ,, १०र.	दिसं. २	रेव.	व्यतीपात
,, ,, १०चं.	,, ३	रेव.	व्यतीपात-भद्रा
,, ,, ११मं.	,, ४	रेव.	भद्रा
,, ,, १२बु.	,, ५	अश्वि	परिघार्ध
,, ,, १४शु.	,, ७	रोहि.	लग्नाभाव
,, ,, १५श.	,, ८	मृग.	शुक्रास्तवेध, लग्नाभाव
पौष कृ. ५ गु.	,, १३	मघा	मृत्युबाण
,, ,, ६ शु.	,, १४	मघा	मासान्त

धनुःस्थ सूर्य

तिथि	तारीख १९८५	नक्षत्र	दोष
फाल्गु.कृ. २गु.	फर. ७	उ.फा.	भद्रा
,, ,, ३शु.	,, ८	हस्त	भौमवेध
,, ,, ४श.	,, ९	हस्त	
,, ,, ४श.	,, ९	चित्रा	भुजंगपात
,, ,, ६र.	,, १०	चित्रा	
,, ,, ६र.	,, १०	स्वा.	मृत्युबाण
,, ,, ७च.	,, ११	स्वा.	मासान्त
,, ,, ८मं.	,, १२	अनु,	शनियुति
,, ,, ९बु.	,, १३	अनु	
,, ,, ११शु.	,, १५	मूल	लग्नाभाव
,, ,, १२श.	,, १६	उ.षा.	
फाल्गु.शु. ३शु.	,, २२	उ.भा.	लग्नाभाव
,, ,, ३शु.	,, २२	रेव.	मं.शु. युति
,, ,, ४श.	,, २३	रेव.	
,, ,, ४र.	,, २४	रेव.	
,, ,, ५चं.	,, २५	अश्वि,	लग्नाभाव

होलाष्टक

तिथि	तारीख १९८५	नक्षत्र	दोष
चैत्रकृ. २शु.	मार्च ८	उ.फा.	भुजंगपात
,, ,, ३श.	,, ९	चित्रा	सूर्यवेध
,, ,, २श.	,, ९	स्वा.	लग्नाभाव
,, ,, ५च.	,, ११	अनु.	शनियुति
,, ,, ६मं.	,, १२	अनु.	
,, ,, ७बु.	,, १३	मूल	मासान्त

मीनस्थ रवि